एक सार्थक जीवन की खोज में

एक लोक सेवक की आत्मकथा

प्रशान्त कुमार मिश्र

एक सार्थक जीवन की खोज में
एक लोक सेवक की आत्मकथा

This book titled *In Quest of a Meaningful Life*
was first published in English by
Konark Publishers Pvt. Ltd. New Delhi
in the year 2017.

© श्री प्रशान्त कुमार मिश्र

प्रथम हिन्दी संस्करण : वर्ष 2024

भाषान्तरण : डॉ. कंजीव लोचन

प्रकाशक : श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)
593, ग्राम बिजवासन, नई दिल्ली-110061

मुद्रक : एक्सेलप्रिंट, सी-36, एफ.एफ. कॉमप्लेक्स
झण्डेवालान, नई दिल्ली-110055

मूल्य : ₹500/-

प्राक्कथन

मैं श्री प्रशान्त कुमार मिश्र को वर्ष 1979 से जानता हूँ जब वह टिहरी गढ़वाल के जिला मजिस्ट्रेट थे। वह प्रत्येक वर्ष समय-समय पर इस पवित्र स्थली वशिष्ठ गुफा पर आते रहते थे। वह एक सरल, सच्चे और आध्यात्मिक व्यक्ति हैं। अनेक महत्त्वपूर्ण पदों जिनमें मुख्य सचिव उत्तर-प्रदेश तथा सदस्य संघ लोक सेवा आयोग जैसे पद सम्मिलित हैं, पर रहते हुए भी उनके व्यक्तित्व में तनिक भी अभिमान नहीं है। उनके द्वारा लिखी गयी यह पुस्तक 'यथार्थ जीवन की खोज में: एक लोक सेवक की आत्मकथा' उनके प्रशासनिक और आध्यात्मिक अनुभवों को भलीभाँति प्रस्तुत करती है। उन्होंने देश के अनगिनत पवित्र स्थलों का भ्रमण किया है। हिमालय क्षेत्र में सैकड़ों किलोमीटर की पैदल यात्रायें की हैं तथा इस दौरान साधु-सन्तों एवं तीर्थयात्रियों के साथ आश्रमों में ठहरने में संकोच नहीं किया है। मुझे विश्वास है कि उनकी पुस्तक उपयोगी और रुचिकर सिद्ध होगी तथा युवा पीढ़ी और प्रशासकों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करेगी।

मैं श्री प्रशान्त कुमार मिश्र को समस्त शुभकामनायें देता हूँ और आश्वस्त हूँ कि श्री गुरुमहाराज पुरुषोत्तमानन्द जी उनके आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिये अपना आशीर्वाद देंगे और पृथ्वी माता पर उनकी यात्रा में सतत् मार्गदर्शन करते रहेंगे।

स्वामी चैतन्यानन्द
श्री पुरुषोत्तमानन्द ट्रस्ट
वशिष्ठ गुफा आश्रम
गुलर दोगी, टिहरी गढ़वाल
उत्तराखण्ड

कुछेक शब्द

पिछले कुछ समय से मैं युवा पीढ़ी और नये प्रशासकों के लाभार्थ अपने प्रशासनिक और आध्यात्मिक अनुभवों पर एक पुस्तक लिखने की सोच रहा था। अगस्त 2013 में सदस्य संघ लोक सेवा आयोग का पद छोड़ने के बाद मुझे रचनात्मक सोच के लिए थोड़ी फुरसत मिली तथा मैंने अपनी अनुभूतियों और अभिव्यक्तियों को मूर्त रूप देने के लिये लिखना आरम्भ कर दिया। लगभग एक वर्ष तक मैं अपनी याददाश्त पर जोर देकर अपने बचपन से लेकर आज तक की घटनाओं और अनुभवों को संक्षेप में लिखता रहा। इसके बाद इसे विस्तार से लिखने में मुझे एक वर्ष से अधिक का समय लगा जो इस पुस्तक के आधार बने। मेरी डायरी के दो खण्ड जिनमें मैंने अपने आध्यात्मिक अनुभव लिखे थे इस पुस्तक के लेखन में अत्यधिक उपयोगी रहे हैं।

यह पुस्तक मूलतः एक आत्मकथा है जिसमें मेरे प्रशासनिक और आध्यात्मिक अनुभवों का उल्लेख है। यह पुस्तक बचपन में मेरे माता-पिता, शिक्षकों तथा गाँव के बड़े-बुजुर्गों द्वारा मुझे दिये गये संस्कारों से आरम्भ होती है। इसमें मेरे गाँव के प्राथमिक विद्यालय, हाईस्कूल, कॉलेज तथा विश्वविद्यालय की भूमिका पर भी विचार किया गया है। मेरे सबसे बड़े भाई ने मेरा भविष्य सवाँरने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी तथा ऐसे मूल्य और नैतिकता का शिक्षण दिया जो मुझे एक अच्छा मनुष्य बनाने में अत्यंत सहायक हुए। मैंने प्रयास किया है कि विगत वर्षों की लम्बी अवधि का जहाँ तक हो सके सच्चा लेखा-जोखा प्रस्तुत कर सकूँ। मैंने उन अच्छे विचारों और जीवन के आदर्शों को उजागर किया है जिनके बिना मनुष्य गिर कर पशु हो जायेगा। मैंने पुस्तक का समापन इस आध्यात्मिक आशावाद के साथ किया है कि हमारे भीतर लौकिक जगत की सीमाओं के पार चले जाने का नैसर्गिक देवत्व और शक्ति है।

अपने अनुभवों का वर्णन करते हुए मेरी कतई यह मंशा नहीं रही है कि मैं किसी व्यक्ति अथवा नीति की आलोचना करुँ। मंशा यह है कि विभिन्न अनुभवों का निष्पक्ष, उचित और सच्चा ब्यौरा प्रस्तुत किया जाये ताकि पुस्तक युवाओं के

लिए मार्गदर्शन का कार्य कर सके। मैंने भरसक प्रयास किया है कि किसी व्यक्ति, व्यक्तित्व, धर्म अथवा सम्प्रदाय की भावनाओं को ठेस न पहुँचे। यद्यपि मैं इस विषय में अति सतर्क एवं संवेदनशील हूँ किन्तु यदि मेरे प्रयासों के बावजूद किसी व्यक्ति की भावनाओं को ठेस पहुँचती है तो कृपया मुझे क्षमा करें। इसमें उनकी महानता परिलक्षित होगी।

यह जीवन की विडंबना है कि मेरा गहन आध्यात्मिक विकास उस समय हुआ जब मैं उत्तर प्रदेश का बिक्रीकर आयुक्त था। वर्ष 1993 से 2003 के कालखण्ड में मेरा आध्यात्मिक विकास सार्थक रूप से दिखा। हिमालय में सैकड़ों किलोमीटर की दुर्गम मार्गों की यात्रा, सन्त पुरुषों की संगति पाना और आश्रमों में रात्रि बिताना यह सब श्री एन. सी. शर्मा, श्री सी. एस. सेमवाल तथा श्री सर्वेश्वर सेमवाल की आध्यात्मिक संगति के बिना सुखद नहीं होता। इससे संबंधित विभिन्न फोटोग्राफ उपलब्ध कराने के श्री एन. सी. शर्मा तथा श्री वी. एस. सेमवाल के योगदान को मैं विस्मृत नहीं कर सकता। मैं श्री सर्वेश्वर सेमवाल का अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने केदारखण्ड के महत्त्व के सम्बन्ध में मेरा ज्ञानवर्द्धन किया और उसमें भी विशेष रूप से पंच केदार के बारे में। मैं पुस्तक की संरचना, विषय वस्तु तथा भाषा के सुधार के सम्बन्ध में अपनी पत्नी सरिता तथा पुत्री प्रज्ञा के द्वारा समय-समय पर दिये गये सुझावों एवं उसके द्वारा निर्वहन की गयी भूमिका भी नहीं भूल सकता हूँ। एक पत्नी और एक माता के रूप में अपने कर्तव्यों के निर्वहन के अतिरिक्त सरिता ने कभी भी आध्यात्मिक महत्त्व के बहुत से स्थानों पर मेरे साथ जाने में कभी संकोच नहीं किया और ऐसी यात्राओं में सदैव मेरा साथ दिया। रात्रि भोजन के उपरान्त हम साथ बैठते और घण्टों पुस्तक की अन्तर्वस्तु और भाषा के सम्बन्ध में चर्चा करते। मुझे यह स्वीकार करने में रंचमात्र संकोच नहीं है कि उनके बहुमूल्य सुझावों से पुस्तक की अन्तर्वस्तु तथा भाषा के सुधार में सहायता मिली है।

यह पुस्तक 'सार्थक जीवन की खोज में: एक लोक सेवक की आत्मकथा' 316 पृष्ठों की है। अंग्रेजी में इस पुस्तक के लेखन का बहुत बड़ा कार्य श्री विष्णु दत्त जोशी जी जो संघ लोक सेवा आयोग में मेरे कार्यकाल से ही जुड़े थे, के कष्टसाध्य प्रयासों एवं सहयोग के बिना सम्भव नहीं हो पाता। वह प्रतिदिन घण्टों मेरा बोला हुआ लिखते और दूसरे दिन साफ सुथरा टंकित पृष्ठ मेरे सम्मुख प्रस्तुत कर देते। श्री जोशी के बहुमूल्य सहयोग से मुझे बिना किसी व्यवधान के और अधिक सर्जनात्मक ढंग से सोचने में सहायता मिली। इससे मेरी चिंतन प्रक्रिया की अभिव्यक्ति की शृंखला को अविरल प्रवाहमयी बनाने में मदद मिली। श्री जोशी के सहयोग के बिना इस पुस्तक का प्रकाशन संभव नहीं था।

मैं श्री गणेश शंकर त्रिपाठी का हृदय से कृतज्ञ हूँ जिनकी निष्ठा और विश्वसनीयता निर्विवाद है। इस पुस्तक के प्रकाशन में आवश्यक सहयोग प्रदान करने के लिये मैं उनका आभारी हूँ। उन्होंने पुस्तक के अनेक अंशों का हिन्दी में भाषान्तर करके भी मेरी सहायता की है। मैं श्री के. पी. आर. नायर, प्रबन्ध निदेशक, कोणार्क प्रकाशन तथा संपादक मण्डल का भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अंग्रेजी में पुस्तक को सुन्दर और सुव्यवस्थित ढंग से संपादित और प्रकाशित करने में कष्टकर श्रम किया है। मैं श्री नायर जी का पुनः आभारी हूँ कि उन्होंने पुस्तक के हिन्दी भाषान्तर के सम्बन्ध में सहर्ष अपनी सहमति प्रदान की है। मैं अंग्रेजी भाषा में लिखी गयी इस पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद के लिये पिछले पाँच वर्षों से प्रयासरत था। संयोगवश श्री कंजीव लोचन, सहायक अध्यापक, इतिहास, रांची विश्वविद्यालय मेरे सम्पर्क में आये जिन्होंने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के इतिहास अध्यापन केन्द्र से पी.एच.डी. की है तथा उन्हें कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैण्ड से विजिटिंग अध्येता का सम्मान प्राप्त है तथा वे महिडोल विश्वविद्यालय बैंकॉक के आमंत्रित प्राध्यापक रह चुके हैं। उनके अथक प्रयास से पुस्तक का हिन्दी अनुवाद सम्भव हो पाया है जिसके लिये मैं हृदय से उनका आभारी हूँ। मैं श्री भगवान दास पटैरया, पूर्व मुख्य अभियंता, केन्द्रीय जल आयोग, भारत सरकार का भी अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को सुन्दर और सुव्यवस्थित ढंग से प्रकाशित करने में सक्रिय भूमिका निभायी है।

यह पुस्तक मेरे माता–पिता, सबसे बड़े भाई–भाभी, मेरी पत्नी सरिता मिश्र तथा वशिष्ठ गुफा के स्वामी चैतन्यानन्द जी को सादर समर्पित है जिन्होंने मेरे व्यक्तित्व को काफी हद तक प्रभावित किया है जिससे मेरे प्रशासनिक और आध्यात्मिक जीवन का स्वरूप निर्मित हुआ है। मैं भी गुरुमहाराज पुरुषोत्तमानन्द जी के कमलवत् चरणों में श्रद्धावनत् हूँ जिनकी अदृश्य आत्मा ने सत्य के पथ पर मेरा मार्गदर्शन किया है। मैं आचार्य श्रीराम शर्मा जी, स्वामी फकीरानन्द जी, स्वामी प्रेमानन्द जी, स्वामी राम जी, स्वामी हंसानन्द जी, स्वामी दिनेशानन्द जी, फलाहारी बाबा, नरहरि बाबा और देवरहा बाबा को विस्मृत नहीं कर सकता जिनका मेरे आध्यात्मिक अस्तित्व पर गहरा प्रभाव रहा है। मैं उन तमाम अदृश्य आध्यात्मिक प्रभुओं एवं सद्गुरुओं का आभारी हूँ जिन्होंने प्रायः मेरे सपनों में प्रकट होकर मेरा मार्गदर्शन किया है। एक सार्थक जीवन के लिये मेरी खोज का पूरी सच्चाई के साथ चित्रण करते हुए मैंने यह पुस्तक लिखी है। मुझे आशा है कि आप सभी इस पुस्तक को पढ़ने में आनन्द अनुभव करेंगे।

प्रशान्त कुमार मिश्र

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
अध्याय–1	परिचय : एक सार्थक जीवन की खोज में	9
अध्याय–2	बचपन : परिवार एवं परिवेश	13
अध्याय–3	स्कूल के दिन	21
अध्याय–4	कॉलेज के दिन	25
अध्याय–5	विश्वविद्यालय के दिन	31
अध्याय–6	आईएएस की तैयारी	33
अध्याय–7	राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी का जीवन	37
अध्याय–8	जिला प्रशिक्षण	46
अध्याय–9	सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट, बाह एवं आगरा	54
अध्याय–10	जॉइंट मजिस्ट्रेट, महोबा	63
अध्याय–11	उप सचिव, सहकारिता विभाग	71
अध्याय–12	जिला मजिस्ट्रेट, पौड़ी गढ़वाल	75
अध्याय–13	जिला मजिस्ट्रेट, टिहरी गढ़वाल	85
अध्याय–14	जिला मजिस्ट्रेट, मिर्जापुर	95
अध्याय–15	जिला मजिस्ट्रेट, आगरा	121
अध्याय–16	निदेशक एवं विशेष सचिव (सूचना)	135
अध्याय–17	विशेष सचिव (ग्रामीण विकास)	142
अध्याय–18	निदेशक (युवा), भारत सरकार और महानिदेशक, नेहरू युवा केंद्र संगठन	144
अध्याय–19	आयुक्त, बिक्री–कर, उत्तर प्रदेश	154
अध्याय–20	सचिव, संस्थागत वित्त	180

अध्याय–21	प्रबन्ध निदेशक, यूपी डेस्को (UP DESCO)	187
अध्याय–22	सचिव, पंचायती राज और युवा कार्यक्रम	193
अध्याय–23	सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी	196
अध्याय–24	सीईओ, नौएडा	199
अध्याय–25	सचिव, सहकारिता	216
अध्याय–26	दिल्ली में अपर रेजीडेंट कमिश्नर, उ.प्र.	217
अध्याय–27	मंडलायुक्त, मेरठ	224
अध्याय–28	प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम, नई दिल्ली	227
अध्याय–29	प्रमुख सचिव, सार्वजनिक उद्यम, खाद्यान्न एवं नागरिक आपूर्ति विभाग एवं आयुक्त समाज कल्याण, उत्तर प्रदेश	274
अध्याय–30	अतिरिक्त सचिव (रक्षा), भारत सरकार	276
अध्याय–31	वित्तीय सलाहकार एवं अतिरिक्त सचिव (नागरिक उड्डयन, संस्कृति, पर्यटन, पर्यावरण तथा वन विभाग, भारत सरकार	279
अध्याय–32	सचिव, संसदीय मामले, भारत सरकार	282
अध्याय–33	मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश	285
अध्याय–34	सदस्य, संघ लोक सेवा आयोग	303
अध्याय–35	अवकाश प्राप्ति के बाद जीवन	307
अध्याय–36	उपसंहार	312

अध्याय-१

परिचय : एक सार्थक जीवन की खोज में

जीवन ईश्वरत्व की ओर निरंतर यात्रा है, परिवर्तन ही जीवन का सार...

आजाद भारत में जन्म लेना मेरा सौभाग्य था। ओडिशा के भूतपूर्व जिले ढंकनाल के गाँव आठमल्लिक में 1948 में मेरा जन्म हुआ। मैं जब अपने अब तक के समग्र जीवन को पीछे मुड़ कर देखता हूँ, तो मुझे आश्चर्य होता है कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में हमारा समाज कहाँ से कहाँ निकल गया। इन दशकों में कई क्षेत्रों, जैसे विज्ञान, तकनीकी, अर्थव्यवस्था, अंतरिक्ष विज्ञान, सूचना-तकनीकी व औद्योगिक क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास हुआ। लेकिन जो सबसे महत्त्वपूर्ण बदलाव हुए, जिसके बहुत गंभीर परिणाम हुए, उन पर समाज व प्रबुद्ध वर्ग का ध्यान नहीं गया है। भौतिक विकास के क्रम में हमने उन नैतिक मूल्यों को खो दिया है जो किसी भी सभ्य समाज के आधार स्तंभ होते हैं। यह एक बेहद दुखद बात है कि अपने मूल्य तंत्र के प्रति जागरूक होने के बावजूद हमने इस बदलाव के प्रति केवल मूकदर्शक बने रहना स्वीकार कर लिया है। दुनिया ने काफी तबाही झेली है-न केवल हिंसक लोगों की गतिविधियों के कारण वरन् अच्छे लोगों की चुप्पी के कारण भी। सर्वत्र व्याप्त भ्रष्टाचार जो वर्तमान में समाज के हर कोने में फैला हुआ है, कई बार मुझे खुद के प्रति, समाज के प्रति और राज्य को संचालित करने वाली संस्थाओं के प्रति उदासीन, रूखा और भयभीत कर देता है। समाज के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले ऐसे समर्पित व्यक्तियों, जो आवश्यकता पड़ने पर इस दानव के खिलाफ अकेले मोर्चा ले सकें, का समूह बनाकर मैं समाज में व्याप्त इस बुराई के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रतिबद्ध था।

मनुष्य अनिवार्यतः आध्यात्मिक प्रकृति का होता है। हम सभी में एक अंतर्निहित देवत्व होता है, पर दुर्भाग्य से हम इसे भूल चुके हैं और हमने स्वयं को अपनी वास्तविक प्रकृति से दूर कर लिया है। आध्यात्मिकता ही जीवन का सार है और जब यह समाप्त होती है हम भी समाप्त हो जाते हैं। डॉ. एस राधाकृष्णन के शब्दों में, ''यह विश्व आस्था में संदेहवाद, नैतिकता में अराजकता

और सत्य में अविश्वास से पीड़ित है।'' हम यह नहीं जान पाते कि संकट के समय क्या करें और किस मार्ग का अनुसरण करें।

प्राय: मैं यह सोचता हूँ-मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? और किस उद्देश्य से आया हूँ? यह सवाल मेरे मन-मस्तिष्क में तब से घुमड़ते रहे हैं जब से मैंने तरुणावस्था को पार किया है। मैं इस प्रसंग में एक छोटी सी घटना का विवरण देना चाहता हूँ, जो दार्शनिक भी है और मनोरंजक भी। एक किसान के पास आम का बगीचा था। एक दिन उसने देखा कि उसके बगीचे में एक आदमी भटक रहा है। किसान को उस आदमी पर शक हुआ, उसने उस आदमी से पूछा, ''तुम कौन हो और कहाँ से आए हो?'' आदमी ने मुस्कुरा कर जवाब दिया, ''भाई, काफी दिनों से मैं भी इन्हीं सवालों का जवाब ढूँढ़ रहा हूँ पर अभी तक मुझे भी कोई जवाब नहीं मिला है।'' यही जीवन है-सहज किन्तु रहस्यमय!

ध्यान लगाने से जुड़ा एक अनुभव मुझे 1996 में हुआ था जब सीईओ नोएडा के पद से मेरा अचानक स्थानांतरण लखनऊ में सहकारिता सचिव के पद पर हुआ था। मैं पिकअप बिल्डिंग की पाँचवीं मंजिल में गेस्ट हाउस में रुका हुआ था। चूंकि सप्ताह के अंत और छुट्टियों में गेस्ट हाउस में मैं अकेला था, अत्यधिक शांति मुझे असह्य लग रही थी। इसी क्रम में एक बार मेरे मन में ख्याल आया कि ध्यान लगाते समय अपने अब तक के जीवन को याद किया जाए। स्नान और नाश्ते के बाद मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने बीते हुए अनुभवों पर चिंतन करने लगा। अपनी स्मृतियों में पीछे लौटते हुए मैं अपनी पिछली नियुक्तियों, मसूरी में प्रशिक्षण के दिन, आईएएस की तैयारी, विश्वविद्यालय के दिन, कॉलेज और स्कूल के दिन, यहाँ तक कि अपने बचपन और माँ की गोद में बैठे होने के अनुभवों तक पहुँच गया। ध्यानस्थ अवस्था में ही मैंने अपनी माँ के गर्भ में अपने अस्तित्व की कल्पना करने और उसे महसूस करने का प्रयास किया। जिस क्षण मैंने माँ के गर्भ में अपनी अवस्थिति की कल्पना की, मैंने एक झटका सा महसूस किया और एक तीव्र रोशनी ने मुझे चकित कर दिया। विस्मय और अचंभित अवस्था में मैंने अपनी आँखें खोली। गालों पर आंसुओं की धारा थी और मैंने पाया कि तीन घंटे बीत चुके हैं। मैं पूरी तरह शांत था। मैंने बाद में इस अनुभव का तार्किक विश्लेषण किया। हो सकता है कि यह अनुभव एक मिथ्याभास या भ्रम हो या शायद आध्यात्मिकता से मेरे गहरे जुड़ाव का प्रतिबिंबन हो। अंत में मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मैंने जिस ज्योति का अनुभव किया था, वह जीवनदायिनी शक्ति थी। जब यह शक्ति भ्रूण को प्राप्त होती है

तब ही यह एक प्राणवान जीव में परिवर्तित होता है।

जीवन ईश्वरत्व की ओर एक निरंतर यात्रा है और परिवर्तन ही जीवन का नियम है। अप्रत्यक्ष ब्रह्म अपने आप में पूर्ण होता है और जैसे ही यह प्रत्यक्ष होता है, यह सापेक्षिक हो जाता है। स्थितिज ऊर्जा यानि ब्रह्म जब गतिज ऊर्जा के रूप में स्वयं को प्रकट करती है, यह जीवन के अंतहीन लौकिक स्पंदनों के माध्यम से कई रूप ग्रहण करती है। करोड़ों सालों की अपनी यात्रा में जीवन एक एक-कोशिकीय जीव से रूपांतरित होते-होते एक जटिल मानव शरीर में परिवर्तित हुआ है। इसके बावजूद, जीवन के इन समस्त रूपों में मौजूद सार-तत्व एक ही है। जीवन की इस गति में हर क्षण अनमोल है, हर दिन अर्थवान है और हर प्रकार की प्रसन्नता एक दिव्य तत्व है।

जीवन का ध्येय क्या है? क्या यह केवल खाने, पीने और खुश रहने तक सीमित है या इसका कोई और भी ध्येय है? एक सामान्य मनुष्य के लिए ऐंद्रिक सुख ही जीवन का वास्तविक उद्देश्य है। लेकिन, ऐसा मनुष्य स्वामी मुक्तानंद जी के इस कथन को भूल जाता है-

मैंने सोचा, मैं अपनी इंद्रियों की अनुभूति का मजा ले रहा हूँ
आभास नहीं था कि इंद्रियाँ मुझसे मजा ले रही हैं
मैंने सोचा, मैं आराम से समय व्यतीत कर रहा हूँ
आभास नहीं था कि समय मुझे व्यतीत कर रहा है।

ऐंद्रिक सुख और भौतिक समृद्धि जीवन का ध्येय नहीं हो सकती। भौतिक समृद्धि पर अत्याधिक जोर के कारण एक के बाद एक सभ्यताएँ अपरिहार्य विनाश को प्राप्त होती चली गईं। इस मामले में केवल और केवल भारत ही एकमात्र अपवाद है। सदियों लंबे गुलामी के दौर के बावजूद भी, आज भी यह टिका हुआ है। भौतिक समृद्धि के प्रति अत्याधिक आसक्ति, विलासिता से प्रेम और अत्यधिक भोग मनुष्य को अवमूल्यित कर देते हैं। मानव जीवन कहीं अधिक वृहद उद्देश्यों के लिए है। जैसा कि महाकवि तुलसीदास ने कहा है- 'बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सद्ग्रंथनि गावा'। अर्थात् मनुष्य योनि वह ईश्वर प्रदत्त अनोखा उपहार है जो देवताओं को भी नहीं प्राप्त होता। इस अमूल्य जीवन को अकारथ नहीं जाने देना चाहिए। आदि शंकराचार्य, स्वामी विवेकानंद, रामानुजम् आदि महापुरुषों के जीवन इसी बात (सत्य) का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इन सभी महापुरुषों ने अल्पायु में ही जीवन त्यागा, पर उन्होंने अपनी अमिट

छाप छोड़ी। जीवन के ही अर्थ को समझना जीवन का ध्येय है। जब हम जीवन के अर्थ को समझ जाएँगे, हम यह पाएँगे कि हमारा लक्ष्य बहुत सरल है–और वह है दूसरों का हित करना। दूसरों को बाँटने और देने में एक अद्‌भुत सुख प्राप्त होता है। समस्त प्रकृति, सूर्य, पवन और जल आदि सभी बिना प्रतिफल के केवल दूसरों का हित करते हैं। ईश्वर ने हमें जो कुछ दिया है, उसके लिए हम कभी उसे धन्यवाद नहीं देते। ईश्वर प्रदत्त चीजों को हम तय मान कर चलते पर हम अपना अधिकार समझते हैं। लेकिन जिस क्षण हम जीवन के वास्तविक ध्येय को समझ और महसूस कर लेंगे, उसी क्षण खुद ब खुद हमारा मस्तक विनम्रता और आभार में झुक जाएगा।

आठमल्लिक, ओडिशा स्थित मेरा पैतृक निवास

अध्याय-२

बचपन : परिवार और परिवेश

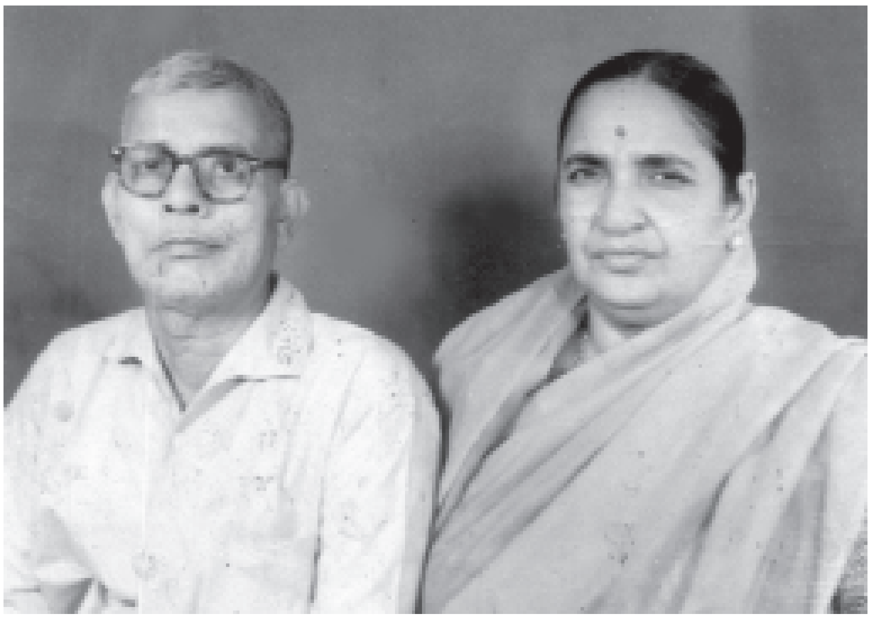

पिता-माता श्री किशोर चन्द्र मिश्र एवं श्रीमती स्वर्णलता मिश्र

अपने बचपन के दिनों से तुलना करने पर, मैं प्राय: सोचता हूँ कि मेरे बच्चे दुर्भाग्यशाली रहे कि उनका जन्म और लालन-पालन बड़े शहरों में हुआ।

मेरा जन्म 1948 में उस दिन हुआ था जो संयोगवश मेरे नानाजी की पुण्य तिथि भी थी। इसी कारण मेरी बुआ मुझे सना बपा (छोटे पिताजी) भी कह कर बुलाती थीं। एक बच्चे के रूप में और बाद में भी, मैं सपने बहुत देखा करता था। इन सपनों में साँपों, बैलों, लाशों से लदी गाड़ियों, सिपाहियों और संन्यासियों की भरमार होती थी। एक बार मैंने एक सपने में एक नाग को देखा जो बिना किसी को नुकसान पहुँचाए एक मंदिर की तरफ बढ़ रहा था। एक दूसरे सपने में मैंने देख कि एक बैल एक खेत में काम कर रहा था। ऐसे ही एक सपने में मैंने लाशों से भरे तांगे को कब्रिस्तान पहुँचाया, एक दूसरे सपने में एक सिपाही

के रूप में एक युद्ध लड़ा और चोटें भी खायीं। इन सपनों में प्राय: एक संन्यासी का सौम्य और मुस्कुराता चेहरा मेरे सामने आता था। मैं प्राय: सोचता था कि ऐसे सपने बार-बार क्यों आते हैं। मैं न तो कोई मनोवैज्ञानिक हूँ न ही सपनों की व्याख्या की कला से परिचित हूँ, पर ऐसा प्रतीत होता है कि शायद पिछले जन्मों के अनुभव और संस्कार ही रहस्यपूर्ण रूपों में परिणत हो रहे हों।

मैंने 'आत्मा के देहान्तरण', पुनर्जन्म और पर-कायाप्रवेश जैसे शब्दों की चर्चा सुनी है। आत्मा, जो कि जीवनदायिनी शक्ति है, हर व्यक्ति में स्थायी, अचल और अक्षय रूप में रहती है। मैं जब भी जीवन पर विचार करता हूँ, मैं पाता हूँ कि तथाकथित 'मृत्यु' और कुछ नहीं बल्कि एक जीवन से दूसरे जीवन के बीच केवल एक अर्धविराम है। जब हम तथाकथित निर्जीव तत्वों को खंडित करते चले जाते हैं, हम सूक्ष्म परमाणु कणों को हासिल करते हैं, शायद यही हाल में खोजे गए 'गॉड पार्टिकल हैं। जब ऐसे कण हर कहीं मौजूद हैं, चीजों का विनाश कैसे हो सकता है। ईश्वर द्वारा निर्मित छोटी से छोटी वस्तु में भी विनाश और निर्माण का कार्य होता रहता है। शरीर पाँच तत्वों से मिलकर बना होता है-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। तथाकथित मृत्यु में और कुछ नहीं होता बल्कि केवल यह तत्व विघटित होकर पुनर्संगठित होते हैं और इस प्रकार आत्मा के एक नए रूप का उदय होता है। बौद्ध धर्म यह कहता है कि जीवन और मृत्यु न केवल समान हैं बल्कि एक भी हैं। दरअसल बौद्ध धर्म की सारी 84000 शिक्षाएँ केवल जीवन और मृत्यु के रहस्य पर ही केन्द्रित हैं। जीवन की रहस्यमय प्रकृति अतुल्य है। जिस प्रकार पतझड़ में वृक्ष से पत्ते गिर जाते हैं किन्तु वसंत में पुन: हरे भरे होकर निकलते हैं, वैसे ही जीवन और मृत्यु का चक्र अनंत काल तक चलता रहता है।

मेरा जन्म एक बड़े मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। मेरी माँ बताती थी कि जब मेरा जन्म होने वाला था, उन दिनों एक संन्यासी मेरे घर में पधारे और कुछ दिनों तक रहे थे। जब उन्होंने देखा कि मेरी माँ गर्भावस्था में हैं, तो उन्होंने उन्हें एक मंत्र बताया जिससे होने वाला बालक कुशाग्र बुद्धि और आध्यात्मिक प्रवृत्ति का बने। हमारे घर में साधु-संतों का हमेशा ही स्वागत किया जाता था। बचपन से ही मैंने कई साधुओं को अपने घर में भोजन-विश्राम करते देखा। खास तौर पर, बलिया दास, धर्मदास, दमन बाबा, जानकी माता और कैनी फुल्लिया बाबा जैसे संत मुझे याद हैं जिनका आशीर्वाद हमारे परिवार पर हमेशा बना रहा। मेरे अभिभावकों ने इन संतों की हमेशा ही मुस्कुराते हुए और पूरे समर्पण के साथ सेवा करने में कोई संकोच नहीं किया। मेरे पिता अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति के थे-पूजा में

काफी समय व्यतीत करते थे, लेकिन मेरी माता धार्मिक होने के बावजूद व्यावहारिक दृष्टिकोण रखती थीं। पिताजी प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट होने के बावजूद एकदम सादा और संयमी जीवन व्यतीत करते थे। 56 वर्ष की आयु में सेवा-निवृत्त होने के समय उनके पास संपत्ति के रूप में पुश्तैनी घर और जमीन के अलावा केवल एक टेबल, चार कुर्सियाँ और एक साइकिल थी। उनके पास एक ट्रांजिस्टर तक नहीं था। जब मुझे विश्वविद्यालय में नेशनल स्कॉलरशिप हासिल हुई, तब मैंने एक ट्रांजिस्टर खरीद कर पिताजी को भेंट किया तो वे बहुत खुश हुए। वह ट्रांजिस्टर उनके पास मृत्यु पर्यंत बना रहा। वे वास्तव में एक महान आत्मा थे।

मेरे पिता किशोर चन्द्र मिश्र माँ काली के उपासक थे। उनका पूरा जीवन माँ काली की उपासना को समर्पित रहा। बचपन में मैंने उन्हें दंड यात्रा के दौरान नृत्य करते देखा था। मुझे याद है, वे प्रतिवर्ष मेरु के शुभ अवसर पर दंड नृत्य में शामिल होने के लिए गाँव जाने को एक कर्तव्य मानते थे। इस प्रकार वे अपने तरीके से दंड नृत्य को संरक्षण प्रदान करते थे। दंड यात्रा शब्द से ही मेरे मन में बचपन की यादें ताजा हो जाती हैं, जब मैं अपने गाँव में दंड नृत्य में शामिल हुआ करता था। यह ओडिशा का, खासकर पश्चिमी ओडिशा का एक महत्त्वपूर्ण लोक नृत्य है।

हमारा परिवार पाँच भाइयों और छह बहनों का एक बड़ा परिवार था। मेरे चाचा के छह बेटे और दो बेटियाँ और मेरे पिता के बड़े भाई के तीन बेटे और तीन बेटियाँ हैं। मेरे दादाजी के समय में, सभी भाई अपने परिवार के साथ एक ही घर

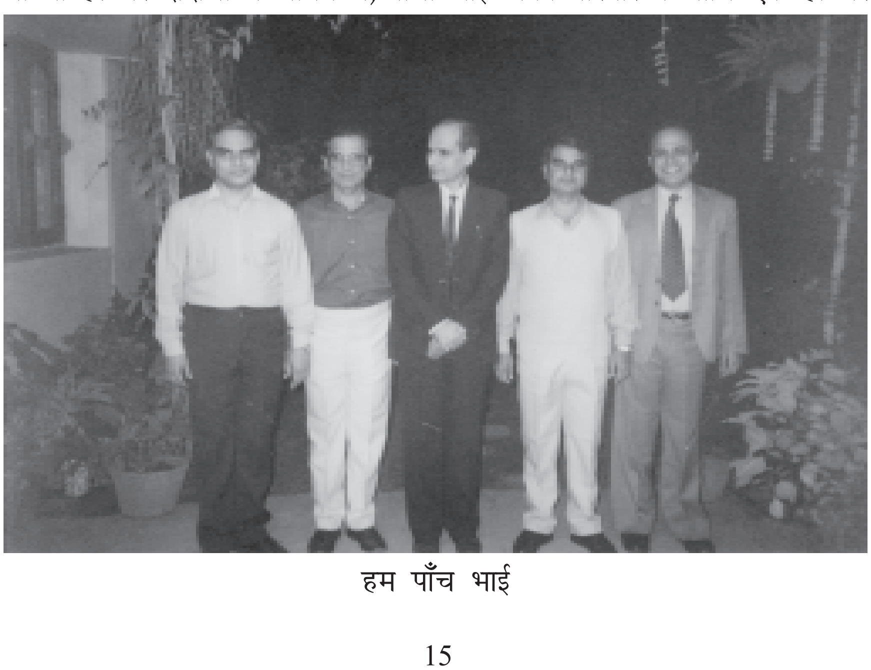

हम पाँच भाई

में रहते थे। परिवार के विस्तार के साथ, एक ही गाँव में एक-दूसरे के आसपास वे तीन घरों में रहते थे लेकिन प्रबंधन और भूमि का स्वामित्व संयुक्त था। संयुक्त परिवार प्रणाली ने मुझे प्रेम, स्नेह, ईमानदारी और बड़ों के प्रति सम्मान, सहयोग, अनुशासन और भावनात्मक बंधन जैसे मूल्यों से अभिसिक्त किया है। मेरी सबसे बड़ी बहन, बुलानी, मेरी सभी सुख-सुविधाओं की देखभाल करती थीं। वास्तव में, उन्होंने ही मुझे शिष्टाचार सिखाया, मुझे भावनात्मक सुरक्षा प्रदान की और एक माँ का प्यार और स्नेह दिया। मेरे सबसे बड़े भाई, रमाकान्त मिश्रा, जिन्हें प्यार से 'बाबुला दादा' कहा जाता है, मेरे गुरु, दार्शनिक और मार्गदर्शक रहे हैं।

हमारा परिवार एक संयुक्त मातृसत्तात्मक परिवार था जिसमें मेरी माँ ने सभी सदस्यों के संरक्षण, सुरक्षा और शिक्षा में एक गतिशील भूमिका निभाई। वह बहुत बुद्धिमान, अत्यधिक आध्यात्मिक लेकिन व्यावहारिक और एक सख्त अनुशासक थीं। वह बहुत सीधी, बेहद ईमानदार थीं और बुरे को बुरा करने वाली स्पष्टवक्ता थीं। माँ, पिता और सबसे बड़े भाई के बिना मैं वह नहीं होता जो आज हूँ। पिता की सादगी, आध्यात्मिकता और ईमानदारी और माँ का अनुशासन, स्पष्ट और व्यावहारिक दृष्टिकोण, इन सबके प्रभाव के कारण ही मैं वह हो पाया जो आज हूँ। मेरे सबसे बड़े भाई की ईमानदारी, निष्पक्षता और एक प्रशासक के रूप में छोटे-छोटे विवरण पर भी ध्यान देना और इन सब से बढ़कर उनके आदर्शवाद, उनकी सरलता और निःस्वार्थता ने मुझ पर एक जबरदस्त प्रभाव डाला।

मेरे बचपन के अधिकांश दिन आठमल्लिक, बोलंगीर, संबलपुर और ढेंकनाल में बीते। आठमल्लिक एक खूबसूरत जगह है जो तीन तरफ घने आरक्षित वन और एक ओर दक्षिण में विशाल महानदी से घिरा हुआ है। पंचधारा पर्वत अपने चमकदार हरे जंगल और पहाड़ियों को चीरती हुई इसकी धाराओं के कारण हमेशा आनंद का स्रोत प्रतीत होता है। इस प्रकार मेरे प्रारंभिक वर्ष प्रकृति की गोद में व्यतीत हुए। प्रकृति की निकटता जीवन में खुशी, प्रसन्नता और शांति ले कर आती है। मैंने अपने गाँव में अत्यधिक गरीबी भी देखी है जिसने मुझे गरीबों की दुर्दशा के प्रति संवेदनशील बनाया है। ग्राम्य जीवन ने मुझे सादगी, करुणा, बंधुत्व, आध्यात्मिकता और रोमांच सिखाया और मुझे आदर्शवादी बनाया, वंचितों के प्रति संवेदनशील और जीवन में कठिन परिस्थितियों के अनुरूप खुद को ढालने लायक नर्म बनाया। पर अफसोस! गाँव के जीवन की मासूमियत अब उस शहरी जीवन की जटिलताओं के बीच खो गई है जो यांत्रिक, व्यक्तिवादी, स्वार्थी और सामाजिक-नैतिक संवेदनाओं से रहित है।

मुझे अक्सर आश्चर्य होता है कि क्या बड़े शहरों में पैदा हुए और पले-बढ़े मेरे बच्चे दुर्भाग्यशाली हैं? वे बुद्धिमान, कुशाग्र और सूचनाओं से परिपूर्ण हो सकते हैं लेकिन, जैसा कि मैं देखता हूँ, जीवन में उनका विकास एकांगी हो गया है; एक आयामी और समग्रता से रहित। मेरे बच्चे प्रकृति माँ के सुखदायक प्रभाव, एक संयुक्त परिवार की प्यार भरी देखभाल और जीवन के वास्तविक यथार्थ से वंचित लगते हैं। मैं नहीं जानता कि शहरीकरण की ओर चल रही इस पागल दौड़ में हारने वाला कौन है?

भारत सरकार के एक निदेशक के रूप में, मैंने संयुक्त राज्य अमेरिका के युवाओं में मादक पदार्थों की लत की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए सचिव, सामाजिक न्याय और अधिकारिता के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में वहाँ का दौरा किया। हमने अमेरिका के विभिन्न हिस्सों में 14 दिन बिताए और राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान के निदेशक से मुलाकात की। जब अमेरिकी अधिकारी ने हमारे सचिव से पूछा कि वह अपनी पत्नी के साथ कितने समय से रह रहे हैं, तो उन्होंने जवाब दिया कि वे पिछले 32 वर्षों से एक साथ रह रहे हैं और अंतिम सांस तक साथ ही रहेंगे। अमेरिकी निदेशक इस पर आश्चर्यचकित रह गए और टिप्पणी की कि अमेरिकी समाज में, इस अवधि में कम से कम दो या तीन पत्नियाँ बदल जाएँगी। इसके अलावा, उनकी राय में युवाओं में मादक पदार्थों की लत का वास्तविक समाधान एक मजबूत, स्थिर पारिवारिक जीवन में निहित है जो बच्चे को जीविका और भावनात्मक जुड़ाव और सुरक्षा प्रदान करता है।

यह अफसोस की बात है कि आर्थिक विकास और भौतिकवादी खोज के तनाव के तहत संयुक्त परिवार प्रणाली विघटित हो रही है और इसका स्थान न्यूक्लियर परिवार लेता जा रहा है। इस स्तर पर भी हम संयुक्त परिवार प्रणाली के कुछ महत्त्वपूर्ण गुणों को संरक्षित करने के बारे में सोच सकते हैं। यदि हम धार्मिक और पारिवारिक कार्यों में भाग लेने के लिए और मोबाइल, व्हाट्सएप और ईमेल के माध्यम से संयुक्त परिवार के सदस्यों के संपर्क में रहने के लिए तथा वर्ष में एक बार अपने पैतृक स्थान पर एकत्रित होना सुनिश्चित करते हैं तो ऐसे प्रयास निश्चित रूप से संयुक्त परिवार प्रणाली को टूटने से बचाएँगे। इससे इसके सम्पूर्ण रूप को बरकरार नहीं रखा जा सकता है लेकिन निश्चित रूप से इससे इसके सार को संरक्षित किया जा सकता है।

मैंने अपने जीवन के शुरुआती 17 साल आठमल्लिक में बिताए। आत्म-निरीक्षण करने पर मुझे लगता है कि कि मैं इस तरह के विविध समृद्ध अनुभवों के लिए

भाग्यशाली हूँ। मुझे घर के पास का तालाब याद है जहाँ मैं स्कूल जाने से पहले हर सुबह डुबकी लगाता था। मैं तालाब से 10 से 15 कमल के फूल तोड़ता था और उन्हें अपने परिवार के देवता 'रुद्र भवानी' को अर्पित करता था। यह अभ्यास वर्षों तक जारी रहा जब तक मैं महेंद्र हाई स्कूल से मैट्रिक पास नहीं हो गया। मैंने महसूस किया कि इस साधारण भेंट का मेरी आध्यात्मिक भावनाओं के विकास में जबरदस्त प्रभाव पड़ा, जो मेरे भीतर जीवन पर्यंत बना रहा। दैवीय शक्ति जिन रूपों में संचालित होती है वह विचित्र हैं।

चूंकि मेरे पिता ने ऐसी नौकरी की जिसमें तबादले होते थे, इसलिए मैंने कुछ साल बोलंगीर, संबलपुर और ढेंकनाल में भी बिताए। एक बार जब मैं मुश्किल से चार साल का था, तो गणेश चतुर्थी पर मेरे पिता मुझे अक्षर ज्ञान की शिक्षा देने के लिए हमारे पूजा कक्ष में ले गए। एक नया स्लेट और पेंसिल विशेष रूप से इस उद्देश्य के लिए खरीदा गया था। विघ्नराज और देवी सरस्वती की स्तुति में मंत्रोच्चार करते हुए, मेरे पिता ने मेरे दाहिने हाथ से पेंसिल को पकड़कर 'ऋद्धि और सिद्धि' (समृद्धि और ज्ञान) शब्द लिखवाया। अक्षरों की दुनिया में एक बच्चे को प्रवेश कराने का यह एक उत्तम तरीका है, लेकिन अफसोस अधिगम के प्रारम्भ की ऐसी सुंदर प्रथा आधुनिकता के नाम पर गायब हो गई है।

मैं कक्षा दो तक संभलपुर पुलिस लाइन स्कूल की शिशु श्रेणी में पढ़ा। आज के दौर की नर्सरी और केजी की कक्षाओं की तरह ही उन दिनों भी शिशु श्रेणी की प्रणाली थी जहाँ पहली बार स्कूल जाने वाले बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जाता था। मुझे क्लास का पहला दिन याद है। मैं अनजान जगह के कारण घबराया हुआ महसूस कर रहा था और सिसकने लगा था। हेड मास्टर ने आकर स्नेहपूर्वक मेरे सिर पर हाथ फेरा और 3-4 बिस्कुट सौंपे। उन्होंने मुझे सांत्वना दी और मुझे अपने बड़े भाई गामा दादा के साथ दो सप्ताह तक बैठने की अनुमति दी जो कक्षा-दो में पढ़ रहे थे। 14 दिनों के बाद मुझे अपनी कक्षा में स्थानांतरित कर दिया गया। बच्चे के मनोविज्ञान को संभालने का यह एक अच्छा तरीका था।

हम अपनी दादी माँ के घर में रह रहे थे और माँ मुझे हर दिन पढ़ाती थी। मुझे स्पष्ट रूप से याद है कि मैं उड़िया में अंक 7 नहीं लिख सकता था। मैं रोया लेकिन मेरी माँ ने मुझे झिड़क दिया और मुझे फिर से कोशिश करने के लिए मना लिया। कुछ प्रयासों के बाद मैं सफल हुआ और मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं रही। उसने मुझे समझा दिया कि असफलता के बावजूद बार-बार प्रयास करने से निश्चित रूप से वांछित परिणाम प्राप्त होगा। यह जीवन का एक बड़ा सबक था।

मेरी माता स्वर्णलता मिश्र बहुत आध्यात्मिक थीं और मुझे विशेष रूप से कार्तिक पूर्णिमा के दौरान संबलपुर के विभिन्न मंदिरों के दर्शन कराने के लिए ले जाती थीं। मेरे पिता ने हमें रामायण और महाभारत से अवगत कराया और हमें रात में इन महाकाव्यों के बारे में बताया। मेरे पिता बिल्कुल भी सख्त नहीं थे और हम पर अपने प्यार और स्नेह की बौछार कर देते थे। दोनों माता–पिता दयालु और व्यापक विचारों वाले थे और हमें महीने में एक फिल्म देखने की अनुमति देते थे, विशेषकर पौराणिक और आध्यात्मिक विषयों वाली फिल्में। मुझे रामविभा, रामबाण छोड़ेंगे, जय हनुमान, वीर भीमसेन और इसी तरह की अन्य फिल्में पसंद थीं। मैं इनके प्रसंग पढ़ने में इतना डूब जाता था कि कक्षा–तृतीय में, गर्मी की छुट्टी के दौरान, मैंने उड़िया में लिखी गई रामायण के सभी सात खंडों को पढ़ कर समाप्त कर दिया। दशहरा और होली त्योहारों के दौरान गाँव में रामलीला और कृष्णलीला को देखना मुझे बहुत अच्छा लगता था। मैंने भी एक बार रामलीला में भाग लिया और बालक राम की भूमिका निभाई। हर सुबह और शाम हमारा घर मंत्रों के जाप और घंटियों और शंख की ध्वनि से गुंजायमान रहता था। रथयात्रा, गणेश और सरस्वती पूजा, दशहरा, होली, शिवरात्रि और मेरु यात्रा सभी को बहुत धूमधाम से मनाया जाता था। मेरे घर और गाँव के आध्यात्मिक माहौल ने ईश्वर और दैवीय शक्ति पर मेरे विश्वास और श्रद्धा की राह बनाई।

आठमल्लिक एक विशिष्ट कृषि प्रधान समाज था जहाँ लोग गरीब होते हुए भी सरल और ईमानदार थे। पूरा गाँव एक विस्तारित परिवार की तरह था जहाँ हर कोई एक दूसरे को जानता था। हम घरेलू और खेत मजदूरों के साथ भी एक ही कमरा साझा कर लेते थे। हमारे परिवार की नौकरानी पक्नी हमारे लिए एक माँ की तरह थी। उसके पास हमें नियंत्रित करने के लिए अभिभावक की शक्तियाँ होती थीं। एक और नौकर, कन्हिया काका, बचपन से लेकर अपनी मृत्यु तक हमारे साथ रहे। आज भी हम उनके परिवार के साथ अपने रिश्ते को बनाए रखते हैं।

जब पिता 1966 में सेवानिवृत्त हुए, तब मैं और मेरे तीन भाई कॉलेज में थे। सबसे बड़े भाई, 1957 बैच के एक IAS अधिकारी रमाकांत मिश्र और मेरी भाभी सत्यभामा मिश्र ने अपनी पूरी जिंदगी हमारी शिक्षा और उत्थान के लिए बलिदान कर दिया। मैं उन्हें अपने अभिभावक के रूप में मानता हूँ। उन्होंने मुझे बचपन के दिनों से लेकर 1972 में IAS अधिकारी बनने तक मार्गदर्शन दिया।

माँ ने हर अतिथि को भगवान (अतिथि देवो भव:) के रूप में देखा। एक बच्चे के रूप में, मैंने देखा है कि हर रविवार को परिसर में जो पहला भिखारी

आता था उसे वे आँगन में आमंत्रित कर वस्त्र, अन्न और धन प्रदान करती थीं। भिक्षा के लिए आया कोई भी भिखारी, किसी भी दिन, खाली हाथ नहीं गया। दरअसल मेरे भाइयों और बहनों के बीच इतनी प्रतिस्पर्धा थी कि हर कोई भिखारी को कुछ देने के लिए दौड़ पड़ता था। जब हमारे गाँव के गरीबों ने हमारी पाँच एकड़ जमीन पर अतिक्रमण किया, मेरे परिवार ने तब भी कोई कदम नहीं उठाया। वास्तव में, पिता ने स्कूल बनाने के लिए खुशी-खुशी पूरी जमीन दान कर दी।

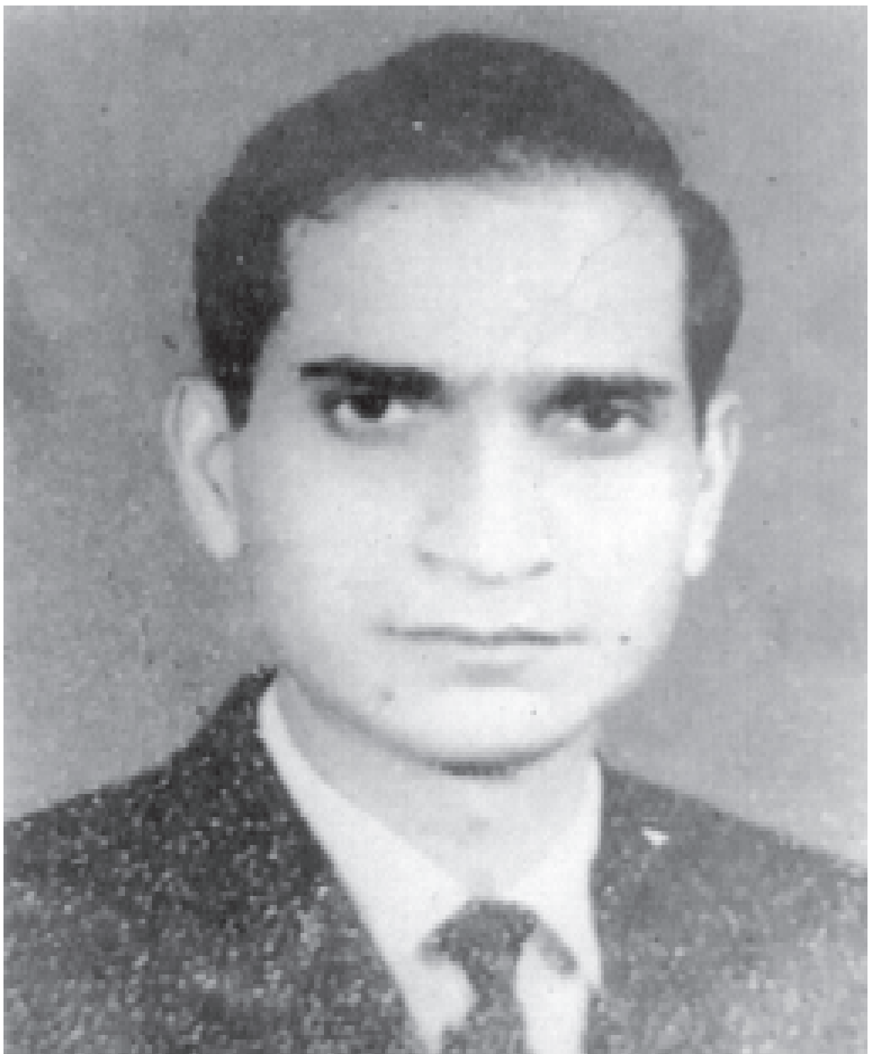

हमारे सबसे बड़े भाई श्री रमाकान्त मिश्र

अध्याय-३

स्कूल के दिन

मैं यह जानने के लिए उत्सुक हूँ कि क्या आधुनिक समय के शिक्षक अपने छात्रों की देखभाल ठीक उसी प्रकार करते हैं जैसी देखभाल हमारे समय के शिक्षक किया करते थे। यह पेशा व्यवसायीकरण में परिवर्तित हो गया एवं शिक्षक-छात्र सम्बन्ध (इसकी बलि चढ़ गए) ही इसका पहला शिकार हुआ है।

मेरे बचपन के दिनों का वर्णन तब तक अधूरा रहेगा जब तक मैं टाउन स्कूल और महेंद्र हाईस्कूल में अपने अनुभवों को दुबारा याद नहीं करुँगा। जब मैं लोअर प्राइमरी स्कूल में था तब स्कूल का भवन कच्चा (फूस का) था और हम मिट्टी के फर्श पर बैठा करते थे। उस समय न डेस्क थी, न बेंच थी और न ही आधुनिक सुविधाएँ थीं। साथ ही कोई शुल्क भी नहीं लगता था। हालांकि आधुनिक मानकों के अनुसार जहाँ तक बुनियादी ढाँचे की बात आती है तो मेरा स्कूल किसी हिसाब से उसके आस-पास का भी नहीं था लेकिन इसने आईएएस अधिकारियों, इंजीनियरों, डॉक्टरों और प्रोफेसरों का निर्माण किया। शिक्षक अनुशासन प्रिय और अच्छी शिक्षा प्रदान करने की ओर सख्त थे। हमें पशु-पक्षियों को देखने, नदी के किनारे बाढ़ आदि को समझने के लिए जंगल में ले जाकर प्रकृति का अध्ययन करने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया। हमें कहानी और नाटक के माध्यम से कई उपदेश दिए गए। मैं प्रथम इसी ग्रामीण स्कूल में लोकतंत्र से रूबरू हुआ। एक लड़के को मॉनिटर के रूप में नामित किया जाता था और उसकी जिम्मेदारी होती थी कि हर दिन सामूहिक प्रार्थना का संचालन वही करेगा। किसी को मालूम नहीं होता था कि उस दिन प्रार्थना कौन शुरू करेगा। इसलिए, हर कोई प्रार्थना को अच्छी तरह कंठस्थ कर लेता था ताकि वे सभा में किसी शर्मनाक स्थिति का सामना करने से बच सकें। एक दूसरा लड़का स्वास्थ्य मंत्री की भूमिका निभाता और प्रार्थना के बाद उसकी जिम्मेदारी यह देखने की होती थी कि लड़के-लड़कियों ने बड़े करीने से बाल कंघी की है और उनके नाखून काटे गये हैं या नहीं। ये स्वच्छता के प्रारंभिक सबक थे। इस निरीक्षण में फेल होने वाले छात्रों को मंत्री द्वारा फटकार मिलती थी। इसके बाद सूचना मंत्री के रूप में काम करने वाला एक लड़का छात्रों से अनुरोध करता

था कि वे गाँव में जन्म, मृत्यु, विवाह, आपदा, त्योहारों के आयोजन आदि महत्त्वपूर्ण घटनाओं के बारे में सभा को अवगत कराये। एक अतिथि और संस्कृति मंत्री था जिसका कार्य था कि हर वर्ग में पीने के पानी का घड़ा रखवाये। एक कृषि मंत्री था जिसका कर्तव्य यह सुनिश्चित करना था कि छात्रों के छोटे समूहों को आबंटित भूखंडों में पौधों को पानी दिया जाए और उनकी देखभाल की जाए।

स्कूल के शुरुआती दिनों से ही बच्चों को नैतिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। शिक्षक अपने कार्य के प्रति सख्त और समर्पित थे। निचली कक्षा में मैंने रामायण, महाभारत, पंचतंत्र, कथा माला, जातककथा, बीरबल कहानी, एसोप की दंतकथाओं और महान विभूतियों के बचपन के बारे में पढ़ा। हम वैदिक भारत की महान शिक्षाओं और महान ऋषियों की कहानियों से भी परिचित हुए। त्योहारों और यात्राओं में भाग लेने के अलावा हम 15 अगस्त, 2 अक्टूबर, 14 नवंबर और 26 जनवरी को उमंग के साथ मनाते थे। मेरे सबसे बड़े भाई ने स्कूल के बच्चों को सांस्कृतिक और सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करने हेतु 'विद्यार्थी सांस्कृतिक परिषद' का गठन किया। इसके माध्यम से हम तालाबों की सफाई, सड़क मरम्मत, छोटे पुलों के निर्माण और आग लगने की स्थिति में आपदा प्रबंधन जैसे सामाजिक कार्यों के संपर्क में आए। हमने स्कूल और खेल के मैदान में शवों के दाह संस्कार और वृक्षारोपण में भी भाग लिया था। जो कुछ पौधे हमने लगाए थे, वे सैकड़ों पक्षियों को आश्रय-भोजन एवं राहगीर को छाया प्रदान करने वाले विशाल पेड़ बन गए हैं। जब भी मैं अपने गाँव में घूमने जाता हूँ तो इन पेड़ों को जरुर स्पर्श करता हूँ। बड़े गर्व के साथ अपने बच्चों को मैं इन पेड़ों को दिखाता हूँ।

छुट्टियों के दौरान हम नदी के किनारों या जंगल में पिकनिक मनाने जाते थे। फुटबॉल, वॉलीबॉल और क्रिकेट के अलावा, हम बचपन में काफी सारे दूसरे खेल भी खेलते थे, जैसे नामत, लंचर, शिकाबांगा, घोघोरानी, चोर-पुलिस, गुलिचप-गुलीगाला, बहुचूर, फूदा, सात डेस्क, गुल्ली डंडा और कंचे। मछली पकड़ने में भी मुझे काफी मजा आता था। चूंकि गाँव में तालाबों और नदियों की कमी नहीं थी, इसलिए हम बचपन से ही तैराकी में निपुण बन गए। एक दिन मैं अपने बड़े भाइयों के साथ नहाने के लिए तालाब में गया। उस समय मैं तैराकी सीख ही रहा था, लेकिन अचानक मैं फिसल गया और तालाब के गहरे हिस्से में डूबने लगा। उस दौरान मैं तैरना नही जनता था, इसलिए कुछ समय के लिए उसी तरह पानी में ही रह गया। मुझे लापता पाकर, मेरे सभी भाइयों ने मेरी तलाश में गोताखोरी शुरू कर दी। सौभाग्य से, मेरे बड़े चचेरे भाई ने मुझे बचा

लिया। मैं मर भी सकता था, लेकिन भगवान की कृपा से मेरी जान बच गई।

ब्रिटिश शासन काल में आठमल्लिक राजा महेंद्र सिंह देव द्वारा शासित एक छोटी रियासत थी जहाँ उनके पौत्र किशोर चंद्र सिंह देव बाद में राजा बने। वे उदार एवं दयालु थे और अपने विषयों की जानकारी रखने में गहरी रुचि लेते थे। शुरुआत में गाँव में एक मिडिल स्कूल हुआ करता था, जो आजादी के बाद हाईस्कूल बन गया जिसका नाम महेंद्र हाईस्कूल रखा गया। मैंने यहाँ कक्षा 4 से कक्षा 11 तक पढ़ाई की। हालांकि यह एक सहशिक्षा स्कूल था पर मैंने कभी किसी लड़की से बात नहीं की थी। वास्तव में, कोई यह विश्वास भी नहीं करेगा कि मैंने आईएएस में शामिल होने तक कभी किसी लड़की से बात नहीं की थी! भले ही इस विशेषता ने मुझे अध्ययन पर अधिक ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाया, लेकिन इस स्वभाव ने विशेष रूप से महिलाओं के बीच मेरी मिलनसारिता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला। शादी के बाद मेरी पत्नी, सरिता के सतत् प्रयत्न से इस व्यवहार में काफी परिवर्तन आया।

मुझे उन शिक्षकों से काफी कुछ सीखने को मिला जो अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति ईमानदार और समर्पित रहते थे। विशेष रूप से, हमारे घर के ठीक सामने ही रहने वाली श्रीमती लक्ष्मी राव, जिन्हें 'मस्तरानी मामा' भी पुकारा जाता था, मेरी पढ़ाई पर कड़ी नजर रखती थीं। वह सख्ती से काम लेने वाली शिक्षिका थीं लेकिन दिल की नरम थीं। मैं रात के एक या दो बजे तक पढ़ाई करता था। रात ग्यारह बजे श्रीमती राव मुझे सोने की सलाह देती थीं और मुझे आगाह करती थीं कि अगर मैं उनकी बात नही मानूँगा तो बीमार पड़ जाऊँगा। आधी रात को फिर से वे मुझे बिस्तर पर जाने के लिए आग्रह करती थीं। एक-दो बजे अगर वह मुझे जगा हुआ पाती थीं तो वे डांट कर बिस्तर पर जाने के लिए कहतीं! मुझे आश्चर्य है कि शायद ही आधुनिक समय के शिक्षक छात्रों की ऐसी देखभाल कभी कर भी पाएँगे। यह पेशा व्यवसायीकरण में परिवर्तित हो गया एवं शिक्षक-छात्र का सम्बन्ध ही इसका पहला शिकार बना है।

उन दिनों मेरे स्कूल में गतिविधियों की कमी नहीं थी। अकादमिक कार्यकलापों के अलावा पीटी क्लासेज, एसीसी और स्काउट्स ट्रेनिंग, एवं हर शनिवार को वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ होती थीं और इंटर हाउस फुटबॉल, वॉलीबॉल और कबड्डी मैच भी नियमित रूप से आयोजित किए जाते थे। गणेश और सरस्वती पूजा जैसे उत्साह के साथ मनाये जाते थे। जिसके बाद रात में दावत का आयोजन किया जाता था। विद्यार्थियों को जीवन के प्रति संतुलित दृष्टिकोण

रखने के लिए प्रोत्साहन हेतु वार्षिक खेल आयोजन किए जाते थे। वे सांस्कृतिक गतिविधियों और नाटकों में भी भाग लेते थे। अध्ययन, अनुशासन और पाठ्येतर गतिविधियों पर समान रूप से जोर दिया जाता था।

मैं तीसरी कक्षा तक अच्छा छात्र नहीं था लेकिन अचानक कक्षा 4 की परीक्षा में रैंकिंग हासिल कर अपनी स्थिति में सुधार ले लाया। 5वीं क्लास में जब मैंने छमाही परीक्षा में पहला स्थान हासिल किया तो मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया और इसके बाद मैंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। हर साल मैं भगवान की कृपा और अपने माता-पिता और शिक्षकों के आशीर्वाद से कक्षा में पहले स्थान पर आता था। मैं न केवल पढ़ाई में बहुत अच्छा था बल्कि निबंध लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिता और कहानी लेखन आदि में भी मैंने विभिन्न पुरस्कार प्राप्त किये। मैं खेलों में भी सर्वोत्तम रहा।

आम तौर पर ग्रामीण वर्ग के लड़के, विशेष रूप से वे लोग जिन्होंने अपनी मातृभाषा में अध्ययन किया, वे आमतौर पर अंग्रेजी में दक्ष नहीं होते हैं। मेरे अंग्रेजी शिक्षक ने अच्छे छात्रों को प्रोत्साहित करने की ठान ली थी एवं इसके लिए उन्होंने एक तरकीब अपनाई, जिसमें वे उन छात्रों के नाम ब्राइट रजिस्टर में रखते थे जो अंग्रेजी में अच्छे थे और बाकी जो बुरे थे उनके नाम ब्लैक रजिस्टर में डालते थे। मेरी हर बार की मेहनत के कारण मेरा नाम ब्राइट रजिस्टर में होता था।

ओडिशा में एक परंपरा के अनुसार जो मैट्रिक बोर्ड परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ दस स्थानों में आते थे, उनका परिचय और तस्वीर अखबार में प्रकाशित होते थे। 8वीं क्लास से ही, मैंने अखबार में अपनी फोटो देखने का सपना देखना शुरु कर दिया था। मैंने इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत की, लेकिन अफसोस की बात यह थी कि त्रिकोणमिति परीक्षा में 10 अंक का एक सवाल गलत हो जाने के कारण, मैं इसे साकार नहीं कर पाया। मैं अखबार में अपनी जगह नहीं बना पाया। मैट्रिक की परीक्षा में अपने परिवार में सबसे प्रथम मैंने ही फर्स्ट डिवीजन प्राप्त किया था इसके बावजूद मैं फूट-फूट कर रोने लगा। मेरे चाचा, पिता और बड़े भाई ने मुझे यह कहकर सांत्वना दी कि यह एक बड़ी उपलब्धि है क्योंकि परिवार में पहली बार मैंने ही फर्स्ट डिवीजन हासिल किया। असफलता ने मुझे निराश किया लेकिन केवल क्षण भर के लिए। मैंने विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने का निश्चय किया। असफलता हमें बड़ा सबक सिखाती है। असफलता से सीखते हुए, हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का लिए दृढ़ प्रयास कर सकते हैं और इसी में व्यक्ति की सच्ची भावना छुपी होती है।

अध्याय–४

कॉलेज के दिन

सवाल यह है कि क्या आप बर्ट्रांड रसल जैसे महान दार्शनिक बनना चाहते हैं या मेरी तरह एक सम्मानित क्लर्क (आईएएस अफसर)।

मैं अपने जीवन के एक बेहद महत्त्वपूर्ण दौर, यानि कॉलेज और विश्वविद्यालय शिक्षा में प्रवेश करने के लिए तैयार हो रहा था। उन दिनों न तो मोबाइल थे न ही कंप्यूटर न ही स्मार्टफोन। यहाँ तक कि गाँव के डाकघर का टेलीग्राफ सिस्टम भी मोर्स कोड से संचालित होता था। हर चीज के लिए हम डाकघर पर निर्भर होते थे। अपने बड़े भाई की सलाह पर मैंने प्री–यूनिवर्सिटी साइंस में दाखिले के लिए रैवेनशॉ कॉलेज में आवेदन दिया। यह एक प्रतिष्ठित कॉलेज था और कहा जाता था कि ओडिशा में कोई भी यदि किसी सम्मानित पद पर है तो वह जरूर ही रैवेनशॉइयन (रैवेनशॉ कॉलेज) का छात्र होगा। मेरे पिता, चाचा और भाई, सबने वहीं से शिक्षा हासिल की थी। मेरे पिता के समय में कटक तक उचित सड़क या यातायात सुविधा उपलब्ध नहीं थी। उन्हें उफनती महानदी में नाव से आठमल्लिक से कटक तक की यात्रा करनी होती थी। नाव की यात्रा में केवल जाने में कम से कम दस दिन लगते थे। इसी कारण वे केवल गर्मी की छुट्टियों में गाँव आते थे। इस से पता चलता है कि हमारे परिवार का शिक्षा के प्रति कितना गहरा समर्पण था। नयी पीढ़ी को यह समझने की जरूरत है कि उनके अभिभावकों ने कितनी तकलीफें और संघर्ष झेले हैं। चूंकि नई पीढ़ी कहीं अधिक अच्छी स्थिति में है, इसीलिए उन्हें अपने अभिभावकों से एक कदम आगे बढ़ने का निरन्तर प्रयास करना चाहिए ताकि समाज का विकास निरन्तर होता रहे।

मुझे याद है जब मैं कक्षा 8 में पढ़ता था तब मैं अपने बड़े भाई के साथ भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को देखने गया था जब वे भारतीय विज्ञान काँग्रेस को संबोधित करने आए थे। लौटते समय बड़े भाई ने मुझे रैवेनशॉ कॉलेज कटक की भव्य और आकर्षक इमारत दिखलायी। उस दिन से ही, वहाँ पढ़ने का सपना मेरे मन में बस गया। यह सपना साकार हुआ और

जुलाई 1965 में रैवेनशॉ कॉलेज कटक की प्री-यूनिवर्सिटी साइंस कक्षा में मुझे दाखिला मिला। ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने के कारण, मैं थोड़ा घबराया हुआ था। इस कारण, दाखिले की तारीख से दो दिन पहले मैं कॉलेज घूमने गया ताकि उस स्थान, वहाँ की सड़कों और दाखिले की प्रक्रिया से परिचित हो सकूँ। आखिरकार मुझे रोल नंबर 1 के साथ प्री यूनिवर्सिटी साइन्स में दाखिला मिला। मैंने रैवेनशॉ कॉलेज में चार साल तक पढ़ाई की, प्री यूनिवर्सिटी साइन्स से लेकर स्नातक स्तर पर राजनीति विज्ञान (प्रतिष्ठा) तक। मैं एक अच्छा छात्र था। प्री यूनिवर्सिटी साइन्स में मैंने भौतिकी, रासायनशास्त्र और गणित विषयों का चुनाव किया था। आज भी भौतिकी और गणित मुझे बहुत प्रिय हैं। भविष्य में मुझे क्या बनना है, इसको लेकर मेरी धारणा उस समय स्पष्ट नहीं थी। कभी मैं लेक्चरर बनना चाहता था तो कभी डॉक्टर, इंजीनियर तो कभी प्रशासक। लेकिन शनै: शनै:, अपने सबसे बड़े भाई के प्रभाव और दिशानिर्देशन में मैंने एक आईएएस ऑफिसर बनने का सपना संजोना शुरू किया।

मैंने वेस्ट हॉस्टल में रहना शुरू किया। शुरुआती दिनों में, नए माहौल से सामंजस्य बिठाने में तकलीफें हुईं। ग्रामीण बनाम शहरी जीवन, पारिवारिक बनाम हॉस्टल जीवन, उड़िया बनाम अँग्रेजी, घर का भोजन बनाम हॉस्टल का भोजन आदि के द्वंद्व काफी हतोत्साहित करते थे और कई दफा मैं निराश हो जाता था। मुझे अपने बचपन के दोस्तों, पारिवारिक वातावरण, खास तौर पर अपने परिवार के आध्यात्मिक वातावरण और सरल ग्राम्य जीवन की बहुत याद आती थी। कॉलेज में दाखिला लेते समय मेरे सबसे बड़े भाई ने जो सलाह दी थी वो मुझे याद थी। उन्होंने कहा था, ''प्रशांत, अपने कैरियर को आगे बढ़ाने के बहुत अवसर तुमको मिलेंगे, पर इसी के साथ-साथ यदि तुम जागरूक और सतर्क नहीं रहोगे तो तुम गलत संगत में पड़ सकते हो।''

उस समय कॉलेज में रैगिंग के विषय में सुना भी नहीं गया था। उन दिनों एक सक्रिय छात्रसंघ हुआ करता था। हालांकि यह एक निर्वाचित संस्था होती थी पर यह टकराव के रास्ते कभी नहीं अपनाती थी। कॉलेज चुनावों के समय का माहौल मुझे अच्छा लगा। केवल अवकाश के समय ही उम्मीदवार आते थे और छात्रों को संबोधित करते थे तथा कक्षाओं की समय सारिणी वितरित करते थे। चुनावों से जुड़ा हुआ एक बुरा पक्ष यह था कि हर उम्मीदवार को छात्रों की एक सभा, जिसे 'व्हाट आई स्टैंड फॉर' कहते थे, में संशोधन करना होता था। यह सभा

आजकल के चुनावों में उम्मीदवारों के बीच होने वाली टेलिविजन बहसों की तरह होती थी।

मैंने अपनी पढ़ाई को गंभीरता से लिया और किसी खेलकूद गतिविधि में भाग नहीं लिया। जब प्री यूनिवर्सिटी साइन्स के आखिरी इम्तेहान आए, मैं पूरी तरह से तैयार था। मेरी परीक्षाएँ बहुत अच्छी गईं और मुझे विश्वविद्यालय में अच्छा स्थान लाने की आशा थी। परीक्षा के बाद छुट्टियों का पहला हिस्सा गाँव में बीता। उसके बाद का हिस्सा मैंने बोलंगीर में बिताया जहाँ मेरे सबसे बड़े भाई जिला मजिस्ट्रेट व कलेक्टर के रूप में नियुक्त थे। जब वे निरीक्षण दौरों पर जाते तो मुझे भी साथ ले जाते थे। वे मुझे प्रशासन, इलाकों के दौरे और कैंप जीवन की बारीकियों के बारे में बताते। परीक्षाओं के परिणाम प्रकाशित होने के दिन नजदीक आते जा रहे थे और मेरी व्यग्रता बढ़ती जा रही थी। एक दिन भोर में मैंने सपना देखा कि मैं बाजार गया हूँ, बाजार में अखबार वाला चिल्ला रहा है–'पीयू रिजल्ट आ गए, पीयू रिजल्ट आ गए'! मैंने अखबार खरीदा और व्यग्रता के साथ अपना नाम और स्थान तलाशने लगा। मैंने पाया कि मैंने विश्वविद्यालय में 11वां स्थान हासिल किया था। पर यह केवल सपना था। उसी सुबह नाश्ते के बाद जब मैं बाजार गया तो मैंने देखा कि अखबार वाला सचमुच चिल्ला रहा था–'पीयू रिजल्ट आ गए, पीयू रिजल्ट आ गए'! मैंने एक अखबार खरीदा और यह देख कर हतप्रभ रह गया कि मेरा नाम सचमुच में 11वें स्थान पर ही छपा है। क्या यह केवल एक आश्चर्यजनक संयोग था या फिर मेरी छठी इन्द्रिय मुझे संकेत दे रही थी?

मेरे चाचा, डॉ. ईश्वर मिश्र, हमारे परिवार में इकलौते डॉक्टर थे। इस कारण मुझ पर किसी अच्छे मेडिकल कॉलेज में दाखिला लेने का बहुत दबाव था। पर मेरी इसमें दिलचस्पी नहीं थी क्योंकि मुझे जीव विज्ञान बिल्कुल पसंद नहीं था। दरअसल, क्लास में प्रयोगशाला–कार्य के दौरान मेंढक की चीर–फाड़ करने में मेरे हाथ काँपते थे। मैं ऐसे किसी विषय के लिए बना ही नहीं था। हालाँकि परिवार का दबाव बहुत था, पर मेरे पिताजी और सबसे बड़े भाई ने मुझे सलाह दी कि मैं अपने सबसे पसंदीदा विषय का चुनाव करूँ। मैं कला विषय चुनना चाहता था, क्योंकि मानविकी विषय हमेशा से मुझे आकर्षित करते रहे थे। इस कारण, अपने परिवार के दबाव को नजरंदाज करते हुए मैंने रैवेनशॉ कॉलेज में डिग्री कोर्स के प्रथम वर्ष में मानविकी में दाखिला लिया।

मैंने अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान और गणित विषय चुने। उड़िया माध्यम स्कूल से होने के कारण मेरे लिए धाराप्रवाह अँग्रेजी में बोल पाना कठिन था। कॉलेज में कुछ कान्वेंट शिक्षित लड़के-लड़कियों के समूह थे जो अँग्रेजी में आत्मविश्वास के साथ धाराप्रवाह बात करते थे। मैं थोड़ा घबराया हुआ था। अपनी घबराहट कम करने के लिए मैंने अपने कॉलेज और हॉस्टल में हर अँग्रेजी वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेना तय किया। हालाँकि मुझे कोई पुरस्कार नहीं मिला, पर इससे मेरे आत्मविश्वास को बल मिला। प्री-टेस्ट परीक्षाओं में मैंने कान्वेंट के लड़के-लड़कियों के मुकाबले बहुत ज्यादा अंक हासिल किए। चूंकि मैंने आईएएस परीक्षा में शामिल होने के ध्येय से मानविकी विषय चुने थे, इसी कारण मेरे सबसे बड़े भाई ने मुझे लगनपूर्वक एक अँग्रेजी अखबार, एक मैगजीन और कैरियर डाइजेस्ट पढ़ने की सलाह दी।

अपने भाई के साथ हुई एक चर्चा मुझे याद है। उन्होंने पूछा, ''क्या तुम बर्ट्रांड रसल जैसे महान दार्शनिक बनना चाहोगे या मेरी तरह एक सम्मानित क्लर्क (आईएएस अफसर)?'' इस सवाल पर मैं फंस गया पर मैंने कूटनीतिक उत्तर दिया कि मैं दोनों बनना चाहता हूँ। दरअसल, मैं एक दार्शनिक-प्रशासक बनना चाहता हूँ। इससे मुझे प्लेटो की उक्ति याद आती है कि 'जबतक शासक दार्शनिक नहीं होंगे और दार्शनिक शासक नहीं बनेंगे, तब तक नगर-राज्य विकृतियों से मुक्त नहीं होगा'।

जब मैं प्रथम वर्ष में था, मेरे बड़े भाई गामा दादा उसी कॉलेज में भौतिकी (प्रतिष्ठा) में अंतिम वर्ष में थे। एक दिन हम दोनों क्लास से भागकर गाइड फिल्म देखने गए, जो आर के नारायण के उपन्यास पर आधारित थी। मुझे उस दिन इस बात का एहसास नहीं था कि एक फिल्म देखना आगे चलकर मेरे लिए मददगार साबित हो सकता है। आईएएस के सामान्य अध्ययन की परीक्षा में, प्रश्नपत्र के भाग 'ए' में एक सवाल था जिसमें उपन्यास के लेखकों का नाम बताना था। उसी प्रश्नपत्र के भाग 'बी' में भाग 'ए' में आए किसी एक उपन्यास का सारांश लिखना था। भाग 'ए' में जिन उपन्यासों का उल्लेख था मैंने उनमें से एक भी नहीं पढ़ा था, पर चूंकि गाइड उनमें से एक था और मैंने वह फिल्म देखी थी, मैंने फिल्म के आधार पर प्रश्न का जवाब लिख दिया। तब मुझे एहसास हुआ कि सामान्य से सामान्य घटनाओं में भी दिव्य निहितार्थ छुपे होते हैं। मार्च 1967 में डिग्री कोर्स के प्रथम वर्ष की परीक्षा में मैंने बहुत अच्छा

प्रदर्शन किया और विश्वविद्यालय में तीसरा स्थान हासिल किया। हालांकि मुझे राजनीति विज्ञान (58) के मुकाबले अर्थशास्त्र (70) में ज्यादा अंक हासिल हुए, पर मुझे राजनीति विज्ञान ज्यादा पसंद था। इसलिए, मैंने बीए राजनीति विज्ञान (प्रतिष्ठा) में नामांकन करा लिया। एक बार फिर, यह निर्णय एक छुपा हुआ वरदान साबित हुआ क्योंकि मैंने आईएएस की परीक्षा में राजनीति विज्ञान में बहुत अच्छे अंक (75 प्रतिशत) हासिल किए।

कॉलेज के अंतिम वर्ष की कुछ और घटनाएँ मेरी स्मृति में आती हैं। दो गौरैयों ने मेरे कमरे के रोशनदान में अपना घोंसला बना लिया था। उनके कारण मेरा कमरा बहुत गंदा हो जाता था। कई बार मैंने झुँझला कर उनके घोंसले को हटाने के बारे में सोचा, पर उसी समय उन बेचारी चिड़ियों की दुर्दशा का ख्याल मेरे मन में आ जाता था। यही कारण था कि मैंने उनके साथ सहजीवन को अपना लिया। एक और घटना है जब मैं एक लज्जाजनक स्थिति में पड़ गया था। एक दिन डाकिये ने हॉस्टल में आकर मुझे एक वीपीपी पार्सल थमा दिया जिसमें दो एचएमटी घड़ियाँ थीं। मैंने कभी किसी घड़ी का ऑर्डर नहीं दिया था। मैंने जब यह बात डाकिये को कही तो उसने कहा, ''यह पार्सल पी.के. मिश्रा, रैवेनशॉ कॉलेज के नाम पर है, इसीलिए यह पार्सल मैं आपको दे रहा हूँ।'' उन दिनों एचएमटी घड़ियों की बहुत मांग रहती थी। चूंकि मेरे पास पैसे नहीं थे, मैंने अपने सहपाठी से पैसे उधार लिए और घड़ी के पैसे चुका दिए। एक घड़ी मैंने खुद रख ली और दूसरी को अपने एक दोस्त को दे दिया। कुछ दिनों बाद, विभागाध्यक्ष ने मुझे बुलाया और बताया कि वे घड़ियाँ गलती से मेरे पास आ गयी थीं... वह घड़ी असल में उनके भतीजे के लिए थी और उसका भी नाम पी के मिश्रा ही था। यह बहुत लज्जाजनक स्थिति थी। मैंने उनको पूरा घटनाक्रम बताया और कहा, ''सर, मैं अपनी घड़ी तो लौटा सकता हूँ पर अपने दोस्त से घड़ी वापस मांगना बहुत संकोच की बात होगी।'' अंततः मैंने वह घड़ी जो मेरे पास थी, अपने विभागाध्यक्ष को लौटा दी जिसे उन्होंने अपने भतीजे को दी।

हमारे कॉलेज का राजनीति विज्ञान विभाग एक वार्षिक कार्यक्रम आयोजित करता था जिसके बाद रात्रि भोज का कार्यक्रम होता था। ऐसे ही एक कार्यक्रम के बाद हमारे विभागाध्यक्ष श्री आचार्या ने मुझे कुछ लड़कियों को उनके हॉस्टल तक छोड़ आने को कहा, क्योंकि रात काफी ज्यादा हो गई थी। मैं हैरान था कि इस काम के लिए मुझे क्यों चुना गया शायद इसलिए कि मिस्टर आचार्या मुझे

एक शिष्टाचारी छात्र मानते थे जो कोई बदमाशी नहीं करेगा। यह भी एक संकोचपूर्ण परिस्थिति थी, क्योंकि मैं शर्मीला और बातचीत में बहुत संकोची था। लगभग पूरे रास्ते हम खामोश रहे। खामोशी तोड़ने के लिए मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने फिनर, लास्की और बार्कर आदि की किताबें पढ़ी हैं? लड़कियाँ ठहाका मारकर हंस पड़ीं और कहा, ''प्रशांत, तुम केवल पढ़ाई के बारे में जानते हो, यह बिल्कुल नहीं जानते कि लड़कियों से कैसे बात करनी चाहिए!''

एक बार मैंने पानी पीने के लिए एक सुंदर ग्लास खरीदा। नल पर जाकर मैंने उसे भरा और उसकी सुंदरता और प्रतिबिंब की सराहना कर ही रहा था कि मेरे मन में विचार आया, 'ग्लास की सुंदरता सिर्फ क्षणिक है। जैसे ही यह ग्लास फर्श पर गिरेगा इसकी सुंदरता समाप्त हो जाएगी।' बिल्कुल उसी वक्त, ग्लास मेरे हाथ से फिसल गया और फर्श पर गिरकर टूट गया। यह मेरे लिए एक सबक भी था, अर्थात जैसा हम सोचते हैं वैसा ही होता है। बाद में जब मैंने दीपक चोपड़ा की किताब 'सेवेन स्पिरिचुअल लॉज ऑफ सक्सेस' पढ़ी तब मुझे पता चला कि प्रकृति माँ अपने बालकों की हर इच्छा पूरी करने के लिए तत्पर होती है। यही यह इच्छा एक सामान्य इच्छा होती है तो यह तुरंत पूरी हो जाती है, यदि यह एक जटिल इच्छा होती है तो इसे पूरा होने में कुछ साल या कुछ जन्म लग जाते हैं। इसे 'सुगम सरलता' (effortless ease) का सिद्धान्त कहते हैं। प्रकृति की बुद्धिमत्ता सुगम सरलता से कार्य करती है।

अपने बीए अंतिम वर्ष की परीक्षा में मैंने अच्छा प्रदर्शन किया किन्तु बहुत अच्छा नहीं, क्योंकि एक पेपर अच्छा नहीं रहा था। जून 1969 में परिणाम प्रकाशित हुए। मुझे 66 प्रतिशत अंक हासिल हुए और विश्वविद्यालय में मैंने पाँचवाँ स्थान प्राप्त किया। मैं थोड़ा निराश था क्योंकि मैं प्रथम 3 में स्थान नहीं प्राप्त कर पाया था। मैंने इस दार्शनिक विचार के द्वारा खुद को तसल्ली दी कि व्यक्ति को वह हर कुछ अनुग्रह के साथ स्वीकार करना चाहिए जो जीवन में प्राप्त होता है।

अध्याय-५

विश्वविद्यालय के दिन

मेरे विभाग में चाटुकारिता का बहुत प्रचलन था, जो मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं थी। ऐसी प्रथा मेरे स्वभाव, मेरे लोकाचार और मेरी परवरिश के विपरीत थी।

परीक्षा के परिणाम आने के बाद मैं दिल्ली विश्वविद्यालय में एमए (राजनीतिशास्त्र) की पढ़ाई करना चाहता था। अपने अच्छे अंकों के आधार पर मैं वहाँ दाखिला पाने को लेकर बिल्कुल आश्वस्त था। दिल्ली जैसे शहर में उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए ठोस आर्थिक सहायता की जरूरत होती है। हमारा परिवार बड़ा परिवार था और पिताजी काफी पहले सेवानिवृत्त हो चुके थे। मेरे सबसे बड़े भाई परिवार में एकमात्र कमाऊ सदस्य थे। इस कारण, आर्थिक दृष्टि से मेरे परिवार के लिए मुझे दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ा पाना संभव नहीं था। लाचारी में मुझे आगे की पढ़ाई के लिए भुवनेश्वर में उत्कल विश्वविद्यालय से संतोष करना पड़ा। मैं थोड़ा निराश हुआ, पर हेरोल्ड लॉस्की की इस उक्ति का मुझे स्मरण हुआ कि 'आधुनिक समय में शिक्षा 'माता-पिता का एक विशेषाधिकार' बन गई है'। साथ ही, मुझे अपनी माँ की वह बात भी याद आई कि एक बड़ा परिवार भारत में एक अभिशाप है। कई बार माँ कहा करती थी, ''हे प्रभु, किसी को गरीब मत बनाना क्योंकि गरीबी जीवन में सब कुछ नष्ट कर देती है।''

अगस्त 1969 में मैंने एमए (राजनीतिशास्त्र) में दाखिला लिया। विश्वविद्यालय में जरूरी आधारभूत संरचनाओं और लाइब्रेरी सुविधा के साथ एक बढ़िया कैंपस था। विश्वविद्यालय का परिवेश प्राय: ग्रामीण था। वहाँ रैगिंग का नामोनिशान भी नहीं था, जो इन दिनों हमारे शैक्षणिक संस्थानों में घर कर गई है। वहाँ नए छात्रों के सीनियर छात्रों और शिक्षकों से परिचय के लिए एक परिचय सभा आयोजित हुई, उसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम और रात्रिभोज हुआ। मैं प्राय: आश्चर्य करता हूँ कि किस प्रकार रैगिंग जैसी घातक प्रथा हमारे शिक्षण संस्थानों में घुस आई है।

मैं हॉस्टल में रहा। हॉस्टल के सामुदायिक जीवन के अलावा वहाँ जिंदगी बहुत जरखेज नहीं रही। दरबारगीरी और चमचागीरी हमारे विभाग में बहुत

प्रचलित थे, जो मैं बिल्कुल पसंद नहीं करता था। इससे न केवल एक व्यक्ति का आत्म–सम्मान नष्ट होता है, बल्कि यह एक व्यक्ति को अनुचर और दास–प्रकृति का बना देता है। आत्म–सम्मान के नष्ट होने का मतलब है वैयक्तिकता का नाश, जिसके परिणाम से रचनात्मकता और स्वतंत्र चिंतन का नाश हो जाता है। अपने विभाग में व्याप्त चमचागीरी में शामिल न होने से मुझे आईएएस की परीक्षा में बैठने की प्रेरणा मिली, हालांकि मैं मात्र एक छात्र था जो घुटन भरे माहौल से निकल भागने के लिए छटपटा रहा था।

अध्याय-६

आईएएस की तैयारी

व्यक्ति यहाँ-वहाँ एक दो लड़ाइयाँ हार सकता है, पर अंततः उसे जीवन का युद्ध जीतना होता है। जीवन में कुछ भी हासिल करना असंभव नहीं।

राजनीति विज्ञान में एमए करने के दौरान ही मैंने आईएएस की परीक्षा के लिए गंभीरतापूर्वक पढ़ाई शुरू कर दी थी। यह पढ़ाई बोझिल और दुरूह थी, पर चूंकि राजनीति विज्ञान का पाठ्यक्रम आईएएस के सिलेबस से बहुत हद तक समान था, इस कारण मुझे बहुत सहूलियत हुई। मैंने अपने बड़े भाई के निर्देशन में पूरी योजना और नियंत्रण के साथ पहले से ही परीक्षा की तैयारी शुरू कर दी थी। मैं प्रतिदिन लगभग 15 से 16 घंटे पढ़ता था और ग्राफ बनाकर अपने पढ़ाई के घंटों का हिसाब रखता था। इससे मुझे अपनी पढ़ाई की नियमितता बनाए रखने में बहुत सहायता मिली। हर विषय की बुनियादी किताबें, प्रतिष्ठित लेखकों की किताबें, अंग्रेजी अखबार और पत्रिकाएँ पढ़ना, पुस्तकालय का इस्तेमाल, सवालों के रुझान को समझने के लिए पिछले 10 सालों के प्रश्न पत्रों का संग्रह, परीक्षा में बैठने से पहले 3 बार पूर्वाभ्यास, तय समयसीमा के अंदर उत्तर लिखने का अभ्यास और इन सब से ऊपर अपने बड़े भाई का दिशानिर्देशन, यह सब आईएएस परीक्षा की मेरी तैयारी का आधार बने।

मेरे पिताजी के एक मित्र जो सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी और ज्योतिषी थे, मेरे बड़े भाई के आवास पर आए। उस समय मैं भुवनेश्वर में अपने बड़े भाई के घर पर ही था। जब उनको यह पता चला कि मैं आईएएस परीक्षा की तैयारी कर रहा हूँ, उन्होने मेरा हाथ देखा। हाथ देखने के बाद उन्होंने यह कहा कि मैं आईएएस में नहीं चुना जाऊँगा पर मैं एक बड़ा शिक्षाविद बन सकता हूँ। हालांकि उनका यह पूर्वानुमान मेरे लिए बहुत अप्रीतिकर था, पर मैंने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए कहा, ''चाचाजी, मैं आपकी भविष्यवाणी को गलत साबित करूँगा।'' ईश्वर की अनुकम्पा और अपने माता-पिता व गुरुजनों के आशीर्वाद से मैं आईएएस परीक्षा में सफल हुआ। मेरा यह विश्वास है कि कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है और हम सब अपनी नियति के निर्माता स्वयं हैं। जीवन की

कठिनाइयों से व्याकुल न हों, चुनौतियों को स्वीकार करें, साहस के साथ चुनौतियों का सामना करें-मेरा विश्वास है कि आप सफल होंगे। कोई व्यक्ति यहाँ-वहाँ एक दो लड़ाइयाँ हार सकता है, पर अंततः उसे जीवन का युद्ध जीतना होता है। जीवन में कुछ भी हासिल करना असंभव नहीं। अनवरत प्रयासों, दृढ़ संकल्प और एकाग्रता से कोई भी व्यक्ति अपना लक्ष्य हासिल कर सकता है। जैसा कि नेपोलियन ने कहा था, 'असंभव शब्द केवल मूर्खों के शब्दकोश में पाया जाता है'। किसी चीज को हासिल करने की अदम्य इच्छा जीवन की कुंजी है। उपनिषदों में कहा गया है-'तुम वही हो जो तुम्हारी गहरी और प्रबल इच्छाएँ हैं। जैसी तुम्हारी गहरी इच्छाएँ हैं, वैसे ही तुम होगे। जैसे तुम होगे, वैसे ही तुम्हारे कर्म होंगे। जैसे तुम्हारे कर्म होंगे, वैसी ही तुम्हारी नियति होगी।'

मैं परीक्षा के प्रति इतना गंभीर था कि मैं उस तनाव को महसूस नहीं कर पाया जो धीरे-धीरे मेरे भीतर बन रहा था। अनिद्रा की शिकायत होने लगी और प्रायः ऐसा महसूस होने लगा कि कोई मेरे सर के अंदर हथौड़े से प्रहार कर रहा है। परीक्षा से ठीक दो दिन पहले, मैं इतने तनाव और थकावट में था कि मैं उन वाक्यों को समझ भी नहीं पा रहा था जो मैंने अपने नोट्स में लिखा था। मैंने तुरंत पढ़ना छोड़ दिया और बाजार के लिए निकल पड़ा। एक फिल्म देखी और शाम को हॉस्टल लौटा। इसके बाद अपने ट्रान्जिस्टर पर कुछ देर संगीत सुना। इसके बाद मैंने शांति महसूस की और रातभर सो पाया। अगले दिन मेरा दिमाग बिलकुल तरोताजा था और सब कुछ आसान महसूस हो रहा था। लिखित परीक्षा में मैंने अच्छा प्रदर्शन किया। उस दिन मुझे यह सबक मिला कि केवल पढ़ाई ही पर्याप्त नहीं है। किसी भी चीज की तैयारी प्रसन्नता और आराम के साथ की जानी चाहिए। मैंने यह सबक हमेशा के लिए दिमाग में रख लिया और आज भी मैं दौरों पर आधिकारिक कामकाज के निर्वहन के दौरान, काम और उल्लास को मिलाने की कोशिश करता हूँ।

मैं एक गंभीर छात्र था, खास तौर पर पढ़ाई के समय को लेकर। एक दिन मैं जब थक गया, मैं शाम के वक्त टहलने चला गया। लौटने के बाद मैंने स्नान किया। जब मैं अपने कमरे में वापस लौटा, मैंने देखा कि मेरे बड़े भाई मेरी कुर्सी पर बैठे हैं। उन्होंने मेरी ओर देखा और कहा, ''प्रशांत, शाम के सात बज चुके हैं और अभी तक तुमने अपनी पढ़ाई शुरू नहीं की।'' मैंने उनको जब यह सफाई

दी कि हमेशा मैं साढ़े छह बजे तक पढ़ाई शुरू कर देता हूँ, पर आज दिमाग बोझिल होने के कारण मैं टहलने चला गया तो उन्होंने कहा, ''तुम्हें अपनी पढ़ाई और समय को लेकर एकदम नियमित होना चाहिए।'' इससे यह पता चलता है कि मेरे भाई जीवन के प्रति कितना गंभीर और समयनिष्ठ नजरिया रखते थे। मैंने यह गुण उनसे ही आत्मसात किया। एक बार मेरे भाई मुझे ढूँढते हुए लाइब्रेरी आए। मैं लाइब्रेरी में ही था पर मैंने अपना नाम वहाँ के रजिस्टर में दर्ज नहीं किया था। लाइब्रेरी से बाहर निकलने पर उन्होंने मुझसे पूछा कि मैंने अपना नाम क्यों रजिस्टर में नहीं लिखा था? मैंने जवाब दिया, ''दादा, यह बहुत छोटी सी बात है।'' उन्होंने मुझे सुझाव दिया कि छोटी-छोटी चीजें ही जीवन में बड़ा महत्त्व रखती हैं।

शेख नईमुद्दीन नाम का मेरा एक दोस्त था जो भौतिकी का अच्छा छात्र था। एक बार जब वह मेरे कमरे में आया, मैंने उसे सिविल सेवा परीक्षा में बैठने के लिए समझाने की कोशिश की। उसने यह कह कर अपनी असमर्थता जाहिर की कि एक तो वह विज्ञान का छात्र है और दूसरे उसके पास फॉर्म के पैसे नहीं हैं। मुझे अपनी राष्ट्रीय छात्रवृत्ति मिली थी, मैंने उसे पैसे देने का प्रस्ताव दिया। बहुत ही अनिच्छा से उसने फॉर्म भरा। मैंने अपने नोट्स भी उसके साथ साझा किए। जब परिणाम आए, वह भी केन्द्रीय सेवा (आयकर) के लिए चुना गया। ऐसा ही एक और वाकया है। सिविल सेवा लिखित परीक्षा में बैठने के दौरान मेरे एक घमंडी लेक्चरर मेरे एक ऐसे दोस्त का बहुत मजाक उड़ाते थे जिसका अकादमिक करियर बहुत बढ़िया नहीं था। लेक्चरर साहब भी परीक्षा में बैठ रहे थे, वो बार-बार यह तंज कसते थे कि हमारा दोस्त परीक्षा में फर्स्ट आएगा। आश्चर्य! जब सचमुच में परिणाम आए, लेक्चरर साहब को साक्षात्कार के लिए बुलाया भी नहीं गया पर हमारे मित्र ने आईएएस परीक्षा में दूसरा स्थान हासिल किया। प्रकृति के न्याय के अनोखे तरीके हैं!

मैंने लिखित परीक्षा में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। मुझे पूरा विश्वास था कि मुझे साक्षात्कार के लिए बुलाया जाएगा और सचमुच में बुलाया गया। साक्षात्कार के लिए दिल्ली प्रस्थान करने से पहले मैं अपने माता-पिता से आशीर्वाद लेने के लिए अपने गाँव गया। विदाई देते समय माँ ने साक्षात्कार के दौरान अपनी जेब में रखने के लिए मुझे सफेद कपड़े का एक टुकड़ा दिया। उन्होंने बताया कि यह

कपड़ा एक संत ने दिया है और यह साक्षात्कार के दौरान मेरी मदद करेगा। हालांकि मैं अंधविश्वासी नहीं हूँ, पर मैंने वह कपड़ा ले लिया और माँ को उसकी बात मानने का वादा किया। मैं सीधे-सीधे इसे खारिज कर सकता था, पर मैंने ऐसा नहीं किया क्योंकि वह केवल एक कपड़े का टुकड़ा भर नहीं था, उसमें मेरी माँ का प्यार, स्नेह और आशीर्वाद भी मिला हुआ था। अपनी माँ की इच्छा की पूर्ति के साथ-साथ यह एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक सहारा भी था। जब परीक्षा के परिणाम प्रकाशित हुए, उसमें मेरा भी नाम था। कठिन परिश्रम, दृढ़ता, परिजनों, बड़ों और गुरुजनों का आशीर्वाद, स्वयं पर विश्वास और ईश्वर पर आस्था से आश्चर्यजनक परिणाम हासिल किए जा सकते हैं।

अध्याय-७

राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी का जीवन

गंगोत्री और गोमुख की मेरी पहली यात्रा से ही शायद मेरे आगामी आध्यात्मिक विकास की मजबूत नींव पड़ी।

परिवार में हर कोई प्रसन्न था पर मेरा दिमाग आशंकाओं से घिरा हुआ था। मैं थोड़ा सा घबराया हुआ था क्योंकि अभी तक शहरी जीवन का मुझे कोई अनुभव नहीं था। प्रशिक्षण के लिए देहरादून और मसूरी की यात्रा के लिए रेलवे स्टेशन तक विदाई देने के लिए गामा दादा मेरे साथ भुवनेश्वर से हावड़ा तक आए। देहरादून से मसूरी तक की बस की यात्रा बेहद विस्मयकारी थी। घुमावदार सड़कें, हिमालय की तलहटी के शंकुधारी वन और प्रकृति के विस्मयकारी सौन्दर्य ने यात्रा को अविस्मरणीय बना दिया। यह हिमालय का मेरा पहला अनुभव था और मुझे हिमालय से प्रेम हो गया।

15 जुलाई 1972 को मैं औपचारिक रूप से प्रतिष्ठित भारतीय प्रशासनिक सेवा का सदस्य बन गया। अकादमी में जीवन शांतिपूर्ण और आरामदायक था। तीन महीने तक चलने वाले फाउंडेशन कोर्स में हर सेवा (जैसे आईएएस, आईपीएस, आईएफएस और अन्य केन्द्रीय सेवाएँ) के परिवीक्षाधीन सदस्य शामिल होते थे। इसके पीछे उद्देश्य यह था कि सभी सेवाओं के बीच एक आपसी भाईचारा व सौहार्द व संघ भाव निर्मित किया जा सके जो भविष्य में भी उन्हें एक दूसरे का साथी बनाए रखे। अब, जहाँ तक मुझे पता है, केन्द्रीय सेवाओं और अखिल भारतीय सेवाओं के लिए फाउंडेशनल कोर्स का यह साझा प्रशिक्षण कार्यक्रम समाप्त कर दिया गया है और हर सेवा का अपना प्रशिक्षण कार्यक्रम बन गया है। निश्चित रूप से, यह नई व्यवस्था प्रशासन के व्यापक हितों के अनुकूल नहीं है।

इस फाउंडेशनल कोर्स के बाद, जिसमें हमें विधि, संस्कृति, प्रशासन, प्रबंधन आदि कई आयामों की जानकारी मिली, प्रोफेशनल कोर्स शुरू हुआ जो केवल आईएएस के परिवीक्षाधीन सदस्यों के लिए था। इस कोर्स के बाद, खास कर ठंड के महीनों में हमारे लिए भारत दर्शन और आर्मी एटेचमेंट के कार्यक्रम होते थे।

मेरे समय में संक्षिप्त भारत दर्शन कार्यक्रम हुआ था जो केवल पंजाब, हरियाणा और राजस्थान तक सीमित था। सामान्य कक्षाओं के अलावा महत्त्वपूर्ण गणमान्य व्यक्तियों द्वारा भी समय-समय पर लेक्चर दिए जाते थे। पूरा वातावरण अकादमिक गतिविधियों से जीवंत हुआ रहता था। पाठ्यक्रमोत्तर गतिविधियों में फुटबॉल, वॉलीबॉल, क्रिकेट, हॉकी, बैडमिंटन, लॉन टेनिस आदि शामिल थे। कोई भी दिन ऐसा नहीं बीतता था जिस शाम कोई विशेष कार्यक्रम या गतिविधि नहीं होती थी। मैंने नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनरिंग, उत्तरकाशी से पहाड़ चढ़ने का प्रशिक्षण हासिल किया। इस प्रशिक्षण के लिए कुल 15 लोगों को चुना गया था। कैंप में जीवन बहुत रोमांचकारी था, कई बार कठिन भी। हम लोगों ने कैंप में 15 दिन बिताकर बुनियादी चीजें सीखीं। एक बार ट्रेनिंग के दौरान चढ़ाई करने में मैं 20 फुट ऊँची चट्टान से गिर गया और नीचे रेत के ढेर में जा पहुँचा। सब लोग भागकर मेरी तरफ आए, हालांकि मुझे कुछ छोटी मोटी खरोंच के अलावा कुछ नहीं हुआ। इस प्रशिक्षण के बाद हमें माँ गंगा के उद्गम स्थल गंगोत्री और गोमुख की चढ़ाई की। हालांकि यह एक मुश्किल चढ़ाई थी पर हमने इसे रिकॉर्ड समय के भीतर पूरा कर लिया। गंगोत्री से गोमुख की दूरी 20 किलोमीटर है, पर दोनों जगहों की चढ़ाई एक ही दिन में समाप्त कर ली। उस समय मैं बहुत आध्यात्मिक नहीं था, फिर भी मैंने हिमालय के विस्मयकारी सौन्दर्य, इसकी बर्फ से आच्छादित चोटियों, घने जंगल, भोजपत्र के पेड़ और बहती नदी की सराहना की।

पहली बार मैं भोजपत्र के जंगल में आया था। भोजपत्र असल में एक पेड़ की छाल होती है और यह इतनी पतली होती है कि इस पर लिखा जा सकता है। जब हम गोमुख पहुँचे, मैं ग्लेशियर और शिवलिंग चोटी को देख कर विस्मय से अवाक् रह गया। संभवत: मेरी आध्यात्मिक इच्छाएँ उस समय इतनी प्रबल नहीं थीं कि मुझे गोमुख में डुबकी लगाने का साहस मिल सके। कई सालों बाद यह आध्यात्मिक इच्छा प्रबल हुई और मैंने डुबकी लगा कर इसे पूरा किया। गंगोत्री और गोमुख की मेरी पहली यात्रा से ही शायद मेरे आगामी आध्यात्मिक विकास की मजबूत नींव पड़ी।

एक और महत्त्वपूर्ण घटना जिसने मुझे जीवन को समग्र तरीके से देखने में बहुत मदद की, वह थी परिवीक्षाधीन आईएएस लोगों के समूह के साथ केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा। उन दिनों इन स्थानों पर सड़कें बहुत संकरी थीं और लोगों के आने जाने को विनियमित करने और नियंत्रित करने के लिए गेट व्यवस्था का प्रचलन था। फट से हमने केदारनाथ तक की चढ़ाई की। चढ़ाई

निस्संदेह बहुत दुष्कर थी, पर मुझे इसमें आनंद आया। हिमालय का सौन्दर्य, ऐश्वर्य और भव्यता, इसकी हिमाच्छादित चोटियाँ हमें यह सबक दे रही थीं कि जीवन में अधिकतम संभव सीमा तक सादा और पवित्र रहना चाहिए। मंदाकिनी नदी की गर्जना, आत्मा में परमात्मा के मिलन की तरह जंगल से निकलती धाराओं का नदी में मिलना, इन सब ने मुझे रोमांचित कर दिया। मुझे कुछ ऐसे वृद्ध व्यक्ति भी दिखाई दिए जो केवल अदम्य इच्छा शक्ति के बल पर केदारनाथ की चढ़ाई कर रहे थे। जंगली चट्टियों की उपस्थिति ने गरमागरम चाय के प्यालों से यात्रा को सुविधाजनक बनाए रखा। तीर्थयात्रियों की कभी न खत्म होने वाली

केदारनाथ मन्दिर के समक्ष सहप्रशिक्षुओं के साथ

आवाज ही ईश्वर में अदम्य आस्था प्रदर्शित कर रही थी। मेरा एक मित्र सुबोध नाथ झा और मैं, दोनों ने केदारनाथ तक चढ़ाई के आखिरी और सबसे मुश्किल रास्ते को दौड़ते हुए पूरा किया और सबसे पहले वहाँ पहुँचे। मैं थका हुआ था पर उस मनोरम दृश्य, मंदाकिनी के प्राचीन गौरव का एहसास और केदारनाथ मंदिर के दर्शन ने हमें एक अलग ही धरातल पर पहुँचा दिया। हमने धर्मशाला में रात में विश्राम किया। अगली सुबह हमें केदारनाथ प्रभु के दर्शन का अवसर मिला। उन दिनों वह इलाका आज की तरह भीड़भाड़ वाला नहीं हुआ करता था। प्रकृति का सौन्दर्य अक्षुण्ण था पर लालची, अनियोजित और अवैज्ञानिक विकास और अतिक्रमण ने न सिर्फ उस क्षेत्र को बर्बाद किया है बल्कि कई प्रकार के भयानक पर्यावरण संकटों को भी जन्म दिया है। सबसे त्रासद घटना जून 2013 में हुई थी जब प्रकृति ने मानवता को सबक सिखाने के लिए प्रलय की एक छोटी झलक दिखलायी।

वहाँ से हम बद्रीनाथ सड़क मार्ग से गए। यात्रा में कोई परेशानी नहीं हुई क्योंकि बिना किसी चढ़ाई की जरूरत के बस से ही हम बद्रीनाथ पहुँच गए। अलकनंदा की गर्जना और चोटियों का मनोरम दृश्य, दोनों ने मिलकर भय और श्रद्धा दोनों की अनुभूति प्रदान की। बद्रीनाथ, यानि भगवान विष्णु का दर्शन बहुत उद्दात था, इसने मेरे ऊपर गहरा असर किया। केदारनाथ और बद्रीनाथ की इस यात्रा ने ही आध्यात्मिकता के उस बीज का रोपण किया जो मेरे भीतर आगे चलकर एक विशाल वृक्ष के रूप में फलीभूत हुआ।

अकादमी में जीवन बहुत ही मनोरंजक था, हर दिन बौद्धिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से परिपूर्ण होते थे। कैंपस में पार्टियों के दौरान परिवीक्षाधीनों के लिए शराब पीना कोई असाधारण बात नहीं थी। मैं शराब से पूरी तरह दूर रहता था। ऐसी ही एक पार्टी के दौरान मेरे चार मित्रों ने मुझे बार तक खींच लिया और पीने के लिए दबाव बनाने लगे। दबाव के बावजूद भी मैंने इन्कार कर दिया और कहा कि जब मुझे उनके शराब पीने से कोई दिक्कत नहीं है तब उन्हें मेरे ना पीने की चिंता क्यों है? मैंने उन्हें यह भी कहा कि यदि वे मुझे मजबूर करना बंद नहीं करते तो मैं इसकी शिकायत अधिकारियों से कर दूँगा। मेरे दोस्तों ने मुझे मजबूर करना बंद कर दिया, पर वे बहुत निराश हुए कि मुझे शराब पिलाने के प्रयास में वे बुरी तरह असफल हुए। इस घटना ने मुझे एक सबक दिया–हर चीज के लिए 'हाँ' कहना बेहद आसान है, पर एक व्यक्ति में परिस्थितियों की जरूरत

के मुताबिक 'ना' कहने का भी साहस होना चाहिए। नौकरशाही का आज की तारीख में संकट यह है कि इसे जरूरत पड़ने पर अपने बॉस की इच्छा और निर्देश को 'ना' कहने का साहस विकसित नहीं किया है।

वर्तमान दौर के प्रशासक और ऊँचे ओहदों में बैठे लोग शारीरिक श्रम करने से ऐसे हिचकिचाते हैं मानो यह उनके सम्मान के खिलाफ है। मसूरी में प्रशिक्षण के दौरान हमें श्रमदान के मूल्य और महत्त्व को व्यावहारिक रूप से सिखाया गया था। प्रतिदिन हम 'चल दना-दन फावड़े' गाते हुए श्रमदान किया करते थे। यहाँ तक कि हम अपने निदेशक के निर्देशन में श्रमदान करते हुए घुड़दौड़ के ट्रैक की मरम्मत भी किया करते थे।

अकादमी में अक्टूबर 1972 में मुझे अचानक एक गहरा झटका लगा जब मुझे अपने पिताजी की मृत्यु का तार मिला। दरअसल, एक दिन पहले ही कॉलेज के छात्रों के साथ हमारा एक फुटबॉल मैच था। मैं भी टीम का एक सदस्य था। मैच हम 3-1 से हारे थे। मैच खेलकर अकादमी लौटते हुए मैं अपने दोस्त से यही बात कर रहा था कि चूंकि मेरे पिताजी वृद्ध हो चुके हैं इसलिए मुझे अनिष्ट के लिए मानसिक रूप से तैयार रहना चाहिए। अगले ही दिन, सुबह की क्लास के लिए तैयार होते समय एक अजीब बात मेरे दिमाग में आयी कि अगर पिताजी नहीं रहेंगे तो हमारे परिवार का क्या होगा। जब मैं भोजनालय से बाहर आ रहा था यह तार मुझे मिला। कुछ अनिष्ट की आशंका से मैंने तार खोला। यह पढ़कर कि मेरे प्रिय पिताजी अब इस संसार में नहीं रहे, मुझे गहरा आघात लगा। उनकी मृत्यु के इस पूर्व-संकेत की व्याख्या मैं किस प्रकार करूँ? हमारे जैसे तुच्छ मनुष्य समझ भी नहीं सकते कि प्रकृति की अदृश्य शक्तियाँ किस प्रकार काम करती हैं?

मैं ट्रेन से तुरंत ही अपने गाँव के लिए निकल पड़ा। घर पहुँचने में मुझे 48 घंटे से ज्यादा का समय लगा। तब तक शव का अंतिम संस्कार हो चुका था। मेरे सारे भाई बहन और परिजन चौथी, दसवीं और तेरहवीं के कर्मकांडों में शामिल होने के लिए मेरे घर पर एकत्रित थे। जब मैं गाँव पर था उसी समय मुझे यह सूचना मिली की मुझे उत्तर प्रदेश कैडर दिया गया है। इस पर 1957 बैच के आईएएस, मेरे बड़े भाई ने जो प्रतिक्रिया दी, वह उल्लेखनीय है। उन्होंने कहा, "मैं खुश हूँ कि तुम अपने पैतृक राज्य लौट रहे हो। उत्तर प्रदेश भारत के सबसे अच्छे प्रशासित राज्यों में से एक है।" मैं प्राय: यह सोचता हूँ कि मेरे उत्तर प्रदेश को आखिर इतने वर्षों के दौरान क्या हो गया? एक राज्य जो राजनीतिक रूप से बहुत संवेदनशील और सशक्त है, जिसने इतने सारे प्रधानमंत्री दिए हैं और

सांस्कृतिक रूप से इतना समृद्ध है, वह ऐसी अवस्था में कैसे पहुँच गया कि लोग इसे 'उल्टा प्रदेश' कहकर इसका मजाक उड़ाते हैं। ऐसे कड़वे उपहास मुझे बहुत व्यथित करते हैं। इस पतन का कारण क्या है? संभवत: इसका कारण जनसंख्या विस्फोट, या फिर आधारभूत संरचना की कमी या शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी हो। शायद यह उत्तर प्रदेश के विकास की आदर्श रूपरेखा निर्मित करने में हमारे राजनीतिक प्रतिनिधियों, नौकरशाहों और बौद्धिकों की समूहिक असफलता हो। यह राज्य सभ्यताओं और संस्कृतियों का निर्माण स्थल रहा है और इस राज्य का हृदय भी बहुत विशाल रहा है। मैंने उड़ीसा से आने वाले एक बाहरी के रूप में यूपी कैडर लिया था, पर यहाँ के लोग ऐसे मेहमाननवाज, इतने विनम्र और इतने बड़े दिल वाले थे कि मैं अगोचर आत्मसातीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से यहाँ घुल मिल गया। एक बाहरी के रूप में मुझे उत्तर प्रदेश में कभी अजनबीयत का एहसास नहीं हुआ। यहाँ व्यवहारत: क्षेत्रवाद की कोई भावना नहीं है, पर दुर्भाग्य से जाति एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अजीब विडम्बना है! शायद हम उस कहावत को भूल गए हैं कि एक विशाल हृदय और क्षुद्र मस्तिष्क एक साथ नहीं रह सकते।

अकादमी के अनुभव हरीश कैंटीन, लाइब्रेरी पॉइंट, व्हिसपरिंग विंडो, कुलरी, कैमेलबैक रोड और लैनडोर के उल्लेख के बिना अधूरे रहेंगे। हरीश एक जबर्दस्त चरित्र था, जिसकी तारीफ हर वह आदमी करता है जिसने भी अकादमी में प्रशिक्षण हासिल किया है। उसकी कैंटीन आराम और तरोताजा होने की जगह होती थी जहाँ गर्मागर्म पकोड़े और चाय या कॉफी मिलती थी। हरीश हमारी कई तरह की जरूरतों को पूरा करता था। परिवीक्षणाधीन सदस्य प्राय: व्हिसपरिंग विंडो भी जाते थे जहाँ खाना और वाइन मिलती थी। यह नाम बड़ा सार्थक लगता है क्योंकि प्राय: कुछ दौर के बाद लोग केवल फुसफुसाते थे। मुझे अपने एक बिहार कैडर के दोस्त के साथ की बातचीत याद है। यह मित्र एक सम्पन्न परिवार से आता था और संभवत: इसने जीवन में कभी गरीबी नही देखी थी। एक बार उसने मुझे अपने घर पर मनीऑर्डर भेजते हुए देखा। उसे इस बात पर बेहद आश्चर्य हुआ कि एक ओर तो उसे अपने घर से पैसे मांगने पड़ते थे, वहीं मैं अपने घर पर पैसे कैसे भेज पाता हूँ? हालांकि मेरी तनख्वाह केवल 500 रुपए थी, फिर भी मैं हर महीने 100 रुपए अपने घर भेजता था। मैंने मजाकिया तरीके से कहा कि तुम शराब पीते हो, सिगरेट भी पीते हो। प्राय: तुम बाहर खाते हो और कई बार महिला मित्रों की आवभगत भी करते हो। मैं यह सब नहीं करता,

इसीलिए मेरे पैसे बच जाते हैं।

प्राय: यह सुनने को मिलता है, 'नाम में क्या रखा है?' पर मेरा इस मामले में अनुभव दूसरे किस्म का है। अकादमी में दो पी.के. मिश्रा थे। एक प्रशांत कुमार मिश्रा, जो कि मैं था और दूसरे प्रमोद कुमार मिश्रा। हम दोनों 1972 बैच के थे, दोनों उड़ीसा से थे और आपस में अच्छे मित्र थे। पर वे गुजरात कैडर में थे और मैं यूपी कैडर में। एक नाम होने के कारण अकादमी में बहुत गड़बड़ी हो जाती थी, बाद के दिनों तक ऐसी गड़बड़ियाँ होती रहीं। मैं भोजन में अतिरिक्त सामाग्री जैसे कि डोसा, वड़ा और अंडे आदि लिया करता था जबकि वह कुछ अतिरिक्त नहीं लिया करता था। महीने के आखिर में, जब हमें अपना मेस बिल मिलता था तो वह मासूमियत के साथ मुस्कुराते हुए कहता, ''प्रशांत बाबू, मैंने यह सब सामान लिया ही नहीं, पर बिल में इन सामानों का भी उल्लेख है।'' मैं भी शरारत भरी मुस्कुराहट के साथ कहता, ''प्रमोद, मैंने यह सब सामान लिया है पर सौभाग्य से मेरे बिल में इनका उल्लेख नहीं है।'' अकादमी छोड़ने के

अकादमी के निदेशक की पत्नी श्रीमती साठे से पर्वतारोहण प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए

समय उसके द्वारा लिया गया एडवांस मेरे खाते में चढ़ गया था। मुझे इसे ठीक कराने में अच्छा खासा समय लगा। जब प्रमोद प्रधानमंत्री का एडिशनल प्रिंसिपल सेक्रेटरी बना, तब मुझे कई लोगों से बधाई मिली। यहाँ तक कि एक प्रमुख अखबार ने प्रमोद के बारे में लेख लिखा पर मेरी तस्वीर लगा दी। मेरे लिए यह बेहद संकोच की बात थी। मैंने जब प्रमोद को इस पर ध्यान दिलाया तो उसने अपने अंदाज में इसे हँसकर टाल दिया। मैं आज भी उसे पसंद करता हूँ और उसका सम्मान करता हूँ क्योंकि आज भी वो मोहित करने वाली मुस्कान वाला वही अकादमी के दिनों का प्रमोद है।

घुड़सवारी हमारे दिनों में अनिवार्य हुआ करती थी। सभी को घुड़सवारी की परीक्षा भी पास करनी पड़ती थी। श्री नवल सिंह एक विख्यात प्रशिक्षक थे जिन्होंने हजारों परिवीक्षणाधीन अधिकारियों को घुड़सवारी सिखायी थी। कई लोग घुड़सवारी से काफी डरते थे क्योंकि प्रशिक्षण के दौरान दुर्घटनाएँ भी हो जाती थीं। एक बार घोड़ा दौड़ाते हुए मैं घोड़े से गिर गया और कुछ क्षणों के लिए बेहोश हो गया। मेरे एक मित्र के चार दाँत घुड़सवारी करते हुए टूट गए। मुझे एक मजेदार वाकया याद है। एक बार एक प्रशिक्षु अपने घोड़े को नियंत्रित नहीं कर पा रहा था तो नवल सिंह भागते हुए उसके पास गए और कहा, ''महाशय, जब आप एक घोड़े को नियंत्रित नहीं कर पा रहे हैं तो एक जिले को कैसे नियंत्रण में रखेंगे?'' घुड़सवारी सिखाने का क्या औचित्य है? यह एक ब्रिटिश परिपाटी है और उन दिनों में यह उपयोगी थी जब बहुत सारी आधारभूत सुविधाएँ मौजूद नहीं थीं। कई लोगों का यह मानना है कि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जबकि परिवहन की बेहतर सुविधाएँ मौजूद हैं, तब इस प्रकार के प्रशिक्षण के बने रहने का कोई औचित्य नहीं है। वहीं एक दूसरा नजरिया यह है कि आज भी यह प्रशिक्षण प्रासंगिक है क्योंकि आज भी विधि व्यवस्था के नियंत्रण और भीड़ के नियंत्रण के लिए घुड़सवार पुलिस का उपयोग किया जाता है। इसके अलावा, आज भी ऐसे दुर्गम इलाके हैं जहाँ केवल घोड़े या खच्चर से ही पहुँचा जा सकता है। इस प्रशिक्षण से अधिकारी को साहसिक कार्य का एहसास भी होता है और उसका आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

नेशनल अकादमी मसूरी में हमें संबोधित करने के लिए प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी का आगमन हुआ। जब प्रश्नोत्तर का सत्र शुरू हुआ तो मैंने उनसे पूछा, ''प्रधानमंत्री महोदया, हम अखिल भारतीय सेवा में हैं, तब फिर ऐसा क्यों होता है कि हमें किसी खास राज्य का कैडर प्रदान किया जाता है और उसी में सीमित रखा जाता है? हम देश के किसी भी हिस्से में अपनी सेवा क्यों नहीं दे

सकते?'' वो मुस्कुरायीं और बहुत मधुर आवाज में उन्होंने कहा, ''आपने जो सुझाया है, आदर्श रूप में वह बेहद सही है, पर भाषायी विविधता, भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन और जिला व राज्य प्रशासन की जटिलताओं को देखते हुए, कार्यकुशलता, लोक-व्यवहार और लोक-संबंध के हितों की दृष्टि से राज्य कैडरों का बना रहना ज्यादा उचित है।''

स्कूल और विश्वविद्यालय के दिनों के अलावा, ट्रेनिंग के दिनों को मैं प्रायः याद करता हूँ। यह किसी भी लोक प्रशासक के जीवन का सबसे शानदार समय होता है। मैंने अपने जीवन का आनंद लिया और साथ ही साथ आचरण, भद्रता, ज्ञान और आत्मविश्वास के रूप में काफी सबक भी हासिल किया। मैंने प्रशिक्षण सामग्री के अध्ययन को कभी नजरंदाज नहीं किया और परीक्षाओं में भी अच्छा प्रदर्शन किया जिससे मेरी स्थिति में उल्लेखनीय प्रगति हुई। अब हम उन राज्यों में जिला प्रशिक्षण के लिए तैयार हो रहे थे जो राज्य हमें प्रदान किए गए थे।

अध्याय-८

जिला प्रशिक्षण

(अप्रैल 1973-मार्च 1974)

आज भी जिले में जिलाधिकारी ही सबसे प्रमुख व्यक्ति होता है और अगर वह दिलचस्पी ले तो प्रशासनिक व्यवस्था सुचारु ढंग से संचालित होती है।

सामान्य तौर पर प्रशिक्षण अवधि में अधिकारियों को जमीनी प्रशिक्षण के लिए छोटे या मध्यम जिलों में भेजा जाता है। मुझे प्रशिक्षण के लिए मूल रूप से बहराइच जिला प्रदान किया गया था पर बाद में इसे बदलकर गोरखपुर कर दिया गया था और इसकी सूचना मुझे नहीं मिली थी। प्रशिक्षण के लिए रिपोर्ट करने से पहले मैं उड़ीसा चला गया था और अपने परिवार के साथ कुछ दिन बिताकर मैं बहराइच के लिए निकल पड़ा। यह एक थकाऊ यात्रा थी। पहले मैंने भुवनेश्वर से हावड़ा के लिए ट्रेन ली, फिर वहाँ से लखनऊ और फिर लखनऊ से गोंडा। आधी रात को मैं एटी मेल से गोंडा पहुँचा, फिर अगली सुबह एक पैसेंजर ट्रेन ली और सुबह के साढ़े 9 बजे तक बहराइच पहुँचा। चूंकि मैं वहाँ किसी को नहीं जानता था, इसीलिए रिक्शे से सीधे डीएम आवास पहुँच गया। बहराइच के जिलाधिकारी श्री एसएन शुक्ल ने गर्मजोशी से मेरा स्वागत किया, उसके बाद मुझे बताया कि चूंकि मेरा जिला बदल दिया गया था इसीलिए मुझे गोरखपुर जाना पड़ेगा। मैंने उनके और उनके परिवार के साथ नाश्ता और दोपहर का खाना खाया और रात में गोरखपुर के लिए निकाल पड़ा। श्री शुक्ल रेलवे स्टेशन तक छोडने आए, यह उनका बड़प्पन था।

मैं सुबह गोरखपुर पहुँचा और सीधे डीएम आवास चला गया। वहाँ ऑफिसर्स हॉस्टल में मेरे रहने का प्रबंध कर दिया गया जो जिलाधिकारी कार्यालय के समीप ही था। प्रशिक्षण के दौरान वहाँ मेरा जीवन कष्टकर ही रहा क्योंकि मैं अविवाहित था और वहाँ एक परिवीक्षणाधीन अधिकारी के लिए रहने की बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं। मैं अपना नाश्ता, दिन का खाना और रात का खाना एक ढाबे में खाया करता था। कम वेतन के कारण मैं होटल की विलासिता का खर्च वहन नहीं कर सकता था। वहाँ रहने के दौरान ढाबे के तेल-मसाले वाले खाने के

कारण हमेशा ही मेरा पेट खराब रहता था। पेट की पीड़ा जो वहाँ शुरू हुई वह आज तक बरकरार है। ट्रेनिंग मॉड्यूल में न्यायिक, राजस्व, दीवानी, फौजदारी, तहसील, ब्लॉक और कोष संबंधी प्रशिक्षण के साथ-साथ एडीएम (ई), एडीएम (पी) और एसडीएम जैसे अधिकारियों के साथ जुड़ाव शामिल थे। कभी कभार दौरों पर जाने के क्रम में डीएम मुझे अपने साथ ले जाते थे। एक प्रोबेशनर के रूप में हमें विधि-व्यवस्था से जुड़े प्रदत्त कार्यों का निष्पादन करना होता था, किसी गाँव का सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण करना होता था, विकास योजनाओं पर रिपोर्ट तैयार करनी होती थी और ब्लॉक, तहसील या जिले की रिपोर्ट तैयार करनी होती थी। मेरी समझ से, दशकों का समय बीत जाने के बाद भी आज भी ऐसे ही काम नवागंतुकों को दिए जाते हैं। यदि ऐसा है, तब जिला प्रशासन की वर्तमान गतिशीलता को देखते हुए प्रोबेशनरों को दिए जाने वाले कामों और प्रशिक्षण मॉड्यूल पर नए सिरे से विचार करने की जरूरत है। मेरे लिए यह प्रशिक्षण बेहद हृदयग्राही था। हिन्दी, जो मैंने अकादमी में सीखी थी, के मेरे ज्ञान में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। मुझे एक घटना याद आती है। जिलाधिकारी ने मुझे 'दौरे' में अपने साथ चलने को कहा, पर मुझे यह शब्द समझ में नहीं आया-मैंने उनसे इसका आशय समझाने को कहा। उन्होंने चिढ़ कर टिप्पणी की, ''आप मिश्रा हैं फिर भी आपको हिन्दी नहीं आती। शर्म की बात है।'' मैं तुरंत समझ गया कि जिलाधिकारी महोदय भ्रमवश मुझे हिन्दीभाषी इलाके का समझ रहे हैं। मैंने उनको स्पष्ट किया, ''सर मैं गैर-हिन्दी भाषी राज्य उड़ीसा से आता हूँ और मैंने हिन्दी पहली बार अकादमी में सीखी है।'' ऐसे ही एक बार मेरे पास एक आवेदन आया जिसमें जिलाधिकारी ने लिखा था 'इसको फौरन भेज दिया जाए।' मैं 'फौरन' शब्द का अर्थ नहीं समझ पाया और इसे 'फॉरेन' (विदेश) सोच लिया। तब मैंने निजी रूप से उनके पास जाकर पूछा कि इस आवेदन को भारत से बाहर किस देश में भेजा जाना है? वे ठहाका लगाकर हंस पड़े और मुझे समझाया कि 'फौरन' एक उर्दू शब्द है जिसका मतलब है 'तुरंत'। जिलाधिकारी जब लोगों से बात करते थे तो मैं गौर से देखा करता था। मैंने गौर किया था कि जब कोई आता था तो वे कहा करते थे 'तशरीफ रखिए'। एक दिन कोई आदमी मुझसे मिलने आया। मैंने भी कहा 'तस्वीर रखिए'। वह हंसने लगा, फिर उसने विनम्रता से मुझे सुधारते हुए बताया कि इसे 'तस्वीर' नहीं 'तशरीफ' कहते हैं। तस्वीर का अर्थ होता है चित्र और 'तशरीफ' का मतलब है बैठना। ट्रेनिंग के दौरान हिन्दी सीखना बहुत ही उल्लासपूर्ण अनुभव था। मैं जल्द ही सीखता गया क्योंकि उड़िया और हिन्दी में ढेरों शब्द समान थे। हिन्दी सीखने की यात्रा चलती

रही और बाद में मैंने हिन्दी में एक आध्यात्मिक किताब भी लिखी, जिसका नाम था 'एक दृष्टिकोण'।

आईएएस की तैयारी के दौरान लगभग एक साल तक मैं ठीक से सो नहीं पाया था, जिसके कारण मुझे अनिद्रा और माइग्रेन हो गया था। माइग्रेन इतना ज्यादा होता था कि कई बार मैं कराहने लगता था। एलोपैथी में इसका कोई इलाज नहीं था। जब मैं ट्रेनिंग के लिए गोरखपुर आया तो मेरे चाचा डॉ. आईसी मिश्रा, जो द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल हो चुके थे, ने मुझे डॉ. मुखर्जी से मिलने को कहा जो उस समय गोरखपुर में ही रह रहे थे। डॉ. मुखर्जी एलोपैथी के डॉक्टर थे, पर होमियोपैथी डॉक्टर के रूप में भी प्रसिद्ध थे। एक शाम मैंने उन्हें फोन किया, फिर रात का खाना हमने साथ खाया। विदाई के समय उन्होंने पूछा कि मुझे गोरखपुर में कोई समस्या तो नहीं। मैंने कहा, ''चाचाजी, मुझे कोई और समस्या नहीं है, बस असहनीय माइग्रेन परेशान करता है।'' उन्होंने मुझसे कहा कि एलोपैथी में इसका कोई इलाज नहीं है। कुछ गोलियाँ हैं जो तात्कालिक राहत तो दे सकती हैं, पर स्थायी समाधान एलोपैथी में नहीं है। उन्होंने एक नुस्खा सुझाया, ''एक लीटर पानी ले लो, इसमें 100 ग्राम मिश्री घोल लो। इसे बिना ढंके खुले आसमान के नीचे रातभर छोड़ दो। अगली सुबह बिना मुँह धोये इस घोल को पी लो। तीन महीने तक इस नुस्खे को आजमाओ, फर्क दिखाई देने लगेगा।'' मैंने ऐसा किया और आश्चर्यजनक रूप से मेरा माइग्रेन गायब हो गया और कभी दोबारा नहीं हुआ। यदि शोध किया जाए तो भारत ऐसे परंपरागत ज्ञान से भरा पड़ा है, जिसके द्वारा लाखों लोगों की तकलीफों को सजहता से दूर किया जा सकता है। अपने गोरखपुर प्रवास के दौरान मुझे गीता प्रेस का पता चला जो अध्यात्म के क्षेत्र में स्वेच्छा से काम कर रहा था। मैं गीता प्रेस गया और उनके काम से बेहद प्रभावित हुआ। कई अच्छी आध्यात्मिक किताबें मुझे भेंट में दी गईं। इन किताबों के अध्ययन ने मुझे बहुत सहायता प्रदान की। उत्तर प्रदेश में प्रशिक्षण का पैटर्न सैंडविच की तरह था, कई स्तर उसमें जुड़े हुए थे। इसमें जिला प्रशिक्षण, ओटीएस नैनीताल में संस्थानिक प्रशिक्षण, पंत नगर कृषि विश्वविद्यालय में कृषि प्रशिक्षण, सीतापुर पीएसी में ड्राइविंग और हथियार प्रशिक्षण और लखनऊ में सचिवालय प्रशिक्षण शामिल थे। प्रशिक्षण का पहला चरण अगस्त 1973 तक गोरखपुर में चला। इसके बाद संस्थानिक ट्रेनिंग के लिए मैं नैनीताल चला गया। यूपी कॉडर के सभी प्रशिक्षु आईएएस और उत्तर प्रदेश पीसीएस के प्रशिक्षु वहीं प्रशिक्षण हासिल करते थे। इस कारण, यहाँ आईएएस अधिकारियों और पीसीएस अधिकारियों के बीच आपस में मेलजोल बढ़ाने का एक बढ़िया स्थान मिलता था। यहाँ हमें उत्तर

प्रदेश के विभिन्न कानूनों, विकास योजनाओं और राज्य की समस्याओं से रूबरू कराया जाता था। हालांकि श्री रामपाल भारद्वाज, आईएएस, वहाँ के प्राचार्य थे, पर मैं श्री हरगोविंद डबराल, वहाँ के उप प्राचार्य और वरिष्ठ पीसीएस अधिकारी, जिन्हें बाद में आईएएस पद पर पदोन्नति दी गई, का विशेष उल्लेख करूँगा जो उस प्रशिक्षण विद्यालय की जान थे। वे एक समर्पित और सर्वथा विद्वान व्यक्ति थे। कानून और विकास योजनाओं से संबन्धित कई पेपर के अलावा हमें एक पेपर निजी व्यवहार और आचरण पर भी दिया गया था। मैंने उस पेपर में सबसे ज्यादा 95 प्रतिशत अंक हासिल किये। मैं इतने अधिक अंक पाकर भी संतुष्ट नहीं था। मैंने श्री डबराल के पास जाकर यह शिकायत की और उनसे पूछा कि आपने मेरे 5 अंक क्यों काटे। मुझमें कौन सी कमियाँ है? श्री डबराल ने मुस्कुराकर मेरी पीठ थपथपाई और जवाब दिया, ''मैंने तुम्हें सबसे ज्यादा अंक दिए हैं, पर मुझे तुम्हारा साहस पसंद आया।'' उन्होंने मुझे समझाया कि सम्पूर्ण जीवन ही सीखने की अनंत प्रक्रिया है और हर क्षण, हर दिन, ऐसी परिस्थितियाँ पेश करता है जिसमें आदमी को कुछ न कुछ सीखने को मिलता है।

ओटीएस नैनीताल में जीवन बेहद शांतिपूर्ण था। हिमालय का सौन्दर्य, हरे-भरे दृश्य, बर्फीली सर्द हवा, घुमावदार सड़कें और झीलें, कुमाऊँ के निर्मल व सुंदर दृश्य वातावरण को और भी ज्यादा मनोहारी बना देते हैं। वहाँ पर अपने प्रवास के एक-एक क्षण का मैंने भरपूर आनंद लिया। शाम को नैनीताल की घुमावदार सड़कों पर टहलना, झील में नाव की सवारी का आनंद लेना, तंग बाजारों में घूमना, देश के अलग-अलग हिस्सों से आए हुए सैलानियों के कभी न खत्म होने वाले रेले को देखना और गरम चाय और भुट्टे का स्वाद लेना... यह कुछ ऐसी यादें हैं जो अभी भी मेरे मस्तिष्क में बिलकुल ताजा हैं। जब भी मैं थका या उदास होता हूँ, मैं नैनीताल में एक प्रशिक्षु के रूप में बिताए गए सुनहरे दिनों को याद करता हूँ और फिर से तरोताजा हो जाता हूँ। नंदादेवी शिखर की चढ़ाई का एक प्रसंग मुझे याद है। छोटी आयु से ही मैं बहुत तेज चलता था। श्री डबराल ने मुझे यह सलाह दी थी कि मैं छोटे-छोटे कदम लेते हुए मंद रफ्तार से चलूँ ताकि आखिरी चरण के लिए ऊर्जा बची रहे। उन्होंने कहा, ''मिश्रा, हमेशा याद रखो कि पहाड़ी इलाके में धीमे, व्यवस्थित और ठीक से चलना चाहिए, अन्यथा तुम थक जाओगे और तुरंत ही शक्तिहीन पड़ जाओगे।'' उनकी यह सलाह आज भी मेरे कानों में गूँजती है। बाद में जब मैं पौड़ी गढ़वाल और टेहरी गढ़वाल के डीएम के रूप में पदस्थापित हुआ और मुझे इन जिलों में पहाड़ों पर बहुत चढ़ाई करनी पड़ती थी, तब उनकी

श्री हरगोविन्द डबराल, उप प्राचार्य, ओ.टी.एस., नैनीताल के साथ

यह सलाह मेरे बहुत काम आई। नैनीताल की सुरम्य वादियाँ मेरे मन में हमेशा के लिए बस गईं। बाद में जून 2013 में जब मैं नैनीताल गया, वहाँ की भीड़-भाड़, शहर की अधोगति और प्रदूषण देख कर मैं दंग रह गया। इसमें कोई शक नहीं कि वहाँ शानदार विकास हुआ है पर कंक्रीट के जंगल भी उग आए हैं। लोगों और गाड़ियों की भीड़ तो दिखाई देती है पर उसके लिए हिमालय के अप्रतिम सौन्दर्य और वातावरण की स्वच्छता की कीमत चुकाई गई है।

ओटीएस नैनीताल में मेरा प्रवास नवंबर 1973 में समाप्त हो गया। दिसंबर में हम सब लोग अगली ट्रेनिंग के लिए पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय गए। यह एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय था जहाँ बहुत अच्छे शिक्षक थे। हमें न केवल कृषि की विभिन्न शाखाओं, उनके व्यवहार और बारीकियों के बारे में बताया गया, बल्कि साथ ही साथ हमें ट्रैक्टर चलाने और हल चलाने का भी प्रशिक्षण दिया गया। यहाँ मिला प्रशिक्षण बहुत उपयोगी था। पंत नगर से विदा होने से पहले एक प्रोफेसर ने सभी परिवीक्षणाधीन अधिकारियों को अपने आवास में दावत के लिए बुलाया पर मुझे नहीं बुलाया। मैं बहुत हैरान हुआ और इसका कारण सोचने लगा। पर अगले दिन उन्होंने मुझे अकेले खाने पर बुलाया। मुझे कुछ शंका महसूस हुई और मैं सही था। प्रोफेसर ने अपनी भतीजी का विवाह प्रस्ताव मेरे समक्ष रखा,

जिसे मैंने विनम्रता से नकार दिया।

पंत नगर से हम सीतापुर के लिए रवाना हुए। हम सीतापुर पीएसी गेस्ट हाउस में ठहरे, जहाँ अच्छी सुविधा और व्यवस्था थी। वहाँ दस दिनों के प्रशिक्षण में हमने जीप चलाना और हथियार (पिस्तौल) चलाना सीखा। प्रशिक्षण के बाद निशानेबाजी का अभ्यास हुआ जिसमें मेरे एक दोस्त ने बहुत बुरा प्रदर्शन किया, पर अभ्यास के फौरन बाद हुई निशानेबाजी प्रतियोगिता में आश्चर्यजनक रूप से उसकी सारी गोलियाँ निशाने पर लगीं और वह प्रथम आया। हम सब हैरत में पड़ गए, पर जीवन ऐसा ही है।

सीतापुर के बाद मैं अपने जिला प्रशिक्षण को पूरा करने जनवरी 1974 में गोरखपुर चला आया। मैं ऑफिसर्स हॉस्टल में ठहरा। इस दौरान मैंने अपने चारों असाइन्मेंट पूरे किए जिसे अकादमी में बहुत सराहा गया। मुझे उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनावों को देखने का भी मौका मिला। जिस प्रकार से वहाँ पूरी तैयारी के साथ न्यायपूर्ण और निष्पक्ष तरीके से चुनाव निष्पादित किए जाते हैं, उसे देख कर मैं आश्चर्यचकित हुआ। भारतीय मतदाता भले ही निरक्षर हों, पर उनमें चुनावों की समस्याओं और महत्त्व की गंभीर समझदारी है। उन्नत यूरोपीय देशों ने सार्वभौम मताधिकार की अवस्था तक पहुँचने में सैंकड़ों वर्षों का समय लिया पर हमने एक ही बार में इसे स्थापित कर लिया।

मार्च 1974 के मध्य में, मैं सचिवालय प्रशिक्षण के लिए लखनऊ चला आया। 1972 का उत्तर प्रदेश कैडर का पूरा बैच ही वहाँ पर प्रशिक्षण के लिए मौजूद था। कई महीनों के समय के बाद अपने मित्रों से मिलना बहुत ही सुखद अनुभव था। मैं सचिवालय प्रशिक्षण के लिए एक सप्ताह तक शिक्षा सचिव से जुड़ा हुआ था। सचिव ने मेरे प्रशिक्षण में गहरी दिलचस्पी ली जो मेरे लिए बहुत अच्छा रहा। उन्होंने मुझे बजट बनाने, योजनाबद्ध और गैर-योजनाबद्ध परिव्यय, चालू योजनाओं, नई योजनाओं, राजस्व बजट, पूंजी बजट और बजट निगरानी के बारे में विस्तार से बताया।

लखनऊ में एक सप्ताह का समय बहुत ही मजेदार रहा। यह लखनऊ शहर की मेरी पहली यात्रा थी और मैं लखनऊ के सचिवालय की भव्यता और ऐश्वर्य देख कर बहुत प्रभावित हुआ। हर शाम हम हजरतगंज बाजार घूमने जाते थे और वहाँ लजीज कबाब और कुल्फी-फालूदा का आनंद लेते थे जो लखनऊ में काफी प्रसिद्ध है। दुर्भाग्य से हम मुख्य सचिव या किसी अन्य प्रमुख विभागों के सचिव से मिल नहीं पाए क्योंकि वे अपने रोजमर्रा के कामकाज में व्यस्त थे।

जिला प्रशिक्षण समाप्ति की ओर आ चुका था। इस दौरान मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि यदि डीएम प्रशिक्षुओं के प्रशिक्षण में स्वयं दिलचस्पी न ले तो चीजें सही दिशा में नहीं चलेंगी। दरअसल, आज भी जिले में डीएम सबसे प्रमुख व्यक्ति होता है और यदि वह स्वयं दिलचस्पी ले तो सारी चीजें सुचारु रूप से चलेंगी। हम अकादमी में मासिक रिपोर्ट भेजा करते थे जिसमें हम अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम और अनुभवों का उल्लेख करते थे। हमें यह नहीं पता था कि इन रिपोर्ट का क्या होता है। आशा है, वर्तमान में भी अकादमी इन रिपोर्टों की मांग करती होगी और इनके सूक्ष्म विश्लेषण के आधार पर उन जिलाधिकारियों को आवश्यक दिशानिर्देश देती होगी जिनके निर्देशन में परिवीक्षणाधीन अधिकारी प्रशिक्षण ले रहे हों। मैंने यह भी गौर किया कि खास कर उत्तर प्रदेश में जिला प्रशिक्षण पैटर्न इस तरह प्रकल्पित था कि यह बेतहाशा खंडित-संकुचित हो जाता था और वास्तविक प्रशिक्षण के लिए समय ही नहीं मिल पाता था। इस प्रशिक्षण के दौरान किसी ब्लॉक या तहसील का स्वतंत्र प्रभार नहीं दिया जाता था। पर मुझे लगता है कि इस तरह के प्रशिक्षण में स्वतंत्र प्रभार देने से निश्चित रूप से प्रशिक्षु का आत्मविश्वास बढ़ेगा। बड़े और महत्त्वपूर्ण जिलों में डीएम और एडीएम विधि-व्यवस्था बनाए रखने में इतने व्यस्त होते हैं कि उनके पास प्रशिक्षुओं के प्रशिक्षण में गहन दिलचस्पी लेने का समय नहीं होता। मेरा मानना है कि प्रशिक्षुओं को छोटे और मध्यम जिलों में नियुक्त किया जाना चाहिए ताकि वे डीएम के निर्देशन में प्रशासन की मूलभूत बातें सीख सकें। हमें यह बताया जाता था कि पुराने समय में डीएम परिवीक्षणाधीन अधिकारियों की सुविधाओं का ख्याल रखा करते थे, पर अब यह दुर्लभ है।

लखनऊ में सचिवालय प्रशिक्षण के बाद हम पुनः राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी, मसूरी लौटे। यहाँ कोई परीक्षा नहीं हुई। इसकी बजाए हर परिवीक्षणाधीन द्वारा जिला प्रशिक्षण के अनुभव साझा किए गए और सामूहिक रूप से तैयार पेपर प्रस्तुत किए गए। चूंकि कोई परीक्षा और कोई मूल्यांकन नहीं था, हमारे लिए यह राहत की बात थी। इस दौरान मेरे मसूरी प्रवास की एक दिलचस्प बात यह थी कि मेरे बड़े भाई गामा दादा, जो केन्द्रीय सेवाओं के लिए चुने गए थे, आईआरटीएस परिवीक्षणाधीन के रूप में अपनी ट्रेनिंग के लिए मेरे साथ थे। इस दौरान हम दोनों ने एकसाथ नाग टीबा की चढ़ाई की, जो हम दोनों के लिए बहुत ही साहसिक अनुभव रहा। हम दोनों ने अकादमी में आयोजित मैराथन दौड़ में भी हिस्सा लिया। मेरे भाई की उपस्थिति ने अकादमी में मेरे प्रवास को और भी आनंददायक बना दिया।

दबाव भरी ट्रेनिंग अगले तीन महीनों, यानी अप्रैल से जून, 1974 तक जारी रही। इस अवधि में श्री विश्वेन, उत्तर प्रदेश के नियुक्ति सचिव अकादमी में उत्तर प्रदेश कैडर के सभी परिवीक्षणाधीन अधिकारियों से मिलने आए। उन्होंने हम सभी लोगों से अपनी पसंद के जिले पूछे जहाँ हम नियुक्ति चाहते थे। मैंने उन्हें जवाब दिया, ''सर, आप मुझे उत्तर प्रदेश में कहीं भी नियुक्ति प्रदान कर दें।'' वे चकित भी हुए और प्रभावित भी। दरअसल, दूसरे परिवीक्षणाधीन अधिकारियों की पसंद को दरकिनार करते हुए उन्होंने मुझे आगरा में नियुक्ति प्रदान की, जो एक प्रमुख जिला माना जाता था। जब मैं आगरा में कार्यभार ग्रहण करने के लिए जा रहा था, तब हमारे निदेशक ने मुझे बुलाया और आगरा के बारे में संक्षेप में बताया। इसके अलावा उन्होंने मुझे उत्तर प्रदेश में नियुक्त कुछ अधिकारियों से सावधान रहने को कहा। उनके इस सुझाव ने, जो हमेशा मेरे मस्तिष्क में रहा, आगे चलकर उत्तर प्रदेश में मेरे प्रवास के दौरान मेरी बहुत सहायता की।

अध्याय-९

सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट, बाह और आगरा (जुलाई 1974-जुलाई 1975)

संकट एक व्यक्ति के जीवन में आएँगे और चले जाएँगे। स्थितियाँ विकट हो सकती हैं लेकिन इन परिस्थितियों से निकलने के लिए हमें स्वयं ही अपने पूरे पराक्रम, अनुशासन और संस्कार के साथ चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

मेरा दो साल का प्रशिक्षण काल समाप्त हो चुका था और अब सब-डिवीजन में एसडीएम के रूप में स्वतंत्र रूप से काम करने का समय आ गया था। मुझे नहीं पता था कि इस प्रशिक्षण से मैं किस हद तक सबडिवीजन के कार्यों को संभालने योग्य बन पाया था, लेकिन मुझे विश्वास था कि ईमानदारी, निष्ठा और हर स्तर पर सीखने की इच्छा के साथ, मैं निश्चित रूप से दक्षता के साथ अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन कर सकूँगा। प्रशिक्षण के बाद मैं सबसे पहले अपने बड़े भाई और भाभी के साथ कुछ दिन बिताने के लिए दिल्ली गया था। इसके बाद, मैं ताज एक्सप्रेस से आगरा कैंट पहुँचा। चूँकि मैं वहाँ से पूरी तरह अनजान था और रेलवे स्टेशन से मुझे लेने आने वाला कोई नहीं था, इसलिए मुझे रिक्शा लेकर सीधे डीएम के आवास पर जाना पड़ा। श्री जे.एन. प्रधान वहाँ के तत्कालीन डीएम थे, मैंने उनसे मिलने के लिए कुछ समय इंतजार किया। जब मैं उनसे मिला, यह जान कर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि उनको ऐसा लग रहा था कि मैं प्रशिक्षण के लिए यहाँ आया था। जब उन्हें पता चला कि मैंने पहले ही अपना जिला प्रशिक्षण पूरा कर लिया है और यह एक नियमित पोस्टिंग है, तो उन्होंने एडीएम (ई) को निर्देश दिया कि वे किसी सबडिविजन में एसडीएम के बतौर मेरी नियुक्ति का प्रस्ताव तैयार करें। उनके आवास पर मैंने उनके साथ भोजन किया। मुझे एक कमरे का आवास ऑफिसर हॉस्टल में आवंटित किया गया था जो कलक्ट्रेट से 6 किमी दूर था, पर ताजमहल के समीप था।

मुझे बाह, जो कि एक खूंखार और डकैतों के लिए कुख्यात सबडिवीजन था, के एसडीएम के रूप में तैनात किया गया था। उस समय सभी एसडीएम जिला

मुख्यालयों में रहा करते थे और सप्ताह में एक बार, सबडिवीजनल मुख्यालयों में जाते थे और जनता से मिलते थे। इस तरह की प्रथा संभवतः ब्रिटिश राज की विरासत थी और आजादी के बाद लंबे समय तक जारी रही। यह जिला प्रशासन की सभी कसौटियों के विपरीत था। मैंने कभी भी सबडिवीजनल मुख्यालय सप्ताह में एक दिन जाने की प्रथा का अनुसरण नही किया। मैं अपना आधा समय सबडिवीजनल मुख्यालय और आधा समय जिला मुख्यालय में लगाता था। इस कारण स्थानीय जनता और अधिकारियों के साथ मेरा घुलना मिलना बहुत आसान हो गया और मुझे उनकी समस्याओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली।

जिला प्रशासन में एक अच्छी प्रथा यह है कि यदि कोई नया अधिकारी आता है तो वह डीएम, एसएसपी और जिला जज से मिलता है। मैंने डीएम और एसएसपी से भेंट की और जब मैं जिला जज से मिलने गया तो वह घर पर नहीं मिले। वहाँ से लौटते समय, मैंने एक आईएएस अधिकारी की नेम-प्लेट देखी, जो मुझसे वरिष्ठ थे। मैंने उनसे मिलना उचित समझा और वे मुझसे मिलकर काफी खुश हुए। शाम हो चुकी थी और वे गेहूँ की अनिवार्य उगाही की प्रगति की समीक्षा में मुझे अपने साथ सदर तहसील भवन ले गए। वहाँ उन्होंने ऐसे शब्दों में तहसीलदार को फटकार लगाई जो किसी भी शब्दकोश में नहीं पाए जा सकते। यही उनके काम करने की शैली थी। वह अधिकारियों को प्रेरित करने और प्रोत्साहित करने संबंधी लोक प्रशासन के प्राथमिक सिद्धांतों को भूल गए थे। मैं हमेशा मास्लो के प्रेरणा सिद्धान्त और कार्मिकों की श्रेणीबद्ध जरुरतों में विश्वास करता हूँ। आप घोड़े को खींचकर पानी में उतार सकते हैं, लेकिन उसे पानी पीने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। अपने 42 वर्षों के प्रशासन के अनुभव के दौरान, मेरे पास छड़ी का उपयोग करने की नौबत ही नहीं आई। अधीनस्थ अधिकारियों को नाहक परेशान करने या अपमानित करने का कोई मतलब नहीं है। अधिकांश नौकरशाह आज भी डंडे (छड़ी) में विश्वास करते हैं वे यह भूल जाते हैं कि आधुनिक-प्रशासन की समस्याएँ बहुत जटिल है इसलिए इस नीति को अपनाकर हल नहीं कर सकती। एक हतोत्साहित संगठन अच्छे परिणाम नहीं हासिल कर सकता है।

समीक्षा के बाद उन वरिष्ठ अधिकारी ने मुझे अपनी जीप में बिठाया कलेक्टर के कम्पाउंड में ले गए जहाँ सभी मजिस्ट्रेट ठहरे हुए थे। रास्ते में उन्होंने

मुझे सलाह दी कि एक अच्छी पोस्टिंग और पदोन्नति पाने के लिए कड़ी मेहनत करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा, ''बस राजनेताओं के साथ बढ़िया रिश्ता बना लो, सबकुछ बढ़िया हो जाएगा।'' नौकरी में नए-नए आए आदमी को क्या सलाह मिली! उस समय मुझे एहसास नहीं था कि इस तरह की सलाह को अधिकांश नौकरशाह गंभीरता से लेते होंगे। ये वरिष्ठ अधिकारी मुझे दावत देने के लिए डीएम-परिसर में स्थित घरों में से एक घर में ले गए। यहीं से मेरी अग्निपरीक्षा शुरू हुई। वहाँ दो-तीन अधिकारी और भी थे जो वहाँ पर आए थे। हल्के नाश्ते के साथ शराब परोसी गई। मैं थोड़ा घबरा गया लेकिन मैंने विनम्रता से ड्रिंक के लिए मना कर दिया। अफसरों ने मेरा मजाक उड़ाया और टिप्पणी की, ''उड़िया जैसा व्यवहार मत करो। तुमने अकादमी में कुछ भी नहीं सीखा है।'' बहुत विनम्रता से मैंने कहा, ''मैं एक उड़िया हूँ और मुझे एक उड़िया की तरह ही व्यवहार करना चाहिए।'' मैंने स्थिति को तब तक सहन किया जब तक उन्होंने मुझे पीने के लिए मजबूर नहीं किया। मैं नाश्ते के साथ संतुष्ट था, लेकिन कुछ देर बाद, अत्यंत आश्चर्यजनक रूप से मैंने पाया कि एक ब्लू फिल्म भी चलने लगी। मेरे संस्कारों (निहित मूल्य), अनुशासन और मुझे बचपन से प्रदान किए गए मूल्यों ने विद्रोह कर दिया और मैं उस जगह से बाहर निकल गया और 6 किमी पैदल चलकर ऑफिसर्स हॉस्टल पहुँचा। संकट तो हर व्यक्ति के जीवन में आते ही हैं। भयानक परिस्थितियाँ तो व्यक्ति के जीवन में आएँगी ही, पर तुम्हें और केवल तुम्हें ही अकेले उन चुनौतियों का सामना अपनी सम्पूर्ण शक्तियों, जीवन मूल्यों, शील और संस्कारों के साथ करना पड़ेगा।

SDM / SDO तथा उनके अधीनस्थ कर्मचारी राजस्व प्रशासन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं यही नहीं वरन् ये जिला प्रशासन के आधार स्तम्भ है। तहसील में एसडीएम विविध भूमिकाएँ निभाता है। इनके प्राथमिक कार्यों में कानून और व्यवस्था को बनाए रखना, भूमि राजस्व और अन्य करों का संग्रह, सीआरपीसी के तहत राजस्व मामलों और निवारक मामलों और विशेष अधिनियम के तहत मामले आदि अदालती काम, पहचान सुनिश्चित करने के लिए परेड आयोजित करना और मृत्यु घोषणापत्र लेना, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, वीआईपी ड्यूटी, ग्राम सभा और सीलिंग से फाजिल जमीन का गाँव के कमजोर तबके के लोगों के बीच वितरण, उर्वरक की आपूर्ति, कृषि निविष्टियों, बिजली और सिंचाई सुविधाओं पर नजर बनाए रखना, लोक शिकायतों के निष्पादन, बाढ़-सूखा आदि

आपदाओं के दौरान काम और दौरे व जाँच-पड़ताल करना आदि शामिल हैं। हमारे दौर में अपने अधिकार क्षेत्र के भीतर ब्लॉकों के विकास में एसडीएम की भूमिका न्यूनतम थी। वास्तव में, एसडीएम की संस्था को करीब-करीब विकास की प्रक्रिया से बाहर रखा गया था। संभवत: वही प्रवृत्ति अब भी जारी है। यह वांछनीय नहीं है। अपने सबडिविजन में एसडीएम की स्थिति एक जिला मजिस्ट्रेट की तरह होनी चाहिए, जो कानून व्यवस्था से लेकर विकास तक सभी गतिविधियों का समन्वय और मार्गदर्शन करता है। यदि यह किया जाता है, तो निश्चित रूप से ब्लॉकों में विकास-प्रशासन सुव्यवस्थित रहेगा।

मेरे बाह और आगरा तहसीलों में काम के अपने अनुभवों के कुछ दिलचस्प प्रकरणों के बिना यह प्रसंग पूरा नहीं होगा। मैं प्रशासन में नया-नया आया था, अभी हिंदी सीख ही रहा था और मेरे डीएम ने मुझे जिले के लगभग सभी विभाग आवंटित कर दिए थे। काम का दबाव बहुत ज्यादा था और लगभग हर रात 9 से 9.30 बजे कार्यालय से निकलता था और फिर 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ऑफिसर्स हॉस्टल तक जाता था। उस समय निवास से कार्यालय तक आने के लिए आधिकारिक जीप का उपयोग करना निजी उपयोग माना जाता था और मैं इस सिद्धांत का सख्ती से पालन किया करता था। नतीजतन, मुझे हर दिन 12 किमी पैदल चलना पड़ता था।

मेरी मेहनत की सराहना की जा सकती है। एक शाम जब मैं रात 9 बजे ऑफिस से निकल रहा था, एक अनुभवी डिप्टी एसपी ऑफ इंटेलिजेंस जो रिटायरमेंट के कगार पर थे, मेरे पास आए और बोले, ''मिश्रा साहब, आप इतनी मेहनत क्यों कर रहे हैं? कोई भी आपकी मेहनत को महत्त्व देने वाला नहीं है। मैं आपको ईमानदारी से एक सलाह देता हूँ, वह यह कि व्यस्त होने का नाटक करें और मस्त रहें।'' मैंने इसे हल्के-फुल्के रूप में लिया और सोचा कि श्री नेगी मजाक कर रहे हैं। लेकिन कई वर्षों की सेवा के अनुभव के बाद, मुझे अब लगता है कि श्री नेगी की टिप्पणी सच्चाई से बहुत दूर नहीं है। वास्तव में, सेवाओं में शायद ही 15% कर्मचारी ही ईमानदारी और समर्पण के साथ, शोर मचाए बिना रचनात्मक रूप से काम करते हैं, बाकी लोग बहुत ज्यादा व्यस्त होने का दिखावा करते हैं, पर काम बहुत कम करते है और हमेशा अपने ही हितों को पूरा करने में लगे रहते हैं।

मुझ पर काम का बोझ इतना अधिक था कि एक दिन मैं इसकी शिकायत

करने के लिए कमिश्नर के पास चला गया। पिता समान मुस्कान के साथ उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई और कहा, ''मिश्रा, आप एक युवा आईएएस अधिकारी हैं और जल्द ही डीएम होंगे। जब तक आप जिलाधिकारी के कार्यालय की हर शाखा के कामकाज को नहीं जानते, तब तक आप एक सफल डीएम नहीं हो सकते। आपको जिलाधिकारी के कार्यालय के हर विभाग के काम के दबाव का अनुभव देकर आपके डीएम ने आपको कलेक्ट्रेट के अलग-अलग अनुभागों के कार्यों से अवगत कराया है। इससे यह पता चलता है कि समस्याओं से निपटने की आपकी क्षमता में आपके डीएम को कितना विश्वास है।''

मेरे डीएम ने मुझे सार्वजनिक भाषण देने के लिए भी प्रशिक्षित किया था। वह मुझे स्वतंत्रता दिवस पर एक सार्वजनिक समारोह में ले गए जहाँ उन्हें भाषण देना था। आश्चर्यजनक रूप से, उन्होंने मुझे सैकड़ों लोगों के सामने भाषण देने के लिए कहा। मैं घबराया हुआ था क्योंकि मैंने अपने जीवन में कभी भी इस तरह की भीड़ का सामना नहीं किया था, लेकिन अनिच्छा से मैं मंच पर गया और उन्हें ज्यादातर हिंदी व थोड़ी अंग्रेजी में संबोधित किया। जब मैंने भाषण समाप्त किया, तो मुझे तालियाँ मिलीं और डीएम ने मुझे इतने अच्छे भाषण के लिए बधाई दी। इसके बाद, मेरे भीतर से भीड़ का डर गायब हो गया। मुझे एक प्रसिद्ध डॉक्टर का दिलचस्प मामला याद आया जो डीएम के दोस्त थे। अपने निवास का निर्माण करते समय उन्होंने गाँव सभा की कुछ जमीन का अतिक्रमण किया था। उन्होंने शायद यह मान लिया था कि चूंकि वह डीएम के दोस्त थे, इसलिए उन पर कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी। लेकिन जब इसे मेरे संज्ञान में लाया गया, तो बेदखली की कार्रवाई शुरू कर दी गई। डॉक्टर ने डीएम से संपर्क किया, जिन्होंने मुझे डॉक्टर की निजी जमीन से बराबर जमीन लेकर अतिक्रमण को नियमित करने की सलाह दी। डीएम के इस हस्तक्षेप पर मैं सहमत था, जो न्यायसंगत प्रतीत हो रहा था। मैं उनके दबाव में नहीं आया और गाँव सभा के पक्ष में फैसला किया। पहली बात तो यह कि यह एक अतिक्रमण था, दूसरे, यह कि डॉक्टर काफी समय तक चुप रहे और तीसरे जब राजस्व प्रशासन को सारे मामले का पता लग गया, तो वे बदले में एक बराबर जमीन की पेशकश कर बाहर निकलना चाहते थे। इस घटना ने एक निडर और निष्पक्ष अधिकारी के रूप में मेरी प्रतिष्ठा स्थापित की।

अधिकारियों के कार्य और प्रदर्शन की समीक्षा करने के लिए डीएम कर्मियों की साप्ताहिक बैठक किया करते थे। मैं अति सतर्क रहा करता था लेकिन फिर

भी कुछ अवसरों पर, कुछ जानकारी देने में असफल रहा। फिरोजाबाद के एसडीएम मांगी जाने वाली सभी जानकारी प्रदान किया करते थे। जब भी उनसे कुछ जानकारी मांगने के लिए सवाल किया जाता, तो वह एक डायरी खोलते और उसे देख कर सटीक और स्पष्ट आंकड़े देते। एक बैठक में फिरोजाबाद के कार्यों की समीक्षा करते हुए डीएम ने कुछ जानकारी मांगी। जब एसडीएम ने डायरी खोली उसमें देखकर आँकड़े पढ़ने लगे, इसी दौरान डीएम ने उनसे डायरी छीन ली। हैरानी की बात यह थी कि डायरी का पन्ना पूरी तरह सादा था। इस प्रकार, एसडीएम की पोल खुल गई। धोखेबाजी नहीं करनी चाहिए। हमेशा सत्य का पक्षधर होना चाहिए।

जिला प्रशासन में अब दौरे और रात्रि विश्राम असामान्य बात हो गई है। यूपी में, अगस्त में मानसून दौरे और सर्दियों के दौरान दौरे के लिए एक अनिवार्य प्रावधान था। दौरा करने वाले अधिकारी को गाँव में या तो एक तम्बू में या एक स्कूल या पंचायत भवन में रात में ठहरना पड़ता था। हालाँकि कुछ अधिकारियों ने इस प्रथा का पालन नहीं किया, पर मैंने इस प्रथा का पालन किया। चूंकि मैं एक नया अधिकारी था इसलिए मैं मार्गदर्शन के लिए राजस्व मैनुअल पढ़ता था। इस तरह के एक निरीक्षण में जब मैंने तहसीलदार को अपने सामने सभी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को पेश करने के लिए कहा, तो उसने इसे टालने की कोशिश की। दोपहर के भोजन के बाद, जब मैंने उसे फिर से ऐसा करने के लिए कहा, तो उसने अनिच्छा के साथ यह खुलासा किया कि डीएम/एडीएम और अन्य अधिकारियों के आवासों पर तहसील के कुछ कर्मचारी तैनात थे। यूपी में यह एक सामान्य प्रथा है जो आज भी बदस्तूर जारी है। अधिकारी को आराम प्रदान करना जरूरी है लेकिन यह इस रूप में वांछनीय नहीं है। यह न केवल अवैध है, बल्कि इसके कारण कुछ लोग अपराध बोध का अनुभव करते है। जहाँ तक मुझे पता है है कि कुछ राज्यों (दक्षिण में) ने संभवतः संबंधित अधिकारी को कुछ भत्ते प्रदान करके घरेलू नौकर रखने का प्रावधान किया है। मुझे लगता है कि यह कहीं ज्यादा उचित व बेहतर तरीका है।

रिकॉर्ड रूम के निरीक्षण के दौरान राजस्व मैनुअल से गुजरते हुए मैंने एक दिलचस्प बिंदु नोटिस किया। इसमें अधिकारी को एक बिल्ली और उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ करने की आवश्यकता बताई गई थी। मैं इस तरह के प्रावधान के रहस्य को समझ नहीं पाया। जब मैंने अपने तहसीलदार, जो कि एक वृद्ध, परिपक्व और ईमानदार व्यक्ति थे, से यही सवाल पूछा तो वह हँसे

और कहने लगे, ''सर, रिकॉर्ड रूम में एक स्वस्थ बिल्ली रखने की प्रथा अंग्रेजों के जमाने से चली आ रही है। यह चूहों को रिकॉर्ड को नुकसान पहुँचाने से रोकने के लिए शुरू किया गया था।''

आगरा ने मुझे प्रशासन का ठोस प्रशिक्षण प्रदान किया, मुझे इसके विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया। मैंने न केवल न्यायिक और राजस्व कार्य सीखा, बल्कि गरीबों की पीड़ा, उनकी समस्याओं, प्रशासन में हस्तक्षेप, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिक दंगों से निपटने, आपदा प्रबंधन और असंख्य समस्याओं के बारे में भी जाना। आगरा बहुत सारे अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों और महत्त्वपूर्ण गणमान्य लोगों को आकर्षित करता है। मुझे वीआईपी ड्यूटी और जिम्मेदारी संभालने का अच्छा अनुभव मिला। संक्षेप में, वहाँ मेरे कार्यकाल ने मुझे जिला प्रशासन और इसकी समस्याओं के बारे में विहंगम दृष्टि प्राप्त करने के पर्याप्त अवसर प्रदान किए।

मेरे जीवन में आगरा एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था। एक विश्वविद्यालय के छात्र के रूप में, जब मैंने 1971 में आगरा का दौरा किया, तो मैं ताज की सुंदरता से बहुत प्रभावित हुआ था और प्राय: यह कल्पना किया करता था कि वहाँ के लोग कितने भाग्यशाली थे जिनको प्रतिदिन ताज के सौंदर्य को देखने का अवसर मिलता है। तब मुझे इस बात का कोई एहसास नहीं था कि एक दिन मैं वहाँ तैनात होऊँगा और बाद में मेरी शादी भी आगरा में ही हो जाएगी।

प्यार कोई सीमा नहीं जानता है और कामदेव किसी न किसी समय हर किसी पर हमला करता है। आगरा में रहने के दौरान, मैं एक खूबसूरत लड़की के संपर्क में आया। वह वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक की बेटी सरिता थीं। उस लड़की से मुझे प्यार हो गया। यह प्रेमालाप लगभग दो साल तक चला। रोमांस और उत्तेजना के इस दौर ने मेरे मन में अपनी एक अमिट छाप छोड़ी। मैंने पहली बार एसएसपी के आवास पर उनके पारिवारिक समारोह में रामायण के पाठ के दौरान उसे पहली बार देखा था। मैं उनकी सादगी और सुंदरता से प्रभावित हुआ। वह क्षण शुभ था क्योंकि रामायण का पाठ किया जा रहा था। जीवन के महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए वह उपयुक्त अवसर था। यह सब ईश्वरीय विधान था अन्यथा ओडिशा के आठमल्लिक का एक लड़का, अपने क्षेत्र से बाहर की लड़की से शादी करने के लिए यूपी के आगरा नहीं आ सकता था। मैं पैदल कलेक्ट्रेट जाता था और सरिता सेंट जॉन्स कॉलेज तक साइकल से जाया करती थी। हम एक दूसरे के अगल-बगल से गुजरते थे और हमारी निगाहें टकराया

करती थीं। श्री जे.एन. अवस्थी आगरा के एसएसपी थे और वे मुझे बहुत पसंद करते थे। मुझे भी वह परिवार बेहद पसंद था। वे सभी सुसंस्कृत और स्नेही लोग थे। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, एसएसपी के आवास पर मेरा आना जाना बढ़ता गया। मैं उनके साथ फिल्में देखने भी जाता और पार्टियों और पिकनिक में भी शामिल होता था। उस समय कोई मोबाइल नहीं था, कोई फेसबुक नहीं था, कोई व्हाट्सएप जैसी चीज नहीं थी। हमारी बातचीत केवल सामाजिक कार्यक्रमों, पार्टी या फिल्म देखने के दौरान ही होती थी। एक बार हम सब बटेश्वर मेले में गए। बटेश्वर बड़ी संख्या में यमुना के किनारे स्थित शिव मंदिरों के लिए जाना जाता है। यहाँ मुझे सरिता के साथ बातचीत करने का अच्छा अवसर मिला। समय बीतने के साथ मेरा उसके प्रति आकर्षण बढ़ता चला गया। सरिता एक अच्छी छात्रा, अच्छी निशानेबाज और चित्रकार थी। एक दिन सिकंदरा के पास कैलाश मेले में उसे प्रभावित करने के लिए मैंने सिकंदरा तक की 15 किलोमीटर की अति उत्साही घुड़सवारी कर डाली। यह घुड़सवारी बहुत दर्दनाक रही और मेरे टखने और जांघें चोटिल हो गयीं। मेरी हालत ऐसी हो गई कि मुझे जीप से लौटना पड़ा और पुलिस लाइंस अस्पताल में इलाज कराना पड़ा। उसके बाद मेरी घुड़सवारी अवस्थी परिवार में मजाक का मामला बन गई।

आगरा अपनी चरम जलवायु के लिए जाना जाता है। जून की चिलचिलाती धूप में एसडीएम के रूप में मुझे किसानों से गेहूं की अनिवार्य लेवी इकट्ठा करने के लिए अपनी तहसील और फील्ड स्टाफ को जुटाना पड़ा। यह एक अच्छा अनुभव था और लेवी खरीद से जुड़ी समस्याओं को हल करने के लिए एकदम तैयार रहना होता था। जून के मध्य तक मैंने लगभग 95% लक्ष्य हासिल कर लिया था और मुझे पूरा विश्वास था कि मैं शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल कर लूँगा। इस दौरान श्री जे.एन. अवस्थी और उनके परिवार ने कुछ दोस्तों के साथ सड़क मार्ग से कश्मीर की यात्रा करने का फैसला किया। मुझे भी स्वयं श्री अवस्थी ने आमंत्रित किया था लेकिन लेवी वसूली में व्यस्त होने के कारण मैंने मना कर दिया। उसी शाम मुझे सरिता का पहला टेलीफोन कॉल आया जिसने मुझे चिढ़ाते हुए मजाक में कहा, ''तुम्हारे सपनों में सिर्फ लेवी आ रही है, कुछ और नहीं।'' अगली सुबह मैं उसके पिता के पास गया और कश्मीर यात्रा में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की। वे आसानी से सहमत हो गए और अंतत: डीएम द्वारा अवकाश की आवश्यक अनुमति प्राप्त करने के बाद मैं भी यात्रा समूह का हिस्सा बन गया। यह मेरे लिए एक अत्यंत लाभदायक और सुखद यात्रा थी। हमने जालंधर,

भाखड़ा नांगल बांध, ज्वाला देवी, कुद, श्रीनगर, गुलमर्ग, खिलन मार्ग और पहलगांव का दौरा किया। अपनी अप्रतिम प्राकृतिक सुंदरता, धाराओं, झीलों और सुंदर चेहरों के साथ कश्मीर वास्तव में पृथ्वी पर स्वर्ग का ही एक रूप है। उस समय तक कश्मीर में अशांति नहीं थी और हम आजादी के साथ घूम सकते थे। इस यात्रा के दौरान हमने कटरा से वैष्णो देवी तक की यात्रा भी की। तीर्थयात्रियों द्वारा जय माता दी के उद्‍घोष से मैं बहुत रोमांचित हो गया। उस समय आसपास का वातावरण अविकसित और अस्वच्छ था। बहुत भीड़ थी और चूंकि गुफा के लिए केवल एक ही निकास था, इसलिए हमेशा घुटन का खतरा रहता था। किसी तरह हम दर्शन पाने में कामयाब रहे और मैंने माता से प्रार्थना की कि वो मुझे सरिता से हमेशा के लिए मिला दे। बाद में सरिता ने मुझे बताया कि उसने भी वही प्रार्थना की है। दो दिल करीब आ रहे थे और कभी न टूटने वाला एक मजबूत बंधन स्थापित हो गया था। मुझे यूपी में एक अच्छा परिवार और एक बेहतरीन जीवनसाथी मिला।

जब हम यात्रा में ही थे, उसी दौरान नेशनल इमरजेंसी लगाई गई थी और हम वापस आगरा आ गए थे। कश्मीर की यात्रा ने हमें बहुत करीब ला दिया। जब श्री अवस्थी ने अपनी बेटी का विवाह प्रस्ताव हमारे परिवार को भेजा, तो क्षेत्र से बाहर का संबंध होने के कारण मेरे परिवार के कुछ सदस्यों ने इसका विरोध किया। मेरे सबसे बड़े भाई, जो केंद्र में कृषि मंत्रालय में निदेशक के पद पर तैनात थे, ने डीओपीटी के सचिव श्री आर.के. त्रिवेदी से श्री अवस्थी के परिवार के बारे में जानकारी हासिल की। श्री त्रिवेदी तब मेटकाफ हाउस के उप-प्राचार्य थे, जब मेरे भाई 1957 में अपना IAS प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे। वह मेरे भाई को बहुत अच्छी तरह से जानते थे और उन्होंने प्रस्ताव को स्वीकार कर आगे बढ़ने की सलाह दी क्योंकि अवस्थी परिवार यूपी में एक उच्च प्रतिष्ठा रखता था। फिर दूसरी बाधा भाषा की थी। मैं अपनी माँ और बड़े लोगों को नाराज नहीं करना चाहता था। मैं उनका समर्थन चाहता था और इसलिए, मुझे उन सभी को समझा पाने में दो साल तक इंतजार करना पड़ा। मेरी माँ, जो केवल सातवीं तक पढ़ी थीं, के विचार खुले और हृदय विशाल था। यह उनके शब्द थे कि 'बेटे की खुशी ही मेरी खुशी है' जिनके कारण ही असल में यह मुद्दा मेरे पक्ष में आया।

अध्याय-१०

ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट, महोबा

(अगस्त 1975-जुलाई 1976)

विनम्रता और शिष्टता का आचरण करने पर बदले में भी विनम्रता और शिष्टता से परिपूर्ण आचरण लोग हमारे साथ करते हैं। सख्ती बरतते हुए भी विनम्र होना हमेशा उचित होता है।

अगस्त 1975 में मेरा आगरा से हमीरपुर जिला, महोबा में ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट के रूप में तबादला हुआ। महोबा छोटी पहाड़ियों, झीलों और बहुत से तालाबों वाला एक छोटा शहर है। बारिश के महीनों में यह और भी सुहावना लगता है।

ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट का पद उत्तर प्रदेश में अनोखा है। महोबा, कर्वी, कसया, रानीखेत जैसे कुछ सबडिविजन नौजवान आईएएस अधिकारियों हेतु ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट के रूप में नियुक्ति के लिए चिह्नित किए गए हैं। महोबा में इसे लोकप्रिय बोलचाल की भाषा में 'ज्वाइन्ट' कहते हैं। ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट इस अर्थ में एसडीएम से अलग होता है कि ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट एक नौजवान आईएएस अधिकारी होता है जो एक से ज्यादा महत्त्वपूर्ण तहसीलों की देखरेख करता है। उदाहरण के तौर पर, मेरे मामले में, हमीरपुर जिले में चार तहसील थे और मैं जॉइंट मजिस्ट्रेट की हैसियत से लगभग स्वतंत्र रूप से इनमें से दो तहसीलों, महोबा और चरखारी की देख-रेख करता था।

ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट का आवास एक बड़ा बंगला था जिसमें एक विशाल बाग था और चारदीवारी के साथ बड़े-बड़े पेड़ लगे थे। पहाड़ी इलाका होने के कारण बुंदेलखंड इलाके में ढेर सारे साँप थे-काले नाग, बिच्छू और दूसरे कीड़े आवासीय परिसर में भरे पड़े थे। दफ्तर, जो मेरे आवास के बगल में ही था, से घर लौटते हुए मैं प्राय: काले नाग और दूसरे रेंगने वाले जीवों को परिसर में रेंगते देखता था। बंगले की देख-रेख करने वाले चपरासी लाठी के साथ-साथ बंदूकों से भी लैस होते थे। मुझे यह बताया गया था कि चपरासी दो-तीन नाग मार चुके थे। जब मैंने यह सुना तो मैंने उन्हें डांटा और निर्देश दिया कि किसी भी जीव, खासकर नाग को, कभी नहीं मारा जाए अगर वे किसी को नुकसान नहीं पहुँचा

रहे। एक दिन थककर ऑफिस से लौटने के बाद मैं चारपाई पर आराम कर रहा था। एक आदमी मेरा सर दबा रहा था। अचानक मैंने देखा कि एक काला नाग गुसलखाने की तरफ से कमरे में दाखिल हो रहा है। हम दोनों लोग चीखते हुए कमरे से भागे। साँप शायद हमारी चीख से डर गया और बाहर चला गया। इसी तरह एक बार, मैंने एक 12 फीट का साँप देखा जो परिसर की जीर्ण-शीर्ण दीवार की तरफ तेजी से रेंग रहा था। बंगले के चौकीदार ने अपने बरछे से साँप पर हमला किया पर साँप इतना शक्तिशाली था कि दो टुकड़े होने के बाद भी वह ईंटों की ढेर की तरफ भागने में सफल रहा। वह एक भयानक दृश्य था। मैंने गौर किया कि साँप की पूँछ के ठीक ऊपर गोलानुमा काँटों का गुच्छा है। स्थानीय लोगों ने मुझे बताया कि ऐसे साँप अपने काँटों को आदमी के शरीर में चुभाकर भीषण नुकसान करते हैं। शरीर के जिस हिस्से में यह कांटे चुभते हैं वह हिस्सा गलने लगता है और अंत में आदमी मर जाता है।

मैंने बिच्छुओं और उनके जहरीले दंश के बारे में सुन रखा था। पर महोबा में मैंने खुद इसे महसूस किया। शादी के तुरंत बाद मेरी पत्नी अपने परिवार वालों से मिलने कानपुर गई थी और उस दिन बस से लौटने वाली थी। गर्मी के दिन थे और मैं एक चारपाई में बरामदे पर आराम कर रहा था। उसी समय एक बस कानपुर की तरफ से आई और गेट के सामने रुकी। मैं हड़बड़ी में चप्पल पहनने गया और बिना ध्यान दिए ही मैंने अपना पैर चप्पल में डाल दिया। मुझे जोर का झटका सा लगा। एक छोटे से भूरे रंग के बिच्छू ने मेरे दाहिने पैर में डंक मार दिया था। उस दिन मेरी पत्नी तो नहीं आई पर बिच्छू का डंक मुझे लग गया। मुझे असहनीय दर्द का अनुभव हुआ और दर्द धीरे धीरे ऊपर बढ़ रहा था। स्थिति ज्यादा जटिल न हो यह सोचते हुए पहले मैंने डिप्टी सीएमओ से फोन पर संपर्क करने का प्रयास किया, पर संपर्क नहीं हो पाया। तब मैं नजदीक के अस्पताल में चला गया। डिप्टी सीएमओ आए और घबराहट में उन्होंने इंजेक्शन के रिएक्शन की जांच किए बिना एक इंजेक्शन मुझे लगा दिया। इंजेक्शन आधा ही गया था कि मेरा सिर घूमने लगा और मेरी जीभ मेरे गले में सिकुड़ने लगी। मेरी आवाज भी नहीं निकल रही थी। हाथ के इशारे से मैंने उन्हें यह बताया कि मुझे तकलीफ हो रही है। तब डॉक्टर को इस बात का एहसास हुआ कि मेरे शरीर में इंजेक्शन के प्रति रिएक्शन हो रहा है। फिर मुझे इस इंजेक्शन के रिएक्शन को ठीक करने के लिए एक दूसरा इंजेक्शन दिया गया। 24 घंटे तक मुझे इमरजेंसी में रखा गया और दर्द को कम करने के लिए मेरे दाहिने पैर पर ढेर सारा बर्फ

रखा गया। इस दौरान मैंने महसूस किया कि बिच्छू के डंक का दर्द शुरू के 12 घंटों में बढ़ा, फिर अगले 12 घंटों में धीरे–धीरे कम हुआ, 24 घंटों में दर्द पूरी तरह खत्म हो गया। यह 24 घंटों की अग्नि–परीक्षा थी।

ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट का काम चुनौती भरा होने के साथ–साथ दिलचस्प भी था। उस समय पाटिल समिति की सिफारिश पर गाँव सभा और सीलिंग से अतिरिक्त जमीन को निर्बल तबके के बीच वितरित करने पर बहुत जोर दिया गया था। पट्टे के समुचित आवंटन और वितरण को सुनिश्चित करने के लिए मैं रात में भी गाँव सभा की बैठकें किया करता था। अपनी निष्कपटता के बावजूद भी एक सार्वजनिक सभा में, जिसमें 20 सूत्री कार्यक्रम के प्रभारी कैबिनेट मंत्री भी शामिल थे, मुझे एक महत्त्वपूर्ण राजनेता द्वारा की गई अनुचित और तीखी आलोचना का सामना करना पड़ा। इस राजनेता के खिलाफ मेरे निर्देश में एक छापेमारी की गई थी जिसका उद्देश्य था पड़ोसी राज्य में गेंहू और सीमेंट तस्करी की काली करतूतों का भंडाफोड़ करना। उसके ट्रक जब्त कर लिए गए थे और उसके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई थी। मैं उस नेता की कटु भावनाओं को समझ रहा था, उसने लोगों की नजर में मेरी छवि खराब करने के लिए मंत्रीजी की उपस्थिति का लाभ उठाने की कोशिश की। मैंने मंत्री महोदय से अपनी बात रखने के लिए समय की गुजारिश की। उनका आदेश लेकर जब मैंने उस नेता और उसकी करतूतों को जनता के सामने पर्दाफाश करना शुरू किया तो जनता के बीच से आवाज गूंजने लगी कि उनके ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट ईमानदार हैं, पूरे समय काम करते हैं, आदि आदि। पर नेता बहुत कुटिल आदमी था। मंत्रीजी ने स्थिति की गंभीरता को समझते हुए अचानक सभा भंग कर दी। वे मुझे अपने साथ नजदीक के बंगले में ले गए और साथ में भोजन करने का आग्रह किया। मैंने यह कहते हुए उनका प्रस्ताव ठुकरा दिया कि अकादमी में हमें नेताओं से निर्बाध रूप से नहीं घुलने मिलने और उनसे एक हाथ की दूरी बनाए रखने का सुझाव दिया गया है। मंत्रीजी बिना बुरा माने हुए मुस्कुराए और साथ चाय पीने का आग्रह किया। इस प्रस्ताव को भी मैंने ठुकरा दिया क्योंकि मैं चाय नहीं पीता था। तब मंत्रीजी ने नींबू–पानी पीने का आग्रह किया जिसे मैंने स्वीकार कर लिया। उन्होंने अपने शागिर्दों को वहाँ से बाहर भेज दिया और खुद खाना खाने लगे जबकि मैंने नींबू–पानी पिया। अभिभावकत्व भरे लहजे में उन्होंने मुझसे कहा, ''बेटे, तुम एक आईएएस अधिकारी और एक प्रतिष्ठित सेवा के सदस्य हो। एक दिन तुम डीएम, सचिव, मुख्य सचिव बनोगे, महत्त्वपूर्ण पदों पर बैठोगे। अगर तुम इतने संवेदनशील

और कठोर रहोगे तो तुम्हारे लिए इस सिस्टम के भीतर काम करना मुश्किल हो जाएगा। मैं तुमसे कोई गैरकानूनी काम करने के लिए नहीं कह रहा, पर तुम्हें यह सलाह दे रहा हूँ कि थोड़े विवेकशील बनो और इस प्रकार से अपने विचारों को व्यक्त करो कि उससे कोई अपमानित न महसूस करे।'' मैंने कुछ पल इस सलाह पर गौर किया और सोचा कि मंत्रीजी सही कह रहे हैं। मैंने उनसे कहा, ''सर, मैं दुखी हूँ, आगे के लिए मैंने यह बात अपने दिमाग में रख ली है।'' कठोरता लंबी अवधि में ठीक नहीं रहती। विनम्रता और शिष्टता का आचरण करने पर बदले में विनम्रता और शिष्टता मिलती है। सख्ती बरतते हुए भी विनम्र होना हमेशा उचित होता है। अगर मैंने वैसी बातें किसी प्रधानमंत्री या बड़े राजनेता को कही होतीं तो शायद मुझे फटकार भी लग सकती थी, पर इस वरिष्ठ नेता ने मेरी कड़वी बातों को अन्यथा नहीं लिया और एक अभिभावक की तरह उचित तरीके से मुझे समझाया। आज के दौर के नेताओं और पुराने दौर के नेताओं में यही अंतर है।

अपने कार्यकाल के दौरान पट्टेदारों को जमीन का कब्जा दिलाने का एक नायाब तरीका मैंने विकसित कर लिया। मुझे कमजोर तबके के लोगों से गाँव के सशक्त और प्रभावशाली लोगों द्वारा जमीन का कब्जा नहीं मिलने के बारे में ढेरों शिकायतें मिलती थीं। मैंने यह गौर किया कि पुलिस या तहसील से मांगी गई रिपोर्ट को कभी गंभीरता से नहीं लिया जाता और अगर ऐसी रिपोर्ट मिलती भी थी तो इतनी देर से कि आवंटन का वास्तविक उद्देश्य ही समाप्त हो जाता था। मैंने एक युक्ति सोची और कमजोर तबकों से आने वाली हर शिकायत के मामले में सीआरपीसी की धारा 107 के तहत प्रभावशाली लोगों को शांति भंग करने की संभावना के लिए सीधे ही कारण बताओ नोटिस जारी कर दिया करता था। मैं ऐसे मामले में उन लोगों को शांति बनाए रखने के लिए बाध्य करने के लिए सीआरपीसी के तहत नोटिस जारी करने के लिए 'receiving information and likely to commit' शब्दों का लाभ उठाता था। इस अनोखे तरीके का इस्तेमाल करके, पुलिस और तहसील की निष्क्रियता के बावजूद मैंने कमजोर तबकों के पट्टेदारों को कब्जा दिलाने में काफी हद तक सफलता भी पायी।

यह इमरजेंसी के दिन थे, कर्मचारी समय पर ऑफिस आते थे। मंडियों और साप्ताहिक बाजारों से जरूरी चीजों के दामों की जानकारी करने के आदेश सरकार से मिले थे। मैं मंडियों और साप्ताहिक बाजारों का दौरा करता रहता था और जब कभी किसी खास वस्तु के ज्यादा दाम की जाँच करता, विक्रेता तुरंत ही उसका दाम घटाकर पिछले सप्ताह के बराबर कर देता। मेरे सब-डिवीजन में आलू के

दाम बढ़ रहे थे और मैंने यह पता लगाने के लिए कोल्ड-स्टोरेज मालिकों के साथ एक समीक्षा बैठक की कि कितने टन आलू उनके कोल्ड स्टोरेज में हैं? जानकारी जुटाने के बाद मैंने एक खास मात्रा में आलू बाजार में निकालने का निर्देश दिया। चूंकि मेरा आदेश हर कोल्ड-स्टोरेज पर समान रूप से लागू हुआ था, हमारे जिले के डीएम के आलू भी जनता के लिए बाजार में निकाल दिए गए जो महोबा के एक कोल्ड स्टोर में रखे हुए थे। डीएम ने मुझे फोन किया और हँसते हुए कहा, ''आप सचमुच में जनता के हित में काम कर रहे हैं, आपने मेरे आलू भी कोल्ड स्टोर से निकाल दिए।''

इस अवधि के दौरान, मुझे अपने जिलाधिकारी से दो बदमाश वकीलों के बारे में रिपोर्ट देने का लिखित आदेश मिला, ताकि एमआईएसए (मीसा) कानून के तहत उन पर उचित कार्रवाई हो सके। मैंने डीएम को बताया कि उनके खिलाफ किसी कार्रवाई की कोई जरूरत नहीं है। चूंकि वे दोनों मेरे कोर्ट में काम करते हैं, इसीलिए केवल मेरे समझाने से वो समझ जाएँगे। मेरे आश्वासन के कारण उन दोनों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। इस प्रकार मैंने अपने सब-डिवीजन में मीसा कानून के एक संभावित दुरुपयोग को रोका।

जनता की शिकायतों के निपटारे पर मैं सबसे ज्यादा ध्यान देता था। हर दिन मैं शिकायतें सुनता था, यहाँ तक कि रविवार और अन्य छुट्टियों के दिन भी। ऐसे ही एक मौके पर एक दिन एक 75 वर्ष की वृद्ध महिला मेरे आवास पर रोते हुए आई। उन्होंने मुझसे शिकायत की कि उनका बेटा जो तहसील में काम करता है, उन्हें पर्याप्त खाना नहीं दे रहा और उन्हें घर से निकालने की धमकी दे रहा है। उनकी शिकायत पूरी तरह निजी थी और मैं सीधे तौर पर उसे खारिज कर सकता था। पढ़ी लिखी नहीं होने के कारण उन्हें यह मालूम नहीं था कि ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट उनके बेटे को उनकी उचित देखभाल करने का निर्देश देने में कानूनी तौर पर समर्थ था भी या नहीं। उन्होंने ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट को केवल न्याय प्रदान करने वाले अधिकारी के रूप में देखा। मैं इस मामले को केवल तहसीलदार को सौंप कर टाल सकता था, पर इसकी बजाए मैंने तहसीलदार और वृद्ध महिला के बेटे दोनों को बुलवाया। मैंने लड़के को फटकार लगाई और उसे चेतावनी दी कि यदि वह अपनी माँ की देखभाल उचित तरीके से नहीं करता तो उसे वेतन नहीं दिया जाएगा। उसने मुझे अपनी माँ को अपने साथ रखने और भलीभाँति देखभाल करने का वादा किया। कुछ महीनों बाद वह महिला मेरे ऑफिस में आयी और उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया। अपने प्रशासनिक कार्यकाल

के दौरान मैंने यह पाया है कि यदि अधिकारी जनता के हित को थोड़ा आगे बढ़ाने के लिए अपनी तरफ से थोड़ा अतिरिक्त प्रयास कर दे तो केवल इतने में ही गरीब और वंचित तबके के लोगों को बहुत राहत मिल जाएगी।

एक शाम अपने लॉन में आराम करते समय मुझे टेलीफोन से यह सूचना मिली कि चरखारी से महोबा आने वाली यात्री बस लूटी जा रही है। मैं तुरंत अपनी जीप में अपने चार हथियारबंद चपरासियों के साथ वारदात के स्थल पर पहुँच गया। हमें वहाँ कुछ नहीं मिला, जाहिर है वह एक झूठी सूचना थी। यह बात जब मैंने अपने ससुर जी को बतायी तो उन्होंने आगाह किया ''प्रशांत, यह तुम्हारी बहुत बड़ी बेवकूफी थी कि तुम एक अंजान फोन पर बिना इसकी पुष्टि किए और बिना तैयारी के सीधे निकल पड़े। अगर वहाँ सचमुच डकैती हो रही होती तो तुम अपने चार चपरासियों के साथ क्या कर लेते?'' जब भी कोई संकट या गंभीर समस्या आई तो मैंने हमेशा यह ध्यान दिया कि समुचित जांच और योजना के साथ ही स्थल पर पहुँचा जाए। बिना समुचित योजना के घटनास्थल पर पहुँच जाना बहादुरी का नहीं बल्कि मूर्खता का काम है।

एक लोक प्रशासक के जीवन में प्राय: ही ऐसा होता रहता है कि वह अपने रिश्तेदारों की सिफारिश और दबाव के कारण संकट में पड़ जाता है। जब मैं महोबा का ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट था, तब मेरे होने वाले ससुर जी के एक रिश्तेदार ने उनसे मेरे कोर्ट में उसके खिलाफ आए एक सीलिंग केस के बारे में बात करने को कहा। मेरे ससुर जी जानते थे कि मैं किस प्रकार का प्रशासक हूँ। इसीलिए उन्होंने अपने रिश्तेदार की बात मानने से इंकार कर दिया और उसे भी मेरे पास नहीं जाने का सुझाव दिया। बाद में इस रिश्तेदार ने मेरे ससुर जी के एक चचेरे भाई से संपर्क किया, उन्होंने मुझे उस आदमी के मामले को देख लेने का अनुरोध किया। मैंने मामले का निरीक्षण किया और घोषणा की कि समूची जमीन (लगभग 30 एकड़) सीलिंग कानून के तहत फाजिल है और इस प्रकार राज्य की है। एक लोक प्रशासक के जीवन में ऐसे कई मामले आते हैं पर ऐसे ही मौकों पर बिना किसी भय या पक्षपात के विधि और नियम के अनुरूप न्याय प्रदान करने में ही एक लोक प्रशासक की वास्तविक परीक्षा निहित होती है।

एक मजिस्ट्रेट के रूप में मैंने यह गौर किया था कि तहसीलदार और उसके मातहत अन्य कर्मचारी विशिष्ट व्यक्तियों के लिए व्यवस्था बनाने के बोझ तले दबे होते हैं। उनके दौरे, साथ ही अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के निरीक्षण दौरे और यात्राएँ

बहुत खर्चे का कारण बनते थे, जिसे आम तौर पर तहसीलदार को अपनी जेब से वहन करना पड़ता था। इसका परिणाम भ्रष्टाचार में बढ़ोत्तरी और अपने मातहत अधिकारियों की नजर में वरिष्ठ अधिकारियों की इज्जत कम होने के रूप में सामने आती थी। अपने पूरे कार्यकाल के दौरान, मैं अपने ऊपर हुए खर्च को अपनी जेब से चुकाने के मामले में हमेशा ही संजीदा रहा। यात्राओं के दौरान मैं अपना खाना बनाने का सामान लेकर जाता था और मेरी पत्नी खाना बनाया करती थी।

जब एक दिन मैं अपनी कोर्ट आयोजित कर रहा था, मेरे ससुराल का एक आदमी मेरे कोर्ट के कमरे में आया और मुझे 'मिश्राजी' नाम से संबोधित करते हुए कुछ पैरवी की गुजारिश की। मेरे लिए यह बहुत शर्मनाक क्षण था, कोर्ट के सम्मान और मजिस्ट्रेट पद की गरिमा को बनाए रखने के उद्देश्य से मैंने उसे फटकार लगायी और उसे कोर्ट परिसर से बाहर जाने का आदेश दिया। उसे बुरा लगा, पर संस्थान की गरिमा को बनाए रखने के लिए ऐसा करना अत्यंत आवश्यक था।

निस्संदेह, महोबा एक बहुत ही सुंदर स्थान था पर वहाँ का सामाजिक जीवन कुछ खास नहीं था। महोबा में रहते हुए जनवरी, 1976 में मेरा विवाह सरिता से हुआ। एक महीने की छुट्टी के बाद जब मैं फिर से अपने काम पर लौटा तो अपने आवास को तरह-तरह के लाइट से सजा देख कर बहुत हैरान हुआ। जब मैंने इस बारे में पूछताछ की तो मेरे स्टेनो ने बताया कि यह सजावट साहब और मेमसाहब के स्वागत के लिए की गई है। मैंने इस काम को पसंद नही किया सजावट तुरंत हटाने का आदेश दिया। जब सरिता महोबा चली आयी तो मेरा जीवन बहुत आरामदायक हो गया क्योंकि मुझे अच्छा भोजन और अच्छा साथ मिलने लगा। मैंने स्कूटर चलाना उसी से सीखा, हम दोनों साथ में विजय नगर बांध तैराकी करने और मछली पकड़ने जाया करते थे। हम दोनों बेलाताल और लहचुरा जैसी अन्य प्राकृतिक सुंदरता वाली जगहों पर भी साथ जाया करते थे। बुंदेलखंड की असह्य गर्मी को छोड़ कर वहाँ हमारा जीवन शांतिपूर्ण तरीके से चलता रहा। बिजली की अनियमितता थी और कूलर की कोई व्यवस्था नहीं थी। हमें हाथ के पंखे से काम चलाना पड़ता था। शाम के समय हम अपने आवासीय परिसर में खुले आसमान के नीचे सोया करते थे, जो काफी आनंददायक होता था।

उस उम्र में मेरी जीवनचर्या बहुत आध्यात्मिक नहीं थी, हालांकि मेरे भीतर आध्यात्मिकता का बीजारोपण हो चुका था और इसका धीरे-धीरे विकास भी होने

लगा था। हम वहाँ रहते हुए प्रति सप्ताह आल्हा-ऊदल की आराध्यदेवी चंद्रिकादेवी के दर्शन हेतु जाते थे। देवी एक गुफा में विराजमान थीं। चंद्रिकादेवी के ही समीप भगवान महावीर की भी एक सुंदर मूर्ति है जो इस बात का साक्ष्य है कि किसी समय में इस क्षेत्र में जैन धर्म भी प्रचलित था। हम बांदा जिले में स्थित चित्रकूट भी गए। मैं चित्रकूट में भगवान राम के वनवास की कल्पना कर के बहुत अभिभूत हुआ। चित्रकूट में कई ऐसे मंदिर और स्थान हैं जहाँ श्रद्धालुओं का झुंड लगा रहता था। हम इनमें से कुछ का ही दर्शन कर पाए, हनुमान धारा और गुप्त गोदावरी हम नहीं जा पाए। तथापि, मैंने उस इलाके के मनोरम पहाड़ी वातावरण का खूब आनंद लिया।

अध्याय-११

उप सचिव (सहकारिता)

(जुलाई 1976-अगस्त 1978)

उच्च पदाधिकारियों के समक्ष टिप्पणियाँ प्रस्तुत करते समय बौद्धिक ईमानदारी और वस्तुनिष्ठता के सिद्धान्त का अनुसरण करो और किसी भी प्रकार के दबाव में मत आओ।

जुलाई 1976 में मेरी प्रोन्नति आईएएस के वरिष्ठ स्केल में हुई, और मुझे सचिवालय की कृषि उत्पादन आयुक्त (एपीसी) शाखा में उप सचिव (सहकारिता) के रूप में नियुक्ति दी गई। एपीसी अतिरिक्त मुख्य सचिव रैंक का एक वरिष्ठ पद है। कृषि और इससे जुड़े हुए क्षेत्रों के कुशल संयोजन और संचालन के लिए इसका कार्यक्षेत्र कृषि, बागवानी, पशुपालन, मत्स्यपालन, लघु खनन, ग्रामीण अभियांत्रिकी सेवाएँ, ग्रामीण विकास जैसे कई विभागों तक विस्तृत होता है। उप सचिव के रूप में अपने दो साल के कार्यकाल के दौरान मैं तीन एपीसी और तीन मुख्य सचिवों के अधीन रहा।

लखनऊ में सचिवालय में पहली बार नियुक्त हुए नौजवान आईएएस अधिकारी के लिए जीवन बड़ा संघर्षपूर्ण था, क्योंकि वहाँ पर्याप्त आधारभूत सुविधा उपलब्ध नहीं थी। लखनऊ में आवास हासिल करना मुश्किल था, यातायात की भी सुविधा नहीं थी। हमें अपनी सारी व्यवस्था खुद ही करनी होती थी। काफी जद्दोजहद के बाद मुझे सचिवालय के समीप गौतमपल्ली गेस्ट हाउस में एक कमरे की जगह मिली। उस समय मेरे ससुर जी का भी तबादला आगरा से लखनऊ हो गया था। वे भी अपने परिवार के साथ उसी कमरे में एक साल तक रहे। उस कमरे में आठ लोग रहते थे और केवल एक ही गुसलखाना व अलमारी के पीछे जुगाड़ से बनाया गया रसोईघर था। हम सारे लोग फर्श पर सोया करते थे। आज मुझे यह सोच कर बहुत हैरत होती है कि किस प्रकार हम लोग उस छोटे से कमरे में एक साल तक रह गए। हालांकि वह जगह असुविधाजनक थी, पर एक-साथ बिताए गए जीवन का हमने बहुत आनंद लिया-ताश खेलना, पार्टियों में जाना, पिकनिक और सिनेमा जाना।

अपने कैरियर में पहली बार 'आईएएस सप्ताह' में शामिल होना मेरे और मेरी पत्नी के लिए एक यादगार अनुभव था। उत्तर प्रदेश में आईएएस एसोशिएसन प्रतिवर्ष एक अनोखे 'आईएएस सप्ताह' का आयोजन करता है। इस दौरान मुख्यमंत्री आईएएस अधिकारियों को संबोधित करते हैं और राज्य के विकास के लिए निष्ठापूर्वक काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। विधि-व्यवस्था की स्थिति और विकास योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की जाती है और इन विषयों पर सुझाव आमंत्रित किए जाते हैं। मुख्य मंत्री अपने आवास पर अधिकारियों और उनकी पत्नियों को भोजन पर आमंत्रित भी करते हैं। इससे आईएएस अधिकारियों को एक दूसरे से, साथ ही मंत्रियों और राजनीतिक प्रतिनिधियों से भी घुलने-मिलने का अवसर मिलता है। बॉटनिकल गार्डेन में शाम में एक चाय पार्टी का भी आयोजन किया जाता है जिसमें पुलिस और सेना के बैंड संगीत भी प्रस्तुत करते हैं। इस कार्यक्रम में राज्यपाल, मुख्यमंत्री, कैबिनेट मंत्री और दूसरे राजनीतिक प्रतिनिधि भी शामिल होते हैं। यह चाय-नाश्ते के साथ एक रंगारंग शाम होती है, जिसका सबलोग बहुत आनंद उठाते हैं। इसी दौरान आईएएस एसोशिएसन अपनी वार्षिक बैठक भी करता है और पदाधिकारियों का चुनाव करता है। एसोशिएसन के सदस्य शाम में राजभवन में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन करते हैं, इसके बाद राज्यपाल की ओर से एक वैभवशाली रात्रि-भोज का आयोजन किया जाता है। इसी दौरान आईएएस एसोशिएसन भी मुहम्मद बाग क्लब में एक 'सर्विस डिनर' का आयोजन करता है। इस कार्यक्रम की खास बात यह होती है कि रात्रि-भोज के बाद सबसे कनिष्ठ अधिकारी को सभी को संबोधित करना होता है और अंत में सबसे वरिष्ठ अधिकारी सबको संबोधित करता है, जिसमें अपने अनुभव और सेवाकाल में सीखी गयी बातें साझा की जाती हैं। सबसे आखिरी दिन धूमधाम के साथ आईएएस एलेवन और आईपीएस एलेवन के बीच एक क्रिकेट मैच का आयोजन किया जाता है। इस क्रिकेट मैच की कमेंट्री बहुत ही मजेदार और हास्यजनक होती है। मुझे नहीं लगता कि किसी और राज्य में ऐसा कोई 'सर्विस सप्ताह' मनाया जाता हो।

सचिवालय में काम करते हुए मैं एक दिलचस्प व्यक्ति से मिला जो एपीसी शाखा में उप सचिव था। मेरा अनुमान था कि वह सहकारिता शाखा से एक वरिष्ठ अधिकारी होने के नाते सहकारिता मामलों का जानकार होगा। जब भी मैं उनसे सलाह मांगने गया, मैंने पाया कि उनका टेबल बिल्कुल खाली है और वहाँ एक भी फाइल नहीं है। मुझे यह आश्चर्य होता था कि किस प्रकार वह अपना काम इतनी कुशलता से कर लेते हैं, जबकि मैं हमेशा फाइलों के बोझ तले दबा होता

था। एक दिन मैंने उनसे उनकी कुशलता का राज पूछा। उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, ''मिश्रा साहब, आप नौजवान आईएएस अधिकारी हैं और अभी आप सचिवालय के कामकाज को नहीं समझते। विभाग में मेरे अधीन सेक्शन ऑफिसर और अंडर-सेक्रेटरी जैसे अधिकारी हैं और मुझसे ऊपर विशेष सचिव, सचिव और एपीसी जैसे अधिकारी हैं। चूंकि वे सभी सरकारी अधिकारी हैं, इसीलिए वे सभी अपने-अपने काम के प्रति जवाबदेह हैं। इसीलिए, जब भी मुझे सेक्शन ऑफिसर से कोई फाइल मिलती है और अंडर सेक्रेटरी मेरे पास आते हैं, मैं केवल उस पर 'आदेशार्थ' लिखकर उसे विशेष सचिव को आगे बढ़ा देता हूँ। जब फाइल वहाँ से उच्च अधिकारियों के आदेश और टिप्पणियों के साथ लौटती है, तो मैं केवल 'अनुपालनार्थ' लिखकर नीचे बढ़ा देता हूँ। इन दो जादुई शब्दों के प्रयोग से मैंने अपनी फाइलों को मिनटों में निपटाना सीख लिया है।'' जवाबदेही के प्रश्न पर विचार करते हुए उन्होंने कहा, ''सरकारी प्रशासन का बुनियादी सिद्धान्त है, ज्यादा काम-ज्यादा जवाबदेही, गलतियों की ज्यादा संभावनाएँ और इसी से सजा की भी ज्यादा संभावनाएँ; कम काम-कम जवाबदेही, गलतियों की भी कम संभावना और कम सजा। कोई काम नहीं, तो कोई जवाबदेही नहीं, कोई गलती नहीं और कोई सजा नहीं। यह आपके ऊपर है कि आप क्या विकल्प चुनते हैं।'' मैं मुस्कुराने लगा और यह सोचने लगा कि क्या अद्‌भुत सलाह एक वरिष्ठ अधिकारी एक नौजवान अधिकारी को दे रहा है। इस तंत्र की सबसे बड़ी विडम्बना यही है कि यह ऐसे गतिरोधी तत्वों को भी सहन करता है जिन्हें हटा दिया जाना चाहिए।

इस दौर की कुछ घटनाएँ मेरी स्मृति में आती हैं। मैं कृषि और सिंचाई पर एक संक्षिप्त कोर्स में हिस्सा ले रहा था। उस दिन तत्कालीन एपीसी मुख्य वक्ता थे और वे ट्यूबवेल के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा भूमिगत जल के दोहन पर जोर दे रहे थे। सवाल-जवाब के सत्र के दौरान मैंने उनसे पूछा, ''सर, भूमिगत जल के ज्यादा उपयोग से उसके शीघ्र ही बहुत कम हो जाने की संभावना है। इसी कारण, इसके उपयोग को नियंत्रित करने और ट्यूबवेल लगाने को भी नियंत्रित करने के लिए कानून बनाने जाने की जरूरत है।'' एपीसी इस बात पर चिढ़ गए और नाराज होकर कहा, ''नौजवान अधिकारी, आपको खेती और सिंचाई के बारे में कुछ भी पता नहीं है।'' मैं चुप रहा, पर आगामी सालों में इस क्षेत्र में जो बदलाव हुए, उन्होंने मेरी बात की ही पुष्टि की। मैं पूरी निष्ठा से यह मानता हूँ कि हर आदमी सृजनात्मक होता है और हर अधिकारी को, चाहे वह कितना भी नौजवान क्यों न हो, सृजनात्मक सोच और नए विचार रखने के लिए हमेशा ही प्रोत्साहित करना चाहिए।

एक बार मैंने अपने विशेष सचिव को किसी अनुशासनात्मक प्रक्रिया के विषय में एक विस्तृत टिप्पणी सौंपी, जिसे मैंने गहन विश्लेषण के बाद तैयार किया था। उन्हें यह टिप्पणी पसंद नहीं आई। उन्होंने मुझे अपने चैंबर में बुलाया और इस टिप्पणी को बदलने को कहा। मैंने बहुत विनम्रता से यह सुझाव ठुकरा दिया और उन्हें यह कहा कि इस टिप्पणी को बदलना बौद्धिक ईमानदारी नहीं होगी। इसके बदले मैंने उनसे यह अनुरोध किया कि वे उस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया दें और जैसा उन्हें उचित लगे वैसा निर्णय लें। मेरा सामना ऐसी कई परिस्थितियों से हुआ, पर मैंने हमेशा ही बौद्धिक ईमानदारी और वस्तुनिष्ठता के सिद्धांत का अनुसरण किया और किसी दबाव में कभी नहीं झुका।

1977 में आपातकाल हट गया और शीघ्र ही आम चुनाव हुए। इन चुनावों में केंद्र के साथ-साथ कई राज्यों में अपार बहुमत के साथ जनता पार्टी की सरकार का गठन हुआ। मेरा तबादला रायबरेली के डीएम के रूप में हो गया। मेरे कुछ दोस्तों ने मुझे सुझाव दिया कि जल्द से जल्द पदभार ले लो, अन्यथा राजनीतिक जोड़-तोड़ होने की संभावना है। केवल अच्छी पोस्टिंग के लिए होने वाले इन जोड़-तोड़ (राजनीतिक या प्रशासनिक) में मेरा विश्वास कभी नहीं रहा। मैंने सचिवालय में अपना पद त्याग दिया और जॉइनिंग टाइम का लाभ उठाने के बाद नए पदभार को ग्रहण करने का निर्णय लिया। पदभार लेने से ठीक एक दिन पहले मुझे नियुक्ति सचिव द्वारा फोन पर बताया गया कि नियुक्ति के लिए रायबरेली जाने की बजाए अगले आदेश तक इंतजार करना होगा। इसके बाद इसी आशय का पत्र मिला। एक महीने तक मैं प्रतीक्षा सूची में रहा, उसके बाद मेरी नियुक्ति सचिवालय में खाद्य विभाग में संयुक्त-सचिव के रूप में हुई। इस पद पर मैंने बमुश्किल 15 दिन काम किया, इतने में ही मुझे पौड़ी गढ़वाल के डीएम के रूप में तबादले का आदेश मिल गया। सत्ता के गलियारों में चले इन बदलावों ने मुझे प्रशासन के कुछ बुरे अनुभव प्रदान किए जहाँ काफी दबाव और तोड़-जोड़ हुआ करता था।

इसी दौरान हमारे परिवार में एक पुत्री का आगमन हुआ जिसके आने से हमारा घर खुशी और उल्लास से भर गया। जरूरी कर्मकांडों के बाद हमने उसका नाम प्रज्ञा रखा और घरेलू नाम छवि रखा। पुत्री के आने से हमारे जीवन में खुशियाँ आ गईं और जीवन के प्रति हमारा नजरिया ही बदल गया। पिता बनना एक अनोखा अनुभव था और मैंने अपनी बच्ची के प्रति अदम्य प्रेम और स्नेह का अनुभव किया। अभिभावक बनने के बाद ही किसी व्यक्ति को बच्चों की सुरक्षा, प्रसन्नता और स्वास्थ्य के प्रति अभिभावकों की चिंता समझ में आती है।

अध्याय-१२

जिला मजिस्ट्रेट, पौड़ी गढ़वाल

(सितंबर 1978-मई 1979)

विकास के नाम पर जंगलों के विनाश के लिए केवल और केवल मनुष्य ही जिम्मेदार है। हम इस बात को भूल चुके हैं कि यदि हम स्वयं को जंगलों से दूर कर लें तो ज्यादा लंबे समय तक टिके नहीं रह सकते।

जब छवि बमुश्किल 4 महीने की थी, तभी मेरा तबादला पौड़ी गढ़वाल के डीएम के रूप में हुआ। मैं अपने साथ अपने परिवार को नहीं ले गया। यह जिला, जिसे ब्रिटिश गढ़वाल के रूप में भी जाना जाता है, असल में हिमालय क्षेत्र में बसा हुआ एक सुंदर जिला है। चिर-हरित शंकुधारी वनों, हिमाच्छादित शिखरों, वनस्पति और जैव विविधताओं और पर्यटन स्थलों वाला यह जिला हमेशा ही पर्यटकों के लिए आकर्षण रहा है। गंगा का निर्मल प्रवाह हमेशा ही स्वर्गाश्रम, गीता भवन, परमार्थनिकेतन, लक्ष्मण झूला, नीलकंठ, देवप्रयाग जैसे स्थानों की तीर्थयात्रा में अनोखा आकर्षण जोड़ता है। मैंने यहाँ अपनी नियुक्ति को काफी पसंद किया।

पौड़ी तक सीधे पहुँचने के साधन नहीं थे, मुझे लखनऊ से नजीबाबाद और फिर वहाँ से कोटद्वार तक ट्रेन से यात्रा करनी पड़ी। कोटद्वार भाबर इलाके का एक महत्त्वपूर्ण शहर है। यहाँ उतरने के बाद मैंने उन तकलीफों को महसूस किया जो पहाड़ी इलाके के लोग अपने रोजमर्रा के जीवन में झेलते हैं। तेज बारिश हो रही थी और कई जगहों पर भू-स्खलन हुआ था जिसके कारण सड़कें बंद हो गई थीं। मुझे पदभार ग्रहण करने के लिए 20 किलोमीटर पैदल चलकर पौड़ी पहुँचना पड़ा। यह एक मुश्किल पर आनंददायक चढ़ाई थी। हिमालय मेरे लिए हमेशा ही एक विशेष आकर्षण रहे हैं और जब भी मैं इस इलाके में आता हूँ, मैं ऐसा महसूस करता हूँ जैसे मैं एक बिल्कुल नए संसार में प्रवेश कर गया हूँ। इस इलाके की शुद्धता और पवित्रता तथा अलौकिक सौंदर्य के साथ गंगा की उपस्थिति हमेशा ही मुझमें अदृश्य तरंगें पैदा करती हैं।

पौड़ी 7000 फीट की ऊँचाई पर बसा है और यहाँ की सर्दियाँ बहुत तीक्ष्ण होती हैं। दोपहर के तीन बजे हाड़ कंपा देने वाली बर्फीली सर्द हवाएँ चलना शुरू

हो जाती हैं। वहाँ डीएम के आवास में आग जलाने का ताखा हुआ करता था जिसके किनारे हम अर्धवृत्त बनाकर बैठ कर ताप लिया करते थे। यहाँ पहली बार मैंने देखा कि लकड़ी की जगह पर चीड़ के शंकुओं का इस्तेमाल किया जाता था। आग के समीप बैठकर चाय के साथ गरम पकौड़े और भुने बादाम का लुत्फ उठाना बहुत आनंददायी लगता था।

प्रशासनिक संसार में प्राय: यह कहा जाता है कि डीएम के रूप में पहली नियुक्ति पहले प्यार की तरह होती है जिसे भुलाया नहीं जा सकता। मैं आज भी उन दिनों को याद करता हूँ जो मैंने पौड़ी में बिताए थे। डीएम एक महत्त्वपूर्ण संस्थान है क्योंकि वह जिला स्तर पर सरकार के आँख-कान और मस्तिष्क का प्रतिनिधित्व करता है। उसे जनता का माँ-बाप और वंचित और दलित लोगों का संरक्षक माना जाता है। विधि-व्यवस्था के दृष्टिकोण से यह जिला सामान्य तौर पर शांत जिला था। मुझे यहाँ कोई समस्या नहीं हुई। विकास कार्यों, जनसम्पर्क और लोक-शिकायतों के निपटारे पर ज्यादा जोर दिया जाता था। इस जिले में, लोग उन अधिकारियों को पसंद करते थे जो दूर-दराज के इलाकों में जाते थे और जरूरत पड़ने पर चढ़ाई कर के भी ज्यादा से ज्यादा जगहों तक पहुँचते थे। मैंने काफी दौरे किए और लगभग सभी तहसीलों, उप-तहसीलों और अधिकांश ब्लॉकों का निरीक्षण किया। पौड़ी आदर्श रूप से बागवानी और आलू की खेती के लिए उपयुक्त है। अपने कार्यकाल के दौरान यहाँ मैंने अखरोट और सेब की खेती पर जोर दिया। स्थानीय विकास निधि का इस्तेमाल करते हुए मैंने वहाँ मशरूम की खेती की शुरुआत की पहल की। एक अवकाश प्राप्त ब्रिगेडियर और एक अन्य शिक्षित व्यक्ति जो एक प्रगतिशील किसान थे, उन दोनों का चुनाव किया गया और जिला प्रशासन की तरफ से उनको वित्तीय सहायता प्रदान की गई। मेरा मानना है, इस पहल से पौड़ी में मशरूम की खेती का विकास हुआ। लघु सिंचाई, गुरुत्व सिंचाई और हाइड्रम सिंचाई पर भी बहुत बल दिया गया। सीमा सड़क संगठन के द्वारा व्यापक स्तर पर सड़क निर्माण के अलावा, मैंने जिले के दूरदराज के क्षेत्रों को जोड़ने के लिए लघु सड़कों और घोड़े के चलने लायक सड़कों के निर्माण में भी बहुत दिलचस्पी ली। जंगलों का काटा जाना एक बड़ी चिंता का विषय था और स्थानीय लोगों ने वन पंचायत के माध्यम से वन आच्छादन को प्रोत्साहित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। मैंने यह गौर किया कि जब भी वन पंचायत सक्रिय होती थी तब वह बहुत ही सराहनीय काम करती थी। जिले में कई प्रकार के वन थे, जैसे संरक्षित वन जो वन विभाग

के अधीन होता था, सिविल स्वयं वन जो डीएम के अधीन होता था, पंचायत वन और निजी वन। उस समय इन अलग-अलग संस्थानों के मध्य समन्वय के लिए मुझे डीएम के अलावा कोई अन्य एजेंसी नहीं दिखाई देती थी। ग्रामीण लोगों को जंगल पर कुछ अधिकार मिले हुए थे और वे घर बनाने के लिए लकड़ी काटने के लिए आवेदन दिया करते थे। जिले में एक अच्छी परंपरा थी कि जब भी एक पेड़ काटने की अनुमति दी जाती थी तो लाभार्थी को उसके स्थान पर 10 पेड़ लगाने का निर्देश दिया जाता था, लेकिन यह निर्देश कुल मिलाकर केवल कागजी ही रह जाता था। इस महत्त्वपूर्ण पक्ष का प्रभावी नियंत्रण और अनुपालन ठीक से नहीं किया जाता था। मुझे एक दिलचस्प बैठक याद आती है जिसे हमारे कमिश्नर ने वनरोपण कार्यक्रम की समीक्षा के लिए आयोजित किया था। जब उन्होंने जनता से सुझाव मांगा, तो श्री नेगी, जो सरपंच और एक समर्पित कार्यकर्ता थे, ने कहा, ''यदि हम सब लोग 10 साल के लिए पौड़ी खाली कर दें और इलाके को छोड़ दें तो यह इलाका सघन जंगल बन जाएगा।'' सब लोग हंसने लगे पर मुझे यह बात बहुत दिलचस्प लगी। विकास के नाम पर जंगलों के विनाश के लिए केवल और केवल मनुष्य ही जिम्मेदार है। हम इस बात को भूल चुके हैं कि यदि हम स्वयं को प्रकृति से दूर कर लें तो ज्यादा लंबे समय तक टिके नहीं रह सकते। अब हम संसार के कई हिस्सों में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को देख सकते हैं। अब समय आ गया है कि सतत् विकास सुनिश्चित करने के लिए हमें विकास के पर्यावरण-सम्मत पक्ष पर बल देना होगा। हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रकृति के पास सब कुछ है, पर वह हमारे लालच को पूरा नहीं कर सकती। हमारी विकास योजनाएँ आवश्यकताओं पर आधारित होनी चाहिए, न कि लालच पर। औषधीय पौधों का संरक्षण, प्रोत्साहन और सुरक्षा ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

पर्यटन के क्षेत्र में भी काफी संभावनाएँ हैं। तीर्थयात्रा पर्यटन के अलावा पहाड़ की चढ़ाई, एडवेंचर टूरिज्म, इको-टूरिज्म, होम स्टे और रिवर राफ्टिंग इस क्षेत्र के विकास का आधार बन सकते हैं। ब्रिटिश प्रशासन को भी धन्यवाद दिया जाना चाहिए कि उन्होंने इस इलाके के हर कोने में वन निरीक्षण बंगलों की श्रृंखला निर्मित की है। इन बंगलों में से प्रत्येक में एक दिलचस्प विशेषता है, वह यह कि हर बंगले में एक पुस्तकालय है जिसमें इस क्षेत्र की वनस्पति और जीवों पर किताबें हैं।

मुझे पर्यटन और पहाड़ पर चढ़ाई बहुत पसंद थी। अपने दौरों में पहला हिस्सा

मैं अपने कार्यालयी कामकाज को देता था और इसके बाद एक हिस्सा फील्ड वर्क को भी दिया करता था। मुझे याद है कि जब मैं एक बार एक दूरदराज के ब्लॉक का निरीक्षण कर रहा था, मैंने सोयाबीन की खेती के प्रदर्शन प्लॉट को देखने की इच्छा जाहिर की। मध्याह्न भोजन के बाद जब मैं यात्रा शुरू करने के लिए तैयार था, तब खण्ड विकास अधिकारी ने यह तर्क देते हुए मुझे मना करने का प्रयास किया कि मैं पहले ही 5 किलोमीटर की पदयात्रा कर चुका हूँ। मैंने उनसे कहा कि आप मेरे बारे में चिंतित न हों, क्योंकि मैं आराम से यह दूरी तय कर लूँगा। हमने चलना शुरू किया। चलते-चलते शाम हो गई पर फिर भी प्रदर्शन प्लॉट की कोई झलक नहीं दिख रही थी। जब वह अंततः हमें प्लॉट तक ले गया, मुझे वहाँ सोयाबीन की खेती का कोई चिह्न नहीं दिखाई दिया। वहाँ से लौट कर मैंने उस अधिकारी को निलंबित कर दिया और उसके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई प्रारम्भ कर दी।

जिले के विकास कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए मैंने पाया कि एक खास बीडीओ का प्रदर्शन पूरी तरह शून्य था। मैंने उससे पूछा, ''इसका कारण क्या है?'' उसने आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया, ''सर, मैं विकास कार्यों में धूर्तता नहीं करना पसंद करता। मैं ईमानदार आदमी हूँ, मैं जो भी करूँगा, उचित तरीके से करूँगा।'' मैं उसके उत्तर से प्रभावित हुआ। एक महीने के बाद जब मैंने प्रगति की दोबारा समीक्षा की तो पाया कि उस ब्लॉक में विकास कार्य अभी भी बहुत ही मंद गति से चल रहे हैं। जब मैंने इस बारे में तफतीश की, तो एक बार फिर उसने उसी प्रकार से जवाब दिया। मैंने यह महसूस किया कि वह बीडीओ झूठ बोल रहा है और असल में वह कामचोर है। मैंने उसके बारे में दूसरे स्रोतों से भी पता लगाया तो मुझे पता चला कि वह काम करने वाला आदमी नहीं है और अपना समय शराब पीने में बर्बाद करता है। काफी मुश्किलों के बाद मैंने उसका तबादला दूसरे जिले-टेहरी गढ़वाल में करा दिया। मुझे यह पता नहीं था कि एक साल बाद मेरा भी तबादला वहीं होना है। तब मुझे इस बात का एहसास हुआ कि तबादला कोई समाधान नहीं है और काम नहीं करने वाले लोगों को सजा मिलनी चाहिए और बढ़िया काम करने वालों को इनाम भी मिलना चाहिए।

जिले की महिलाएँ बहुत मेहनती और ईमानदार थीं। बहुत सारे परिवार शराबी पुरुषों की समस्या से ग्रसित थे। पौड़ी में अपने कार्यकाल के दौरान मैंने महिलाओं को एकजुट होकर शराब पीने के नुकसानों के बारे में एक अभियान चलाने और कच्ची शराब की भठ्ठियों को ध्वस्त कर देने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने

इस प्रकार के अभियानों में पूरे उत्साह से भाग लिया। मैं उनको सलाम करता हूँ क्योंकि वे खेतों में काम करने के साथ-साथ घर का भी काम किया करती थीं, जलाशयों से पानी भी लाती थीं, चारा भी लाती थीं और जलावन के लिए लकड़ी भी जुटाती थीं। किसी भी कार्यक्रम की सफलता उसमें महिलाओं की वास्तविक भागीदारी पर ही निर्भर करती है। उनकी भागीदारी के बिना पर्वत विकास कार्यक्रम पूरी तरह रुक जाता। मैंने भी यह गौर किया था कि शारीरिक रूप से समर्थ पुरुष ज्यादातर या तो सेना में चले जाते थे या फिर काम की तलाश में मैदानी इलाकों की ओर प्रवासित हो जाते थे। पहाड़ों की अर्थव्यवस्था को प्रायः 'मनीऑर्डर अर्थव्यवस्था' भी कहा जाता था क्योंकि पहाड़ों पर बहुत कम विकास हुआ था। उस समय भारत सरकार ने इस जिले में विकास कार्यों को बढ़ावा देने के लिए 'पर्वतीय क्षेत्र विकास अभिकरण' (एचएडीए) की अवधारणा की शुरुआत की थी। इसके परिणामस्वरूप इन वर्षों में इसके परिणामस्वरूप काफी विकास का कार्य हुआ है। चूंकि हिमालय का इलाका संसार का सबसे नवीन पहाड़ी इलाका होने के कारण भंगुर इलाका है, यहाँ भूस्खलन, त्वरित बाढ़, भूकंप आदि की संभावना बनी रहती है। इसी कारण, विकास के कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए वैश्विक ताप वृद्धि और पर्यावरणीय क्षति के प्रभावों को कम करने के लिए सतत विकास के अवयवों को भी ध्यान में रखना होगा। अन्यथा, यदि हिमालय श्रृंखला में संकट पैदा होता है और यहाँ से निकलने वाले जल स्रोत सूख जाते हैं, तो इसके परिणामस्वरूप पूरे देश से मानव सभ्यता समाप्त हो जाएगी।

मैंने जिम कॉर्बेट की किताब 'मैनईटर्स ऑफ कुमाऊँ' पढ़ रखी थी, साथ ही अखबारों में दुगड्डा के नरभक्षी के बारे में भी पढ़ा था। उस समय उत्तर प्रदेश कैडर के ऊर्जावान अधिकारी श्री जॉर्ज जोसेफ पौड़ी के डीएम के रूप में पदस्थ थे। वे मेरे पूर्ववर्ती थे। जब बाघ के संकट बढ़ने लगे, श्री जोसेफ ने यह प्रतिज्ञा ली कि जबतक बाघ मारा नहीं जाता तब तक वे हजामत नहीं बनाएँगे। कठिन प्रयास किए गए और अंततः जिला प्रशासन और वन विभाग के प्रयासों के फलस्वरूप बाघ पकड़ा गया। जब मैं अपना पदभार लेने के क्रम में श्री जोसेफ से मिला, उन्होंने बहुत घनी दाढ़ी बढ़ाई हुई थी। जब मैंने इस बारे में उनसे पूछा तो हँसकर उन्होंने कहा, ''चूंकि बाघ को मारा नहीं गया, बल्कि पकड़कर पिंजड़े में डाल दिया गया, इस कारण अपनी प्रतिज्ञा के मुताबिक मैंने हजामत नहीं बनाई।''

पौड़ी गढ़वाल में अपने प्रवास के दौरान मेरा भी कई बार बाघों से सामना हुआ। एक बार शाम में अपनी पत्नी और बेटी के साथ कोटद्वार जाते समय हम जब सुस्ताने के लिए बाहर निकले, हमें एक दहाड़ सुनाई पड़ी। डर के मारे हम भागकर कार में आ गए। कार चालू करके जैसे ही हम कुछ कदम आगे बढ़े कि एक बाघ ने कार के सामने छलांग लगायी। हमने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि हम कार के अंदर थे।

एक शाम मैं देहरादून में एक बैठक में शामिल होने के बाद देवप्रयाग रोड से पौड़ी लौट रहा था, तभी मैंने एक बाघ को एक सीमेंट की बेंच पर आराम करते हुए देखा। चूंकि मैं एक खुली जीप में था, इस कारण मैं घबरा गया और मैंने अपने ड्राईवर को कहा कि वो गाड़ी एकदम धीरे चलाए ताकि बाघ तंग ना हो। बाघ अचानक से उठ गया और कुछ देर तक बहुत शान के साथ हमारी गाड़ी के आगे-आगे चलता रहा। गाड़ी की उपस्थिति से उसको कोई परेशानी नहीं हुई और कुछ देर बाद वह जंगल में गायब हो गया। इससे हमें यह सबक मिला कि जानवर तब तक हमला नहीं करते जब तक उन्हें छेड़ा ना जाए। इसके बाद स्थानीय कर्मचारियों ने मुझे यह सलाह दी कि शाम के समय जंगल के इलाके में गाड़ी से न उतरें। गाड़ी से तब ही उतरना समझदारी है जब आसपास मानव बसावट हो या कोई बाजार हो। जब भी मैंने पहाड़ी इलाके में यात्रा की, मैंने इस सलाह का बेहद सतर्कता से पालन किया।

पौड़ी में अपने कार्यकाल के दौरान की दो घटनाएँ मेरी स्मृति में आती हैं। इनमें से एक घटना है ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री का ढिकाला जिम कॉर्बेट पार्क दौरा और दूसरी घटना दो गाँवों के बीच वन-अधिकारों और पेयजल स्रोत को लेकर लंबे समय से चल रहे विचित्र विवाद से संबंधित है। पहले मैं ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री की यात्रा की चर्चा करता हूँ। हर पर्यटक यह सोचता है कि जिम कॉर्बेट पार्क पूरी तरह नैनीताल जिले में है। असल में, यहाँ मौजूद सबसे महत्त्वपूर्ण पर्यटक सुविधाएँ, इमारतें, विश्रामगृह, भोजनालय आदि सब ढिकाला में हैं जो पौड़ी जिले के अधिकार क्षेत्र में आता है। मुझे वायरलेस पर ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री के आगमन की सूचना राज्य सरकार से मिली। यात्रा की पूरी व्यवस्था ढिकाला में ही होनी थी। शुरुआत में मुझे यह लग रहा था कि जिम कॉर्बेट पार्क नैनीताल के जिलाधिकारी के अधीन आता है, इस कारण वे इसकी व्यवस्था करेंगे। मुझे यह जानकार बहुत हैरानी हुई कि जिम कॉर्बेट पार्क का सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान, यानि ढिकाला पौड़ी के जिलाधिकारी के अधिकार क्षेत्र

में है। यानि मुझे ही सारी व्यवस्था का निरीक्षण करना था। उनके दौरे से पाँच दिन पहले मैं व्यवस्था का जायजा लेने ढिकाला जा रहा था। रास्ते में एक पुलिस सब-इंस्पेक्टर ने मेरी गाड़ी रोकी और बिना कुछ कहे ही मेरी बगल में बैठ गया, जबकि मैं सरकारी गाड़ी से यात्रा कर रहा था। उसने पूछा, 'कहाँ जा रहे हो?' मैंने जवाब दिया, 'ढिकाला'। फिर उसने पूछा, ''क्या करते हो?'' मैंने बताया कि मैं सरकारी नौकरी में हूँ। तब फिर उसने पूछा, ''किस पोस्ट पर हो?'' जब मैंने उसे बताया कि मैं पौड़ी गढ़वाल का डीएम हूँ, तब वह अवाक् रह गया। उसने ड्राईवर से गाड़ी रोकने को कहा, नीचे उतरा, मुझे सैल्युट किया और बार-बार माफी मांगने लगा। मैंने बुरा नहीं माना और उस सब-इंस्पेक्टर को अपने साथ ढिकाला ले गया। कई बार, जब एक आदमी को शक्ति मिलती है, वह ताकत उसके सर चढ़कर बोलने लगती है और आदमी अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है।

जब मैं ढिकाला पहुँचा तो देखा कि वह जगह पर्यटकों से भरी हुई है। सुरक्षा के दृष्टिकोण से उस जगह को चाक-चौबंद करना जरूरी है। मैंने वन विभाग से लोगों के परमिट अविलंब रद्द करने का अनुरोध किया और पूरा परिसर हमें दे देने को कहा। जब मैंने यह देखा कि वन विभाग इस मामले में कुछ नहीं कर रहा है, तब मैंने स्वयं, बहैसियत डीएम, वहाँ रुके पर्यटकों को वहाँ से निकलने का आदेश निर्गत किया और पुलिस को निर्देश दिया कि वह कैंपस का खाली होना सुनिश्चित करे, क्योंकि हमारे पास केवल तीन दिन का ही समय बचा था। मैं समझता हूँ कि मेरे इस आदेश से पर्यटकों को असुविधा हुई होगी, पर विशेष अतिथियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दृष्टि से मुझे यह करना ही पड़ा।

दूसरी घटना दो गाँवों के बीच वन-अधिकारों और पेयजल स्रोत को लेकर लंबे समय से चल रहे विवाद से संबंधित है। यह विवाद डीएम के कोर्ट में आजादी से भी पहले से पड़ा हुआ था। जब मुझे इस विवाद के विषय में ज्ञात हुआ, तब मैंने इस विवाद का निपटारा करने का निश्चय किया। यह मामला बहस के स्तर तक पहुँच चुका था और जिस ब्रिटिश अधिकारी ने स्पॉट सर्वे किया था वह आजादी के बाद अपने देश लौट चुका था। उसने जो सर्वे रिपोर्ट सौंपी थी उसे प्रदर्शित नहीं किया गया था। इसकी वजह से थोड़ी समस्या थी, पर दोनों पक्षों की सहमति से मैंने सुनवाई प्रारम्भ की। मैं तीन सप्ताह तक लगातार बिना रुके बहस सुनता रहा और इस दौरान विस्तृत नोट्स भी लेता गया जो कुल मिलाकर 50 पेज से ज्यादा हो गए। इसके बाद मैंने फाइलों के अध्ययन

और मामले को समझने के लिए एक महीने का समय और लिया। इसी दौरान मेरे स्टेनो ने मुझसे कहा, ''सर, कई डीएम आए और गए, पर किसी ने इस फाइल को छुआ भी नहीं। जिस किसी ने भी इस मामले को सुलझाने का प्रयास किया, उसका तबादला हो गया।'' मैंने उसकी बात को हँसकर उड़ा दिया और उसे अगले दिन लंबे समय तक श्रुतिलेख के लिए तैयार होकर आने को कहा। अगली सुबह, जब मैं श्रुतिलेख देने को बैठा, तभी मुझे टेहरी-गढ़वाल के डीएम के रूप में तबादले की सूचना मिली। क्या वह फाइल मनहूस थी? मुझे नहीं मालूम कि इसका क्या हुआ, यह आज भी एक रहस्य है।

पौड़ी में जीवन शांत और तनावरहित था, पर बहुत सीमित भी क्योंकि सामाजिक जीवन केवल कुछ अधिकारियों के इर्द-गिर्द ही घूमता था। डीएम आवास में एक बिलियड्र्स टेबल था, ज्यादातर शाम बिलियड्र्स खेलते हुए ही बिताई जाती थीं। वहाँ कई मनोरम स्थल थे, जैसे पौड़ी, कोटद्वार, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, लैंसडाउन, खिरसू और मुंडनेश्वर आदि। मेरा कई बार लैंसडाउन जाना हुआ क्योंकि गढ़वाल राइफल्स का मुख्यालय वहीं स्थित था। यह स्थान लंबी दूरी तक पैदल चलने के लिए बहुत अच्छा है। मैंने किंकालेश्वर, श्रीनगर के कमलेश्वर महादेव, ज्वाला देवी, कण्व आश्रम और सबसे बढ़कर प्रसिद्ध नीलकंठ महादेव की यात्रा की। इसके साथ-साथ मैं गंगा किनारे अवस्थित स्वर्गाश्रम, गीता भवन और परमार्थ निकेतन जैसे आश्रमों में भी गया। पवित्र स्थानों की ऐसी यात्राओं ने मुझे शांति, पवित्रता और प्रसन्नता प्रदान की।

पौड़ी में पहली बार मुझे चार्ज-नोट लिखने की परंपरा के बारे में पता चला, जो पद-त्याग करने वाला डीएम अपने उत्तराधिकारी के लाभार्थ छोड़ कर जाता है। ब्रिटिश शासन के दौरान यह एक सामान्य प्रथा थी जिसमें पिछला डीएम आने वाले डीएम के लिए एक विस्तृत चार्ज-नोट लिख कर जाता था जिसमें वह जिले की भौगोलिक संरचना, जनसंख्या, राजनीतिक और सामाजिक नेतृत्व, मेले-त्योहारों, महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व, विकास-संभावनाओं और विभिन्न समस्याओं की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करता। यह एक बहुत अच्छी परंपरा थी जो कुछ समय तक चली और शायद धीरे-धीरे इसे खामोशी के साथ तिलांजलि दे दी गई।

अध्याय-१३

जिला मजिस्ट्रेट, टिहरी गढ़वाल

(जून 1979-जून 1980)

हिमालय के प्राकृतिक परिवेश और पवित्र सौन्दर्य से अभिभूत मुझे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि यह यात्रा वशिष्ठ आश्रम के साथ मेरे लंबे जुड़ाव में परिणत हो जाएगी।

9 महीनों तक पौड़ी गढ़वाल में सेवा प्रदान करने के बाद मेरा तबादला मई 1979 के आखिरी सप्ताह में टिहरी गढ़वाल में हुआ। मुझे इस तबादले का कारण नहीं मालूम था, संभवतः यह इसी सेवा से संबधित एक विवाहित युगल के लिए स्थान बनाने के लिए हुआ था। मैंने गढ़वाल के दोनों जिलों में सेवा दी, पर दोनों के बीच स्पष्ट अंतर था। पौड़ी गढ़वाल प्रत्यक्ष ब्रिटिश शासन के अधीन था जबकि टेहरी गढ़वाल टेहरी के राजा के शासन के अधीन था। संभवतः यही तथ्य दोनों जिलों के मध्य विकास की स्थिति और विकास के रुख के अंतर को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त है। पौड़ी ज्यादा विकसित और प्रगतिशील था, वहाँ के लोग भी प्रशासन और विकास के प्रति अधिक सकारात्मक नजरिया रखते थे। टेहरी में राजनीति, विरोध और बहसें ज्यादा दिखाई देती थी। लेकिन अनिवार्य रूप से दोनों जिलों की समस्याएँ एक ही हैं- पिछड़ापन, बुनियादी ढाँचे और संचार की कमी, पेयजल की समस्या, जंगलों का क्षरण, स्वास्थ्य और शैक्षिक सुविधाओं की कमी और मानसून के मौसम के दौरान बार-बार भूस्खलन। दोनों गढ़वालों के जिलाधिकारी के रूप में, मुझे पहाड़ी क्षेत्रों की समस्याओं को समझने का अच्छा मौका मिला और दोनों जिलों के विकास में योगदान करने का भी एक शानदार अवसर मिला।

मुख्यालय नरेंद्र नगर, एक छोटा और सुंदर शहर था जिसे हिल स्टेशन और मैदानी इलाकों जैसे मुनि-की-रेती और ऋषिकेश के साथ निकटता का फायदा मिलता था। टिहरी के डीएम हफ्ते में एक बार टिहरी शहर का दौरा करते थे और अदालत लगाने और लोगों से बातचीत का काम करते थे। पहाड़ी जिला प्रशासन की खाासियत यह है कि इस क्षेत्र ने राजस्व पुलिस प्रशासन की एक सुस्थापित प्रथा विकसित की है, जो मुझे विश्वास है, अभी भी अस्तित्व में है। मेरे

कार्यकाल के दौरान, पूरे जिले में नियमित पुलिस बल का ढाँचा था, जिसका अधिकार क्षेत्र केवल मुख्य मार्गों पर था। अधिकांश क्षेत्र मुख्य रूप से राजस्व पुलिस के अधीन थे। इसमें पटवारी चौकियाँ थीं जो पुलिस थानों के रूप में काम करती थीं। पटवारी, पर्यवेक्षक–कानूनगो, नायब तहसीलदार, तहसीलदार के पास कानून–व्यवस्था की स्थिति को संभालने और अपराध की जाँच करने के लिए जरूरी सभी पुलिस अधिकार थे। इन क्षेत्रों में लोगों की सादगी और कम अपराध को देखते हुए, राजस्व पुलिस प्रणाली दबाव और समय की आवश्यकताओं पर खरी उतरी है। लेकिन बढ़ती विकास गतिविधियों और पहाड़ी क्षेत्रों में आने वाले अन्य हिस्सों के पर्यटकों और लोगों की अधिक संख्या ने यहाँ की अलग तरह की अन्यथा शांतिपूर्ण स्थितियों को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। इसने पुलिस व्यवस्था पर नए सिरे से गौर किए जाने की जरूरत को रेखांकित किया है। राजस्व पुलिस प्रणाली में बुनियादी ढाँचे, प्रशिक्षण, जाँच क्षमताओं और आवश्यक उपकरणों और हथियारों का अभाव है। समय–समय पर राजस्व पुलिस प्रणाली को मजबूत करने के प्रयास किए गए हैं लेकिन ये आधुनिक समय की जटिलताओं से निपटने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। पेशेवर होने और दक्षता बढ़ाने के लिए नियमित पुलिस के अधिकार क्षेत्र को बढ़ाना तथा इसके साथ राजस्व पुलिस को मजबूत करने हेतु उनके सशक्तीकरण, पुनर्विन्यास और आधुनिकीकरण का काम एक साथ किया जाना समय की आवश्यकता है।

टिहरी में आधिकारिक जीवन शांतिपूर्ण था और टिहरी बाँध आंदोलनकारियों द्वारा समय–समय पर गड़बड़ी के अलावा कोई कानून और व्यवस्था की समस्या नहीं थी। इसने मुझे पूरी एकाग्रता के साथ विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के अवसर प्रदान किए। अक्सर, मैंने देखा कि जलस्रोतों को लेकर ग्रामीणों के बीच विवाद थे। जब इस तरह के अवसर पैदा हुए, तो या तो इसे ग्रामीणों के बीच बातचीत के माध्यम से हल किया जाता था या फिर अधिनिर्णय के माध्यम से। टिहरी बाँध के लिए भूमि अधिग्रहण और विस्थापितों के पुनर्वास ने एक गंभीर चुनौती पेश की। टिहरी बाँध के प्रशासक श्री जॉर्ज जोसेफ के साथ मिलकर हम दोनों ने बहुत हद तक स्थिति को सामान्य बनाने का काम किया। यहाँ सामाजिक जीवन नहीं के बराबर था या, केवल कभी–कभी अधिकारियों के क्लब में कोई सामूहिक कार्यक्रम, यदाकदा खेल प्रतियोगिताएँ शाम को बैडमिंटन ही इसके अपवाद थे। सामाजिक जीवन में रोचकता लाने के लिए हम सभी सहकर्मियों ने शीतकालीन उत्सव (सांस्कृतिक) को सफल बनाने में सक्रिय भागीदारी की। हमने

नरेंद्र नगर में फुटबॉल लीग मैच शुरू करने की पहल की, जो काफी हिट रहा।

हिमालय देवताओं का निवास है और उत्तराखंड देवभूमि है। सम्पूर्ण हिमालयी क्षेत्र आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण है और यहाँ स्पंदन स्पष्ट रूप से महसूस किए जाते हैं। आध्यात्मिक जीवन वस्तुतः उच्च है। गंगा पौड़ी और टिहरी गढ़वाल के बीच सीमा रेखा का निर्माण करती है। मुनि-की-रेती जो ऋषिकेश के करीब है, टिहरी गढ़वाल में है और यात्रा मार्ग पर स्थित है। यहाँ शिवानंद आश्रम, ओंकारानंद आश्रम, विठ्ठल आश्रम आदि जैसे प्रसिद्ध आश्रम हैं। अपने कार्यकाल के दौरान, मैं शिवानंद आश्रम (ईश्वरीय जीवन सोसायटी) और विशेष रूप से स्वामी प्रेमानंदजी के संपर्क में आया, जो सादगी और शांति के प्रतीक थे। उन्होंने मुझे स्वामी शिवानंद जी की पुस्तकों से परिचित कराया। इस आश्रम के साथ मेरे जुड़ाव ने न केवल मुझे उनके बहुत से आध्यात्मिक ग्रन्थों को पढ़ने का मौका दिया बल्कि आध्यात्मिक विकास के लिए मेरी उत्कंठा भी बढ़ा दी।

पट्टी, गूलरदोगी में वशिष्ठ गुफा एक प्रसिद्ध गुफा है। ऐसा माना जाता है कि रामचंद्रजी के गुरु वशिष्ठ महर्षि ने अपनी पत्नी अरुंधति के साथ कई वर्षों तक यहाँ ध्यान किया था। यह भी माना जाता है कि वशिष्ठ जी राम और लक्ष्मण को इस क्षेत्र में लाये थे जिससे कि वे ब्रह्महत्या के पाप का प्रायश्चित करने के लिए

शिव पूजन करते स्वामी चैतन्यानन्द जी

तपस्या करें क्योंकि उन्होंने एक ब्राह्मण रावण, उसके पुत्रों और रिश्तेदारों का वध किया था। वशिष्ठ ने लक्ष्मणझूला क्षेत्र को लक्ष्मण और देव प्रयाग (अलकनंदा और भागीरथी का संगम, जहाँ से गंगा नदी का निर्माण होता है) को राम का तपस्या स्थान बनाया। देव प्रयाग में रघुनाथजी के रूप में राम की एक सुंदर मूर्ति है। यह एक लोक कथा प्रतीत होती है, लेकिन फिर भी यह लक्ष्मणझूला और देव प्रयाग के बीच स्थित वशिष्ठ गुफा के महत्त्व पर प्रकाश डालती है। इस गुफा को बाद में 1923 में स्वामी पुरुषोत्तमानंदजी ने खोजा था और उन्होंने इसे अपनी तपस्थली (ध्यान का स्थान) के रूप में इस्तेमाल किया था। यह सघन जंगलों के बीच एक सुंदर जगह है जहाँ गंगा संगीतमयता के साथ तेजी से नीचे बहती है। यह स्थान आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ जीवंत है, साथ ही प्राकृतिक सुंदरता और गंगा की ऐतिहासिक महिमा से प्रभावित है। स्वामी पुरुषोत्तमानंदजी स्वामी ब्रह्मानंदजी के शिष्य थे, जो स्वामी विवेकानंद के गुरुभाई थे और रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। स्वामी पुरुषोत्तमानंदजी के समाधि ग्रहण करने के बाद, उनके शिष्य स्वामी चैतन्यानंदजी अब वशिष्ठ आश्रम के वर्तमान प्रमुख हैं। स्वामी चैतन्यानंदजी 86 वर्ष के हैं और सादगी और करुणा के प्रतीक हैं। एक बच्चे के रूप में वे स्वामी पुरुषोत्तमानंदजी के साथ जुड़े और अपने जीवन में काफी पहले ही सांसारिकता का त्याग कर दिया। एक युवा संन्यासी के रूप में वे वशिष्ठ गुफा के पास आए और अपने गुरु के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में योग और आध्यात्मिक ज्ञान सीखा। उन्होंने सभी हिमालयी क्षेत्रों तिब्बत, उत्तराखंड और देश के अन्य हिस्सों में भी यात्रा की है।

वशिष्ठ आश्रम से मेरा जुड़ाव 1979 में तब से है जब मैं टिहरी गढ़वाल में जिलाधिकारी था। एक शाम जब मैं गंगा के तट पर महाराजा टिहरी के स्विस कॉटेज में डेरा डाले हुए था, मेरे एक अधिकारी ने मुझे बताया कि यहाँ एक प्रसिद्ध गुफा है, जिसे वशिष्ठ गुफा के नाम से जाना जाता है और मुझे उस स्थान की यात्रा करने की सलाह दी। उस समय मैं बहुत आध्यात्मिक प्रवृत्ति का नहीं था लेकिन गुफा में जाने के लिए मेरे अंदर एक जबरदस्त इच्छा पैदा हुई क्योंकि मुझे लगा कि यह एक साहसिक यात्रा होगी। मैं आसानी से तैयार हो गया और शाम को गुफा का दौरा किया। शाम ढल चुकी थी और गंगा एक सुंदर संगीतमय स्वर के साथ बह रही थी। मुझे पवित्र गुफा और वहाँ का प्राकृतिक वातावरण पसंद आया। वह जगह वास्तव में शांत और निर्मल थी। वहाँ के परिवेश और हिमालय की प्राचीन महिमा से मैं बहुत प्रभावित हुआ, पर शायद तब मुझे यह

पता नहीं था कि इस यात्रा का परिणाम वशिष्ठ आश्रम के साथ मेरा एक लंबा जुड़ाव होगा, जिससे मेरे भीतर असीम आध्यात्मिक चेतना जागृत होगी।

1991 के बाद से, मैं मई और जून में हिमालय में ट्रेक करने और यात्रा के दौरान पवित्र व्यक्तियों से मिलने के लिए 10 दिनों की छुट्टी लेता था, तब से मैं नियमित रूप से स्वामी चैतन्यानंदजी के आशीर्वाद और पवित्र उपस्थिति का लाभ लेने के लिए वशिष्ठ आश्रम जाता रहा हूँ। जब भी मैं इस स्थान पर जाता हूँ, मैं पूरी तरह से अलग संसार में चला जाता हूँ। आम तौर पर जब मैं यहाँ होता हूँ, मैं सुबह और शाम की आरती में गुफा के साथ-साथ गुरु महाराज के मंदिर में भी जाता हूँ। शंख और घंटियों की आवाज वाली संध्या आरती काफी रोमांचकारी होती है। यहाँ पर परोसा जाने वाला भोजन सादा होता है लेकिन जिस स्नेह के साथ इसे परोसा जाता है वह स्वादिष्ट और आनंददायक होता है। स्वामीजी वहाँ रहने वाले हर व्यक्ति के स्वास्थ्य, आराम और कठिनाइयों के बारे में पूछते हैं। गुफा के शिव लिंग की सोमवार की पूजा और मंदिर की पूजा दोनों ही काफी विस्तृत होती हैं और भक्तों के आध्यात्मिक आधार को स्पंदित करती हैं। आरती के बाद हम स्वामीजी का आशीर्वाद लेते थे। आमतौर पर, मैं गंगा के सामने एक बड़ी चट्टान पर ध्यान में बैठकर शाम बिताता हूँ। यह इतना रोमांचक, आरामदायक और आध्यात्मिक भाव को बढ़ाने वाला होता है कि मैं भौतिक दुनिया और जीवन के संकटों और क्लेशों के बारे में भूल जाता हूँ। मैं गंगा के तेज प्रवाह को देखता हूँ और अक्सर महसूस करता हूँ कि मैं भी धारा में बह रहा हूँ। यह अनुभव केवल महसूस किया जा सकता है, शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता।

वशिष्ठ गुफा के बारे में कई चमत्कारों का उल्लेख किया गया है। मैंने गुफा की एक तस्वीर देखी है जिसमें गुफा से प्रकाश की धारा निकल रही है और एक अन्य बिंदु के साथ विलय कर त्रिकोणीय रूप से शिव प्रतिमा को आच्छादित कर रही है। आश्रम में रहने के दौरान के कुछ व्यक्तिगत अनुभव मेरे मस्तिष्क में आते हैं। हिमालय से अपनी आध्यात्मिक यात्रा से वापस आने के बाद मैं कुछ समय के लिए वशिष्ठ आश्रम में रुका। मैं शिवलिंग के समक्ष ध्यान करने के लिए गुफा में गया। आम तौर पर ध्यान में रहते हुए, मैं प्रभु से कभी भी कुछ नहीं मांगता, लेकिन उस दिन अचानक अपनी बेटी छवि के बारे में एक विचार आया, जिसने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस, मुंबई में एमए (सोशल वर्क) में दूसरी बार प्रवेश परीक्षा दी थी। उसने पहले भी प्रयास किया था लेकिन अंतिम दौर में सफल नहीं हो सकी। इसलिए, मैं इस समय थोड़ा चिंतित था। जब

वशिष्ठ आश्रम के सम्मुख माँ गंगा का विहंगम दृश्य

छवि के प्रवेश के बारे में मेरी चिंता ध्यान के दौरान सामने आई, तो मैंने तुरंत प्रभु शिव पर ध्यान केंद्रित करके इसे दूर कर दिया। शाम को, मैं दिल्ली के लिए रवाना हुआ और रात 10.00 बजे तक पहुँच गया। मैं थक गया था और रात के खाने के बाद तुरंत बिस्तर पर चला गया। आधी रात को, मैं बगल के कमरे से एक बड़ी चिल्लाहट से जाग गया था। छवि उत्साह में पुकार रही थी, ''पापा सफल हो गई, मैं सफल हो गई।'' मैंने उठकर उससे पूछा कि क्या हुआ था। गले लगाकर, उसने मुझे बताया कि उसे टाटा संस्थान में प्रवेश के लिए चुन लिया गया। मैंने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया।

2004 में मेरे भांजे (बहन के बेटे) को आंत के कैंसर का पता चला था, जिसके कारण लिवर को भी थोड़ा नुकसान पहुँचा था। मेरा साला, जो ओडिशा में चिकित्सक था, दिल्ली में मेरे निवास पर आया और फूट-फूटकर रो पड़ा। मैंने उसे उपचार कराने और उसके साथ साथ वशिष्ठ गुफा का दौरा करने और देवता के सामने प्रार्थना करने की सलाह दी। मेरे बहनोई और बहन गुफा में गए और स्वामीजी से मिले जिन्होंने उन्हें आश्वासन दिया कि वह उनकी सलामती के लिए प्रार्थना करेंगे और गुरु महाराज की कृपा से वह ठीक हो जाएगा। लड़का ठीक हो गया और जल्द ही कैंसर का कोई निशान नहीं बचा। मेरी बहन और बहनोई ने दोबारा आश्रम की यात्रा की और अपनी कृतज्ञता व्यक्त की तथा

भगवान शिव से प्रार्थना की। लड़का अब पूरी तरह स्वस्थ है।

जब मैंने अपने सिद्धांतों के कारण राज्य के मुख्य सचिव के पद से इस्तीफा दिया, तो मैं तुरंत अपनी बेचैन और व्याकुल आत्मा की शांति के लिए वशिष्ठ गुफा गया। मैंने स्वामीजी से कहा कि मैंने पद छोड़ दिया है और पूरी तरह से सरकारी सेवा से मुक्त हो चुका हूँ। मैंने पूरे समय अध्यात्मवाद के लिए खुद को समर्पित करने की इच्छा व्यक्त की। स्वामीजी ने सिर हिलाते हुए कहा, ''आप केंद्र में पाँच साल और सेवा करेंगे।'' मुझे इस पर आश्चर्य हुआ क्योंकि मैंने पहले ही स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली थी। लेकिन आश्चर्य, स्वामीजी की भविष्यवाणी सच हो गई। मुझे केंद्र द्वारा संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) के सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया था, जो एक संवैधानिक पद था।

एक अन्य अवसर पर, मैं वशिष्ठ गुफा की यात्रा पर था। दोपहर के भोजन के बाद, मैं गंगा के सामने एक कुर्सी पर आराम कर रहा था जब मैंने अचानक एक बांसुरी की सुंदर ध्वनि सुनी। यह ध्वनि इतनी आकर्षक और इतनी मधुर थी कि मैं अपनी शारीरिक उपस्थिति को भूल गया। एक मिनट के बाद यह बंद हो गया और मैंने सोचा शायद कुछ चरवाहे अपनी बांसुरी बजा रहे थे। उस समय मेरी अन्तरात्मा से आवाज आई शायद यह दिव्य संगीत था। तो मैंने सोचा, 'हे कृष्ण, अगर तुम बांसुरी बजा रहे हो, तो मेरे लिए फिर से बजाओ।' फिर, मैंने वही मधुर बांसुरी की धुन सुनी। कुछ सेकंड के बाद यह बंद हो गयी। फिर से मैंने अनुरोध किया, यह जाँचने के लिए कि क्या यह एक संयोग था और फिर से मैंने वही सुरीली धुन सुनी। मैं खुश था और मेरे गालों पर आँसू छलक आए। रात में, मैंने स्वामीजी को घटना सुनाते हुए पूछा कि क्या यह गौहर की बांसुरी से संगीत था या कुछ और। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, ''इस स्थान पर ऐसी बहुत सी घटनाएँ होती हैं।''

समय बीतने के साथ स्वामीजी और गुफा के साथ मेरा जुड़ाव गहरा होने लगा। मैं खुद को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि इस पवित्र स्थान और स्वामी चैतन्यानंदजी जैसे महान योगी के साथ मेरा जुड़ाव रहा है और इन्होंने मुझे 1979 से मार्गदर्शन दिया है। मैं उनके चरण कमलों में नमन करता हूँ और पूरी विनम्रता के साथ उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करता हूँ।

वशिष्ठ गुफा के अलावा, टिहरी गढ़वाल में अन्य महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक और पर्यटन स्थल कुंजापुरी, सुरकुंडा, चंद्रबदनी (सभी शक्तिपीठ), धनोल्टी,

भिलंगना घाटी और चंबा हैं। मेरा मानना है कि पुरानी टिहरी शहर के जलमग्न होने के बाद, बाँध के जलाशय के विशाल विस्तार के कारण नई टाउनशिप एक पर्यटन स्थल बन गई है।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, टिहरी में कानून और व्यवस्था की बहुत समस्या नहीं थी, लेकिन कभी-कभी इस बाँध के खिलाफ आंदोलन के कारण विधि व्यवस्था खराब हो जाती थी। एक रात मुझे अपने एसडीएम का फोन आया कि रात में बाँध स्थल की ओर जाने वाली सड़क पर भगवान गणेश की एक प्रतिमा स्थापित की गई है। परिणामस्वरूप, बाँध स्थल की ओर जा रहे डंपर और वाहनों को लोगों ने रोक दिया। एसडीएम चाहते थे कि मैं उन्हें दिशानिर्देश दूँ कि क्या किया जाना चाहिए, क्योंकि यह एक धार्मिक रूप ले सकता था। मैंने तुरंत उन्हें साइट से मूर्ति हटाने के लिए कहा। एसडीएम ने माफी मांगते हुए मुझे बताया कि वह भगवान गणेश के भक्त थे और वह मूर्ति को हटाने में सक्षम नहीं थे। मैंने उन्हें रूखेपन से कहा कि चूंकि भगवान गणेश रात में अचानक दिखाई देते हैं, उसी तरह भगवान गणेश को सुबह होने से पहले गायब हो जाना चाहिए। मैंने उसे आदेश का पालन करने का निर्देश दिया। आदेश का पालन किया गया यह समस्या शायद शरारती तत्वों द्वारा उत्पन्न की गयी थी जिसका समाधान सहज ढ़ंग से हो गया।

एक बार टिहरी परियोजना के श्रमिकों द्वारा बेहतर कार्य सुविधाओं की मांग को लेकर आंदोलन किया गया। बाँध प्रबंधन ने उनकी शिकायतों को नहीं सुना और उनका दमन शुरू किया। दिन-ब-दिन समस्या विकराल होती जा रही थी। मैंने हस्तक्षेप किया और कर्मचारियों की वास्तविक शिकायतों को स्वीकार करने के लिए प्रबंधन को राजी करके इसे हल किया। चार जिलों में डीएम के रूप में मेरे अनुभवों ने मुझे सिखाया है कि मजदूर आंदोलन को दबाने के लिए शक्ति के इस्तेमाल का तरीका उचित नहीं था। ऐसी स्थितियों में बातचीत करना और दोनों पक्षों को एक दूसरे के साथ बिठाना हमेशा बेहतर होता है। बार-बार समझाना और वार्ता करना निश्चित रूप से स्थिति को सहज करता है। साथ ही सही प्रतिक्रिया और जानकारी देने के लिए खुफिया तंत्र काफी मजबूत होना चाहिए ताकि प्रभावी रणनीतियों पर काम किया जा सके। कभी-कभी निवारक गिरफ्तारी करना भी बेहतर होता है ताकि यह संकेत दिया जा सके कि प्रशासन वार्ता के लिए तैयार तो है लेकिन इसे प्रशासन की कमजोरी नहीं मान लिया जाना चाहिए। संभावित तोड़फोड़ और हिंसा का निषेध भी आवश्यक है। उच्च अधिकारियों और सरकार को समय-समय पर स्थिति से अवगत कराया जाना चाहिए। लेकिन

अंततः यह डीएम और एसपी की जिम्मेदारी है कि वे कानून व्यवस्था को लेकर किसी भी समस्या से निपटें।

टिहरी गढ़वाल में मेरे कार्यकाल के दौरान मुझे चिपको आंदोलन के नायक श्री सुंदरलाल बहुगुणा के साथ बातचीत करने का अवसर मिला। उन्होंने जंगल के पेड़ों की अनावश्यक नीलामी के बारे में शिकायत की जिसमें विशाल क्षेत्रों में बहुत से छोटे पेड़ों की कटाई शामिल थी। मैंने तुरंत हस्तक्षेप किया और डीएफओ को तत्काल मामले को सुलझाने का निर्देश दिया। डीएफओ चाहते थे कि मैं कठोर कार्रवाई करूँ, जिसमें नेताओं की गिरफ्तारी भी शामिल थी, ताकि स्थानीय लोगों द्वारा किया गया आंदोलन बेजान हो जाए। मैंने महसूस किया कि डीएफओ समस्या की व्यापकता को नहीं देख रहा था और उनका दृष्टिकोण संकीर्ण हो गया था। मैंने सुझाव दिया कि उसे पता लगाना चाहिए कि क्या बड़े पैमाने पर छोटे पेड़ों की नीलामी की जा रही है। यदि ऐसा था तो उसे इन सभी पेड़ों को छोड़ देना चाहिए और उस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण की योजना बनानी चाहिए जहाँ से पुराने पेड़ों की नीलामी की जानी थी। मैंने नेताओं को गिरफ्तार करने के उनके सुझावों को तुरंत खारिज कर दिया और लोगों की वास्तविक शिकायतों को दूर करने का निर्देश दिया। मामला कुछ दिनों में हल हो गया। उसके बाद श्री बहुगुणा और श्री चंडी प्रसाद भट्ट मेरे शुभचिंतक बन गए। कई वर्षों के बाद जब मैं उनसे नैनीताल के एक सेमिनार में मिला तो श्री बहुगुणा ने मुझे चिपको आंदोलन के डीएम के रूप में संबोधित किया। मेरा दृढ़ विश्वास है कि जब कोई अधिकारी समर्पित और ईमानदार होता है और जनता के हित को सर्वोपरि रखता है, तो वह अंततः अपने प्रयासों में सफल होगा क्योंकि न केवल उसे सार्वजनिक सहयोग मिलता है बल्कि ईश्वरीय आशीर्वाद भी हमेशा उसके साथ रहेगा।

हिमालय में दुनिया के सबसे कम उम्र के पहाड़ हैं इस कारण वहाँ भूस्खलन का खतरा बना रहता है। बरसात के मौसम के दौरान इस राज्य के इस हिस्से में एक आम बात है। एक शाम जब मैं कलेक्ट्रेट में काम कर रहा था, तो मुझे जानकारी मिली कि अत्यधिक बारिश के कारण एक गाँव में भारी भूस्खलन हुआ है और 15 लोगों की जान चली गई है। केवल देहरादून की तरफ से गाँव में जाया जा सकता था। मैंने प्रभारी डिप्टी एसपी को मेरे साथ साइट पर जाने के लिए कहा ताकि शोक संतप्त परिवारों को आवश्यक राहत पहुँचाई जा सके। प्रभारी डिप्टी एसपी ने कहा, ''सर, मैं एक बूढ़ा व्यक्ति हूँ और गाँव तक पहुँचने के लिए पहाड़ी इलाकों में कई किलोमीटर तक पैदल नहीं जा सकता।'' इसके

बावजूद मैं रुका नहीं और अगली सुबह अपने ड्राइवर और पीए के साथ, राहत कोष से लैस होकर, हम उस जगह की ओर चल पड़े। उस समय, मुझे महसूस नहीं हुआ कि मुझे गहरी घाटियों वाले सँकरे मार्ग पर लगभग 15 किमी से 20 किमी तक चढ़ाई करनी पड़ेगी। हमने वाहन छोड़ दिया और पैदल ही अपने गंतव्य की ओर चलने लगे। रास्ते में हम बारिश से भीग गए। लेकिन सूरज के निकलने पर रास्ते में जल्द ही गीले कपड़े सूख गए। मैंने सिर्फ चार पराठे और कुछ तले हुए आलू लिए थे। मेरे ड्राइवर और पीए कोई खाना नहीं लाए। उनके मना करने के बावजूद, मैंने उनके साथ अपने पराठे बाँटे। हल्के खाने के बाद, हमने अपनी यात्रा फिर से शुरू की जब तक कि हम एक छोटे से नाले के किनारे एक विशाल शिलाखंड में नहीं आ गए। नाले की धार मजबूत और तेज थी और हम इसे पार करने का साहस नहीं जुटा सके। चट्टान खिसक गयी थी और हम दूसरी तरफ चढ़ने में झिझक रहे थे, क्योंकि एक गलत कदम से हम तेज धार में बह सकते थे। मैं असहाय और निराश था। उस क्षण मैंने एक ईश्वरीय दूत की तरह, एक स्थानीय व्यक्ति को चट्टान पर चढ़ते हुए और हमारी तरफ आते हुए देखा। जब मैंने उससे गाँव में हुई मौतों के बारे में पूछताछ की तो उसने कहा कि वह डीएम से मिलने के लिए उसी गाँव से आ रहा था। जब मैंने अपनी पहचान बताई, तो वह बहुत खुश हुआ और मुझे अपने कंधों पर चट्टान के पार ले गया। वह हमारी प्रतिक्रिया से इतना अभिभूत था कि उसने मुझे गाँव तक अपने कंधों पर ले जाने के लिए जोर दिया। मैंने मना कर दिया और उससे कहा कि वह हमें गाँव तक सुरक्षित पहुँचा दे। मैंने भूस्खलन स्थल का दौरा किया, शोक संतप्त परिवारों से बात की और उन्हें नकद राशि सौंपी। किसी भी राजस्व अधिकारी के गाँव की यात्रा के बारे में पूछने पर आश्चर्यजनक रूप से मैंने पाया कि पटवारी भी वहाँ नहीं आए थे। मैंने पटवारी को निलंबित कर दिया और पर्यवेक्षक व कानूनगो के खिलाफ कार्रवाई की। रात में हम एक जीर्ण-शीर्ण स्कूल भवन के कमरे में रुके थे। यह बहुत ठंडा स्थान था और प्रधान (ग्राम प्रधान) ने मुझे उदारता से एक रजाई प्रदान की थी। रात में मेरे पास मोटी रोटियाँ, नमक, प्याज, हरी मिर्च और जले हुए आलू थे। मुझे इतनी भूख लगी कि रात का खाना अमृत की तरह प्रतीत हुआ। सुबह मैंने एक गर्म चाय पी और जब मैं वहाँ से निकला तो पूरा गाँव मुझे विदा करने आया। वास्तव में उनमें से कई लोग मेरे वाहन तक पहुँचने तक 15 किलोमीटर की दूरी तय करते हुए मेरे साथ चले। जब मैंने विदाई ली, तो कई लोगों की आँखों में आँसू आ गए थे।

वह मेरे लिए एक अविस्मरणीय अनुभव था।

जून 1979 में, पहले हफ्ते में ही मुझे अप्रत्याशित व्यक्तिगत त्रासदी झेलनी पड़ी। उस समय मेरी एक ही बेटी थी–छवि, जो एक साल की थी। 7 जून को हम अपनी बेटी के साथ मुनि–की–रेती और ऋषिकेश गए। यह एक गर्म और उमस भरा दिन था। हमने अपना दोपहर का भोजन चोटीवाला होटल में किया और विश्राम गृह लौट आए। शाम को, छवि को उल्टी होने लगी और वह गंभीर रूप से बीमार हो गई। हम नरेंद्र नगर पहुँचे और उसकी जाँच के लिए सीएमओ को बुलाया। वह टीम के साथ पहुँचे और उसे उल्टी रोकने के लिए एक इंजेक्शन दिया। उल्टी बंद हो गई लेकिन अगली सुबह हमने पाया कि उसका पेट गुब्बारे की तरह फूल गया था। चूँकि नरेन्द्र नगर में बहुत अधिक चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं थी, हमने तुरंत उसे दून अस्पताल, देहरादून पहुँचाया और उसे इमरजेंसी में भर्ती करवाया। पाँच दिनों के बाद भी वहाँ के डॉक्टर विक्षेप के कारण का निदान करने में विफल रहे। बच्ची पर इलाज का असर नहीं हो रहा था और उसकी हालत खराब हो रही थी। पाँचवें दिन एमएस ने मुझे बताया कि बच्ची की नाड़ी कमजोर पड़ रही थी और उसे तुरंत एम्स दिल्ली में भर्ती करना ही बेहतर होगा।

हम तुरंत सड़क मार्ग से एम्स के लिए रवाना हुए, हमारे साथ एक डॉक्टर भी थे। कार में भी बच्ची की नसों में इंजेक्शन लगा था। श्री जेएन चतुर्वेदी, मेरे ससुर जी के मित्र और दिल्ली के तत्कालीन पुलिस कमिश्नर की मदद से बच्ची को तुरंत इमरजेंसी में भर्ती कराया गया। चूंकि मैं दिल्ली में पूरी तरह नया था और मेरी वहाँ कोई जान–पहचान नहीं थी, हमने वहाँ पर नजदीक के थाने के एक कमरे में रात बिताई, जिसकी व्यवस्था वहाँ के एसएचओ ने उदारतापूर्वक हमारे लिए की थी। बच्ची बहुत गंभीर हालत में थी और एम्स के डॉक्टर भी बीमारी की पहचान कर पाने में सफल नहीं हो पा रहे थे। इस केस पर डॉक्टरों की एक टीम ने विमर्श किया और ऑपरेशन करने का निर्णय लिया। ऑपरेशन पाँच घंटे तक चला और उन पाँच घंटों के दौरान की अपनी मानसिक स्थिति का वर्णन नहीं कर सकता। वहाँ हमें ढाढ़स और मानसिक संबल प्रदान करने वाला कोई नहीं था। हम दोनों आँसू बहा रहे थे और ईश्वर से अपने बच्चे को बचाने की प्रार्थना कर रहे थे। मैं ईश्वर के साथ अन्त:संवाद कर रहा था, ''हे ईश्वर, मैंने अति सतर्कतापूर्वक एक ईमानदार, निष्ठावान और समर्पित जीवन जिया है और आप पर अगाध श्रद्धा रही है, पर आप मेरी मासूम बच्ची के साथ क्या कर रहे हैं? यदि उसको कुछ हो जाता है तो आप पर मेरा विश्वास समाप्त हो जाएगा और मैं एक नास्तिक बन जाऊँगा।'' उसी क्षण,

चिकित्सक बाहर आए और हमें बताया कि ऑपरेशन सफल रहा पर बच्ची की स्थिति इतनी गंभीर थी कि उसे कुछ भी हो सकता था। उन्होंने बताया कि उसकी बड़ी आंत में सिग्मोइड ज्वाइन्ट के पास छेद हो गया था और चूंकि इसके बारे में पता चलने से पहले तक बच्ची पाँच दिनों तक सामान्य जीवन जीती रही इस कारण उससे निकालने वाला तरल महत्त्वपूर्ण अंगों में जमा होता रहा और बच्ची को एक्यूट सेप्टिसीमिया हो गया। हालांकि ऑपरेशन सफल रहा पर विभागाध्यक्ष के अनुसार बच्ची के बचने की संभावना केवल 10 प्रतिशत थी। बच्ची को आईसीयू में ऑक्सीजन चैंबर में रखा गया और हमें उसे देखने की अनुमति नहीं थी। उसके स्वास्थ्य की जानकारी प्रतिदिन आईसीयू डॉक्टर से हमें मिलती थी।

हर दिन हम एम्स जाते थे और उसकी सेहत की जानकारी लेते थे। ऑपरेशन के दूसरे दिन विभागाध्यक्ष ने हमें बताया कि अस्पताल में उपलब्ध एंटीबायोटिक प्रभावी नहीं हो रहे थे। उन्होंने मुझे लंदन से कुछ दवाएँ मंगाने की सलाह दी। मैंने उन्हें कहा, ''मैं लंदन नहीं जा सकता न ही मेरा कोई दोस्त है जो मुझे वहाँ से दवा भेज सकता है। जो भी दवा उपलब्ध है आप उसी से मेरी बच्ची का इलाज करें।'' अगले दिन जब हम एम्स गए, उन्होंने मुझे बताया कि लंदन से दवाएँ आ गई हैं। मैं सुखद आश्चर्य में पड़ गया। क्या यह संयोग-मात्र था या कुछ और? ईश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली। लंदन से दवाएँ आ गईं और दो महीने के भीतर हमारी बेटी पूरी तरह स्वस्थ हो गई। विभागाध्यक्ष के अनुसार यह एक चमत्कार से कम नहीं था क्योंकि उन्होंने पहले ही आशा छोड़ दी थी। पर वह करिश्माई तरीके से बच गई, जबकि ऐसे मामलों में बचने की संभावना 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होती।

इस घटना से ईश्वर पर मेरा अटूट विश्वास हो गया। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि पूरी निष्ठा से की गई प्रार्थना व्यर्थ नहीं जाती। ईश्वर हमेशा अपने भक्तों के साथ खड़ा रहता है। जीवन में आने वाली विपत्तियाँ मनुष्य का आत्म परिष्कार करने में सहायक होती हैं। जीवन में आने वाले संकट मनुष्य की इस बात की भी परीक्षा लेते हैं कि वे ईश्वर के प्रति कितनी आस्था रखते है। कठिनाइयाँ मनुष्य का आत्म परिष्कार भी करती हैं। जीवन हमेशा सर्वोत्तम पथ की ओर अग्रसर होता है। आपको जीवन में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है, परन्तु वे आपको बेहतर जीवन की ओर ले जाएँगी। जीवन में आने वाली विपत्तियों के पीछे कोई न कोई दैवी रहस्य छिपा होता है। पर संकट के उन क्षणों में हम पीड़ा की अधिकता के कारण दैवी कृपा का अनुभव नहीं कर पाते। इसी समयावधि में हमें दूसरी कन्या रत्न की प्राप्ति हुई। हमने उसका नाम रुनु रखा।

अध्याय-१४

जिला मजिस्ट्रेट, मिर्जापुर

(जून 1980-जून 1983)

मिर्जापुर में नियुक्ति मेरे जीवन में बदलाव का मोड़ था। इसने न सिर्फ मुझे एक समर्थ व्यक्ति और ईमानदार प्रशासक के रूप में स्थापित किया, बल्कि इसके साथ ही साथ इसने मुझे आध्यात्मिकता की राह पर आगे बढ़ने का महान अवसर प्रदान किया।

जून 1980 में मेरा तबादला मिर्जापुर के जिला मजिस्ट्रेट के रूप में हुआ। यहाँ मैं जून 1983 तक, यानि तीन साल तक रहा। यह संभवतः मेरे अब तक के जीवन काल का सबसे अच्छा समय था, क्योंकि यहाँ मुझे एक प्रशासक के रूप में अपनी योग्यता साबित करने का पर्याप्त मौका मिला। मिर्जापुर एक बाढ़ और सूखा प्रभावित जिला है जहाँ इन समस्याओं को प्रभावी रूप से निष्पादित करने के लिए योजना, टीम-वर्क, दृढ़ता और निष्ठा की जरूरत पड़ती है। जिला मजिस्ट्रेट प्रशासन का केंद्र होता है और हर व्यक्ति नेतृत्व और दिशानिर्देश के लिए उसी से उम्मीद लगाता है। मिर्जापुर में बाढ़ और सूखे से निपटने और सरकार की विकास योजनाओं को प्रभावी रूप से लागू करने के मेरे प्रयासों की हर ओर काफी प्रशंसा हुई। मिर्जापुर में नियुक्ति इस अर्थ में मेरे जीवन में बदलाव का मोड़ था। इसने न सिर्फ मुझे एक समर्थ व्यक्ति और ईमानदार प्रशासक के रूप में स्थापित किया, बल्कि इसके साथ ही साथ इसने मुझे अध्यात्मिकता की राह पर आगे बढ़ने का बहुत बड़ा अवसर प्रदान किया।

यहाँ का डीएम बंगला बहुत सुंदर व आकर्षक है। यह गंगा के किनारे बना हुआ ब्रिटिश काल का बंगला है जिसमें फलों और इमारती लकड़ी के पेड़ों से भरा हुआ कई एकड़ में फैला परिसर है। पुराना मिर्जापुर जिला एक विशाल जिला था, लगभग हरियाणा के आकार का जिला। वर्तमान में सोनभद्र नाम का एक नया जिला पुराने मिर्जापुर जिले से कट कर बन चुका है। सूखा प्रभावित जिला होने के कारण यहाँ पेयजल की गंभीर समस्या है। आर्थिक और मानव विकास सूचकांकों के आधार पर यह एक पिछड़ा जिला है। यहाँ वन, पहाड़ और

पहाड़ियाँ, नदियाँ, तालाब और झरने प्रचुर मात्रा में हैं। एक बड़ी विडम्बना यह है कि पुराने मिर्जापुर जिले के निवासी प्रधानतः अनुसूचित जनजाति के हैं पर इन्हें अनुसूचित जाति के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। यहाँ अपने कार्यकाल के दौरान मैंने उन्हें अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में लाने का पूरा प्रयास किया पर मैं सफल नहीं हुआ। संभवतः आज भी वे अनुसूचित जाति के रूप में ही श्रेणीबद्ध हैं। मिर्जापुर के आदिवासी बहुत ही कष्टपूर्ण जीवन जीते थे, क्योंकि उनका उस वन भूमि पर कोई अधिकार नहीं था जिस पर वे रहा करते थे। मैंने यह भी देखा कि वन भूमि और आदिवासियों की जमीन के बीच हदबंदी करने के लिए बार-बार लाए गए वन बंदोबस्त कार्य इतने दोषपूर्ण थे कि इन्हें बार-बार अस्वीकार करना पड़ा। राजस्व अधिकारियों की मिलीभगत से प्रभावशाली लोगों ने इन आदिवासियों की जमीनों को हथिया लिया है। एक केस मुझे याद आता है जिससे इन लोगों के काम करने के तरीके का पता चलता है। राजस्व से जुड़े एक मामले में मैंने देखा कि राजस्व अभिलेख में सारी प्रविष्टि एक खास प्रभावशाली आदमी के नाम से है। उसके वकील ने यह दलील दी कि सारी प्रविष्टियाँ उसके मुवक्किल के नाम पर है, जमीन उसके मुवक्किल के स्वामित्व में है और वह उन जमीनों पर खेती कर रहा है। मैंने दलील को सुना और मन ही मन औचक निरीक्षण करने का फैसला कर लिया। जब मैं उस जमीन पर पहुँचा तो मैंने देखा कि एक आदिवासी वहाँ खेती कर रहा है और उसी परिसर में एक छोटी झोपड़ी में रह भी रहा है। उस आदिवासी और स्थानीय लोगों से जाँच-पड़ताल के आधार पर यह खुलासा हुआ कि वह आदिवासी उस जमीन पर लंबे समय से खेती कर रहा है। उस प्रभावशाली आदमी ने राजस्व अधिकारियों से मिलीभगत करके अपना नाम राजस्व अभिलेख में लिखवाने में सफलता पा ली। जब मैं जाँच करके लौटा तो मैंने उस जमीन को उस आदिवासी के नाम दर्ज करने का आदेश दिया। अगर मैंने जाँच नहीं की होती तो मैं शायद उस प्रभावशाली आदमी और अपने राजस्व अधिकारी की कुटिलता का कभी पता नहीं लगा पाता। आदिवासी लोगों को न्याय सुनिश्चित कर मुझे संतोष हुआ।

मिर्जापुर एक सुंदर जिला है, बारिश के दिनों में शोभायमान जंगलों तथा नदियों व झरनों की गर्जना के कारण यह और भी सुंदर लगता है। मैं यहाँ बहुत घूमा करता था, महीने के 15 दिन मैं दौरे ही किया करता था। मिर्जापुर में कई ऐसे स्थल हैं जो पर्यटकों को आकर्षित कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर विंध्याचल, अष्टभुजा और कालीखोह मंदिर जो एक त्रिभुज बनाते हैं, गेरुआतालाब,

मोतियातालाब के समीप हनुमान मंदिर, विरोही गाँव में वीरभद्र मंदिर, मिर्जापुर में विंढम और सिरसी अहरौरा झरने, मुखा झरना, ईको घाटी और रॉबर्ट्सगंज का किला, डोंगी झरना, अहरौरा बाँध, अहरौरा के पास एक पहाड़ी पर अशोक का अभिलेख, चुनार का किला, चुनार के किले के पास भर्तृहरि की समाधि, रिहंद बाँध, पंत सागर, बीना की कोयले की खान, शक्तिनगर और ओबरा पावर कॉम्प्लेक्स, मरकुंडी पहाड़ियों की जीवाश्म चट्टानें और रॉबर्ट्सगंज का शिवद्वारा आदि ऐसे ही कुछ स्थान हैं। मिर्जापुर समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाला स्थान है जहाँ ढेर सारे मंदिर हैं। यहाँ पर्यटकों को आकर्षित करने की जबर्दस्त संभावनाएँ हैं और मेरा पूरा विश्वास है कि पुराने मिर्जापुर के महत्त्वपूर्ण स्थानों को जोड़कर एक समेकित परियोजना बनायी जाए ताकि पर्यटन विकास को बढ़ावा मिल सके।

मैं न्यायपालिका के अपने एक दोस्त श्री पांडे जी से मिलने लखनऊ सचिवालय गया। वे एक ईमानदार और निर्भीक जज थे जो अयोध्या में रामलला मंदिर के ताले खुलवाने के फैसले से बहुत प्रसिद्ध हो गए थे। जब मैं उनसे मिला तो एक आध्यात्मिक व्यक्ति होने के कारण उन्होंने मुझसे कहा, ''प्रशांतजी, आप बहुत सौभाग्यशाली हैं कि आप मिर्जापुर के जिलाधिकारी बनने जा रहे हैं जो माँ विंध्यवासिनी का स्थान है। यदि आप मंदिर के प्रबंधन को बेहतर करने के लिए कदम उठाएँगे और त्रिकोण क्षेत्र का विकास करेंगे तो यह लोगों की एक बहुत बड़ी सेवा होगी। शरद और चैत्र नवरात्र मेले के समय उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और दिल्ली के लाखों लोग विंध्याचल आते हैं, इस कारण आपको मेला प्रबंधन पर खास ध्यान देना चाहिए और यात्रियों की सुविधा के लिए आधारभूत संरचनाओं को विकसित करना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो आपका नाम तो होगा ही, आपको माँ विंध्यवासिनी का आशीर्वाद भी प्राप्त होगा।''

यह मेरा सौभाग्य था कि मुझे मिर्जापुर के एसपी के रूप में श्री उमा शंकर वाजपेयी और जिला जज के रूप में श्री जैन जैसे अधिकारियों का साथ मिला। ये समर्थ और ईमानदार लोग थे जिन्होंने मेरे ससुर जी के साथ भी काम किया था। वे मेरे पारिवारिक मित्रों की तरह थे और हम लोग साथ मिलकर विंध्याचल के विकास की रणनीति बनाने के लिए सभी समस्याओं पर विमर्श किया करते थे। वाजपेयी जी ने विंध्याचल में अपराध नियंत्रण और वहाँ की स्थिति में सुधार के लिए पंडाओं को साथ लाने का उल्लेखनीय काम किया था। जिला प्रशासन ने विंध्यवासिनी मंदिर के प्रबंधन की देखरेख करने के लिए विंध्य विकास परिषद का विचार रखा, जिसमें पंडाओं और पारिवाल के सक्रिय सहयोग की

बात थी। विंध्य विकास परिषद का अध्यक्ष जिलाधिकारी होता था। शुरुआत में पण्डों की तरफ से इसका विरोध किया गया पर अंततः उन्होंने भी इस विचार का समर्थन किया। कुछ प्रभावशाली पंडा इस परिषद के खिलाफ स्टे ऑर्डर लेने इलाहाबाद हाई कोर्ट भी चले गए पर पहली ही सुनवाई में उनकी बात खारिज हो गई क्योंकि जिला प्रशासन द्वारा उठाए जा रहे कदम यहाँ आने वाले लाखों श्रद्धालुओं की सुविधा के उद्देश्य से संचालित थे और इसमें पंडा समुदाय के वैध हितों को कोई नुकसान नहीं पहुँचता था। हमने अपराध नियंत्रण, मेला अवधि के दौरान श्रद्धालुओं के उत्पीड़न को रोकने, भीड़ नियंत्रण और कतारों के वैज्ञानिक तरीके से प्रबंधन की शुरुआत, मंदिर परिसर के आस-पास साफ-सफाई सुनिश्चित करने और तीर्थयात्रियों को जरूरी सुविधाएँ मुहैया करने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। पहले ही साल में मेला प्रबंधन में सुधार दिखाई देने लगे और जिला प्रशासन ने जनता की प्रशंसा और जनता का विश्वास जीतने में सफलता पायी।

मेरे कार्यकाल के दौरान भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने इस जिले की तीन या चार बार यात्रा की। उनकी पहली यात्रा पूरी तरह निजी यात्रा थी। मुझे इस यात्रा की सूचना जिस सुबह दी गई थी उसी शाम वे आने वाली थीं। समय बहुत कम था पर फिर भी हमने अष्टभुजा इंस्पेक्शन बंगले में उनके ठहरने का समुचित प्रबन्ध कर लिया। जिस कमरे में प्रधानमंत्री को ठहरना था उस कमरे की साज-सज्जा में मेरी पत्नी ने बहुत मेहनत की। श्रीमती गाँधी ने अष्टभुजा मंदिर में रात्रि में लंबे समय तक पूजा की, उसके बाद वे अष्टभुजा बंगले पर लौट गयीं।

अगली सुबह उन्होंने नाश्ते में गर्म जलेबी, मठरी और अचार खाने की इच्छा जाहिर की। मैं बहुत हैरत में पड़ गया क्योंकि मैं ऐसी मांग के लिए तैयार नहीं था। आईटीडीसी को प्रधानमंत्री के दौरे पर खान-पान की व्यवस्था करने का उत्तरदायित्व दिया गया था। मैं असहाय महसूस करने लगा। मैंने अपने यहाँ के तहसीलदार को बुलाया और उन्हें प्रधानमंत्री की इच्छा के बारे में बताया। उसने तुरंत कहा, ''सर, आप ऐसी छोटी चीज की चिंता न करें। मैं तुरंत विंध्याचल इलाके में जाता हूँ और इन चीजों की व्यवस्था कर के आता हूँ।'' वो भागकर गया और देसी घी में बनी गरम जलेबियाँ, मठरी और अचार लेकर लौटा। तब जाकर मैंने राहत की सांस ली। बाद में मुझे पता चला कि प्रधानमंत्री इस देशी नाश्ते से काफी प्रसन्न हुई थीं। पहली बार मुझे यह एहसास हुआ कि तहसीलदार

अनेकों काम कर सकने वाला अधिकारी होता है जो अपनी त्वरित कार्यवाही से बड़े अधिकारी का बचाव भी कर सकता है।

प्रधानमंत्री के लौटने के बाद मेरे कमिश्नर ने मुझसे कहा, ''प्रशांत, प्रधानमंत्री का दौरा अभी-अभी खत्म हुआ है और भी कई महत्त्वपूर्ण पदाधिकारी मेले के समय यहाँ की यात्रा करते हैं, पर इस क्षेत्र के सड़कों की स्थिति बहुत खराब है। इस पर नए सिरे से ध्यान देने की जरूरत है।'' मैंने उनकी बातों को गंभीरता से लिया और दूसरे और तीसरे साल उस इलाके के विकास पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। एक दिन मैं अपने ड्राईवर और चपरासी के साथ अष्टभुजा इंस्पेक्शन बंगले पर गया और पूरा दिन उस क्षेत्र के भ्रमण में व्यतीत किया। मैंने पूरे त्रिकोण और पहाड़ियों के इलाके का दौरा किया और वहाँ के पर्वतीय क्षेत्र व मैदानी क्षेत्र दोनों के विकास का खाका तैयार करने लगा। मैंने वहाँ के उजड़े वनों में सघन वनरोपण कार्यक्रम चलाने, त्रिकोण इलाके को आसपास के इलाकों से जोड़ने वाली पक्की सड़कों के नेटवर्क, स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था, मंदिरों का जीर्णोद्धार और हैलिपैड निर्माण आदि का विचार किया। दोबारा आश्वस्त होने के लिए, इलाके के विकास की संभावित रूपरेखा पर चर्चा करने के लिए मैंने सभी जिला स्तरीय अधिकारियों को उनके परिवारों के साथ अष्टभुजा में दोपहर के खाने की दावत दी। भोजन के बाद मैं उन्हें अपने साथ ले गया और इलाके के विकास की अपनी योजना के बारे में बताया। वे सब मेरे विचार सुनकर हँसने लगे और उन्होंने कहा, ''सर, यह एक ख्याली दस्तावेज बनकर रह जाएगा और हमें इसकी सफलता पर बहुत अधिक शंका है।'' मैं हताश नहीं हुआ। अपने अधिकारियों की सहायता से मैंने एक विस्तृत योजना तैयार की, जिसके लिए मैंने एनआरईपी, नगरपालिकाओं, जिला परिषद और जिला योजना से संसाधन जुटाए। इन संसाधनों को इकठ्ठा करने के बाद परियोजना को बिना किसी धूमधाम के शुरू कर दिया गया। धीरे-धीरे पर मजबूती से योजना आकार लेने लगी। मैं रात में भी कार्य-स्थल के निरीक्षण के लिए चला जाया करता था। मैं ठेकेदार को कहा करता था, ''माँ विंध्यवासिनी बहुत ही शक्तिशाली देवी हैं और आप देवी का बहुत ही बड़ा पुण्यकर्म कर रहे हैं। यदि आप भ्रष्टाचार करेंगे तो मुझे पूरा विश्वास है कि माँ विंध्यावासिनी आपके या आपके परिवार को क्षमा नहीं करेंगी।'' इन बातों का चमत्कारिक असर हुआ और ठेकेदार ने मुझे आश्वस्त किया कि वह काम की गुणवत्ता सुनिश्चित करेगा। प्रोजेक्ट की समीक्षा करते हुए एडीएम ने कहा, ''सर, एनआरईपी योजना के तहत पहाड़ पर पक्की सड़क

बनाना मुश्किल होगा क्योंकि इस योजना में 75 प्रतिशत श्रम लागत और 25 प्रतिशत सामग्री लागत प्रदान की जाती है। पर पक्की सड़क बनाने के लिए हमें ज्यादा सामग्री की जरूरत होगी, शायद 75 प्रतिशत या उससे भी ज्यादा। इस समस्या को सुनने के बाद मुझे एक युक्ति सूझी और मैंने सलाह दी, ''जिस इलाके में यह सड़क बनाई जानी है वह पहाड़ी इलाका है जहाँ काफी बड़ी मात्रा में चट्टान और पत्थर बिखरे पड़े हैं। आप ऐसा क्यों नहीं करते कि श्रमिकों को पत्थरों को तोड़ कर पत्थर के चिप्स बनाने में लगाएँ। इस प्रकार आप सामाग्री लागत को श्रम लागत में बदल सकते हैं।''

लीक से हटकर गए इस सलाह से श्रम-सामग्री प्रतिशत की चिंता किए बिना इस परियोजना को पूरा करना संभव हुआ। जब मेले के दौरान मुख्य सचिव ने योजना आयोग के सदस्य के साथ अष्टभुजा मंदिर की यात्रा की, वे पहाड़ पर सड़कों के शानदार नेटवर्क को देख कर हैरत में पड़ गए। मुख्य सचिव ने मुझसे पूछा, ''प्रशांत, आपने किस प्रकार यह काम किया?'' मैंने जवाब दिया, ''सर, यह काम एनईआरपी के तहत हुआ है।'' योजना आयोग के सदस्य ने तुरंत प्रतिक्रिया दी कि एनईआरपी के तहत पक्की सड़क का निर्माण हो ही नहीं सकता, क्योंकि इस योजना के तहत पक्की सड़क के लिए श्रमिक-सामाग्री लागत के तय प्रतिशत अनुपात की शर्तों को पूरा करना बहुत मुश्किल है। तब मैंने उन्हें यह बताया कि किस प्रकार पत्थर तोड़ने के काम में श्रमिकों को लगा कर श्रम की लागत का इस्तेमाल सामग्री जुटाने में किया गया। दोनों ने खुश होकर टिप्पणी की, ''शाबाश! यह बहुत शानदार युक्ति है।'' प्रायः ही, हम नौकरशाह रूढ़िबद्ध धारणा के अनुरूप ही सोचने के आदी होते हैं और इसके आगे देखने से भी इंकार कर देते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि एक अधिकारी के भीतर मौजूद सृजनशीलता दबती चली जाती है। चूंकि लीक से हटकर सोचने को प्रोत्साहित नहीं किया जाता, हम में से ज्यादातर लोग पहले से परंपरा के अनुसार चली आ रही ऐसी चीजों के उदाहरणों का अनुसरण करने तक ही खुद को सीमित कर लेते हैं, जो वर्तमान संदर्भ में पुरानी पड़ चुकी होती हैं।

दक्षिणी मिर्जापुर, जो अब सोनभद्र जिला के रूप में जाना जाता है, अब बिजली उत्पादन का केंद्र बन चुका है। कोयले की खदानों की मौजूदगी और बिजली के कारखानों ने यहाँ के आदिवासियों को वहाँ से एक से ज्यादा बार बेदखल किया है। जब मैं यहाँ का डीएम था, गाँव सभा और आदिवासी व्यक्तियों की हजारों हेक्टेयर जमीन का शक्तिनगर मेगा पावर प्रोजेक्ट के लिए अधिग्रहण

किया गया था। जमीन अधिग्रहण प्रक्रिया के अपने कड़वे अनुभवों के कारण उन आदिवासी लोगों ने इस प्रोजेक्ट का विरोध करना शुरू किया जो अपनी जमीनों से बेदखल हुए थे। टिहरी बाँध प्रोजेक्ट में पुनर्वास के अपने अनुभव के कारण मैंने एनटीपीसी से यह अनुरोध किया कि वे पहले प्रभावित लोगों के लिए पुनर्वास पैकेज की व्यवस्था करें। मैंने उनसे आग्रह किया कि उन्हें प्रभावित लोगों को नियोजित तरीके से पुनः बसाना चाहिए और उनके लिए सड़क, आवास, स्कूल, अस्पताल, पुलिस चौकी, डाकघर, पेयजल और बाजार जैसी सुविधाएँ भी मुहैया करानी चाहिए। चूंकि यह प्रोजेक्ट हजारों करोड़ रुपयों का था, इस कारण एनटीपीसी के लिए पुनर्वास के लिए कुछ सौ करोड़ खर्च करना कोई बड़ी समस्या नहीं थी। इसके अलावा मैंने यह भी गौर किया कि ठेकेदार प्रायः बाहर से श्रमिक लाते थे और यहाँ के स्थानीय लोगों को नौकरी देने में अनिच्छा जाहिर करते थे। इसके कारण ज्यादा दुर्भावना उत्पन्न हो रही थी। मैंने एनटीपीसी प्रबंधन को स्थानीय लोगों को अकुशल मजदूरों के रूप में काम देने की सलाह दी। उचित प्रशिक्षण के साथ इन लोगों को अर्ध-कुशल और कुशल श्रमिक बनाया जा सकता था और इस प्रकार उन्हें इस परियोजना का हिस्सा बनाया जा सकता था। एनटीपीसी ने जिला प्रशासन के साथ सहयोग किया और हम इस मामले के सौहार्दपूर्ण निष्पादन में सफल हुए। परियोजना का काम तेजी से चला और यह पूरी होने के करीब आ गई। एनटीपीसी अपनी परियोजना के एक बहुत ही मुश्किल समय से गुजर रहा था क्योंकि परियोजना के प्रारम्भ में एक दिन की देरी से हजारों करोड़ रुपए की लागत बढ़ती, पर मजदूर नेता परियोजना के समय पर पूरा होने के निहितार्थ को समझ नहीं रहे थे। वे एक के बाद अलग-अलग बहानों से विरोध प्रदर्शन करने लगे और काम का माहौल खराब होने लगा। योजना की समय सीमा की गंभीरता और विधि-व्यवस्था की स्थिति को ध्यान में रखते हुए जिला प्रशासन ने संकट पैदा करने वालों को अलग-थलग करना शुरू किया। इन नेताओं ने जिला प्रशासन के खिलाफ मुख्यमंत्री को शिकायत की। जब मुख्यमंत्री ने टेलीफोन पर इस संदर्भ में मुझसे बात की तो मैंने उन्हें स्थिति की गंभीरता और परियोजना के समय पर पूरा होने की जरूरत के बारे में विस्तार से बताया। मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे इस मामले को जिला प्रशासन पर छोड़ दें और अनावश्यक रूप से चिंतित न हों। इसके बाद लखनऊ से कोई हस्तक्षेप नहीं हुआ और विरोध प्रदर्शन फीके पड़ गए।

मार्च 2016 में मैंने 33 साल बाद मिर्जापुर, सोनभद्र और म्योरपुर की यात्रा

की। इसमें कोई संदेह नहीं कि सोनभद्र में बिजली के नए कारखाने लग चुके हैं और आधारभूत संरचना, खास तौर पर सड़क सुविधाएँ बेहतर हो गई हैं पर वहाँ जंगलों के घनत्व में भारी कमी, लगातार खनन के कारण वायु प्रदूषण और स्थानीय लोगों की गरीबी देख कर मैं बहुत दुखी हुआ। मैं वनवासी सेवा आश्रम गया, जहाँ मुझे बताया गया कि वायु प्रदूषण और प्रदूषित जल के कारण फसलों, खासकर दलहनी फसलों की उपज और गुणवत्ता पर काफी बुरा प्रभाव पड़ा है। लोगों के स्वास्थ्य और प्रजनन क्षमता पर भी बुरा असर पड़ा है। मुझे यह भी बताया गया कि गाँव में कुछ विकृत बच्चे पैदा हो रहे हैं। विकास स्वागत योग्य चीज है पर यह पर्यावरण और स्वास्थ्य की कीमत पर नहीं होना चाहिए। प्रकृति माँ के पास हमारी जरूरतों को पूरा करने की हर चीज मौजूद है और यदि हम प्रकृति और पर्यावरण की उपेक्षा करते हैं तो हम केवल विनाश को बुलावा दे रहे हैं। पर्यावरण सम्मत विकास ही वर्तमान में हमारी जरूरत है।

मैं प्राय: ही विंध्याचल मंदिर की यात्रा करता रहता हूँ क्योंकि यहाँ आकर मुझे बहुत शांति मिलती है। मंदिर के अंदर की दीवारें चांदी की चादरों से मढ़ी हुई थीं। मैंने गौर किया कि कई जगहों पर चाँदी की चादरें गायब हैं। इसको लेकर मैं सशंकित हो गया और मेरे दिमाग में एक विचार आया कि यदि इस चाँदी का इस्तेमाल देवी के सिंहासन बनाने में किया जाए तो न केवल संभावित चोरी की समस्या का समाधान हो जाएगा बल्कि यह माँ विंध्यवासिनी के प्रति एक यथोचित श्रद्धांजलि भी होगी। एसपी के साथ मैंने इस मामले पर वहाँ के पंडा प्रतिनिधियों से चर्चा की। पंडा प्रतिनिधियों ने इस विचार का विरोध किया। उन्होंने कहा कि इस मामले में कोई भी बदलाव विजयनगरम् के शाही परिवार की सहमति से ही किया जा सकता है क्योंकि यह चांदी उन्होंने इसी शर्त पर मंदिर को दान में दी थी। एक दिन मैं और वाजपेयी वाराणसी जा कर शाही परिवार से मिले और महारानी से यह अनुरोध किया कि वे अपने परिवार द्वारा मंदिर को दान दी गई चाँदी का देवी के सिंहासन बनाने में इस्तेमाल करने की अनुमति दें। वे इस प्रस्ताव से बहुत प्रसन्न हुईं। उन्होंने केवल अपनी अनुमति नहीं दी बल्कि सिंहासन बनाने के लिए और भी चांदी दान देने का वादा किया। उनकी सहमति लेकर हम मंदिर पहुँचे। शुरुआत में पंडों ने विरोध किया पर सहमति पत्र देख कर वे शांत हो गए। एक साक्षी की मौजूदगी में चांदी के चदरे हटाए गए, उनका वजन किया गया और उन्हें मिर्जापुर के कोषागार में साक्षियों के हस्ताक्षर के साथ दो ताले लगाकर जमा कर दिया गया। अगले दिन पुलिस

सुरक्षा में इस चांदी को महारानी के आवास पर पहुँचाया गया जिन्होंने इस चांदी से देवी के लिए सुंदर सिंहासन बनवाया। इस सिंहासन को शुभ मुहूर्त में जरूरी तैयारियों के बाद मंदिर में स्थापित किया गया। जनता और पंडा वर्ग दोनों ही बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि सिंहासन से पवित्र स्थल की शोभा बढ़ गई।

गंगा नदी और विंध्य पर्वतों के बीच बसा विंध्याचल का इलाका तांत्रिक संप्रदायों का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र रहा है। नवरात्र मेलों के दौरान यहाँ ढेरों साधु-संन्यासियों की मौजूदगी को देखा जा सकता है। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे यहाँ कई संतों से मिलने और बात करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। एक शाम मैं जब अष्टभुजा मंदिर की तरफ जा रहा था, तो एक साधु से मेरी मुलाकात हुई जिन्होंने कहा, ''बेटा, जो प्रबंध तुमने यहाँ किए हैं वे बहुत अच्छे हैं। यहाँ अच्छी सड़कें हैं, बिजली की समुचित व्यवस्था है, साथ ही तीर्थयात्रियों के लिए पेयजल का बढ़िया प्रबंध है। तुम बहुत अच्छा काम कर रहे हो और मुझे विश्वास है कि तुम एक दिन उत्तर प्रदेश प्रशासन के शीर्ष तक पहुँचोगे।'' मैंने उनकी बातों को गंभीरता से नहीं लिया और प्रशासनिक जीवन की भागदौड़ में इस बात को पूरी तरह भूल गया। जब जुलाई 2007 में मैं उत्तर प्रदेश का मुख्य सचिव बना तब अचानक से मुझे उस साधु की बात याद आयी। 24 सालों में उनकी बात यथार्थ में बदल गई। अभिभावकों, परिजनों, शिक्षकों और संत-महात्माओं का आशीर्वाद कभी व्यर्थ नहीं जाता। यह आशीर्वाद हमारे अदृश्य क्रेडिट बैंक में जमा होते जाते हैं। हम नश्वर लोग यह समझ नहीं सकते कि किस प्रकार यह अदृश्य शक्तियाँ काम करती हैं। जिस दिन हम पवित्र और स्वार्थहीन हो जाएँगे, हम इन शक्तियों के काम करने के तरीकों को समझने लगेंगे।

एक अन्य संत नरहरि बाबा से एक दिलचस्प मुलाकात का एक वाकया मुझे याद आता है। नरहरी बाबा एक घुमंतू साधू थे, नवरात्र मेला के दौरान अष्टभुजा मंदिर आया करते थे। एक रात वे यह व्याख्या कर रहे थे कि समाज के किस चरण में किस प्रकार की सरकार रही। उनके अनुसार, सतयुग में सारे मनुष्य देवताओं की तरह थे। वे देवमत के सिद्धांतों के अनुसार शासित होते थे। समय के साथ जनसंख्या बढ़ी और क्षरण की शुरुआत हुई। इस दौर में ऋषियों-ज्ञानियों ने वेदों की रचना की जो शासन का बुनियादी आधार बना। वेदमत के आधार पर शासन होने लगा। जनसंख्या में और वृद्धि होने पर और भी ज्यादा क्षरण हुआ और इस चरण में लोकमत के आधार पर शासन होने लगा। मूल्यों और मानदंडों में और गिरावट होने पर बहुमत शासन का आधार बना और भी ज्यादा पतन होने

पर अल्पमत के आधार पर शासन होने लगा। उन्होंने आगे कहा, ''भगवान न करे इस तरह कभी 'नोमत' की सरकार बने। अगर ऐसा होगा तो यह देश का विध्वंस ही हो जाएगा।''

मिर्जापुर में मेरे पूरे कार्यकाल के दौरान डिविजनल कमिश्नर मुझसे असंतुष्ट रहते थे। इसका कारण क्या था, यह उनके अलावा कोई नहीं जानता था। वे बार-बार मुझसे सफाई मांगते रहते थे। एक बार वे मेरे जिले में यह जाँच करने आए कि जमीन का वास्तविक कब्जा पट्टेदार के पास है या नहीं। जाँच करने पर यह पाया गया कि 99 प्रतिशत जमीन पट्टेदारों के वास्तविक कब्जे में है। पर कमिश्नर संतुष्ट नहीं हुए और मुझसे इस बात का जवाब मांगा कि यहाँ भूमि सुधार को गंभीरता से लागू नहीं किया गया है। मैंने अपने जिले में सैंकड़ों एकड़ गाँव सभा और सीलिंग की जमीन के जाली और फर्जी लेनदेन का खुलासा किया था जिसके कारण यह जमीन राज्य सरकार को फिर से मिल गयी थी। मेरे प्रदर्शन से राजस्व सचिव इतने प्रसन्न हुए थे कि उन्होंने मिर्जापुर जिले में भूमि सुधार को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए एक प्रशस्ति पत्र भेजा था। मैंने यही प्रशस्ति पत्र अपने जवाब के साथ संलग्न कर डिवीजनल कमिश्नर को भेज दिया। कमिश्नर जो सफाई मुझसे मांग रहे थे यह उसका समुचित जवाब था। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश में बिजली विभाग के कर्मचारियों की हड़ताल के दौरान मैंने अपने जिले के एसपी के साथ ओबरा थर्मल पावर कॉम्प्लेक्स में ही कैंप किया हुआ था ताकि राज्य में बिजली आपूर्ति नियमित रहना सुनिश्चित हो सके। वास्तव में हड़ताल के दौरान बिजली निर्माण बढ़ गया था और मुझे इस बात के लिए मुख्य सचिव से बधाई संदेश भी मिला। लेकिन दुर्भाग्यवश मिर्जापुर शहर का एक सब-स्टेशन खराब हो गया। ऐसी शंका जाहिर की गई कि तोड़-फोड़ की वजह से ऐसा हुआ। कमिश्नर तुरंत ही मुझ पर चढ़ बैठे और मुझसे जवाब तलब किया। मैंने कमिश्नर को अपने जवाब के रूप में केवल मुख्य सचिव के द्वारा दिया गया बधाई संदेश भेज दिया। प्रशासन में कई बार ऐसे बॉस मिल जाते हैं जो बिना कारण ईमानदार अधिकारियों को परेशान करते हैं। पर हमें अनावश्यक रूप से परेशान या व्यग्र नहीं होना चाहिए क्योंकि मेरा विश्वास है कि हमारे सद्कर्म, हमारी प्रतिष्ठा, हमारी स्वच्छ छवि और इन सबसे बढ़कर ईश्वर की कृपा हमारी रक्षा अवश्य करेगी।

एक उदार माहौल में परवरिश होने के कारण मुझे इस बात का कोई इल्म नहीं था कि उत्तर प्रदेश में जाति कितनी महत्त्वपूर्ण है। मुझे इसका थोड़ा अनुभव

तब हुआ जब मैं मिर्जापुर में नियुक्त था। मिर्जापुर से आने वाले एक कैबिनेट मंत्री बहुत प्रभावशाली थे। उनके दौरे के दौरान जब मैं पहली बार उनसे मिला तो उनकी बातों को सुनकर मैं भौचक्का रह गया। उन्होंने मुझे 'पंडितजी' कह कर संबोधित किया। पहली बार तो मुझे पता ही नहीं चला कि वे मुझे संबोधित कर रहे हैं, पर सांसद, विधायक और दूसरे राजनीतिक प्रतिनिधियों ने मुझे बताया कि मंत्रीजी मुझे बुला रहे हैं। मैंने कहा, ''मंत्रीजी किन्हीं पंडितजी को बुला रहे हैं, मुझे नहीं।'' वे सब हंसने लगे और मुझे बताया कि इस क्षेत्र में ऐसे ही सम्बोधन का प्रचलन है। मेरे लिए यह एक आँख खोलने वाली घटना थी और पहली बार मैंने यह एहसास किया कि जाति व्यवस्था हमारे समाज में कितने अंदर तक घुसी हुई है। यह एक बेहद दुख की बात है कि एक समय सभ्यता की विकास भूमि रहा उत्तर प्रदेश अब ओछी राजनीति और जातीय भेदभाव के लिए जाना जाता है। यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि एक व्यक्ति का जन्म किस जाति में हुआ है, बल्कि महत्त्वपूर्ण यह है कि उसका दिमाग और दिल कैसा है। जाति, नस्ल या समुदाय से निरपेक्ष एक अच्छा आदमी अच्छा होता है और बुरा, बुरा ही होता है। जितनी जल्दी हम जाति व्यवस्था को तिलांजलि देंगे, देश के लिए उतना ही अच्छा रहेगा।

मैंने एक ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया और इस पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं था। इस तमगे के कारण कई बार मुझे बहुत शर्मनाक परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। एक बार मुझे अपने मंडलायुक्त से एक पत्र प्राप्त करके बहुत हैरानी हुई। पत्र में मेरे खिलाफ इस शिकायत के आलोक में जवाब मांगा गया था कि मैं जिले में ब्राह्मणवाद की नीति चला रहा हूँ। मैं बेहद आश्चर्यचकित और दुखी हुआ। कुछ दिनों के भीतर राज्य के मुख्य मंत्री ने जिले का दौरा किया। भोजन के बाद स्थानीय मंत्री और अधिकारियों से चर्चा करने के दौरान उन्होंने मुझे बुलाया और पूछा कि क्या मुझे कोई समस्या हो रही है? मैंने विनम्रता से उनसे पूछा, ''सर, क्या ब्राह्मण जाति में पैदा होना एक अपराध है?'' वे चौंक पड़े और मुझसे पूछा, ''आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?'' जब मैंने उन्हें उस शिकायत के बारे में बताया तो उन्होंने मुझे आश्वस्त किया कि कुछ भी नहीं होगा। मुख्यमंत्री लखनऊ लौटे और कुछ ही दिनों के भीतर कमिश्नर का तबादला हो गया।

एक और अनुभव मुझे याद आता है। 1991 में मैं उत्तर प्रदेश में आयुक्त, बिक्रीकर के पद पर था, उस समय भी मेरे ऊपर इसी तरह का आरोप मढ़ा गया

था। तब इस आरोप पर मेरी टिप्पणी के लिए मुझे प्रमुख सचिव (संस्थागत वित्त) के द्वारा कहा गया था। जब मैंने उनसे बात की, उन्होंने मुझे सूचना दी कि असल में नियुक्ति विभाग ने टिप्पणी मांगी है। मैंने शिकायत पर अपनी टिप्पणी देते हुए उचित जवाब भेज दिया। टिप्पणियों में मैंने यह इंगित किया कि भारत में हर कोई किसी न किसी जाति में जन्म लेता है। मैंने ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया था, यह मेरे नियंत्रण की बात नहीं थी। मैंने यह भी उल्लेख किया कि मेरे लिए एक ब्राह्मण का अर्थ है ऐसा व्यक्ति जो अंतिम सत्य, यानि ब्रह्म की खोज में लगा हो। यदि इस अर्थ में ब्राह्मणवाद को लिया जाता है तो निश्चित रूप से मैं ब्राह्मणवाद कर रहा हूँ। यदि ब्राह्मणवाद से आशय केवल एक जाति से है तो फिर यह शिकायत कूड़ेदान में फेंके जाने लायक है। जब मेरे प्रमुख सचिव श्री रिजवी को यह जवाब मिला, उन्होंने मुझे फोन कर के बधाई दी और कहा, ''तुमने तो बम का धमाका कर दिया।''

राजनीति मेरे बस की बात कभी नहीं रही है और राजनेताओं के साथ मैं हमेशा ही एकदम स्पष्ट और खरा रहा हूँ। एक स्थानीय नेता, पांडे जी अपने आप को बड़ी हस्ती समझते थे क्योंकि वे सहकारिता विभाग के कैबिनेट मंत्री के थोड़े निकट थे। उन्होंने एक कोऑपरेटिव उचित मूल्य की दुकान के आवंटन के लिए आवेदन दिया था, नियमों के अनुसार उन्हें यह दुकान नहीं मिल पायी। वह दुकान किसी और को आवंटित हो गई। जब मंत्रीजी मेरे जिले में दौरे के लिए आए, पांडे जी उनसे मिले और उनसे यह आदेश हासिल कर लिया कि वह दुकान उन्हें आवंटित की जा सकती है। मंत्रीजी के आदेश लेने के बाद पांडे जी मेरे कार्यालय आए और लड़ाकू अंदाज में मुझे कहा कि मंत्रीजी के आदेश के अनुसार वह दुकान उन्हें आवंटित की जाए। मैंने उन्हें यह समझाया कि मैं मंत्रीजी के इस आदेश का पालन नहीं कर सकता क्योंकि सचिव के द्वारा संपुष्ट नहीं होने के कारण यह आदेश समुचित नहीं था। यह सरकारी आदेश तो बिल्कुल नहीं था। इसके अलावा यह आदेश ऐसे आवंटन के मामलों में सरकार के दिशानिर्देश का उल्लंघन करता था। पांडे जी खीज गए और उन्होंने मुझे कहा कि यह बात वे उनके आवेदन पर लिख कर दें। मैंने कागज लिया और उस पर उनके आवेदन को खारिज करने के कारणों का उल्लेख कर दिया। पांडे जी सीधे मंत्री जी के पास गए पर इस बार मंत्रीजी ने भी उनकी बात नहीं सुनी।

कैबिनेट मंत्री जो इस जिले के प्रभारी भी थे, समीक्षा बैठक के लिए मिर्जापुर आए। जन वितरण प्रणाली की समीक्षा के दौरान जिले के एक महत्त्वपूर्ण राजनेता

और स्वतन्त्रता सेनानी ने यह शिकायत की कि जन वितरण प्रणाली में जिले में बहुत कालाबाजारी हो रही है। इस पर जब मंत्रीजी ने मेरी ओर देखा तो मैंने कहा, ''सर, यह एक तथ्य है। जन वितरण प्रणाली में कालाबाजारी हो रही है। जब भी इस प्रकार की शिकायत मिलती है तब दोषियों पर सख्त कार्यवाई होती है।'' मंत्रीजी और जन प्रतिनिधियों की उपस्थिति में ही मैंने सारे एसडीएम अधिकारियों को फोन किया और उन्हें उसी दिन छापेमारी करने का आदेश दिया। इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता था कि जिस नेता ने यह शिकायत की थी उसका छोटा भाई भी राशन वितरण में अनियमितता के आरोप में पकड़ लिया गया। नेताजी मेरे आवास पर भागे-भागे आए और मुझसे यह अनुरोध किया कि उनके छोटे भाई पर कोई कार्यवाई न की जाए। मैंने उन्हें कहा कि मैं इस मामले में कुछ भी करने में असमर्थ हूँ क्योंकि यह कार्यवाई उनकी ही शिकायत के आधार पर मंत्रीजी की मौजूदगी में हुई है। तब वे मंत्रीजी के पास दौड़े। मंत्रीजी हंस पड़े और उन्होंने उन नेता को कानून के आधार पर चलने की सलाह दी।

मिर्जापुर में लोकसभा चुनाव होने वाले थे और तिथि से तीन रोज पहले मैं चुनाव तैयारियों का अवलोकन करने निकला। मैं दोपहर के खाने के लिए घर लौटा ही था कि मुझे अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट का फोन आया। उन्होंने बताया कि कलेक्ट्रेट में 2000-3000 भाजपा समर्थक महत्त्वपूर्ण नेताओं के नेतृत्व में जमा हो गए हैं। उनका यह आरोप है कि जाली बैलेट पेपर बनाए जा रहे हैं। यह खबर सुबह के अखबारों में छपी थी जिसके आधार पर मैंने पहले ही एक विस्तृत रिपोर्ट माँगी थी। अपना खाना छोड़कर मैं तेजी से कलेक्ट्रेट की ओर भागा, पर इस प्रतिनिधिमंडल से मिलने से पहले ही मुझे इस तथाकथित जाली बैलेट पेपर के बारे में पूरी सूचना मिल गई थी। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में छह-सात लोगों का एक प्रतिनिधिमंडल मुझसे मिला। मैंने उनकी बात को धैर्यपूर्वक सुना और उसके बाद पूरी परिस्थिति उनके सामने रखी। मैंने यह उनके सामने स्पष्ट किया कि तथाकथित 'जाली बैलेट' निश्चित रूप से दोषपूर्ण था, हाशिये पर दिया गया नंबर मुख्य बैलेट के नंबर से मेल नहीं खाता था। मैंने पूरी प्रक्रिया उन्हें समझाई। जब जिला निर्वाचन अधिकारी ने सेक्युरिटी प्रिंटिंग प्रेस इलाहाबाद से बैलेट पेपर हासिल किए तब सारे बैलेट पेपर की गणना की गई, दोषपूर्ण बैलेट पेपर को अलग किया गया और इन मत पत्रों की सूची तैयार की गई। इसके बाद जब मत पत्रों को जिला कोषागार में जमा कराया गया तब एक बार फिर इनकी गणना हुई और फिर से यदि कोई दोषपूर्ण बैलेट पेपर मिले तो

उन्हें अलग किया गया। तब मैंने इस प्रतिनिधिमंडल को दोषपूर्ण बैलेट पेपर की सूची दिखाई, जिनमें तथाकथित 'जाली बैलेट पेपर' भी शामिल थे। इस प्रकार, यह मामला दोषपूर्ण बैलेट पेपर का था, न कि जाली बैलेट का। निष्ठावान, परोपकार और अच्छे नेता होने के कारण श्री वाजपेयी आश्वस्त हो गए। उन्होंने तुरंत ही परिस्थिति को समझ लिया और चुनावी फायदे के लिए इसका इस्तेमाल नहीं किया। तुरंत ही भीड़ वहाँ से चली गई। जिस देश की बागडोर ऐसे नेता के हाथ में होगी, वह देश अपनी विकासयात्रा में कभी भी भटक नहीं सकता एवं सर्वदा सुरक्षित रहेगा।

यहाँ मेरे कार्यकाल के दौरान एक बार विपक्ष ने भारत बंद का आह्वान किया। राज्य सरकार ने परिस्थिति से निपटने के लिए तैयारी करने के निर्देश जारी किए, जिनमें राजनेताओं की गिरफ्तारी करने का भी निर्देश था। डिविजनल कमिश्नर, जो सेना के अधिकारी रह चुके थे, स्थिति पर नजर बनाए हुए थे। जब उन्होंने मुझसे गिरफ्तार किए गए लोगों की संख्या के बारे में पूछा तो मैंने जवाब दिया, ''सर, यहाँ किसी राजनेता को गिरफ्तार करने की जरूरत नहीं है। आप मेरे ऊपर छोड़ दीजिए, मैं स्थितियों को संभाल लूँगा।'' वे मेरे जवाब से संतुष्ट नहीं हुए और कहा, ''अगर किसी प्रकार की कोई अप्रिय घटना होती है तो आप जवाबदेह होंगे।'' मैंने इस चुनौती को स्वीकार किया और बंद की पूर्व संध्या पर राजनीतिक दलों के नेताओं की बैठक बुलायी। उनके साथ चर्चा करते हुए मैंने उन्हें कहा, ''लोकतन्त्र में आपको विरोध करने और अपनी शिकायतों को शांतिपूर्ण ढंग से रखने का अधिकार है।'' मैंने उन्हें सरकार के निर्देशों की भी सूचना दी और कहा, ''यदि आप बंद के दौरान शांतिपूर्ण और जिम्मेवार तरीके से व्यवहार करेंगे तो हमें एहतियातन गिरफ्तारी की कोई जरूरत नही है। आप सरकार और जिला प्रशासन के विरोध में नारे लगाइए, पर कृपया भीड़ को हिंसा के लिए न उकसाइए। अगर आप मुझे इस बारे में आश्वासन देते हैं तो मैं कोई एहतियातन गिरफ्तारी नहीं करूँगा।'' नेताओं ने मुझे आश्वस्त किया कि विरोध प्रदर्शन पूरी तरह शांतिपूर्ण रहेगा। सरकार और जिला प्रशासन के खिलाफ नारे लगाए गए पर जैसा कि विपक्ष के नेताओं ने मुझे भरोसा दिलाया था, कोई हिंसा नहीं हुई।

एकदम पहले ही दिन से मैं ईमानदार और स्वच्छ प्रशासन प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध था। इसके लिए असामाजिक तत्वों के मन में भय पैदा करना भी मेरी रणनीति में शामिल था। हालांकि सरकार का निर्देश था कि सप्ताह में किसी एक दिन जनता की शिकायतों को सुना जाए, पर मैं हर दिन 10 बजे से 2 बजे

तक जनता की शिकायतों को सुना करता था। उस समय कंप्यूटर या अन्य प्रकार के तकनीकी उपकरण नहीं हुआ करते थे, पर मैं इन शिकायतों के निवारण की एक बही बना कर रखता था। हर शिकायतकर्ता को अपने आवेदन की स्थिति की जानकारी लेने के लिए एक तारीख दी जाती थी। अगर शिकायत का उस दिन तक समाधान नहीं होता था, तो कारण बताए जाते थे और फिर एक अगली तारीख दी जाती थी। लोक शिकायतों के मास्टर कैलेंडर की शुरुआत से यह प्रक्रिया और व्यवस्थित हो गई।

मैं इस जिले में खूब दौरे किया करता था और जन वितरण प्रणाली और विकास कार्यों पर विशेष ध्यान दिया करता था। मैं कालाबाजारी रोकथाम अधिनियम के तहत असामाजिक तत्वों को हिरासत में लेने में जिलाधिकारी पद की ताकत का इस्तेमाल करने से बिल्कुल नहीं हिचकता था। इसी प्रकार, बुरे तत्वों के खिलाफ रासुका का भी मैंने इस्तेमाल किया और इस संदर्भ में मैं लाल साहब की घटना का उल्लेख करूँगा। यह व्यक्ति मिर्जापुर का आतंक था। वह पहले पुलिस में था पर बाद में उसे सेवा से बर्खास्त कर दिया गया। उस पर हत्या और डकैती के कई मामले चल रहे थे। इस रिपोर्ट के आधार पर उसे रासुका के तहत एक साल तक हिरासत में लिया गया और इसका बहुत अच्छा परिणाम निकला। जब वो रिहा हुआ, उसने मुझसे मिलने की इच्छा जाहिर की। चूंकि वह एक खूंखार अपराधी था, इस कारण मेरे सुरक्षा अधिकारी उस मुलाकात से पहले परिसर में बड़ी संख्या में पुलिस बल नियुक्त करना चाहते थे। मैंने उन्हें स्पष्ट रूप से कहा, ''वह मुझसे मिलने आ रहा है, मैं उससे मिलूँगा। उसे बुला लो।'' वह मेरे ऑफिस में आया और मुझसे कहा, ''सर, आप मुझसे नहीं डरते? जब मैं एसपी से मिलने गया था तो उन्होंने बड़ी संख्या में पुलिस बुला रखी थी, पर जब मैं आपसे मिलने आया तो आपने ऐसा कुछ भी नही किया।'' मैंने उसकी आँखों में देखा और कहा, ''तुम अपराधी हो, तुमको मुझसे डरना चाहिए। मैं भला क्यों तुमसे डरूँगा? मुझे पता है कि तुमने यह हल्ला मचा रखा है कि जिला मजिस्ट्रेट बहुत दौरे करते हैं और बम से बहुत आसानी से उन्हें उड़ाया जा सकता है। पर मेरा जीवन तुम्हारे हाथ में नहीं, भगवान के हाथ में है। यदि मेरे नसीब में मृत्यु नहीं तय होगी, तो तुम्हारे सैंकड़ों बम से भी मैं नहीं मरूँगा। यदि मेरे नसीब में मरना ही तय होगा तो मैं सड़क पर चलते हुए क्षण भर में ही मर सकता हूँ। मेरा जीवन तुम्हारे हाथों में नहीं है।'' इन शब्दों का लाल साहब पर चमत्कारिक असर हुआ और वह मेरे समक्ष दंडवत हो गया

और रोने लगा। उसने एक सामान्य जीवन जीने की इच्छा जाहिर की। मैंने उसे सलाह दी, ''लाल साहब, इस समय समाज तुमको स्वीकार नहीं करेगा क्योंकि तुम एक अपराधी हो। कुछ साल तुम इंतजार करो और जरूरत के समय लोगों की मदद करने की कोशिश करो। धीरे-धीरे अपने अच्छे कर्मों और अच्छे व्यवहार से समाज की मुख्यधारा में तुम स्वीकृत होते चले जाओगे।'' मेरे लिए यह आश्चर्य की बात थी कि उसने मेरी सलाह मान ली और खुद को बदलने का प्रयास करने लगा।

सदर और चुनार तहसील बाढ़ प्रभावित क्षेत्र हैं। बारिश के मौसम में, खासकर अगस्त महीने और सितंबर के पहले सप्ताह में, गंगा नदी समुद्र का रूप धारण कर लेती है और इसकी विशाल लहरें किनारों पर चाबुक की भाँति प्रहार करने लगती हैं। मेरे कार्यकाल के दौरान बाढ़ के कारण दोनों तहसीलों के सैंकड़ों लोगों का जीवन खतरे में आ गया था। जिला प्रशासन में पहले से ही आपदा प्रबंधन की तैयारी की समीक्षा हो रही थी। चुनौतियों से निपटने के लिए जिला प्रशासन कमर कसकर काम कर रहा था पर चुनौती इतनी गंभीर थी कि सैंकड़ों नावों को काम पर लगाने के बाद भी हमें लगभग सौ नावें कम पड़ रही थीं। वाराणसी और इलाहाबाद जिलों से नाव मंगाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था। जब टेंडर खोले गए तो जो सबसे कम दर मिली वह भी राज्य सरकार द्वारा निर्धारित दर से ज्यादा थी। एडीएम (वित्त और राजस्व) ने एक नोट तैयार किया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव खारिज करने की सिफारिश की। मैंने उन्हें बुलाया और कहा, ''यह एक आपातकालीन स्थिति है। कानूनी रूप से आप सही हैं, पर क्या आप मुझे यह आश्वस्त कर सकते हैं कि यदि आपकी सलाह मान ली जाती है तो किसी की जान नहीं जाएगी?'' उन्होंने निर्धारित दर के आलोक में कुछ भी कर सकने में असमर्थता जाहिर की। मैंने फाइल उनसे ले ली और सबसे कम दर वाले टेंडर को स्वीकृति दे दी, इसके बावजूद कि यह सरकार द्वारा निर्धारित दर से ज्यादा का टेंडर था। मैंने इस फाइल पर विस्तार से इस कार्य का औचित्य लिखित में दर्ज किया। ऐसी आपातकालीन परिस्थिति में मेरे पास सबसे कम दर को स्वीकृति देने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था। इसके साथ ही मैंने पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए इस बात की सूचना सरकार को भी दे दी।

प्राय: मैं यह सोचा करता हूँ कि क्या कानून मनुष्यों द्वारा बनाए गए हैं या कानून ने मनुष्यों को बनाया है। ग्रीक दार्शनिक सिसरो ने कहा है, ''एक व्यक्ति जो कानून द्वारा शासित नहीं होता है वह या तो शैतान है या फिर देवता।'' चूंकि

हम दोनों ही नहीं हैं, हमसे यह आशा की जाती है कि हम कानून और नियमों से शासित हों। एक दूसरी भी विचारधारा है जो यह मानती है कि कानून मनुष्यों द्वारा बनाए गए हैं, न कि कानून के लिए मनुष्य बने हैं। प्रशासन में हम कई बार ऐसी परिस्थितियों में आ जाते हैं जब कोई पुराना कानून जनहित के किसी विषय पर फैसला लेने में बाधा बन जाता है। ऐसी परिस्थिति में क्या किया जाना चाहिए? जाहिर तौर पर, इन दोनों दृष्टिकोणों में एक टकराव दिखाई पड़ता है। न ही अत्यंत कठोरता न ही अत्यंत उदारता अच्छे शासन के लिए सही है। दोनों के बीच संतुलन बनाया जाना चाहिए और इस मामले में 'स्वर्णिम माध्य' की अरस्तूवादी नीति सर्वश्रेष्ठ विकल्प प्रतीत होती है। प्रायः ही पुराने कानून जनहित के कार्यों को पूरा करने में बाधा बन जाते हैं। ऐसे दिखावटी बन चुके कानूनों को चिह्नित करके जल्द से जल्द बदल देना चाहिए।

चुनार में बाढ़ राहत कार्य करते हुए मेरी भेंट एक स्थानीय नेता से हुई जो सरकारी कामों की आलोचना किया करता था। स्वाभाविक रूप से वह चुनार तहसील में चल रहे राहत कार्यों की कड़वी आलोचना किया करता था। मैंने उसे यह समझाने का प्रयास किया कि प्रशासन कमर कसकर, यहाँ तक कि अधिकारियों की जान जोखिम में डालकर भी मैं जनता के लिए राहत कार्यों में लगा था। मैंने उसे अपने साथ एक मिशन पर चलने को कहा, जिसके लिए वह सहर्ष तैयार हो गया। 9 बजे सुबह हम राहत सामाग्री से भरी एक नाव पर सवार हुए। कई गाँवों के दौरे के बाद हम शाम को चुनार लौट रहे थे। जब हम गंगा की बीच धार में पहुँचे, नाव रिसने लगी और तेज हवाओं और ऊँची लहरों के कारण नाव डोलने भी लगी। मैं शांत बना रहा और प्रार्थना करता रहा पर नेता का डर के मारे बुरा हाल हो गया। वह काँपने और रोने लगा। वह मेरे करीब आया और रुंधी हुई आवाज में गिड़गिड़ाया, ''सर, कृपा करके मेरी जान बचा लीजिए।'' मैंने उससे कहा, ''हमारा जीवन ईश्वर के हाथों में है, शांत बने रहो और ईश्वर से प्रार्थना करो। मुझे पूरा विश्वास है कि हमें कुछ नहीं होगा, क्योंकि हम एक पुण्य कार्य में लगे हैं।'' नेता की आँखों से आँसू निकल रहे थे। उसने कहा, ''सर, हम नेता केवल प्रशासन की आलोचना करना जानते हैं। अब मैं एहसास कर पा रहा हूँ कि सरकारी अधिकारी अपनी जान जोखिम में डालकर भी अपना दायित्व निभा रहे हैं।'' इस घटना के बाद वह नेता ज्यादा जिम्मेदारी

से परिपूर्ण व्यवहार करने लगा।

अपने पूरे कैरियर में प्रेस के साथ मेरे संबंध बहुत अच्छे रहे हैं। जैसा कि पहले चर्चा की जा चुकी है, मिर्जापुर एक बाढ़ प्रभावित जिला है और हर साल यहाँ सूखा भी आता है। 1981 में यहाँ भयंकर सूखा पड़ा था। एनआरईपी के तहत वृहत पैमाने पर एक रोजगार सृजन कार्यक्रम चलाया गया था और मैंने खुद निजी तौर पर जमीनी स्तर पर इस कार्यक्रम का पर्यवेक्षण किया था। मई से जून के महीने तक कुल मिलाकर प्रशासन के पास सूखा राहत कार्य के अलावा और कोई काम नहीं था। एक सूची बनाई गई थी जिसमें विभिन्न गाँवों में एनआरईपी के तहत ली गई परियोजनाओं का उल्लेख था और इस सूची का कलेक्ट्रेट, तहसील कार्यालय और प्रखण्ड स्तर पर प्रदर्शन किया गया था। राहत कार्य को लेकर स्थानीय प्रेस का रवैया बहुत आलोचनापूर्ण था, वे समूह बनाकर इसकी शिकायत करने आए। मैंने यह अनुमान लगा लिया कि इन्हें जिले के अंदरूनी क्षेत्रों का दौरा कराना इनकी शंकाओं के निवारण का सबसे अच्छा तरीका है। हर दिन मैं, सुबह से लेकर देर रात तक, बिना दिन या रात के खाने के, राहत कार्यों की जाँच किया करता था। दो जीपों में पत्रकार मेरे साथ कई स्थानों में गए। हम सुबह 8 बजे निकले और जिले के अंदरूनी इलाकों की ओर गए। चूंकि मैंने दिन का खाना नहीं खाया, इस कारण पत्रकारों ने भी दिन का खाना नहीं खाया। 16 घंटों तक ऊबड़-खाबड़ जंगली सड़कों पर यात्रा करने के बाद हम आधी रात को डाला सीमेंट गेस्टहाउस पहुँचे। रात का खाना इतना ठंडा पड़ चुका था और पत्रकार इतने थके थे कि वे खाने का आनंद नहीं ले पाए। उनमें से दो तो बीमार पड़ गए। अगली सुबह, उनको भी मेरे साथ जाना था, पर उन्होंने मुझसे यह कहते हुए क्षमा मांगी कि ''सर, जिस प्रकार जिले के अंदरूनी इलाकों में भी राहत कार्य चल रहे हैं और जिस प्रकार अनियमितता पाए जाने पर आपने सख्त कदम उठाए हैं उस से हम पूरी तरह संतुष्ट हैं।'' उन्होंने मुझसे अनुरोध किया कि उन्हें मैं मिर्जापुर शहर में ही छोड़ दूँ, जिसे मैंने स्वीकार कर लिया।

अप्रैल के पहले सप्ताह में, सूखे और पेयजल के संकट का अनुमान लगाते हुए मैंने राज्य सरकार से बोरवेल की खुदाई के कुछ सामान भेजने का अनुरोध किया। मैंने कई बार अनुस्मारक भी भेजे पर फिर भी मशीनें नहीं आयीं। मेरे दिमाग में एक युक्ति आयी, मैंने पत्रकारों को अपने साथ लिया ताकि वे गाँववालों की पीड़ा को समझ सकें। मैंने दौरे के दौरान कोई बात नहीं कही पर जब पत्रकार

लौट कर आए तो उन्होंने जमीनी हकीकत बयान किया। अगली सुबह मुझे मुख्य सचिव का फोन आया जो सूखे की स्थिति के बारे में जानना चाह रहे थे। मैंने उन्हें विस्तार से पूरी बात बताई और कहा कि अखबारों में जो छपा है वह जमीनी सच है। मैंने यह भी जोड़ा कि मेरे बहुत प्रयासों और बार-बार अनुस्मारक देने के बाद भी बोरवेल की मशीन मिर्जापुर नहीं आयी। मुख्य सचिव ने मुझे आश्वस्त किया कि मशीनें अगले 48 घंटों के अंदर उपलब्ध करा दी जाएँगी। जल निगम के मुख्य इंजीनियर हडबड़ाए हुए थे, उन्होंने मुझसे संपर्क किया। जैसा कि मुख्य सचिव ने वादा किया था, 48 घंटों के अंदर ही मशीनें आ गईं, हमारे लिए यह बहुत बड़े राहत की बात थी। मैं हमेशा ही मीडिया को योजनाओं के क्रियान्वयन में होने वाले घपले और कमियों की खबर छापने के लिए प्रोत्साहित किया करता था। इससे मुझे दो स्तरों पर फायदा हुआ, पहला यह कि इससे मुझे योजनाओं के क्रियान्वयन और उनकी स्थिति के बारे में जानकारी मिलते रहती थी और दूसरा कि इससे मुझे गड़बड़ी करने वाले अधिकारियों का जवाब तलब करने और उनके खिलाफ कदम उठाने का अवसर मिलता था।

प्रायः सभी विकास खण्डों से आईआरडीपी योजनाओं के बारे में ढेरों शिकायतें आया करती थीं। प्राप्त शिकायतों के आधार पर मैंने शत-प्रतिशत जाँच के लिए मिर्जापुर के 20 विकास खण्डों में से 3 विकास खण्डों का चुनाव किया और युवा मजिस्ट्रेट, परिवीक्षणाधीन अधिकारियों और जिला स्तरीय अधिकारियों की पूरी टीम को मैंने इस काम में लगा दिया। यह देख कर मैं बहुत ही हैरान रह गया कि आईआरडीपी योजनाओं के 65 प्रतिशत लाभार्थी या तो फर्जी हैं या फिर उन्हें कोई लाभ हासिल नहीं हुआ है। दरअसल, कई मामले ऐसे थे जहाँ एक ही सामाग्री अलग-अलग नामों के तहत दिखाई गई थी। ऐसी कुप्रथा स्थानीय प्रचलित भाषा में खूंटा बदलने के नाम से जानी जाती थी। मैंने यह सोचा कि इस तरह के भ्रष्टाचार के निवारण के लिए सिर्फ बर्खास्तगी या विभागीय कार्रवाई से काम नहीं चलेगा। मैंने जाँच अधिकारियों को निर्देश दिया कि इन लोगों, जिनकी संख्या 30 थी, के खिलाफ एफआईआर दर्ज करा कर उन्हें गिरफ्तार कराया जाए। उनके खिलाफ एफआईआर की गई और उन्हें जेल भेजा गया। जैसा कि अनुमान था, इस कदम का बाकी के 17 खण्ड विकास अधिकारियों पर जबर्दस्त असर पड़ा जिन्होंने पुनः जाँच के नाम पर सब्सिडी की फाइलें वापस मंगा लीं। मैंने अपने एडीएम (परियोजना) के खिलाफ भी कड़े कदम उठाए, जो इन योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए प्रत्यक्ष तौर पर जवाबदेह था। मैंने उसके

खिलाफ जाँच की सिफारिश भी की। काफी सालों के बाद मुझे पता चला कि उस अधिकारी की न केवल प्रोन्नति हुई बल्कि उसे डीएम के रूप में भी नियुक्त किया गया। मैं बहुत आश्चर्यचकित और हैरान होता हूँ कि किस प्रकार ऐसे भ्रष्ट अधिकारी जो व्यवस्था को चकमा देते हैं, वह सब कुछ से बच कर कैसे निकल जाते हैं। जाँच पूरी होने और अभियोजन में उल्लेखनीय देरी का सीधा फायदा इन लोगों को मिलता है। प्रशासन के हित में यह उचित होगा कि इस देरी को हर स्तर पर कम किया जाए। विभागीय कार्रवाई और जाँच की जटिल प्रक्रिया का अनुसरण करने की बजाए हम ऐसा तरीका अपना सकते हैं जिसमें प्रक्रिया के सारांश पर बल दिया जाए, ताकि त्वरित रूप से न्याय सुनिश्चित किया जा सके।

मेरा यह मानना है कि डीएम संस्था का काम केवल विधि-व्यवस्था बनाये रखना या राजस्व संग्रह करना या विकास योजनाओं को लागू करने तक सीमित नहीं है। यह एक तथ्य है कि डीएम जिला प्रशासन का प्रमुख होता है और आम लोग उसी से अपने शिकायतों के निवारण और न्याय की उम्मीद रखते हैं। मैं सप्ताह में एक दिन रॉबर्ट्सगंज में अदालत लगाया करता था और यह देखता था कि जब भी मैं वहाँ जाता था, प्राय: हमेशा ही परिसर के बाहर कोई आदमी एक्सिक्यूटिव ऑफिसर, नगरपालिका, एसडीएम या तहसीलदार के लिए कटुवचन सुना रहा होता था। जब यह तीसरी बार हुआ तो मैंने यह पता लगाया कि कौन यह गालियाँ दे रहा है। मैंने रॉबर्ट्सगंज के एडीएम को उस आदमी को पेश करने को कहा। वह लड़का मेरे पास लाया गया और मैंने उससे गालियाँ देने का कारण पूछा। उसने कहा, ''सर, मैं एक स्नातक हूँ और बेरोजगार हूँ। अपने अभिभावकों और बहन की देखभाल का भार मेरे ही कंधों पर है। मेरे बार-बार आग्रह करने पर भी ये अधिकारी मुझे दैनिक वेतन पर काम में नहीं रख रहे और अपने परिचितों को ही काम पर लगा रहे हैं।'' मैंने गौर किया कि उस लड़के की मानसिक अवस्था ठीक नहीं थी। उस लड़के को दया के आधार पर भी नौकरी दिलाना मेरा काम नहीं था, पर मैंने एक्सिक्यूटिव ऑफिसर को निर्देश दिया कि वे इस लड़के को अस्थायी आधार पर नगर सड़क निर्माण कार्य में जगह दें। चूंकि वह एक स्नातक था, इस कारण उसे देखरेख के काम में रखा जा सकता था। उन्होंने इसकी व्यवस्था कर दी और एक सप्ताह के बाद जब मैं दोबारा वहाँ गया तो मैंने पाया कि वह लड़का अब बेहतर मानसिक अवस्था में हैं और परिसर के बाहर अब अभद्र भाषा नहीं सुनाई देती। जब 1983 में मेरा तबादला

आगरा हो गया तब उस लड़के को काम से निकाल दिया गया। एक दिन मैंने देखा कि वह लड़का मेरे घर पर आया हुआ है। वह मिर्जापुर से मेरे पास अपनी समस्याएँ सुनाने आया था मैंने देखा कि वह पहले जैसी ही मानसिक अवस्था में है। मैंने अपनी पहचान के एक उद्योगपति को फोन किया और उनसे अनुरोध किया कि वे इस लड़के को अपने कारखाने में काम दे दें। वे खुशी-खुशी तैयार हो गए। इस प्रकार उसकी समस्या का समाधान हो गया। हालांकि यह मेरा काम नहीं था पर चूंकि वह लड़का बहुत आशा लेकर आया था, मुझे इस बात से बहुत संतोष हुआ कि मैंने उसके परिवार को बचाने में अपनी भूमिका निभाई।

एक दिन एक वृद्ध आदमी मेरे घर में सुबह-सुबह आया। उसने कहा कि उसके इकलौते बेटे ने भूख हड़ताल कर दी है क्योंकि वह इन्दिरा गाँधी से मिल नहीं पा रहा। वह आदमी बहुत चिंतित था कि उसके बेटे ने दो दिनों से खाना नहीं खाया। वह अपने गाँव से यह आशा लेकर आया था कि डीएम साहब उसकी समस्या का समाधान कर सकते हैं। जिस प्रकार से उस वृद्ध आदमी ने यह बात मुझे सुनाई थी, उससे मैंने यह अनुमान लगाया कि वह लड़का संभवत: मानसिक रूप से अस्थिर है। मैंने उस आदमी से कहा, ''गाँव जाकर अपने बेटे से कहिए कि आप डीएम से मिल आइये। उन्होंने आपसे यह वादा किया है कि जब भी श्रीमती इंदिरा गाँधी मिर्जापुर आएँगी तो वो उसकी मुलाकात उनसे जरूर करा देंगे।'' वृद्ध आदमी चला गया। अगली सुबह वह फिर से मिलने आया और कहा, ''सर, लड़के ने उपवास खत्म कर दिया है।'' मैं रोमांचित हो गया।

एक बार कलेक्ट्रेट में एक आदमी मेरे कमरे में आया और सीएमओ के खिलाफ अपशब्द कहने लगा। मैंने उससे शांति के साथ बैठने को कहा। उसने कहा, ''सर, मैं एसिडिटि और गैस की समस्या से पीड़ित हूँ। कई बार मैं सीएमओ से मिला हूँ, वे मुझे कुछ टैबलेट और कुछ पीने वाली दवाई देते हैं। इन सब का कोई असर नहीं होता। ये सारे लोग किसी काम के नहीं हैं।'' मैंने उसे सलाह दी, ''सुबह टहलने जाया करो, चाय मत पियो, कॉफी, मसालेदार या तेल वाले भोजन से दूर रहो, समय पर खाना खाओ, कुछ कुछ अंतराल में ठंडा दूध पिया करो और थोड़ा योग किया करो।'' धैर्य से मेरी बात सुनने के बाद वह आदमी फिर से सीएमओ को गाली देने लगा और कहा, ''सर, उन्होंने मुझे कभी ऐसी सलाह नहीं दी।'' वह काफी संतुष्ट होकर वहाँ से चला गया।

एक शाम एक आदमी अकेले मुझसे मिलने आया। उसने धीमी आवाज में

मुझसे कहा, 'सर, मुझे अपनी पत्नी की निष्ठा पर शक है।' मैं क्रोधित हुआ पर उसके बावजूद मैंने उसकी बात सुनी। मैंने उससे पूछा, 'क्या तुम्हें केवल शक है या तुम्हारे पास कोई सबूत भी है?' उसने कहा, 'मेरे पास कोई सबूत तो नहीं पर वह मुझ पर ध्यान नहीं दे रही है। वह मेरी उपेक्षा कर रही है।' मैंने उससे पूछा कि क्या तुमने अपनी पत्नी को कोई तोहफा या साड़ी दी है, जिसके जवाब में उसने कहा, ''नहीं।'' मैंने फिर उससे पूछा कि क्या कभी तुम अपनी पत्नी को फिल्म दिखाने या कहीं घुमने ले कर गए हो? इसके जवाब में भी उसने नहीं में अपना सिर हिलाया। मैंने उससे कहा कि रिश्ता एक दोतरफा सड़क होती है जो विश्वास और ईमानदारी पर टिकी होती है। मैंने कहा, ''मैंने जो बताया है उसके अनुसार तुम अपनी पत्नी से पेश आओ और फिर 15 दिन के बाद आकर मुझे बताओ।'' एक पखवाड़े के बाद वह लौटा और बताया कि अब सब कुछ सही है और घर पर शांति है।

एक बार एक महिला अपने बच्चे के साथ कलेक्ट्रेट आयी और रुंधी हुई आवाज में उसने शिकायत की कि उसका पति एक शराबी है और शराब के लिए अपनी जमीन बेच रहा है। उसका पति अपनी पुश्तैनी जमीन के आखिरी 2 एकड़ के टुकड़े को बेचने के लिए एक वकील के साथ कलेक्ट्रेट आया हुआ है। उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा कि अगर उसकी जमीन का यह हिस्सा बिक जाता है तो उसके पास अपनी गुजर बसर करने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा। मैं दुविधा में पड़ गया, क्योंकि यह एक कानूनी मामला था। मैंने मामले पर विचार किया और एडीएम (वित्त और राजस्व) को यह निर्देश दिया कि वे बिक्री के दस्तावेजों को रजिस्टर न करें। इसी बीच मैंने वकील और उसके मुवक्किल को अपने कार्यालय में बुलाया जहाँ लोग भी मौजूद थे। मैंने वकील और लोगों को सारी परिस्थिति और भविष्य की संभावनाएँ बतायी और उनसे पूछा कि क्या एक माँ और बच्चे का जीवन तबाह करना उचित है? सब लोग इस बात पर सहमत हुए कि बिक्री न की जाए और इस प्रकार परिवार को आसन्न संकट से बचाया गया।

एक सुबह, एक वृद्ध आदमी मेरे घर में मुझसे मिलने आया और कहा, ''सर, मैं यहाँ नायब तहसीलदार था और 20 साल पहले रिटायर हो चुका हूँ। मैं अब 80 साल का हो चुका हूँ पर अभी तक मुझे पेंशन नहीं मिली है। ऐसा लगता है कि मुझे बिना पेंशन के ही मर जाना होगा।'' उनकी बात से मैं हतप्रभ रह गया और उनसे तीन दिन इंतजार करने को कहा ताकि मैं कोई समाधान

निकाल सकूँ। उन्होंने कहा, ''सर, मैंने धैर्य से 20 साल इंतजार किया है, तो 3 दिन और इंतजार कर सकता हूँ।'' मैं कलेक्ट्रेट गया और उनके आवेदन को एडीएम (एक्सिकुटिव) को सौंप दिया और उनसे इसे अतिआवश्यक मानने का निर्देश दिया। कुछ देर के बाद एडीएम, ओसी (कम्बाइन्ड ऑफिस) और ऑफिस सुप्रीटेंडेंट के साथ आए और कहा कि फाइल नहीं मिल रही है। मैंने एडीएम को निर्देश दिया कि सारे काम स्थगित करके इस फाइल की तलाश में जुटें। कुछ ही देर में फाइल रेकॉर्ड रूम के एक कूड़ेदान में पड़ी मिली। उसमें यह दर्ज था कि फाइल में कुछ ऐसी सूचनाएँ नहीं हैं जो एजी द्वारा मांगी जा रही हैं। मैंने उनसे कहा कि अब प्रोविजनल पेंशन के मामले स्थानीय विभाग प्रमुख द्वारा देखी जाती हैं, न कि एजी द्वारा। इस कारण इस फाइल को आगे बढ़ाया जा सकता है। फाइल में इतनी सूचनाएँ थीं जो निर्णय लेने के लिए पर्याप्त थीं। मैंने कुल राशि के 90 प्रतिशत को एरिअर के साथ प्रोविजनल पेंशन के रूप में दिए जाने की स्वीकृति दे दी। अगले दिन जब मैंने नायब तहसीलदार को कागजात दिए तब उनकी आँखों में आँसू थे। उन्होंने दिल खोल कर मुझे दुआएँ दीं। मुझे इस बात की बेहद संतुष्टि मिली कि ईश्वर ने रिटायर हो चुके वृद्ध नायब तहसीलदार को न्याय दिलाने के लिए मुझे माध्यम के रूप में चुना। मैंने ईश्वर का आभार व्यक्त किया।

एक और घटना जिसने मुझे अधीर कर दिया था वह थी मेरे एक मजिस्ट्रेट की पत्नी की मृत्यु। गर्मियों के दिन थे और मैं रॉबर्ट्सगंज के दूरदराज के इलाकों में राहत कार्यों की समीक्षा कर रहा था। दोपहर के लगभग 2 बजे थे, उसी समय मुझे वायरलेस संदेश मिला कि मजिस्ट्रेट की पत्नी की रसोई में जलकर मृत्यु हो गई। मैं भागकर मिर्जापुर आया और जबतक मैं वहाँ पहुँचा शव का अंतिम संस्कार किया जा चुका था। श्मशान घाट पर लड़की के पिता मेरे पास आए और मुझसे कहा, ''सर, मुझे किसी गड़बड़ी की शंका होती है। वास्तव में मैं पूरी तरह आश्वस्त हूँ कि इन लोगों ने मेरी बेटी की हत्या कर दी है।'' मैंने उन्हें पुलिस में एफआईआर दर्ज कराने की सलाह दी। रात में लड़की के पिता ने मुझे फोन किया और बताया कि पुलिस थाना एफआईआर दर्ज करने से मना कर रहा है क्योंकि इसमें एक मजिस्ट्रेट आरोपियों में शामिल है। मैंने पुलिस अधिकारी से बात की और उसे एफआईआर दर्ज करने का निर्देश दिया। आधी रात को मेरे सुरक्षाकर्मियों ने मुझा जगा कर बताया कि एसपी साहब कुछ बेहद जरूरी बात करने आए हैं। इतनी रात में उनके आने पर मैं भी बहुत आश्चर्यचकित हुआ।

एसपी ने कहा, ''सर, एफआईआर हो चुकी है और आप इसके लिए चिंतित न हों।'' मैं और हैरान हुआ और कहा कि मैं चिंतित नहीं हूँ। आप जाँच करें और मामले की मेरिट के आधार पर निर्णय लें। जवाब में एसपी ने कहा, ''सर, इस मामले में मजिस्ट्रेट शामिल हैं और जैसा कि आप जानते हैं, पुलिस और मजिस्ट्रेट के बीच का संबंध बहुत नाजुक होता है। यदि जिला पुलिस इस मामले की जाँच करती है तो संबंध खराब हो सकते है।'' तब मैंने इस मामले को सीआईडी को सौंपे जाने का सुझाव दिया। अगले दिन जिले के सभी मजिस्ट्रेट मुझसे मिले और मामले को सीआईडी को सौंपने जाने पर असंतोष जाहिर किया। मैंने उनको कारण बताए और उनको इस बात के लिए मनाया कि वे इस मामले में कुछ न करें अन्यथा मजिस्ट्रेट पद की छवि धूमिल होगी। कई सालों के बाद मुझे यह पता चला कि उस मजिस्ट्रेट को सजा मिली और वह जेल चला गया। मुझे यह नहीं पता चला कि अंत में क्या हुआ। हमें यह समझना चाहिए कि कोई भी कानून से ऊपर नहीं है।

गंगा के बिल्कुल किनारे बना हुआ मिर्जापुर का डीएम बंगला बहुत ही शानदार इमारत है। पर दुर्भाग्य से मिट्टी के कटाव के कारण नदी बंगले से खतरनाक स्तर तक नजदीक पहुँच चुकी है। मुझे यह डर था कि कुछ ही सालों में यह इमारत ढह जा सकती है। मैंने पीडबल्यूडी के इंजीनियर को बुलाया और उन्हें निर्देश दिया कि वे नदी के तटबंधों को मजबूत करने की योजना तैयार करें ताकि बंगले को बचाया जा सके। एक पखवाड़े के बाद वे योजना प्रस्ताव लेकर आए जो एक करोड़ रुपए का था। केवल नदी के तटबंध को मजबूत करने के लिए इतनी राशि खर्च करने की अनुमति देना असंभव था। मैंने प्रस्ताव को खारिज कर दिया और एक्सिक्यूटिव ऑफिसर, नगर पालिका और ओसी, नगरपालिका को यह निर्देश दिया कि वे शहर का कचरा नदी के तटबंधों की दरारों में ही डालें। मेरा विचार नदी के किनारों के कमजोर भाग को कचरे से भरने का था ताकि वह बारिश के बाद बैठ जाए। इसके बाद कुछ पत्थर डाल कर और फिर वृहत् स्तर पर एलिफैण्ट ग्रास आदि का रोपण कर के किनारों को और भी मजबूत किया जा सकता था। इस परियोजना में ज्यादा खर्च नहीं हुआ और यह समय पर पूरा भी हो गया। एक सरल और अभिनव दृष्टिकोण से ढेर सारा सरकारी पैसा बच गया।

एक शाम मुझे मेरे कमिश्नर ने एक विशेष ड्रिंक पार्टी का आमंत्रण दिया। इस आमंत्रण से मैं बहुत हैरान हुआ। मैंने उनसे पूछा, ''सर, आप जानते हैं कि

मैं नहीं पीता, फिर ऐसी पार्टी में मेरे शामिल होने का लाभ क्या है?'' हँसते हुए उन्होंने कहा, ''लोग जानते हैं और मैं भी जानता हूँ कि आप शराब को हाथ भी नहीं लगाते, पर किसी ने शिकायत की है कि आप शराब बहुत पसंद करते हैं और हमेशा ही नशे में रहते हैं।'' मजाक के अंदाज में उन्होंने आगे कहा, ''कुछ भी हो, कुछ लोग आपके बारे में शिकायत करेंगे ही। बेहतर यही है कि आप भी पार्टी में आइये और ड्रिंक का आनंद लीजिए।'' मैं भी हंस पड़ा और विनम्रता से इंकार कर दिया। हंसी के साथ यह प्रसंग समाप्त हो गया।

एक ईमानदार अधिकारी के लिए केवल राजनेता ही परेशानी खड़ी नहीं करते, कई बार उसके रिश्तेदार भी मुसीबत खड़ी कर देते हैं। मेरे एक रिश्तेदार मिर्जापुर जिले में एक खनन लीज लेने में दिलचस्पी रखते थे और इस मामले में उन्होंने मुझसे मुलाकात की। मैंने उन्हें साफ माना कर दिया चूंकि मैं यहाँ का डीएम था और मैं नहीं चाहता था कि मैं किसी को खुद के ऊपर उंगली उठाने का अवसर प्रदान करूँ। उन्होंने मेरी बात समझ ली और इस बात पर आगे जोर नहीं दिया। मुझे अपने पक्ष पर कोई मलाल नहीं है। आचारशास्त्र का बुनियादी सिद्धान्त यह है कि आदमी को अपने हर काम में ईमानदार होना चाहिए। प्रतिष्ठा एक दिन में नहीं बनती। प्रतिष्ठा बनाने में कई साल लग जाते हैं। यह किसी व्यक्ति के आत्मबल का आधार स्तम्भ होता है।

जब मैं 2007 में उत्तर प्रदेश का मुख्य सचिव बना, मेरी बेटी प्रज्ञा एक प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय एनजीओ में राष्ट्रीय संयोजक के पद के लिए एक इंटरव्यू में शामिल होने लखनऊ आयी। उसने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइन्स मुंबई से स्नातकोत्तर की डिग्री ली थी और उस समय रेड क्रॉस सोसाइटी में काम कर रही थी। 200 उम्मीदवारों में से 8 को शॉर्ट लिस्ट किया गया था, प्रज्ञा उनमें से एक थी। नाश्ते के समय मेरी पत्नी ने मुझसे कहा कि क्या प्रज्ञा के लिए कोई बात करना उचित होगा? इससे पहले कि मैं कुछ कहता, प्रज्ञा खड़ी हो गई और उसने कहा, ''नहीं पापा, कभी नहीं। आपने अपने जीवन में यह काम कभी नहीं किया, मेरे लिए क्यों करेंगे?'' मैंने उसके रवैये की प्रशंसा की और इस बारे में किसी से कोई बात नहीं की। मेरी बेटी का चयन नहीं हुआ। मैंने उससे कहा, ''जो भी हुआ तुम्हारे फायदे के लिए ही हुआ। इसे उसी रूप में लो।'' इसके बाद वो एक सिविल सोसाइटी संगठन के नेपाल में काम के लिए चुन ली गई और बाद में वह यूएनडीपी में भी। यह ईश्वर का आशीर्वाद है।

मिर्जापुर मेरे जीवन का एक और महत्त्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। विंध्याचल के स्फूर्तिदायक माहौल ने भीतर नया जोश भर दिया। मैंने मिर्जापुर के प्राय: सभी मंदिरों और महत्त्वपूर्ण स्थानों का दौरा किया और नरहरी बाबा, अड़गड़ानंदजी, देवरहा बाबा, योगर्षि राजबली मिश्रा, राम किंकरजी, माँ आनंदमयी और ऐसे कई संतों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। होली के दौरान एसपी आवास में कृष्ण लीला का प्रदर्शन करने छोटे लड़कों का एक समूह मथुरा से आया था। इस अवसर पर कई अन्य अधिकारी और उनकी पत्नियों को आमंत्रित किया गया था। कृष्ण लीला के बाद, परंपरा के अनुसार कृष्ण और राधा की आरती की जानी थी। आरती के बाद मैंने उनके चरण स्पर्श किए और ऐसा महसूस किया मानों मैंने साक्षात् ईश्वर के चरण छुए हों। मैं परम आनंद की अवस्था में पहुँच गया और मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। मैं एक दूसरे ही संसार में था और ईश्वर के चरण छोड़ना ही नहीं चाहता था। यह दृश्य लगभग एक मिनट तक रहा। पर पहली बार मैंने यह महसूस किया कि अस्तित्व के कई स्तर होते हैं और एक व्यक्ति निष्ठा और समर्पण के माध्यम से उच्चतर स्तरों की यात्रा कर सकता है। मैं सप्ताह में एक बार विंध्याचल की यात्रा करता था और जब भी मैं विंध्याचल, कालीखोह और अष्टभुजा में होता था तब स्वयं को अस्तित्व के उच्चतर स्तर पर महसूस करता था। मिर्जापुर में मिले अनुभवों ने आगे की मेरी आध्यात्मिक यात्रा की नींव तैयार की।

अध्याय-१५

जिला मजिस्ट्रेट, आगरा

(जुलाई 1983-जुलाई 1985)

अगर हम किसी महान उद्देश्य के लिए काम करते हैं तो 'सर्वव्यापी दैवीय शक्ति' हमेशा ही हमारी सहायता करती है।

मिर्जापुर में तीन साल मेरे जीवन के सबसे बेहतरीन वर्षों में से रहे। तीन साल के बाद मैं किसी भी समय तबादले की उम्मीद कर रहा था और जुलाई 1983 में मुझे नियुक्ति सचिव द्वारा यह सूचना दी गई कि आगरा के डीएम के रूप में मेरा तबादला हो गया है। उन्होंने मुझे जल्द से जल्द आगरा जा कर पदभार ग्रहण करने का निर्देश दिया। शीघ्र ही मुझे सरकार का आदेश भी मिल गया और किसी स्थानापन्न का इंतजार किए बिना मैंने सबसे वरिष्ठ एडीएम को पदभार सौंपा और अगले दिन आगरा के लिए निकल गया। मुझे विदाई देने के लिए कई अधिकारी और सामान्य लोग स्टेशन तक आए। मैं अभिभूत हो गया। मैंने विदाई के दर्द को महसूस किया और मेरी आँखों में आँसू आ गए। अगले दिन मैं आगरा पहुँचा और पदभार ग्रहण किया। यहाँ नया जीवन, नए दोस्त, नए लोग और नई चुनौतियाँ मेरी प्रतीक्षा कर रही थीं।

विधि व्यवस्था, वीआईपी दौरों और विदेशी सैलानियों के आगमन के दृष्टिकोण से आगरा हमेशा ही एक महत्त्वपूर्ण जिला रहा है। बेशक, आगरा ताज का शहर है। मुझे विधि-व्यवस्था, वीआईपी दौरों, विकास कार्यों, जनता के बीच बैठकों, न्यायिक कार्य और राजस्व वसूली आदि का काम करना था। विधि-व्यवस्था की दृष्टि से आगरा एक बेहद संवेदनशील स्थान है क्योंकि यहाँ कमजोर तबकों के लोगों, साथ ही मुसलमानों की बड़ी आबादी है। अपने शुरुआती कार्यकाल में मैंने यह पाया कि ज्यादातर मजिस्ट्रेट और पुलिस अधिकारी अपनी शाम उन होटलों में बिताना पसंद करते हैं जिनके लिए आगरा प्रसिद्ध है। विधि-व्यवस्था के मामले में त्वरित कार्रवाई के लिहाज से यह अच्छे संकेत नहीं थे। एसएसपी से बातचीत के बाद मैंने मजिस्ट्रेट और सीओ (पुलिस) अधिकारियों के संयुक्त समूह बनाए जिन्हें सघन रात्रि पहरे के माध्यम से शहर की विधि-व्यवस्था पर

हमेशा नजर बनाए रखने का निर्देश दिया। प्रारम्भ में उन्होंने आनाकनी की पर एसपी और डीएम दोनों की ओर से सख्ती के बाद वे लाइन पर आ गए। इसका शहर में विधि-व्यवस्था की स्थिति पर बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

विधि व्यवस्था के प्रभावी नियंत्रण के लिए यह जरूरी है कि डीएम और एसपी दोनों एक दूसरे से तालमेल बना कर, परस्पर विश्वास और आदर के साथ काम करें और उन दोनों के बीच किसी तरह का अहम आड़े न आए। यदि इन दोनों अधिकारियों के बीच विश्वास नहीं है, यदि परस्पर सहृदयता की कमी है और यदि दोनों के बीच किसी प्रकार का अहम आड़े आता है तब उस जिले का ईश्वर ही मालिक है। डीएम के रूप में चार जिलों में सात सालों के अपने पूरे कार्यकाल के दौरान मैंने अपने पुलिस समकक्ष के साथ निजी स्तर पर मधुर संबंध कायम रखने में सफलता हासिल की। जब भी मैंने पुलिस की ओर से ढील देखी, तब मैंने उनकी खिंचाई करने में कोई संकोच नहीं किया। आगरा में मेरे पदभार ग्रहण करने के कुछ ही दिनों के बाद एसएसपी ने कुछ थानाध्यक्षों का मुझसे बिना सलाह लिए तबादला कर दिया। मुझे इसकी जानकारी अखबारों से मिली। मैंने तुरंत ही एसएसपी को एक पत्र लिखा कि यदि मुझसे फोन पर भी सलाह लेकर यह तबादले किए जाते तो बेहतर रहता। एसएसपी ने तुरंत ही मुझे फोन किया और यह आश्वस्त किया कि आगे से वे हमेशा ही थानाध्यक्षों का तबादला करते हुए मुझसे सलाह जरूर लेंगे। अगली बार जब तबादला करने की बारी आयी तो उन्होंने कुछ तबादलों के बारे में मुझसे सलाह ली, पर जब मैंने तबादले की सूची देखी तो पाया कि यह काफी लंबी सूची है। मैंने पुनः इसे एसएसपी के ध्यानार्थ रख दिया और विवरण के साथ सचिव (गृह) और डीजी (पुलिस) को सूचित कर दिया। मुझे यह पता नहीं था कि मेरा यह पत्र एसएसपी के लिए ऐसी समस्या खड़ी कर देगा। दो सालों के बाद जब मैं भारत सरकार के अधीन निदेशक (युवा मामले) के पद पर कार्यरत था तब एसएसपी शास्त्री भवन में स्थित मेरे ऑफिस आए और उसके बाद हुई अपनी दुर्दशा के बारे में बताया। उन्होंने मुझे बताया कि मेरे पत्र के कारण उनकी प्रोन्नति में समस्या आने लगी और वे चाहते थे कि मैं इस मामले में सचिव (गृह) और डीजी (पुलिस) से बात करूँ। चूंकि एसएसपी ने इस पत्र के बाद अपना रवैया बदल दिया था, इस कारण मैंने सचिव (गृह) और डीजी (पुलिस) से बात की और कहा कि मेरा उनके खिलाफ कोई असंतोष नहीं है और असल में हम दोनों ने बाद में एक दूसरे के साथ एक मजबूत टीम के रूप में काम किया है। इससे उनकी प्रोन्नति

का मार्ग साफ हो गया और बाद में उन्होंने मुझे इसके लिए धन्यवाद भी दिया।

हमने जिस सबसे बड़ी चुनौती का सामना किया वह थी श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या। जिस दिन यह घटना हुई उस दिन मेरे कमिश्नर आगरा में कृषि विकास की एक बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। इस बैठक में आगरा डिवीजन के अधिकारी और केंद्र सरकार के प्रतिनिधि भी शामिल थे। 10 बजे के लगभग मुझे गोपनीय कार्यालय से एक फोन आया और यह बताया गया कि श्रीमती गाँधी को गोली मारी गयी है और उनके बचने के बहुत कम आसार हैं। मैंने फोन रखा, कमिश्नर के पास गया और उनसे अनुरोध किया कि वे मीटिंग से मुझे मुक्त होने की अनुमति दें क्योंकि जिले में विधि व्यवस्था का संकट आ सकता है। मैं सीधे अपने गोपनीय कार्यालय गया। वहाँ के अधिकारियों ने मुझे उस त्रासद घटना के बारे में बताया और कहा कि यह सत्य है। मेरे दिमाग में यह बात पूरी तरह स्पष्ट थी कि जिले में इस घटना का बहुत गंभीर प्रभाव पड़ सकता है क्योंकि यहाँ सिखों की बहुत बड़ी आबादी है। एसएसपी से तुरंत चर्चा करते हुए मैंने मजिस्ट्रेट और पुलिस अधिकारियों की बैठक बुलाई और समस्या पर बात की। हमने यह निष्कर्ष निकाला कि सिक्ख लोगों के मुहल्ले, उनके कामकाज के स्थान, उनके व्यावसायिक प्रतिष्ठान और पूजा स्थल असामाजिक तत्वों का संभावित निशाना हो सकते हैं। हमने यह भी निष्कर्ष निकाला कि ऐसी समस्याएँ केवल शहर में होंगी, गाँव में नहीं। ग्रामीण इलाकों से सुरक्षा बल बुला लिए गए और शहर की सुरक्षा को चाक-चौबन्द किया गया। यह भी फैसला लिया गया कि असामाजिक तत्वों की वृहद पैमाने पर एहतियातन गिरफ्तारी की जाए। वैसे इस त्रासद घटना की खबर शाम को घोषित की गई, जबकि यह खबर सुबह ही ज्ञात हो गई थी। इससे हमें सुरक्षा बलों को इकठ्ठा करने और तैनात करने तथा एहतियातन गिरफ्तारी करने का समय मिल गया। सघन रूप से गश्त लगाने के लिए मजिस्ट्रेट और पुलिस अधिकारियों के समूह बनाए गए और शाम तक वे सड़कों पर निकल गए।

इस अभूतपूर्व संकट के दौर में जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन ने अनुकरणीय समर्पण और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया। 15 दिनों तक हम बिना किसी आराम और उचित भोजन के दिन भर काम किया करते थे। एसएसपी और मैं सुरक्षा बलों की एक टुकड़ी के साथ दिन-रात गश्त पर रहते थे। हम केवल मुरमुरा, चना और गुड़ और अपनी कार में रखे पानी की बोतलों पर आश्रित रहते थे। उस दुर्भाग्यपूर्ण अशांत दौर में यही चीजें हमारी प्राणरक्षक थीं।

हमने यह गौर किया कि असामाजिक तत्व प्राय: 11 बजे से लेकर आधी

रात तक सक्रिय रहते थे, इस कारण हमने सुरक्षा बलों के साथ सुबह के 7 बजे से लेकर रात के 3 बजे तक गश्त लगाना शुरू किया। इस गश्त के दौरान कई दिलचस्प घटनाएँ हुईं। एक सुबह जब हम सुरक्षा बलों के साथ घूम रहे थे, एक वृद्ध महिला हमारे सामने आयी और हाथ जोड़कर हमारे सामने अपने बेटे की जान बचाने के लिए गिड़गिड़ाने लगी। उसके बेटे को गंभीर चोटें लगी थीं पर वह अस्पताल जाने से डर रहा था क्योंकि उसे भय था कि रास्ते में भीड़ फिर से उस पर हमला कर देगी। हमने उसे सांत्वना दी और मैंने उस लड़के को मेडिकल कॉलेज अस्पताल पहुँचाया। लड़के का इलाज हुआ और उसकी जान बच गई। जब 15 दिनों के बाद संकट समाप्त हुआ तब सिक्ख समुदाय के लोगों और नेताओं ने गुरु का ताल गुरुद्वारे में मुझे सरोपा और पगड़ी दे कर सम्मानित किया। सम्मान समारोह के बाद जब मैं कार की तरफ लौट रहा था तो एक वृद्ध महिला मुझे माला पहनाने के लिए दौड़ती हुई आयी। जब पुलिस ने उसे रोका तो उसने कहा, ''बेटे, शायद तुम मुझे पहचान नहीं पा रहे हो, पर मैं तुम्हें कैसे भूल सकती हूँ? तुमने मेरे बेटे की जान बचायी थी। कृपया माला स्वीकार करो।'' आँसुओं के साथ उसने मुझे माला पहनायी। उस समय मैंने कैसा महसूस किया इसे मैं व्यक्त नहीं कर सकता।

संकट के शुरुआती दिनों में आगरा और फिरोजाबाद में कर्फ्यू लगा दिया गया था। जब हमने फिरोजाबाद में माहौल खराब होने की बात सुनी तो मैं और एसएसपी एक पुलिस टुकड़ी के साथ वहाँ तुरंत पहुँचे। एडीएम (फिरोजाबाद) और सीओ (पुलिस) पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे। उसी समय वहाँ के स्थानीय विधायक अपने समर्थकों के साथ आए। मैंने सख्त निगाहों से उनकी ओर देखा और कड़ी आवाज में कहा, ''क्या आपके पास कर्फ्यू पास है? अगर आपके पास कर्फ्यू पास नहीं है तो कृपया तुरंत यहाँ से चले जाइए नहीं तो आपको गिरफ्तार कर लिया जाएगा।'' यह देखकर कि हम बहुत सख्त हैं, वह तुरंत वहाँ से चले गए। इस घटना के बाद हमें समीक्षा बैठक की और पुलिस से यह सुझाव आया कि चूंकि एक पार्टी के ढेर सारे समर्थकों को बंद किया गया है, इसके संतुलन के लिए दूसरे दलों के भी कुछ लोगों को गिरफ्तार करना चाहिए। मैंने इस प्रस्ताव को सीधे तौर पर खारिज कर दिया और यह निर्देश दिया कि जो भी असामाजिक गतिविधियों में संलिप्त पाया जाता है उसे गिरफ्तार किया जाए।

एक सुबह लगभग 10 बजे, मैं एसएसपी, एसपी सिटी और एडीएम शहर की तनावपूर्ण स्थिति पर चर्चा कर रहे थे, तभी हमें वायरलेस पर यह संदेश मिला कि सदर बाजार के पास भीड़ पत्थर चला रही थी। सुरक्षा बलों के साथ एडीएम

और एसपी सिटी घटनास्थल के लिए निकल पड़े, पर कुछ देर के बाद हमें भीड़ द्वारा हिंसा का दूसरा संदेश मिला। सही सूचना के लिए हम एसपी सिटी और एडीएम से संपर्क करना चाहते थे पर संपर्क नहीं हो पाया। एसएसपी और मैं घटनास्थल के लिए निकल गए। कुछ दूरी से ही मैंने यह गौर किया कि सड़क पत्थरों से अटी पड़ी है। ऐसा लग रहा था कि सुरक्षा बलों ने भीड़ को तितर-बितर कर दिया था पर भीड़ दोबारा इकठ्ठा हो रही थी। हमारे पास यह तय करने के लिए कुछ सेकेंड का ही समय था कि गाड़ी रोक कर भीड़ से बात की जाए या पूरी रफ्तार से वहाँ से निकल जाया जाए। पहले विकल्प में बहुत खतरा था क्योंकि इसकी बहुत अधिक संभावना थी कि भीड़ हम पर हमला कर दे। मैंने दूसरा विकल्प चुना और ड्राईवर को वहाँ से पूरी रफ्तार से गाड़ी निकालने का निर्देश दिया। हम सड़क के दूसरी ओर सुरक्षित पहुँच गए। यदि कोई प्रदर्शनकारी हमारी गाड़ी के सामने आ गया होता तो मेरा यह फैसला बहुत गलत फैसले में बदल गया होता, पर सौभाग्य से ऐसा नहीं हुआ और स्थिति को नियंत्रित कर लिया गया। मैं पूरी तरह से आश्वस्त था कि कोई अदृश्य शक्ति हमारे साथ थी जिसने हमें उस गंभीर परिस्थिति से बाहर निकाल लिया। जीवन में ऐसा ही होता है। यदि हम ईमानदार हैं और किसी महान उद्देश्य के लिए काम कर रहे हैं तो 'सर्वव्यापी दैवीय शक्ति' हमेशा ही हमारी सहायता करती है और हमारे रास्ते की सभी बाधाओं को दूर कर देती है।

संकटपूर्ण स्थिति में कमी आयी पर यह पूरी तरह समाप्त नहीं हुई थी। इसी दौरान एक रात मुझे मुख्यमंत्री के सचिव का संदेश फोन पर आया कि आगरा में लोगों पर पुलिस ज्यादती की शिकायतें मिल रही हैं। इस कारण एक जांच-प्रतिनिधिमंडल राज्य के गृह मंत्री के नेतृत्व में अगले दिन आगरा आ रहा है। मैं थोड़ा खीज गया और दो टूक ढंग से सचिव को कहा, ''सर, आगरा में कोई गंभीर घटना नहीं हुई है। कानपुर जैसे शहर में ज्यादा तबाही, हिंसा और जान का नुकसान हुआ है। आगरा में कोई जान नहीं गई है। वास्तव में आगरा शहर में तो लोग हॉकी टूर्नामेंट देख रहे हैं। अगर सरकार हमारे काम से संतुष्ट नहीं है तो आप मेरे और एसएसपी समेत सारे मजिस्ट्रेट और पुलिस अधिकारियों का तबादला कर दें।'' सचिव ने मुझे शांत किया और कहा, ''यह केवल एक जाँच दल है, इसकी बहुत चिंता करने की जरूरत नहीं है। यदि अधिकारियों ने ईमानदारी और समर्पण के साथ काम किया है, हम हमेशा ही उनके हितों की चिंता के लिए तत्पर रहते हैं।'' सचिव ने इस तर्ज पर मुझे आश्वस्त किया। मैंने

पुलिस और मजिस्ट्रेट अधिकारियों की एक बैठक बुलाई और उनको यह निर्देश दिया कि वे समाज के महत्त्वपूर्ण तबकों जैसे राजनीतिक प्रतिनिधि, पत्रकार, छात्र नेता, व्यापारिक समुदाय, बौद्धिक वर्ग, शिक्षक और वकील समुदाय आदि को जाँच दल के सामने समुचित प्रतिक्रिया रखने के लिए कहें। मैंने निजी रूप से भी कई प्रमुख लोगों को फोन कर कहा कि वे जाँच दल के सामने प्रशासन की भूमिका को स्पष्ट करें। अगली सुबह जब मैं सर्किट हाउस पहुँचा तो वहाँ बहुत बड़ी भीड़ देख कर हैरान हुआ। बैठक शुरू हुई और मंत्रीजी ने मुझसे सुरक्षा बलों द्वारा की गई ज्यादतियों के बारे में पूछा। मैंने जवाब दिया, ''सर, आगरा में परिस्थिति मोटे तौर पर सामान्य रही और कोई गंभीर घटना नहीं हुई है। स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में है और किसी की जान नहीं गई है। लेकिन, असामाजिक तत्वों और शरारती तत्वों के साथ सख्ती बरती गई है, केवल विधि-व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से ऐसा किया गया है।'' मंत्रीजी के चेहरे के हावभाव से ऐसा लगा कि उनको मेरी बात बहुत पसंद नहीं आयी। जब प्रतिनिधिमंडल सर्किट हाउस से बाहर आया, तो मंत्रीजी बाहर इकठ्ठी भीड़ को देख कर बहुत प्रसन्न हुए। लेकिन उनकी खुशी तुरंत गायब हो गई जब उन्होंने देखा कि यह भीड़ जाँच-दल के विरोध में नारे लगा रही थी। भीड़ के प्रमुख लोगों ने स्पष्ट रूप से मंत्रीजी से पूछा, ''आप आगरा क्यों आए हैं जबकि आगरा में सब कुछ सामान्य रहा है और कोई गंभीर घटना नहीं हुई है? आप जानमाल के नुकसान की जानकारी लेने कानपुर क्यों नहीं गए? क्या आप यहाँ समस्या खड़ी करने आए हैं?'' प्रतिनिधिमंडल तेजी से सर्किट हाउस से निकल गया। किसी भी अधिकारी के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई क्योंकि सरकार को यहाँ और अन्य जगहों की जमीनी हकीकत के बारे में अच्छी तरह पता था।

जिस प्रकार से हमने संकटपूर्ण परिस्थितियों को संभाला उसकी बहुत प्रशंसा की गई। सेना के लेफ्टिनेंट जनरल नकाई ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर संकट से निपटने में आगरा जिला प्रशासन की भूमिका की सराहना की। प्राय: मैं इस बात पर सोचता हूँ कि किस प्रकार हमने इस गंभीर स्थिति का सामना किया। निश्चित रूप से सारा श्रेय टीम भावना, अपनायी गई रणनीति और उस उत्साह को जाता है जिस के साथ सारे अधिकारियों ने दिन रात एक कर काम किया।

राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (एनएसए) एक प्रबल हथियार है जिसे जिला मजिस्ट्रेट को एहतियात और विवेक के साथ इस्तेमाल करना चाहिए। मैंने इसका इस्तेमाल खूंखार अपराधियों और जघन्य अपराधों में शामिल असामाजिक तत्वों के खिलाफ

किया और सत्ताधारी दल के विधायक के खिलाफ भी इसके इस्तेमाल में नहीं हिचका। मेरे कार्य की जनता और सरकार, साथ ही साथ एड्वाएजरी बोर्ड द्वारा बहुत सराहना की गई। इससे असामाजिक तत्वों के बीच भी स्पष्ट संदेश गया कि जरूरत पड़ने पर जिला प्रशासन कड़े कदम उठाने से पीछे नहीं हटेगा।

एक घटना मुझे और याद आती है। ईद से ठीक पहले मुझे एक विधायक ने यह सूचना दी कि पुलिस ने एक मुस्लिम महिला के साथ दुर्व्यवहार किया है। उन्होंने कहा, ''मिश्राजी, यदि त्वरित और प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो कल ईद की पूर्व संध्या पर गंभीर समस्या हो सकती है।'' मैंने तुरंत ही अपने आवास पर पत्रकारों की बैठक बुलाई। एसएसपी, सिटी एसपी और एडीएम (सिटी) की उपस्थिति में मैंने बिना कोई बात छुपाए सारी घटना का वर्णन किया। उस समय तक पुलिस अधिकारी पर एफआईआर दर्ज करने और उसकी गिरफ्तारी के निर्देश दे दिए जा चुके थे। मैंने पत्रकारों से कहा, ''मित्रों यह एक नाजुक समय है। एसएसपी ने प्रभावी कदम उठा लिए हैं। अगर आप इस घटना को प्रकाशित करेंगे तो निश्चित ही इससे दंगा भड़क उठेगा। अगर आप इस घटना को नहीं प्रकाशित करेंगे, तो संभवत: हम दंगा होने से रोक सकते हैं। मित्रों, शहर की विधि-व्यवस्था अब आपके हाथों में है। अगर आप दंगे नहीं होने देना चाहते हैं, तो मुझे विश्वास है कि एक प्रबुद्ध नागरिक होने का फर्ज अदा करते हुए आप इस खबर को प्रकाशित नहीं करेंगे।'' वे सभी मेरी बात से सहमत हुए और मैं उन्हें स्थिति को संभालने के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। यह रणनीति उल्टी पड़ सकती थी, पर यह सफल रही और एक बार फिर मेरा विश्वास पुख्ता हो गया कि अगर हम किसी महान उद्देश्य के लिए काम करते हैं तो 'सर्वव्यापी दैवीय शक्ति' हमेशा ही हमारी सहायता करती है।

पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के साथ मेरी मुलाकात दिलचस्प रही। 1985 के आम चुनावों में वे आगरा शहर में एक जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उनके निर्धारित दौरे से एक दिन पहले उनकी पार्टी के विधायक ने अपने समर्थकों के साथ मलपुरा थाना क्षेत्र में तनावपूर्ण स्थिति बना दी। मैं और एसएसपी उस जगह मौजूद थे जहाँ पत्थर चलाने वाली भीड़ को तितर-बितर करने के लिए लाठी चार्ज किया गया। विधायक समेत कुछ लोगों को गिरफ्तार किया गया। जब चौधरी चरण सिंह आगरा आए तो उन्होंने सर्किट हाउस से सुबह मुझे फोन किया और जेल में अपने समर्थकों से मिलने की इच्छा जाहिर की। मैंने पूर्व प्रधानमंत्री को स्पष्ट रूप से कहा कि जिला प्रशासन को उनके दौरे से

कोई आपत्ति नहीं है, पर उन्हें यह जानना चाहिए कि किन परिस्थितियों में पुलिस द्वारा बल प्रयोग किया गया। मैंने फोन पर उन्हें पूरी घटना का विवरण दिया और उन्हें जेल का दौरा करने की अनुमति दी। एडीएम (सिटी) उनके साथ गए। जब चौधरी चरण सिंह जेल पहुँचे और अपने समर्थकों से मिले तो समर्थकों ने पुलिस और जिला प्रशासन की शिकायत की और नारे लगाए। चौधरी चरण सिंह नाराज हो गए और उन लोगों को सख्ती से कहा, ''राजनीति में लाठी की चोट सहनी पड़ती है। आपके डीएम ने मुझे विस्तार से सारी बात बता दी है और मुझे प्रशासन से कोई नाराजगी नहीं है।'' इस प्रकार शांति से सारा घटनाक्रम निपट गया।

आगरा में विधि-व्यवस्था बहुत चुनौतीपूर्ण थी और मैंने केवल कुछ ही घटनाओं का उल्लेख किया है। इसके अलावा भी कई मामले आए, जैसे सेना में नए बहाल हुए नौजवान भगोड़ों का मामला, आगरा कॉलेज हॉस्टल से असामाजिक तत्वों को निकालना और पुलिस हिरासत में मौत। इन सभी मामलों को प्रभावी रूप से निपटाया गया।

मुझे डीजी (पुलिस) के खिलाफ जाँच करने का एक असामान्य अवसर मिला, जो एक ऐसी स्थिति है जिसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। गृह मंत्रालय से एक पत्र पाकर मैं हैरान था जिसमें तत्कालीन डीजी के खिलाफ आरोपों की जाँच करने की बात थी। मैंने सोचा कि शायद इस मामले को सामान्य तरीके से ले लिया गया और बिना दिमाग लगाए जाँच के लिए भेज दिया गया। मैंने यह लिखते हुए पत्र का जवाब दिया कि संभवत: इस मामले में डीएम द्वारा जाँच नहीं हो सकती क्योंकि डीजी राज्य के पुलिस विभाग के प्रमुख होते हैं। पर डीजी ने स्वयं गृह विभाग को लिखा कि उन्हें मेरी निष्पक्षता पर पूरा भरोसा है और उन्हें इस पर कोई आपत्ति नहीं कि मैं उन पर लगे आरोपों की जाँच करूँ। अंतत: मैंने जाँच की और अपनी रिपोर्ट सौंपी। संभवत: यह उत्तर प्रदेश के पूरे प्रशासनिक इतिहास में अपनी तरह की इकलौती जाँच होगी।

श्रीमती गाँधी की हत्या के बाद, किसी भी तरह के संभावित आतंकी खतरे से बचने के लिए केंद्र सरकार और राज्य सरकार की तरफ से सख्त दिशानिर्देश जारी किए गए थे। चूंकि लोकसभा चुनाव होने थे, कई वीआईपी और वीवीआईपी आगरा शहर आ सकते थे। उनकी सुरक्षा प्रबंध के लिए बहुत सख्त निर्देश जारी किए गए थे। एक बार प्रधानमंत्री आगरा के खेरिया एयरपोर्ट आने वाले थे। आगरा के एक प्रभावशाली कैबिनेट मंत्री ने जिला प्रशासन से एक पास माँगने के लिए संपर्क किया जिसके उपयोग से वे अपने ड्राईवर के साथ एयरपोर्ट

जाकर प्रधानमंत्री को अपने साथ ला सकते थे। मंत्री और उनके ड्राईवर को पास दिए गए, पर यह देख कर मुझे आश्चर्य हुआ कि उनके साथ तीन ऐसे लोग थे जिनके लिए पास नहीं दिए गए थे। मैंने एसएसपी को निर्देश दिया कि वे उस कमरे के बाहर एक गार्ड को तैनात करें जहाँ मंत्रीजी के साथी बैठे हुए थे और उन्हें बाहर न निकलने दें। मैंने यह भी निर्देश दिया कि उनको चाय-कॉफी दी जाए पर किसी भी स्थिति में उन्हें कमरे के बाहर न निकलने दिया जाए। प्रधानमंत्री की यात्रा शांतिपूर्ण ढंग से निपट गई। जब प्रधानमंत्री का हेलीकॉप्टर वहाँ से चला गया तब मंत्रीजी ने गुस्से में मुझसे कहा, ''डीएम साहब, आपने समर्थकों के सामने मेरी बेइज्जती कर दी।'' मैंने उनको जवाब दिया, ''सर, आतंकी खतरों को देखते हुए, प्रधानमंत्री की सुरक्षा के बहुत सख्त निर्देश हैं। इन निर्देशों का पालन करना हमारा परम दायित्व है, पर दुर्भाग्य से आपने इन निर्देशों का उल्लंघन किया है। मैं इस मामले की सूचना मुख्यमंत्री सहित भारत सरकार और प्रधानमंत्री कार्यालय को दूँगा।'' तुरंत ही मंत्रीजी को अपनी गलती का एहसास हुआ और उन्होंने खेद जाहिर किया।

एक बार और जब प्रधानमंत्री खेरिया एयरपोर्ट आए तो तीन कैबिनेट मंत्रियों को गेट पर ही रोक लिया गया। गेट वीवीआईपी विमान के जमीन पर आने के 20 मिनट पहले ही बंद कर दिया जाता था। मंत्रियों ने गेटकीपर को गेट खोलने के लिए बाध्य किया होगा, जिसके बाद गेटकीपर ने एयर फोर्स के अधिकारियों से संपर्क किया। एयर कोमोडोर ने इसकी सूचना मुझे दी और मुझसे पूछा कि क्या उन लोगों को अंदर आने दिया जाए? मैंने उनसे पूछा कि नियम क्या है? उन्होंने जवाब दिया, ''निर्देश दिया गया है कि वीवीआईपी विमान के जमीन पर आने से 20 मिनट पहले गेट बंद कर देना है।'' मैंने कहा, ''तब फिर निर्देश का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए।'' परिणामतः मंत्री अंदर नहीं आ सके। वे नाराज हुए पर एक भी शब्द कह नहीं पाए क्योंकि हम सुरक्षा निर्देशों का हम ईमानदारी से पालन कर रहे थे।

अलग-अलग जिलों में डीएम के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान मैंने गौर किया है कि वीआईपी और वीवीआईपी लोगों के साथ आने वाले लोग और उनके समर्थक ही जिला प्रशासन के लिए ज्यादा समस्या खड़ी करते हैं। प्रधानमंत्री कई बार खेरिया एयरपोर्ट आए, खासकर चुनाव प्रचार के दौरान। सामान्य तौर पर ऐसा होता था कि वीवीआईपी का दल एक दिन पहले ही आ जाया करता था। चूंकि आगरा में कई अच्छे होटल थे, इस कारण जिला प्रशासन इन लोगों को पांचसितारा होटल में ठहराता था। जिला प्रशासन हमेशा ही

वीवीआईपी के जत्थे के लोगों को पूरे आराम के साथ रखने की पूरी कोशिश करता था। तथापि एक बार एडीएम (प्रोटोकॉल) ने वीवीआईपी जत्थे को सर्किट हाउस में ठहरा दिया। जत्थे के प्रमुख इस प्रबंध से खुश नहीं थे और जब एडीएम उन लोगों से सुविधाओं के बारे में पूछने सर्किट हाउस गए तो उन्होंने एडीएम के साथ कड़वी भाषा का इस्तेमाल किया। उन्होंने उन चीजों की लंबी चौड़ी सूची भी एडीएम को थमा दी जो उनको चाहिए थी, जैसे कई किलो काजू, कई क्रेट जूस आदि। खिन्न होकर एडीएम मेरे पास आए और मुझे पूरी घटना बताई। मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि उचित कार्रवाई की जाएगी। मैंने वीवीआईपी की सुरक्षा के निर्देशों की किताब का अध्ययन किया और पाया कि उसमें यह प्रावधान है कि अगर शहर में एयरबेस मौजूद है तो वीवीआईपी के जत्थे को वहीं ठहराना चाहिए। अगर एयरबेस का प्रभारी अधिकारी जत्थे के ठहरने का प्रबंध कर पाने में असमर्थ है तब वह डीएम से जरूरी प्रबंध करने का अनुरोध करेगा। लगभग एक सप्ताह के बाद यह वीवीआईपी फिर से खेरिया एयरपोर्ट पर आए। मैंने एयरपोर्ट के प्रभारी अधिकारी को एक पत्र लिखा जिसमें मैंने वीवीआईपी के जत्थे के एयरबेस में ठहरने का प्रबंध करने का अनुरोध किया और यह भी उल्लेख किया कि यदि ऐसा करने में वे असमर्थ हैं तब डीएम इसका प्रबंध करेंगे। वहाँ से तुरंत जवाब आया कि इंतजाम एयर फोर्स के द्वारा किया जाएगा। मैंने एडीएम (प्रोटोकॉल) को किसी पाँचसितारा होटल में कोई व्यवस्था नहीं करने को कहा। वह घबराए हुए थे, पर मैंने उन्हें भरोसा दिलाया कि कुछ भी नहीं होगा। शाम में, मुझे वीवीआईपी जत्थे के प्रमुख का फोन आया कि जिला प्रशासन ने उनके लिए होटल में ठहरने का प्रबंध नहीं किया है। मैंने उनको कहा, ''हम वीवीआईपी दौरों के दौरान प्रबंध के नियमों और दिशानिर्देशों का पालन कर रहे हैं। कृपया आप पहले नियमावली देख लें फिर मुझे कहें।'' उन्होंने जवाब दिया ''मिश्राजी, जब भी हम आते थे, हमारे ठहरने का प्रबंध पाँचसितारा होटल में किया जाता था पर इस बार ऐसा नहीं किया गया है।'' मैंने विनम्रता से कहा, ''सर, यह जिला प्रशासन की भद्रता थी।'' अपने एडीएम के साथ हुई प्रताड़ना की सूचना देते हुए मैंने रक्षा मंत्रालय और उत्तर प्रदेश सरकार को एक विस्तृत पत्र भी लिखा।

चाणक्य अपने एक श्लोक में कहते हैं कि जब पेड़ फलों से लदा होता है तब वह झुक जाता है, ठीक वैसे ही ज्ञानी पुरुष भी विनम्र होते हैं और किसी प्रकार का दंभ नहीं दिखलाते। जब मैंने एक स्कूली छात्र के रूप में यह पढ़ा था, तब इसके महत्त्व को पूरी तरह नहीं समझ पाया था, पर जब मैं डॉ. हरगोबिंद

खुराना, नोबल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक से उनकी ताज यात्रा के दौरान मिला तब मुझे इस बात का पूरा महत्त्व समझ आया। वह विनम्रता से इतने भरे हुए थे कि अपूर्णताओं से भरे इस संसार में उनके जैसे व्यक्ति का मिलना बहुत मुश्किल है। मैं उनकी यात्रा के दौरान उनके साथ था और लंच के समय उन्होंने कहा, ''मिश्रा जी, मुझ पर अपना समय बर्बाद करने की बजाए आप अपने दूसरे जरूरी दायित्व पूरे कर सकते हैं।'' जब मैंने यह जवाब दिया कि ''सर, आपकी सुविधा और सुरक्षा की देखरेख करना मेरे लिए उतना ही जरूरी दायित्व है'', तब वे मुस्कुराए। एक प्रशासक के रूप में मैंने यह गौर किया है कि थोड़ा प्राधिकार और शक्ति मिल जाने पर इंसान का दिमाग घमंड से भर जाता है और फिर वह दंभपूर्ण रवैये के साथ व्यवहार करने लगता है। योग वसिष्ठ के अनुसार, अहंकार स्वयं में मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है और यही समस्त दुर्गतियों का कारण भी है। जब तक मनुष्य में अहंकार है, तब तक दुख और संकट समाप्त नहीं हो सकते।

मुझे संयुक्त राज्य अमेरिका के तत्कालीन उप-राष्ट्रपति जॉर्ज बुश सीनियर से भी उनकी ताजमहल यात्रा के दौरान मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं फॉर्मल ड्रेस में था। जब उप-राष्ट्रपति ताजमहल आए तो फोटो सत्र हुआ। हर अधिकारी

जॉर्जबुश (सीनियर) तत्कालीन उप राष्ट्रपति, अमेरिका के साथ

सामूहिक फोटो का हिस्सा बनना चाहता था, पर मैं उचित दूरी बनाकर दृश्य पर नजर बनाए हुए था। जब फोटो सत्र समाप्त हो गया, श्री बुश ने मुझे बुलाया और कहा, ''जेंटलमैन, क्या आप मेरे साथ एक फोटो लेना पसंद करेंगे?'' मैंने कहा, ''सर, यह मेरा सौभाग्य होगा।'' अमेरिकी उप-राष्ट्रपति की यात्रा बिना किसी अड़चन के समाप्त हो गई। कुछ दिनों बाद, मुझे श्री बुश का एक पत्र हासिल कर सुखद आश्चर्य हुआ। इस पत्र में वह फोटो संलग्न था, जो आज भी मैंने स्मृतिस्वरूप रखा हुआ है।

एक सिविल सेवक को अपने दायित्व के निर्वहन में कई अग्निपरीक्षाओं और दबावों से गुजरना पड़ता है। इन सब के बावजूद उसे आचारशास्त्र, नियमों और विनियमों का पालन करना चाहिए, अगर वह ऐसा नहीं कर पाता तो वह संकट में पड़ सकता है। एक प्रसिद्ध होटल समूह एक पाँचसितारा होटल बनाने के लिए जमीन की खरीद में दिलचस्पी ले रहा था। जमीन की कीमत लगाने का काम राजस्व प्रशासन द्वारा किया जाना था, तब मैं छुट्टी पर था। जब मैं छुट्टी से लौटा तो होटल के प्रतिनिधि मुझसे मेरे ऑफिस में मिले और मुझे सूचना दी कि हालांकि कीमत लगाए जाने का काम हो चुका है, पर आगे कोई प्रगति नहीं हुई है। मैंने फाइल मँगवायी और यह देख कर बहुत आश्चर्यचकित हुआ कि एडीएम ने मूल्य निर्धारण की रिपोर्ट पहले ही भेज दी है और जमीन की कीमत प्रचलित बाजार मूल्य से काफी कम लगाई है। मैंने फाइल का परीक्षण किया और उसके बाद उस इलाके के कई बिक्री पत्रों की जाँच करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि जितना मूल्य निर्धारित किया गया है, उससे कई गुना ज्यादा किया जाना चाहिए था। इसी अनुरूप मैंने अपना आदेश पारित कर दिया। शाम को डिविजनल कमिश्नर ने मुझे अपने आवास पर बुलाया और पूछा, ''मिश्रा, तुम होटल के अधिकारियों को क्यों प्रताड़ित कर रहे हो? तुम जिलाधिकारी होने की ताकत दिखा चुके हो, अब जल्दी से मामले को सुलझाओ।'' मैंने जवाब दिया, ''सर, क्या आप ऐसा सोच रहे कि मैं पैसे के लिए उन लोगों को प्रताड़ित कर रहा हूँ? क्या आप को लगता है कि मैं भ्रष्ट हूँ?'' कमिश्नर इस जवाब से हतप्रभ रह गए और कहा, ''मिश्रा, अगर भगवान भी तुम्हारी ईमानदारी के खिलाफ शिकायत करेंगे तो मैं विश्वास नहीं करूँगा।'' मैं अपने आवास पर चला आया और अगले दिन नगर विकास सचिव से बात की और उन्हें कम मूल्य निर्धारण की इस पूरी घटना के बारे में बताया। मैंने अपनी रिपोर्ट भी भेजी। मुझे नहीं पता कि बाद में क्या हुआ, पर मुझे इस बात का संतोष था कि मैंने दबाव में आकर गलत काम नहीं किया।

जाड़े के मौसम में भरतपुर पक्षी उद्यान की यात्रा से जुड़ा एक मजेदार प्रसंग मुझे याद है। बहुत कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी और मेरा जमादार शैतान सिंह अपनी साफ और रंगीन वर्दी पहन कर मेरे बगल में खड़ा था। हम बोट में चढ़ने की अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे तभी एक विदेशी सैलानी आया और जमादार से हाथ मिलाकर गर्मजोशी से उसका अभिनंदन किया। शायद वह जमादार को कोई राजपरिवार का आदमी समझ रहा था। मैंने भी उसे उसके व्यक्तित्व और बड़ी मूछों के लिए शाबाशी दी। संभवतः उसकी मूछों ने ही सैलानी को आकर्षित किया होगा।

एक बार मुझे प्रधानमंत्री कार्यालय से फोन आया कि ताजमहल की परिधि में कोई अतिक्रमण हो रहा है। प्रधानमंत्री कार्यालय ने 48 घंटों के अंदर जिला प्रशासन से रिपोर्ट मांगी थी। मैं तुरंत ही एसएसपी, एडीएम (सिटी), एडीएम (ई), पीडबल्यूडी के वरिष्ठ अधिकारी और एएसआई के प्रतिनिधियों के साथ ताजमहल परिसर की जाँच करने गया। एएसआई के अधिकारी ने दो आदेश दिखाए जो ब्रिटिश राज के दौरान 20वीं सदी के पूर्वार्ध में जारी किए गए थे और इनमें ताज के क्षेत्र को प्रदर्शित किया गया था। दूसरे आदेश में पहले आदेश में सुधार किया गया था। इस सूचना के आधार पर टीम ने ताजमहल के इलाके की जाँच की और पाया कि परिसर के अंदर कहीं कोई अतिक्रमण नहीं है। पर जब हमने बाहर के क्षेत्र की जाँच की तो पाया कि ताज गंज की पूरी बस्ती और बाजार ताजमहल की परिधि के भीतर मौजूद है। ऐसा कैसे हो सकता था कि एक पूरी बस्ती और बाजार ताज की परिधि के भीतर बस जाए। ऐसी बसावट के आने में कम से कम आधी सदी का समय जरूर लगा होगा। एएसआई के अधिकारी ने बताया, ''सर, जो एएसआई का पुराना अधिकारी ताजमहल की देखरेख करता था, अब 80 साल का हो चुका है, शायद वह मामले पर कुछ प्रकाश डाल पाए।'' मैं उनके आवास पर गया और इस मामले पर उनके साथ चर्चा की। हमारी बात सुनने के बाद उन्होंने मुस्कुराते हुए एक पुरानी किताब निकाली और उसके कुछ हिस्से हमें दिखाए जिसमें यह साफ तौर पर उल्लेख था कि अंग्रेजों के दौर में, तत्कालीन जिलाधिकारी ने एक बहुत ही नगण्य राशि के बदले इस क्षेत्र में लोगों को बसाया था। मैंने राहत की सांस ली और प्रधानमंत्री कार्यालय तथा राज्य सरकार को इस किताब के हिस्से संलग्न करते हुए रिपोर्ट बना कर भेज दी। इस प्रकार यह प्रसंग समाप्त हुआ।

फतेहपुर सीकरी के मुगलई पराठों का जिक्र किए बिना आगरा के मेरे अनुभव पूरे नहीं होंगे। मैंने इनके बारे में सुना था पर कभी चखा नहीं था। जब

एक बार मैं किसी जाँच के सिलसिले में फतेहपुर सीकरी गया तब मैं एएसआई के गेस्ट हाउस में रुका और झटपट पराठे मँगाए। जब पराठे आए, मैं उनकी मोटाई और आकार देख कर आश्चर्य में पड़ गया। इसमें कई परतें थीं और यह घी में सेंके हुए थे। एक पराठे का एक चौथाई भी खा पाना मेरे लिए बहुत मुश्किल साबित हुआ। मुझे बताया गया कि पुराने जमाने में शहंशाह अकबर ऐसे कई पराठे खाया करता था और उनमें और भी परतें हुआ करती थीं।

आगरा में कामकाज बहुत हुआ करता था और मैं आधी रात तक काम किया करता था। मेरे बाल सफेद होने लगे और देर तक काम करने से मेरी सेहत पर बुरा असर पड़ा। सात सालों तक डीएम के रूप में काम करने के बाद मैंने सरकार से अनुरोध किया कि मेरा किसी दूसरे पद पर स्थानांतरण किया जाए। जो इतनी थकाऊ न हो। नियुक्ति सचिव ने डीएम आगरा के पद पर बने रहने के लिए मनाने का प्रयास किया पर मैंने हाथ जोड़ लिए और उनसे अनुरोध किया कि निजी और स्वास्थ्य कारणों से मेरा तबादला आगरा से कर दिया जाए। अंततः जुलाई 1985 में मेरा तबादला लखनऊ में निदेशक व विशेष सचिव, सूचना के पद पर हुआ।

अध्याय-१६

निदेशक एवं विशेष सचिव (सूचना)

(जुलाई 1985-मई 1986)

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने अपनी अभूतपूर्व पहुँच के साथ लोकतंत्र की परम्पराओं को पुन:परिभाषित कर दिया है।

सूचना निदेशक का पद एक महत्त्वपूर्ण पद माना जाता है क्योंकि यह लोकतंत्र के एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ, यानि मीडिया से संबन्धित है। इसका उद्देश्य होता है जनता को सही सूचना और तथ्य प्रदान करना, समाचारों आदि पर नजर रखना, इनका विश्लेषण करना और पत्रकारों के प्रत्यायन तथा कल्याणकारी उपबंधों पर ध्यान देना। जो महत्त्वपूर्ण निर्णय सरकार द्वारा लिए जाते हैं तथा संवाददाता सम्मेलनों में घोषित किए जाते हैं उनको प्रेस को भी जारी किया जाता है। महत्त्वपूर्ण अवसरों पर प्रेस को विज्ञापन जारी किए जाते हैं पर ऐसे आदर्शों का हमेशा ही उचित भावना के साथ पालन नहीं होता है। इसमें कोई शक नहीं कि प्रेस और मीडिया ने न केवल आजादी के आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि आज भारत में भी कई घोटालों का पर्दाफाश करने और सरकारी नीतियों की कमियों और जनता के कष्टों को रेखांकित करने में भी इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। पर कई बार सत्य की तलाश करने की बजाए प्रेस पत्रकारिता की दुनिया और कॉरपोरेट दुनिया के बीच दलाली का काम करने लगती है और सरकार अपने फायदे के लिए इनका इस्तेमाल करती है। यह एक सुखद बात है कि इन हालिया वर्षों में मीडिया पूरी प्रखरता से स्वतंत्र हो गई है। यह अब जनता के आंदोलनों में सकारात्मक रूप से भाग भी लेने लग गई है जैसा कि जन लोकपाल के लिए अन्ना हजारे के आंदोलन में हुआ। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने अपनी अभूतपूर्व पहुँच के साथ लोकतंत्र की परम्पराओं को पुनर्परिभाषित कर दिया है।

मानवजाति के विकास के लिया स्वतन्त्रता और खास तौर पर अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता बेहद आवश्यक है। यह मानवजाति के लिए ऑक्सीजन की भाँति स्वाभाविक है। व्यक्ति के लिए स्वतन्त्रता एक आवश्यक शर्त है जिसके बिना वह

अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं दे सकता। यह व्यक्ति के भीतर मौजूद संभावाओं के विकास हेतु एक अनुकूल और आवश्यक माहौल बनाने के लिए कुछ अधिकारों और दायित्वों के समूह को स्थापित करता है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कहा है, ''स्वतंत्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है।'' स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान सुभाष चन्द्र बोस ने उद्घोष किया, ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।'' बिस्मार्क ने जर्मनी के एकीकरण के लिए लौह और रक्त की नीति का पालन किया। जॉन स्टुआर्ट मिल दिलचस्प तरीके से स्वतंत्रता पर अपने विचार व्यक्त करते हैं। उनके अनुसार, केवल रोक लगाने के उद्देश्य से रोक लगाना एक बुराई है, क्योंकि यह समाज और व्यक्ति के बीच ऊर्जा के स्वतंत्र प्रवाह को बाधित करता है। परंतु अराजकता स्वतंत्रता नहीं है। वह व्यक्ति के 'स्व-विषयक' और 'पर-विषयक' कार्यों के बारे में बात करते हैं। राज्य व्यक्ति के 'पर-विषयक' कार्यों पर तर्कसंगत रोक लगा सकता है, यदि ऐसे कार्य समाज और राज्य के हितों के विरुद्ध हों। एक व्यक्ति जो अपनी वास्तविकता और अपने वास्तविक हितों से परिचित नहीं हो, उसके ऊपर तर्कसंगत प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं।

हमारे संविधान में भी स्वतंत्रता की अवधारणा को समग्रता से शामिल किया गया है, जिसमें नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों दोनों पर बल दिया गया है। संविधान की प्रस्तावना में विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात की गई है पर इसके साथ-साथ इसमें न्याय, समानता, भाईचारे, राष्ट्र की अखंडता और व्यक्ति की गरिमा की बात भी की गई है। जब इन गुणात्मक तत्वों को उनकी सम्पूर्ण भावना के साथ पूरा किया जाएगा तब ही नागरिक स्वतंत्रता का सही आनंद ले सकते है। अधिकार और दायित्व एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और ये दोनों ही स्वतंत्रता के सार्थक होने के लिए बेहद जरूरी हैं। इस कारण संविधान मौलिक अधिकार के साथ-साथ मौलिक कर्तव्य दोनों ही प्रदान करता है। जो नागरिक केवल अपने अधिकारों के लिए सचेत रहते हैं, अपने कर्तव्यों के लिए नहीं, वे राष्ट्र को असफल बनाते हैं।

स्वतंत्रता किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए जीवनदायी रक्त की तरह है जिसके बिना कोई भी राष्ट्र दुर्बल होकर समाप्त हो जाएगा। विरोध का अधिकार भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। हर व्यक्ति को विरोध का अधिकार है। जेएस मिल के अनुसार, अगर समाज में केवल एक ही व्यक्ति विरोध कर रहा है तो भी पूरे समाज को उसके विरोध को समाप्त करने का अधिकार नहीं है। ऐसा इसलिए कि यदि विरोध करने वाला सही होगा, तो उसे शांत कराकर पूरा समाज सच से

महरूम रह जाएगा। यदि विरोध करने वाला व्यक्ति गलत भी है, तब भी उसे शांत कराकर समाज को नुकसान ही होगा क्योंकि तब भी समाज सत्य और असत्य के बीच निरंतर संवाद और संघर्ष के माध्यम से उभरने वाले सत्य के सघन रूप के अनुभव को हासिल करने से वंचित रह जाएगा।

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में नवीन विकास के कारण स्वतंत्रता के लिए नई संभावनाओं के द्वार भी खुले हैं और नई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। इंटरनेट, ब्लॉग, व्हाट्सएप्प और ढेरों सोशल साइट्स ने स्वतंत्रता के क्षितिज को और भी बड़ा कर दिया है। पर इसके साथ साथ, यह असामाजिक तत्वों और राष्ट्रविरोधी तत्वों के लिए समाज में अव्यवस्था, अस्थिरता और नफरत फैलाने के लिए एक बहुत ही समर्थ हथियार भी है। ऐसे कई उदाहरण सामने आए हैं जब जघन्य कार्यों के लिए इन साइट्स का इस्तेमाल किया गया। अधिकारियों द्वारा भी इनका दुरुपयोग नागरिकों के अधिकारों पर पाबंदी लगाने के लिए किया गया। इस संबंध में क्या किया जाना चाहिए? विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा हर हाल में की जानी चाहिए और इन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए पर साथ ही साथ, हम इस स्वतंत्रता का उपयोग समाज में अशांति फैलाने के लिए नहीं होने दे सकते। इस कारण, समय की मांग है कि इन दोनों के बीच संतुलन कायम किया जाए। नागरिकों को इस बात के लिए शिक्षित और जागरूक किया जाना चाहिए कि वे सोशल साइट्स से सूचनाओं का प्रसार करते हुए आत्म-नियंत्रण रख सकें। सरकार को भी इस मामले में स्पष्ट रूप से यह व्याख्या करना चाहिए कि किन परिस्थितियों में 'तर्कसंगत प्रतिबंध' लगाए जा सकते हैं। 'तर्कसंगत प्रतिबंध' शब्द को परिभाषित किया जा सकता है ताकि इसकी गलत व्याख्या और किसी अधिकारी द्वारा इसके संभावित इस्तेमाल से बचा जा सके। मैं आश्वस्त हूँ कि समय के साथ और भारतीय नागरिकों के परिपक्व होने के साथ यह कोई बड़ी मुसीबत नहीं रह जाएगी।

स्वतंत्रता की अवधारणा केवल कुछ अधिकारों का इस्तेमाल और कुछ दायित्वों के निर्वहन से कहीं अधिक है। आदर्शवादी दार्शनिक टीएच ग्रीन के शब्दों में, ''स्वतंत्रता सामाजिक कार्यों में भागीदारी लेने और समाज कल्याण में योगदान देने में निहित है।'' दूसरे शब्दों में, नागरिकों को इस स्तर तक सशक्त करना चाहिए कि वे सामाजिक कार्यों में न केवल अपनी भागीदारी कर सकें बल्कि इसके साथ ही साथ वे सामाजिक कल्याण में योगदान लेने लायक भी हो सकें।

वैदिक दर्शन आध्यात्मिक नजरिए से स्वतंत्रता के दर्शन को प्रतिपादित करता है। प्रेम, परम तत्व का ज्ञान और सत्य की वास्तविक चेतना स्वतंत्रता का आधार निर्मित करती है। प्रेम वास्तविक मुक्ति प्रदान करता है और स्वतंत्रता प्रेम से ही उत्पन्न होती है। परम तत्व के ज्ञान और सत्य की वास्तविक चेतना से ही स्वतंत्रता मिलती है। अपने अंदर के ईश्वरत्व को पहचानिए, अंतरतम में शांति अवश्य मिलेगी। दूसरों के लिए करुणा रखिए। वैदिक दर्शन स्वर्णिम माध्य का दर्शन, यानि स्वतंत्रता का आनंद लेने के लिए मध्य मार्ग के अनुसरण का दर्शन भी प्रतिपादित करता है। स्वतंत्रता का सच्चा और यथार्थ आनंद लेने के लिए आध्यात्मिक जीवन अत्यन्त आवश्यक है।

सूचना निदेशक के रूप में पत्रकार समुदाय के साथ मेरे बहुत मधुर संबंध रहे। मैं हमेशा ही उनकी समस्याओं के समाधान के लिए तैयार रहता था पर कभी भी किसी दबाव के आगे झुकता नहीं था। मैंने यह गौर किया कि पत्रकार, खासकर छोटे और मँझोले अखबारों के पत्रकार, विज्ञापनों के लिए मेरे ऑफिस में बार बार आया करते थे। यह उनके और मेरे दोनों के दृष्टिकोण से केवल समय की बरबादी थी। आपसी परिचर्चा के बाद एक विज्ञापन नीति बनाई गई जिसमें यह इंगित किया गया कि कब और किस अवसर पर विभिन्न अखबारों के लिए विज्ञापन जारी किए जाएँगे। विभिन्न अभियानों और अवसरों की गतिविधियों के कैलेंडर भी जारी किए गए और यह भी उल्लेख किया गया कि किस किस अखबार को विज्ञापन मिलेगा। यह एक खुला दस्तावेज था और अब पत्रकार विज्ञापन के बारे में सूचना मांगने के लिए मेरे कार्यालय आने की बजाए पहले ही विज्ञापन के समय और उसके आकार के बारे में जानकारी हासिल कर सकते थे।

राज्य आश्वासन समिति की बैठक बहुत दिनों से नहीं हुई थी। पत्रकारों के संगठन के अनुरोध पर मैंने झाँसी में एक बैठक बुलाई। पत्रकार संगठन का कोई पदाधिकारी (संभवतः अध्यक्ष या सचिव) मेरे पास आया और कहा, ''सर, हम जानते हैं कि आप शराब नहीं पीते, पर चूंकि बैठक बहुत दिनों बाद आयोजित हो रही है, हम चाहते हैं कि हम ड्रिंक्स और डिनर के साथ जश्न मनाएँ।'' मैंने केवल डिनर के लिए हाँ कही और ड्रिंक्स के लिए ना कह दिया। मैंने उन्हें विनम्रता से समझाया कि सूचना निदेशक द्वारा दी जा रही दावत में शराब नहीं परोसी जा सकती। फिर उन्होंने एक समाधान पेश करते हुए कहा, ''सर, हम जानते थे कि आप प्रस्ताव का यह हिस्सा स्वीकार नहीं करेंगे, पर यदि हम कहीं

और अपने खर्चे से ड्रिंक्स के बाद आधिकारिक डिनर में आएँ तो आशा है कि आप इस पर आपत्ति नहीं करेंगे।'' मैंने कहा कि मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं है। इस प्रकार, टकराव की स्थिति नहीं आयी। सूचना निदेशक के रूप में मैंने पत्रकारों के शराब के बिल को पास करने से इंकार कर दिया क्योंकि यह राज्य की नीति के विरुद्ध थी।

पत्रकारों और विज्ञापन के लिए फंड निर्धारित किए गए थे। विभाग की रणनीति यह थी कि मेरी स्वीकृति के लिए इस प्रस्ताव को आखिरी समय में लाया जाए और यह ध्यान में रखते हुए कि समय बहुत कम है, मैं शायद प्रस्ताव को अनुमति दे दूँ, जो उस एजेंसी के पक्ष में था जो पहले से इसका प्रबंधन करती थी। एक खास संस्था को अनुचित लाभ पहुँचाने के इस खेल को मैंने समझ लिया। मैं हमेशा ही सरकार के निर्देशों के अनुसार निविदा प्रक्रिया पर बल दिया करता था। हरिद्वार में कुंभ मेले के दौरान प्रदर्शन और प्रचार-प्रसार के लिए लाखों पोस्टर छापे जाने थे। आखिरी समय में स्वीकृति के लिए प्रस्ताव दिया गया। इसमें केवल एक ही नाम था जिसकी दर 3 रूपए प्रति पोस्टर के हिसाब से थी। मैंने तुरंत ही महसूस कर लिया कि कुछ न कुछ गड़बड़ है और तुरंत ही विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त अन्य संस्थानों से प्रस्ताव मांगे। आश्चर्यजनक रूप से पोस्टर की दर 3 रुपए से 1 रुपए प्रति पोस्टर पर चली आई। इस प्रकार हमने केवल इसी मद में लाखों रुपए बचा लिए।

प्रेस द्वारा निभाई गई महत्त्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए एक बार मैंने मुख्यमंत्री को यह सुझाव दिया कि देश और राज्य के हिन्दी और अँग्रेजी के एक महत्त्वपूर्ण अखबार को सरकार की महत्त्वपूर्ण योजनाओं के क्रियान्वयन के बारे में जमीनी समीक्षा और प्रतिक्रिया छापने का काम सौंपा जा सकता है। मुख्यमंत्री मेरी योजना से सहमत नहीं हुए और कहा, ''ऐसा बखेड़ा मत खड़ा करो।'' सूचना निदेशालय में व्याप्त भ्रष्टाचार की एक शिकायत पर मैंने इसकी जाँच के लिए एक जाँच समिति का गठन किया। जब यह समिति अपनी जाँच कर रही थी, मुझे मुख्यमंत्री द्वारा बुलाया गया और यह सवाल किया गया कि जब सरकार की तरफ से कोई आदेश नहीं था तब फिर जाँच समिति क्यों बनायी गई? मैंने यह जवाब दिया कि ''हालांकि सरकार की तरफ से कोई आदेश नहीं आया, पर विभाग के प्रमुख होने के नाते मुझे अपने विभाग पर लगे भ्रष्टाचार के आरोप की जाँच कराने का पूरा अधिकार है।'' मुख्यमंत्री ने कहा, ''जल्दी जाँच पूरी करो और यह सुनिश्चित करो कि किसी को भी अकारण परेशान नहीं किया जाए।'' मैंने उनको भरोसा

दिलाया कि मैं न्याय सुनिश्चित करूँगा। जाँच पूरी हुई और इसमें विभाग में चल रहे भ्रष्टाचार के बारे में चौंकाने वाले खुलासे हुए, खास तौर पर प्रकाशन शाखा में। प्रकाशित सामग्री कई जिलों में भेजी ही नहीं गई पर रेकॉर्ड में यह दर्शाया गया था कि कई ट्रकों में पुस्तिकाएँ भेजी गईं। पुस्तिकाओं के प्रकाशन में भी बहुत चालाकी बरती गई थी और जितने पृष्ठ अनुमोदित हुए उनसे कम प्रकाशित किए गए। कई मामलों में टेंडर की प्रक्रिया का पालन नहीं किया गया। राजकोष को एक करोड़ रुपए का अनुमानित नुकसान हुआ। मैंने उस शाखा के अधिकारियों को निलंबित करके उन पर विजिलेंस जाँच की सिफारिश की। प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।

एक बार मुख्यमंत्री के तत्कालीन सचिव ने मुझे एक संदेश भेजा कि मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार एक खास सूचना अधिकारी को तत्काल बर्खास्त करना है। मैंने सचिव महोदय को यह जवाब दिया कि बिना कारण जाने हुए उस अधिकारी को बर्खास्त करना संभव नहीं है। जाँच करने के बाद पता चला कि इस सूचना अधिकारी को एक राजनीतिक पार्टी द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में सरकारी सामाग्री बँटवाने का निर्देश दिया गया था। एक सिविल सेवक होने के नाते उसने सरकारी सामग्री को राजनीतिक कार्यक्रम में बाँटने से इंकार कर दिया था। चूंकि मुख्यमंत्री की तरफ से उस अधिकारी को निलंबित करने का कोई लिखित आदेश नहीं था और मुझे भी ऐसा करने का कोई कारण नहीं लगा, तो मैंने कोई कदम नहीं उठाया। ऐसे ही एक मौके पर अपनी पार्टी के किसी व्यक्ति की शिकायत पर मुख्यमंत्री ने रात में मुझे अपने आवास पर बुलाया और मुझे किसी खास व्यक्ति को एक ठेका देने का मौखिक निर्देश दिया। मैंने जवाब दिया ''चूंकि वह आदमी एल-1 नहीं है, इस कारण उसे कांट्रैक्ट देना संभव नहीं है। अगर फिर भी उसे कांट्रैक्ट दिया जाएगा तो लेखा परीक्षण में आपत्ति होगी और बहुत आलोचना होगी।'' मुख्यमंत्री को सद्‌बुद्धि आई और उन्होंने इस पर बल नहीं दिया।

एक दिन सूचना सचिव, जो मुख्यमंत्री के सचिव भी थे, ने मुझे फोन पर निर्देश दिया कि मैं पत्रकारों के मनोरंजन के फंड से 15000 भेज दूँ। इस मौखिक निर्देश का पालन करते हुए मैंने अनुमति पत्र बना दिया और साथ में विशेष प्रावधान भी जोड़ दिए कि इस फंड का उसी उद्देश्य के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है जिसकी अनुमति है और सभी जरूरी बिल और वाउचर अनुमोदन के लिए निदेशालय भेजें। इस अनुमति पत्र को देख कर सचिव बहुत

खीज गए और फोन पर अपनी नाराजगी जाहिर की एवं अनुमति पत्र वापस कर दिए। मैं यह नहीं समझ पाया कि सचिव महोदय पहले फंड मांग रहे थे और बाद में क्यों इससे इंकार कर दिया। ऐसा प्रतीत हुआ कि सचिव महोदय मुझसे प्रसन्न नहीं थे और मेरे पर कतरना चाह रहे थे। एक दिन अचानक मुझे सचिव महोदय से एक आदेश मिला जिसके अनुसार मुझसे विशेष सचिव के सारे अधिकार वापस ले लिए गए थे। इस आदेश को हासिल करने के बाद मैं बहुत नाराज भी था और दुखी भी। मैंने मुख्य सचिव को एक विरोध पत्र लिखा जिसमें मैंने अपने द्वारा किए गए कामों और ली गई पहलकदमियों का विवरण दिया। चूंकि मुझे इस पद पर नियुक्ति सचिव द्वारा नियुक्त किया गया था, न कि सूचना सचिव के द्वारा, इस कारण मैंने एक कानूनी सवाल भी उठा दिया कि किस प्रकार सूचना सचिव अपने कार्यकारी आदेश से सरकार के गजट नोटिफिकेशन को खारिज कर सकता है। मैंने मुख्य सचिव को सूचना निदेशालय में व्याप्त भ्रष्टाचार की भी जानकारी दी और और उन्हें लिखा कि अच्छे काम के लिए शाबाशी देने की बजाए मेरी पीठ पर छुरा भौंका गया। मुख्य सचिव ने मुझे अपने कमरे में बुलाया जहाँ मैंने उनको अपने विभाग में चल रहे घटनाक्रम की जानकारी दी। अगले दिन आश्चर्यजनक रूप से मेरी शक्तियाँ पुन: बहाल कर दी गईं।

इस घटनाक्रम के लगभग एक महीने बाद मुझे एक आदेश मिला जिसमें मुझे गृह विभाग में विशेष सचिव बनाया गया था। मैंने तुरंत ही अपना पदभार सौंप दिया। तब प्रेस को इस बारे में सूचना मिली, वे मुख्यमंत्री कार्यालय में गए और इस बात की जानकारी मांगी कि किस कारण से एक साल से भी कम समय में मेरा तबादला किया गया। मुख्यमंत्री पत्रकारों की इस प्रतिक्रिया से आश्चर्यचकित हुए और सचिव को मेरा तबादला रद्द करने का आदेश दिया। सचिव महोदय ने मुझे बुलाया और पदभार त्यागने से मना किया। उस समय तक मैं पहले ही पदभार त्याग चुका था। एक गतिरोध पैदा हो गया और सचिव महोदय ने मुझे दोबारा बुलाया और सूचना विभाग में ही पद ग्रहण करने के लिए मनाने लगे क्योंकि मुख्यमंत्री के लिए असहज स्थिति आ गई थी। तब सचिव महोदय की अनुमति से तबादला रद्द हो गया तब मैं पुन: सूचना विभाग में लौट गया। मैंने लगभग एक महीने तक काम किया उसके बाद फिर से मेरा तबादला विशेष सचिव, ग्रामीण विकास के रूप में हो गया।

अध्याय-१७

विशेष सचिव (ग्रामीण विकास)

(जून 1986-अक्टूबर 1986)

अगर मैं अपनी माँ को विभिन्न पवित्र धामों पर नहीं ले जाता, तो मैं अपने आपको कभी माफ नहीं कर पाता। यदि मैं उनकी आखिरी इच्छाओं को पूरा करने में असमर्थ रहता, तो यह बात जीवन भर मुझे कचोटती रहती।

ग्रामीण विकास विभाग ने उस समय ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए आईआरडीपी, एनआरईपी, ट्राइसेम, ग्रामीण सड़क, लघु सिंचाई, ग्रामीण आवास आदि जैसी महत्त्वपूर्ण योजनाओं की शुरुआत की थी। कुशाग्र, बुद्धिमान और ईमानदार अधिकारी श्री एससी त्रिपाठी ग्रामीण विकास सचिव थे। उनके मार्गदर्शन में मैंने विशेष सचिव ग्रामीण विकास के रूप में अपने संक्षिप्त कार्यकाल का पूरा आनंद लिया। मैंने अपने काम को गंभीरता से लिया और समीक्षा बैठकें और स्पॉट निरीक्षण को संचालित किया। काफी हद तक मैं स्वंय ही फाइलों को निपटा लेता था। कुछ समय बाद सचिव ने हल्के-फुल्के अंदाज में व्यंग करते हुए कहा, ''मिश्रा जी, मेरे पास बहुत कम फाइलें रह गई हैं। कृपा करके सचिव के पास कुछ और फाइलें भेजा करें''। उत्तर में मैंने कहा कि ''महोदय, मेरा मानना है कि सचिव में विशेष सचिव भी शामिल हैं। इसलिए मैं आपको फाइलों के भारी बोझ से परेशान करना पसंद नहीं करता, ताकि आप रचनात्मक सोच, नीतिगत मामलों, निगरानी और गुणवत्ता के नियंत्रण पर ध्यान केंद्रित कर सकें। लेकिन अगर आप चाहें तो मैं लगभग सभी फाइलें आपको ही भेज दिया करूँगा।''

मेरी ईमानदारी और सख्त रुख के कारण मुख्यमंत्री के साथ मेरे मतभेद होने लगे थे। इसलिए मुख्य सचिव ने मुझसे परामर्श करने के बाद भारत सरकार में पोस्टिंग के लिए मेरे नाम की सिफारिश की। उन्होंने मुझे सलाह दी कि भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर जाने का यह उचित समय है ताकि निदेशक के रूप में दो या तीन वर्षों तक काम करने के बाद मैं वहाँ संयुक्त सचिव बन सकूँ। यह मुझे राजनेताओं के साथ अनावश्यक टकराव से बचा सकता है। मैं उनके सुझाव पर बिना हिचकिचाए राजी हो गया और अक्टूबर, 1986 में भारत सरकार

द्वारा निदेशक (युवा) के रूप में मेरी पोस्टिंग का आदेश जारी कर दिया गया। कृषि उत्पादन आयुक्त श्री एसएन आचार्य मुझे कार्य मुक्त करने (रिलीव) को तैयार नहीं थे। मैंने मुख्य सचिव से बात की जिन्होंने मुझे इस पद के लिए राजी किया। यह विभाग नवीन था जहाँ विकास कार्य के अवसरों में कमी नहीं थी।

लखनऊ में रहने के दौरान मेरी माँ ने यूपी के कुछ पवित्र स्थलों के दर्शन की इच्छा जाहिर की। मैंने ठान लिया कि उनकी इन इच्छाओं को पूरा करूँगा इसलिए मथुरा, वृंदावन, अयोध्या, इलाहाबाद, विंध्याचल, बनारस और हरिद्वार-ऋषिकेश जैसे विभिन्न पावन स्थानों पर उन्हें ले गया। इन जगहों से लौटने के बाद उनके चेहरे पर प्रसन्नता साफ झलक रही थी। मुझे उनकी देखभाल करने का सुअवसर मिला था। लखनऊ से रवाना होने के एक साल बाद ही उनकी मृत्यु हो गई और शायद यही उनकी अंतिम इच्छा थी। मैं कृतार्थ था क्योंकि मुझे अपनी माँ को विभिन्न तीर्थ स्थानों पर ले जाने का सुअवसर मिला। यदि मैं उनकी आखिरी इच्छाओं को पूरा करने में असमर्थ रहता, तो यह बात जीवन भर मुझे कचोटती रहती।

माँ एव गणेश शंकर त्रिपाठी के साथ सुबह-ए-बनारस का आनन्द लेते हुए

अध्याय-१८

निदेशक (युवा), भारत सरकार और महानिदेशक, नेहरू युवा केंद्र संगठन

(अक्टूबर 1986-मई 1991)

जो आधुनिक विज्ञान न दे सका, वह ईश्वर के प्रति आस्था ने मुझे दिलवा दिया। आस्था, विशुद्ध आस्था ही हमें कभी-कभी अचंभित कर देती है।

भारत सरकार में निदेशक (युवा) के रूप में मेरा कार्यकाल एक उल्लेखनीय समय था, जो मुझे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र से परिचित करवाने में मददगार साबित हुआ। मुझे भारत सरकार के अधीन कार्य करने का अनुभव था जिसने मुझे नीति और समस्याओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय नजरिए से देखने में सक्षम बनाया। यह युवाओं के अंतरराष्ट्रीय वर्ष के दौरान मानव संसाधन विकास के तहत बनाया गया एक नया विभाग था और यह मेरा सौभाग्य था कि न केवल इसे विकसित करने में साथ ही इसकी योजना और गतिविधियों की तैयारी में मुझे दुनिया के विभिन्न हिस्सों की यात्रा करने का मौका मिला। जिस दिन मैं युवा कार्यक्रम और खेल विभाग में शामिल हुआ, उस दिन मैं सचिव श्री गोपालस्वामी से मिलने गया। एक कड़ी मेहनत करने वाले और स्पष्ट और सहज दृष्टिकोण वाले अधिकारी श्री गोपालस्वामी ने मेरा स्वागत किया और कहा, ''मिश्रा जी, आपके मुख्य सचिव कल्याणकृष्णन ने मुझे आपके बारे में हर बात की जानकारी दी है, मैं आपके साहस और संघर्षशील गुणों की सराहना करता हूँ और आशा करता हूँ कि आप इसे जीवन-पर्यंत बनाए रखेंगे।'' पहले दिन से ही मैंने उनके साथ सकारात्मक संबंध बना लिया।

शुरुआत में मैं नई दिल्ली में यूपी भवन में ठहरा था। एक रविवार को जब मैं यूपी भवन के लाउंज में आराम कर रहा था तब एक व्यक्ति ने मुझसे निजी तौर पर बात करना चाहा। हम दोनों एक कोने में गए और उसने कहा, ''सर, मुझे माफ कर दीजिए।'' मैं हैरत में पड़ गया और पूछा, ''मुझे नहीं पता कि मुझे आपको किस बात के लिए माफ करना है।'' तब उसने बताया कि जब मैं मिर्जापुर में था

तब मैंने उनके समर्थकों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की और उनकी एक नहीं सुनी थी। इसलिए उसने मुख्यमंत्री से शिकायत की और माँ गंगा की कसम खाते हुए कहा था कि मैं शराबी और भ्रष्ट व्यक्ति हूँ। उसने आगे कहा, ''आपके खिलाफ इस झूठे आरोप के बाद मेरे ऊपर एक के बाद एक संकट आने शुरू हुए और मेरे परिवार एवं व्यावसायिक गतिविधियों पर भी इसका असर पड़ा। मेरी आय में गिरावट आ गई और मैं गोली से घायल भी हो गया।'' उसने आगे कहा, ''मैंने अपनी बदकिस्मती पर विचार किया और इस नतीजे पर पहुँचा कि एक धर्मपरायण व्यक्ति के खिलाफ झूठा आरोप ही मेरे दुर्भाग्य का कारण बना। वह यहाँ मुझसे अपने माफी के लिए अनुरोध करने आये थे ताकि उनके मन को शांति मिले।'' मैं मुस्कुराया और मैंने कहा, ''मुझे आपके द्वारा सुनाई घटना याद भी नहीं है। वैसे अगर आप ईमानदारी से अपने व्यवहार के लिए पश्चाताप करते हैं, तो मैं आपको अपने अन्तःकरण से माफ करता हूँ।'' उस आदमी ने आभार व्यक्त किया एवं वहाँ से रवाना हो गया। मुझे लगा कि अच्छे काम कभी व्यर्थ नहीं जाते। पश्चाताप प्रायश्चित का सबसे अच्छा रूप है और माफ करना और भूल जाना जीवन के मार्ग पर शांत और सामंजस्यपूर्ण तरीके से आगे बढ़ने की सबसे अच्छी नीति है।

युवा कार्यक्रम और खेल विभाग एक छोटा विभाग था जिसमें एक सचिव, दो संयुक्त सचिव, जिसमें एक युवा कार्यक्रम के लिए एवं दूसरे खेल के लिए

तत्कालीन राज्यपाल गुजरात श्री आर. के. त्रिवेदी के साथ मेरा परिवार

थे, दो निदेशक और कुछ अवर सचिव थे। एनएसएस के लिए कार्यक्रम सलाहकार और सहायक कार्यक्रम सलाहकार थे। एनवाईकेएस गैर-छात्र ग्रामीण युवाओं के क्षेत्र की देखभाल करने वाले विभागों का स्वायत्त संगठन था। हालांकि यह एक एक छोटा सा विभाग था परन्तु यह बहुत महत्त्वपूर्ण था क्योंकि यह युवा कार्यक्रमों के सभी पहलुओं को समाविष्ट करता था। अपनी बढ़ती युवा आबादी के साथ भारत एक युवा राष्ट्र है न कि अमेरिका, चीन या जापान जैसा प्रौढ़ राष्ट्र। अपने ऊर्जावान कामकाजी बड़ी आबादी वाले एक तरुण राष्ट्र के लिए एक बड़ी पूंजी हैं बशर्ते कि उनकी ऊर्जा और कौशल का उचित दोहन किया जाए। हम जनसांख्यिकी का लाभ तब तक नहीं उठा सकते जब तक कि हम युवाओं को शिक्षित, कुशल, स्वस्थ और उन समस्याओं से मुक्त नहीं कर देते जो उनकी रचनात्मक ऊर्जा के मुक्त प्रवाह में बाधक हैं। यह एक चुनौतीपूर्ण और जटिल कार्य था, पर मंत्री सुश्री मार्गरेट अल्वा, सचिव श्री गोपालस्वामी और संयुक्त सचिव श्री मनवालन के मार्गदर्शन में युवा विभाग ने एक सुगठित टीम की भाँति काम किया। मैं अपने अवर सचिव डॉ. केके कीर्ति का नाम विशेष रूप से लेना चाहता हूँ, जिन्होंने युवा कार्यक्रमों के विकास में काफी योगदान दिया।

हम कार्यालय अवधि के बाद भी लंबे समय तक सृजनशील और मैत्रीपूर्ण माहौल में काम करते थे और राष्ट्रीय युवा दिवस, राष्ट्रीय युवा पुरस्कार, गणतंत्र दिवस परेड में एनएसएस की भागीदारी, राष्ट्रीय युवाओं परिषदों के गठन, युवा क्लबों और सहकारी समितियों, एक राष्ट्रीय युवा नीति का निर्माण, यूएसएसआर (युवा घटक) में भारत के त्योहार का आयोजन और इसके विपरीत, नेहरू युवा केन्द्र संगठन के लिए विभिन्न मैनुअल का निर्माण, युवा छात्रावासों की स्थापना, प्रशिक्षण, ब्रीफिंग और युवा प्रतिनिधिमंडलों के लिए डी-ब्रीफिंग सत्र, ग्रामीण युवाओं और छात्रों के लिए बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय एकता शिविरों का आयोजन, महत्त्वपूर्ण और प्रतिष्ठित गैर सरकारी संगठनों को मदद देने के लिए भारत स्काउट्स एंड गाइड, रामकृष्ण मिशन और गाँधी ग्राम ग्रामीण संस्थान, युवाओं के लिए साहसिक शिविरों का आयोजन और युवा गीतों के संकलन की तैयारी आदि जैसी कई महत्त्वपूर्ण पहल और योजनाएँ विकसित करते थे।

देश जनसांख्यिकी में एक ऐतिहासिक बदलाव से गुजर रहा है। राष्ट्रों की मंडली में अपना सही स्थान बनाने की भारत की क्षमता इस बात पर निर्भर करती है कि हम अपने युवाओं की छुपी हुई शक्ति का कितनी अच्छी तरह दोहन कर सकते हैं। भारत एक जनसांख्यिकीय संक्रमण के मुहाने पर स्थित है, ठीक वैसे

ही जैसे संक्रमण ने 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में पूर्वी एशियाई शक्तियों के शानदार उदय को प्रेरित किया था। हालांकि इसका भलीभाँति दोहन करने के लिए यह आवश्यक है कि अर्थव्यवस्था में श्रम बल वृद्धि को समाहित करने की क्षमता हो और युवाओं के पास अर्थव्यवस्था में उत्पादक योगदान करने लायक उपयुक्त शिक्षा, कौशल, स्वास्थ्य जागरूकता और अन्य तत्व हों।

मेरे सचिव श्री गोपालस्वामी के सचिव समन्वय, कैबिनेट सचिवालय रूप में स्थानांतरण के बाद, हमें एक अन्य सचिव के अधीन काम करने का अनुभव हुआ, जो नियमवादी थे पर उनकी काम करने की पूरी तरह से एक अलग शैली थी जिसके परिणामस्वरूप निराशा का माहौल बनने लगा और हर पहल दम तोड़ने लगी। वह विषय वस्तु के बजाय विशेष रूप से मसौदे की भाषा, अल्पविराम और पूर्ण विराम आदि के बारे में चिंतित रहते थे। एक दिन उन्होंने मुझे फोन किया और कहा, ''श्रीमान मिश्रा, आपने किस तरह का मसौदा तैयार किया है? इसमें बहुत सारी गलतियाँ हैं।'' विनम्रता से मैंने उत्तर दिया, ''सर, मैंने अपनी पढ़ाई अपनी मातृभाषा (उड़िया) में की है, लेकिन भगवान की कृपा से मैंने अंग्रेजी निबंध में 80% अंक प्राप्त किये थे और यहाँ तक कि जब मैं एक छात्र था, तभी मैं आईएएस के लिए चुना गया था।'' सचिव ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की।

पंजाब में आतंकवाद अपने चरम पर था और युवा विभाग को विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के लिए युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए कार्यक्रम सौंपे गए थे ताकि वे आतंक की राह पर न जाएँ। हर पखवाड़े पीएमओ के साथ-साथ पंजाब के राज्यपाल को भी रिपोर्ट भेजी जानी थी। राज्यपाल के लिए पाक्षिक मसौदा तैयार किया गया था। सचिव की मेज से जो मसौदा लौटा उसमें लाल स्याही की रेखाएँ थीं। सचिव के द्वारा सही किए गए प्रारूप के अनुसार उचित प्रारूप तैयार कर सचिव के पास हस्ताक्षर हेतु भेजा गया। इसी तरह का ड्राफ्ट पीएमओ को भी दिया गया। जब प्रधानमंत्री कार्यालय के पास जाने वाला मसौदा सचिव कार्यालय में गया तो सुधार के साथ वापस आया और एक टिप्पणी भी साथ आयी, 'मसौदा तैयार करने के लिए बहुत सरसरी कोशिश की गई है। सुधार करके मसौदा प्रस्तुत करे'। संयुक्त सचिव श्री मनवलन ने परेशान होकर मुझे बुलाया और मुझे प्रेक्षण दिखाया। मैंने हल्के अंदाज में उत्तर दिया ''महोदय, आप इस पर मेरा स्पष्टीकरण मांगिए, मैं करारा उत्तर दूँगा। सचिव ने इस मसौदे को सही किया है''। संयुक्त सचिव खूब हँसे और मामला वहीं खत्म हो गया।

सचिव अपने अधीनस्थों को परेशान करने और उन्हें तनाव में रखने में बहुत

आनंद लेते थे। एक बार जब वह अधिकारियों द्वारा सरकारी वाहनों के दुरुपयोग की जाँच कर रहे थे, उन्होंने मुझे बुलाकर पूछा, 'आप कार्यालय कैसे आते हैं?' मैंने कहा, 'पैदल'। जिस पर उन्होंने फिर पूछा, 'क्या?' मैंने कहा, 'हर दिन मैं अपने आवास से शास्त्री भवन तक की दूरी चल कर आता हूँ और उसी तरह घर वापस जाता हूँ'। उन्होंने इस तरह के जवाब की उम्मीद नहीं की थी और कहा, ''आप अब जा सकते हैं।''

अंग्रेजी में राष्ट्रीय युवा नीति का मसौदा विचार हेतु तैयार था परन्तु हिंदी संस्करण हिंदी कक्ष से नहीं आया था। नतीजतन मामला रुका हुआ था। सचिव ने मुझे बुलाया और काम में तेजी लाने को कहा। काफी खुशामद और धमकियों के बाद हिंदी का मसौदा तैयार हो ही रहा था जब सचिव अधीर हो गये और उन्होंने मुझे फिर से बुलाकर पूछा, 'श्रीमान मिश्रा जी, हिंदी का मसौदा कब तैयार होगा? मैंने कहा, 'महोदय, पूरी संभावना है कि कार्य आज हो जाएगा'। उन्होंने कहा, ''मुझे यकीन है कि आपकी हिंदी सेल इसे एक और सप्ताह तक पूरा नहीं कर पाएगी।'' जब मैंने जोर देकर कहा कि यह उस रात ही पूरा हो जाएगा, तब उन्होंने मुझे निर्देश दिया कि जिस क्षण यह पूरा हो जाये आप तभी अपने हिंदी संस्करण के साथ-साथ मुझे मसौदा दें। मेरे अधिकारियों और कर्मचारियों ने चौबीसों घंटे काम किया और रात 2.00 बजे तक काम पूरा हो गया। मैं रात के 2 बजे सचिव के आवास पर पहुँचा और घंटी बजाई। उन्होंने दरवाजा खोला और चिल्लाकर कहा, ''इतने अजीब वक्त पर।'' मैंने उत्तर दिया ''महोदय, काम अभी ही पूरा हुआ है और आपके निर्देश के अनुसार मैं यह दस्तावेज आपको सौंप रहा हूँ।'' उन्होंने सुलगती नजरों से मुझे देखते हुए दस्तावेज ले लिया।

युवा विभाग में कई अच्छी योजनाएँ थीं जिनमें से एक युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण देने संबंधी योजना थी। इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने के लिए शिक्षण संस्थानों, युवा क्लबों और स्वयंसेवी संगठनों का आर्थिक प्रबंध किया जाता था। एक बार इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रों के एक समूह ने अपने प्रोफेसर जी के राय के साथ आकर अपने विश्वविद्यालय में एक संगोष्ठी और प्रदर्शनी आयोजित करने के लिए आर्थिक मदद का अनुरोध किया। परियोजना को मंजूरी दी गई लेकिन कुछ महीनों के बाद, उन्होंने फिर से एक और संगोष्ठी में मदद के लिए मुझसे संपर्क किया। मैंने मना कर दिया और उन्हें ''स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण'' पर एक परियोजना प्रस्तुत करने की सलाह दी। उन्हें नहीं पता था कि प्रोजेक्ट कैसे तैयार किया जाए। इसलिए मेरे अवर सचिव

डॉ. केके कृति और मैंने उन्हें प्रोजेक्ट तैयार करने में मदद की। हम इलाहाबाद गए और वहाँ छात्रों, बैंकों के प्रतिनिधियों, उद्यान विभाग और जिला प्रशासन के साथ विस्तृत चर्चा की। दो दिनों के विचार-विमर्श के बाद एक परियोजना तैयार की गई और एक छोटी प्रसंस्करण इकाई के लिए 2 लाख रुपये का अनुदान स्वीकृत किया गया। हमने प्रोफेसर और छात्रों को सलाह दी कि वे इस परियोजना को चलाने के लिए सावधानीपूर्वक चीजें चुनें, ओवरहेड्स और एयर कंडीशनर जैसी वस्तुओं पर अनावश्यक रूप से निवेश न करें। एक छोटे से कमरे और साइकिल या स्कूटर की मदद से कम दर पर घर-घर जाकर ग्रहकों को टमाटर सॉस, आंवला कैंडी, आम का अचार, रस और फल चॉकलेट जैसे प्रसंस्कृत उत्पादों की आपूर्ति उचित मूल्य पर करें। संस्था का नाम पुरबा था। यह जानकर खुशी हुई कि मामूली 2 लाख रुपये से शुरू किए गये एक प्रोजेक्ट ने कुछ ही सालों के भीतर 2 करोड़ रुपये का टर्न ओवर हासिल कर लिया है। इसने राष्ट्रीय उत्पादकता पुरस्कार और राष्ट्रमंडल युवा उद्यम पुरस्कार जीता।

केंद्र में मेरी पोस्टिंग ने मुझे दुनिया के विभिन्न हिस्सों में सैर करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किए। इन यात्राओं ने मुझे अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में युवा-समस्याओं की समझ का अच्छा अवसर प्रदान किया। यूएसएसआर में भारत-मेला इस मायने में अनूठा था कि सैकड़ों भारतीय युवा उस देश के विभिन्न हिस्सों में गए और करीब दो सप्ताह तक अपने युवाओं से बातचीत की। हमने इस आयोजन को गंभीरता से लिया और अपने युवाओं को यात्रा के लिए अच्छी तरह से तैयार किया। संस्कृति, कला, ध्यान, शास्त्रीय नृत्य, लोक-नृत्य, गीत, योग और विद्वानों जैसे व्यापक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले छात्र और गैर-छात्र युवा दोनों का चयन किया गया। इन सभी प्रतिनिधियों को हमारे देश और सोवियत संघ के विभिन्न पहलुओं के बारे में एक महीने के प्रशिक्षण के लिए दिल्ली बुलाया गया था। प्रमुख हस्तियों, बुद्धिजीवियों और प्रशासकों को उनकी यात्रा के लिए तैयार करने में मदद करने के लिए उनके साथ बातचीत करने के लिए आमंत्रित किया गया था। मैंने 1987 में सोवियत संघ में 100 युवाओं के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व भी किया। हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया गया, एक होटल में ठहराया गया और मास्को, लेनिनग्राद, स्टेलिनग्राद, साइबेरिया, एस्टोनिया और लातविया जैसे विभिन्न हिस्सों में ले जाया गया। हमने एक विशेष रूप से डिजाइन और सुसज्जित ट्रेन से यात्रा की जिसमें फिल्म, भोजन, नृत्य, प्रदर्शनी, सांस्कृतिक गतिविधियों और चर्चा के भी प्रावधान थे। मैंने 'व्हाइट नाइट्स' के बारे में सुना था। इस दौरे के दौरान मैंने इस

अनोखी घटना का अनुभव किया-रात दिन की तरह थी। एक अवसर पर हमारे प्रतिनिधिमंडल को गोर्की पार्क में प्रदर्शन करना था। शो के बाद मैंने अपने इंटरप्रेटर से अनुरोध किया कि मुझे शौचालय का रास्ता दिखाया जाए। वह मुझे ले गए और जब मैं लौटा तो उन्होंने पूछा, ''मिस्टर मिश्रा, आपको यह कैसा लगा?'' शौचालय बदबूदार थे, लेकिन मैं मेजबान की भावना को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता था, इसलिए हल्के अंदाज में कहा, ''यह हमारे देश की तरह अच्छा या उतना ही बुरा है।'' वे ठहाका लगाकर हँसे।

सोवियत संघ में अगले प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विभाग के अवर सचिव डॉ. केके कृति कर रहे थे। दिल्ली की अपनी वापसी यात्रा से एक दिन पहले मुझे डॉ. कृति का घबराहट भरा फोन आया कि बाल्मर लॉरी एंड कंपनी लिमिटेड एरोलोट पर अपना आरक्षण सुनिश्चित करने में विफल रही है और परिणामस्वरूप अधिकांश प्रतिनिधि मास्को हवाई अड्डे पर फंस जाएँगे और वीजा भी कुछ दिनों के भीतर समाप्त हो जाएगा। यह गंभीर मामला था और मैं इसका बोझ सचिव पर डालना नहीं चाहता था। मैंने एयर इंडिया के कमर्शियल मैनेजर से बात की और सेक्रेटरी (सिविल एविएशन) से मुलाकात की। सचिव ने एयर इंडिया के साथ इस मामले पर चर्चा की और फंसे प्रतिनिधियों की मदद के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उनके निर्देश पर हमने एयर इंडिया के वाणिज्य प्रबंधक से मुलाकात की जो अपने अथक प्रयासों से तीन उड़ानों में प्रतिनिधियों को समायोजित करने में सफल रहे। मेरे सचिव ने मेरी तारीफ करते हुए कहा, ''शाबाश मिश्रा! आपने एक अच्छे अधिकारी की तरह काम किया जो पहल कर समस्या का समाधान करे, बजाय इसके कि इसे अपने ऊपर के अधिकारी को सौंप कर मुक्त हो जाए।''

जापान की मेरी यात्रा भी उतनी ही यादगार रही। मैंने न केवल जापान के विस्मयकारी विकास को देखा बल्कि उनके राष्ट्रीय चरित्र की झलक भी देखी। एयरपोर्ट से होटल में बस से अलग-अलग देशों के प्रतिनिधियों को ले जाया गया। चूंकि यहाँ थोड़ी गर्मी थी इसलिए मैंने अपना कोट उतार दिया था जिसमें मेरा पासपोर्ट, वीजा और मुद्राएँ थीं और इसे बस के डैश बोर्ड पर रखा दिया था। जब बस होटल पहुँची तो मैं नीचे उतर गया और रिसेप्शन में औपचारिकताएँ पूरी करने के बाद अपने कमरे में चला गया। चूंकि तुरंत होटल में एक कार्यक्रम था इसलिए मैंने अपने कोट की तलाश की और यह जानकार घबरा गया कि मैंने इसे बस में छोड़ दिया था। मेरे पास न पासपोर्ट था, न वीजा ना ही विदेशी मुद्रा। मैं घबरा गया और जापानी प्रतिनिधि को सारी बात बताई जिसने मुझे आश्वासन

दिया कि आधे घंटे के भीतर इसका पता लगा लिया जाएगा। मैं अभी भी आशंकित था, लेकिन 20 मिनट से भी कम समय में बस का पता लगा लिया गया और मुझे मेरा कोट वापस मिल गया। ऐसी बात हमारे देश में अकल्पनीय है। मैं जापान के राष्ट्रीय चरित्र से बहुत प्रभावित हुआ। एक राष्ट्र केवल अपनी आर्थिक समृद्धि से महान नहीं बन सकता। यह महान है क्योंकि इसका एक मजबूत राष्ट्रीय चरित्र है जो इसके नागरिकों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

नेहरू युवा केंद्र (एनवाईके) संगठन के महानिदेशक के रूप में मुझे एक दिन सचिव कार्यालय से आदेश प्राप्त हुआ कि प्रधानमंत्री कार्यालय कुछ क्षेत्रीय समन्वयकों को अमुक स्थान से अमुक स्थान में स्थानांतरित करना चाहता है। इस फाइल को 'अत्यावश्यक, शीघ्र और तत्काल' के रूप में चिह्नित किया गया था। इससे घबराए मेरे निदेशक (प्रशासन) ने तुरंत तबादले का प्रस्ताव रखा लेकिन तब तक आम चुनाव की घोषणा कर दी गई और चुनाव आचार संहिता लागू हो गई। इसलिए मैंने कोई कार्रवाई नहीं की और जब मेरे निदेशक ने मुझसे अनुरोध किया कि मामले पर उचित कार्रवाई की जाए तो मैंने फाइल में दर्ज किया 'चुनाव की घोषणा कर दी गई है और आचार संहिता लागू है। नई सरकार स्थापित होने के बाद ही इस पर विचार किया जाएगा।' इस पर सचिव नाराज हो गए और चेतावनी दी कि मैं परिणाम भुगतने के लिए जिम्मेदार रहूँगा। मैं अडिग रहा और कुछ नहीं हुआ।

मुझे संयुक्त सचिव के रूप में पैनल में शामिल किया गया था और मेरे अपने विभाग में उस स्तर का एक पद रिक्त था। चूंकि सचिव मुझसे खुश नहीं थे, इसलिए उन्होंने कभी भी विभाग में इस पद पर अथवा उसके समकक्ष पद पर पोस्टिंग के लिए मेरे नाम की सिफारिश नहीं की। वरिष्ठता सूची में कनिष्ठ रहे मेरे मित्र भी अपने संबंधित मंत्रालयों में समायोजित हो गए। मैं निराश नहीं था, लेकिन थोड़ा आघात लगा। अक्सर मैं सोचा करता था कि वह कब तक संयुक्त सचिव बनने से रोकेंगे। मेरे मंत्री जी का परिवर्तन हो गया और नए मंत्री ने एक दिन पूछा, ''मिश्रा जी आप संयुक्त सचिव के पैनल में हैं या नहीं?'' मैंने उत्तर दिया, हाँ सर, ''मैं पैनल में शामिल हूँ।'' तब उन्होंने पूछा, ''जब समकक्ष पद खाली पड़ा है तो आप हमारे विभाग में नियुक्त क्यों नहीं हो रहे हैं?'' जब मैंने उल्लेख किया कि सचिव ने अभी तक मेरे नाम की सिफारिश नहीं की है, तो उन्होंने तुरंत डीओपीटी और पीएमओ के साथ इस मामले को उठाया और दो सप्ताह के भीतर, मेरी पोस्टिंग NYK संगठन के महानिदेशक के रूप में सुनिश्चित कर दी गई। इस घटना ने मुझे एहसास कराया कि एक प्रतिशोधी

नौकरशाह एक राजनेता से ज्यादा खतरनाक होता है।

मैंने राष्ट्रमंडल द्वारा आयोजित कई युवा-सम्मेलनों में भी भाग लिया। ऐसी बैठकों में मेरे प्रदर्शन का अवलोकन किया गया होगा क्योंकि भारत सरकार के युवा विभाग से अनुरोध किया गया था कि दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के युवाओं पर अध्ययन करने के लिए मेरी सेवाएँ ली जाएँ। सचिव कुछ समय तक इस मामले को दबाए रहे। संयुक्त सचिव ने मुझे फोन किया और कहा, ''मिश्रा, आप कृपया इस संबंध में सचिव से मिलें।'' मैंने उत्तर दिया, ''महोदय, यदि सचिव मुझे नहीं भेजना चाहते हैं तो यह उनका मामला है। इस मुद्दे पर उनसे मिलने का कोई मतलब नहीं है।'' मुझे यह काम नहीं मिला।

इस अवधि के दौरान, मेरे जीवन में कुछ चीजें घटित हुई जिसने मुझे और

सूफी सन्त सलीम चिश्ती की फतेहपुर सीकरी स्थित मजार पर सपरिवार

अधिक आध्यात्मिक बना दिया। हमने दो नवजात शिशुओं को उनके जन्म के कुछ ही मिनटों में खो दिया। हम दोनों ने विशेषज्ञों से परामर्श किया और चिकित्सकीय जांच करवायी और पाया कि कोई असंगति नहीं थी। मेरी दोनों बेटियों का जन्म सामान्य तरीके से हुआ था और ऐसा कोई कारण नहीं था कि दोनों का गर्भपात हो जाए। चूंकि यह एक दर्दनाक अनुभव था, इसलिए हमने तीसरा बच्चा नहीं रखने का फैसला किया। लेकिन जब मैं निदेशक (युवा मामले) के रूप में दिल्ली आया तो कुछ महीने बाद मेरी पत्नी ने जिक्र किया कि वह गर्भवती है। हम दोनों ने इस मामले पर चर्चा की और तीर्थयात्रा पर जाने का फैसला किया। मैंने एक महीने की छुट्टी के लिए आवेदन किया और अपने संयुक्त सचिव को कारण बताया। वह हँसे और कहा, ''मिश्रा, जो मेडिकल साइंस नहीं कर पाया, आपको लगता है कि आपकी तीर्थयात्रा कर पाएगी?'' हम फतेहपुर सीकरी स्थित सूफी संत शेख सलीम चिश्ती की मजार पर गए। पीरजादा अयाजुद्दीन चिश्ती उर्फ रईस मियाँ, सलीम चिश्ती के वंशज, मेरे ससुर के अच्छे दोस्त थे और वह एक अच्छे इंसान थे और व्यापक रूप से सम्मानित और हमारे परिवार के शुभचिंतक थे। उन्होंने हमें उस स्थान पर ले जाने का अनुग्रह किया जहाँ सम्राट अकबर ने एक बेटे के लिए प्रार्थना की थी। लाल गुलाब और हरी चादर के साथ हमने बच्चे की कुशलता के लिए प्रार्थना की। वहाँ से हम मथुरा, वृंदावन, द्वारका, सोमनाथ, नागेश्वरनाथ ज्योतिर्लिंग और भालका तीर्थ जैसे कई पवित्र स्थानों पर गए। यह यात्रा अजमेर शरीफ में समाप्त हो गई। हमने ट्रेन और बस से यात्रा की और मेरी पत्नी अच्छी तरह से यात्रा के भार को वहन करने में समर्थ रहीं। यह एक अनूठा अनुभव था। भगवान ने निश्चित रूप से हमारी सच्ची प्रार्थना सुन ली और ईद के दिन सीजेरियन ऑपरेशन के जरिए एक बेटे का जन्म हुआ था। सबसे पहले हमने बच्चे के साथ फतेहपुर सीकरी में सलीम चिश्ती की मजार पर जाकर प्रार्थना की और मजार पर बँधी गाँठ खोली। वहाँ से हम सुशांत के 'मुंडन' समारोह के लिए द्वारका गए। जो आधुनिक विज्ञान हमें प्रदान नहीं कर सका, हमारे विश्वास ने हमें प्रदान किया। क्या मैं इसे महज इत्तेफाक या चमत्कार का नाम दे सकता हूँ? ईमानदारी से की गई हमारी प्रार्थना का जवाब ईश्वर ने दिया, मैं यही मानता हूँ। मेरे इस अनुभव ने एक ऐसी अदृश्य शक्ति की उपस्थिति के बारे में मेरे दृढ़ विश्वास को और मजबूत किया। विश्वास, विश्वास और केवल विश्वास ही इस दुनिया में अद्‌भुत कारनामे कर सकता है।

अध्याय-१९

आयुक्त, बिक्री-कर, उत्तर प्रदेश

(जून 1991-जून 1994)

मुझे इस बात की बड़ी संतुष्टि रही कि मैं वरिष्ठों के दबाव को समझ पाया अवैध और अनैतिक फैसलों को रोकने में सफल रहा।

जून, 1991 में लखनऊ में वापस आ गया और आयुक्त (बिक्री कर) के रूप में नियुक्त हुआ। यह एक महत्त्वपूर्ण कार्य था क्योंकि यह विभाग राज्य के कुल राजस्व का 60% योगदान देता था। यह एक पूरी तरह तकनीकी और संवेदनशील पद था और जनता के बीच इसकी अच्छी प्रतिष्ठा नहीं थी। अपने अधिकारियों के साथ बातचीत और मीडिया के साथ-साथ जनता से मिली प्रतिक्रिया के अनुरूप मैं कुछ सुधार लाने के लिए दृढ़संकल्प था। मैंने सुधार के लिए सिफारिशों को ठोस करने के लिए 'क्वालिटी सर्कल' की अवधारणा का सहारा लिया। मैंने वरिष्ठता से निरपेक्ष होकर अच्छे अधिकारियों को चुना और सुधारों के बारे में उनके साथ कई बार गंभीर बैठकें कीं। तीन महीने की श्रमसाध्य चर्चा के बाद, हमने प्रस्ताव तैयार किए। 1993 के राज्य विधानसभा चुनावों के बाद नए मुख्यमंत्री ने कुछ प्रस्ताव मांगे और हमने पहले से तैयार किए गए इस भारी भरकम दस्तावेज को सौंप दिया। दस्तावेजों को देखकर उन्होंने हल्के अंदाज में कहा, ''मिश्राजी, इन सभी पन्नों को पढ़ने का समय किसके पास है?'' मैंने उत्तर दिया, ''सर, अगर इसे लागू करने की राजनीतिक इच्छाशक्ति हो तो पूरे दस्तावेज को कुछ वाक्यों में ही सीमित किया जा सकता है। कर देने वालों को स्व-मूल्यांकन की पूरी स्वतंत्रता दी जाएगी और स्व-मूल्यांकन का केवल 15% प्रतिदर्श के आधार पर विस्तृत जाँच के लिए लिया जाएगा। यदि यह पाया जाता है कि कर स्व-निर्धारित करने वाला व्यक्ति करों की किसी भी तरह की चोरी में लिप्त है तो उसे सात साल के कठोर कारावास की सजा दी जाएगी।'' उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, ''इससे उथल-पुथल मच जाएगी।'' इसलिए मेरे पास नई सरकार के समक्ष सुधार प्रस्तावों को पेश करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था। बहुत सारे सुधार हुए, जैसे विभिन्न दरों का युक्तिकरण और उन्हें कुछ

दर-बैंडों तक सीमित करना, रूपों की संख्या में कमी, अधिक टर्न-ओवर पर स्व-मूल्यांकन की सीमा में वृद्धि, वैट की शुरूआत के लिए पहल, कम्प्यूटरीकरण और निगरानी, विभाग को मजबूत करने के लिए कैडर प्रबंधन, ठहराव को हटाने और बड़े पैमाने पर पदोन्नति और एक नई स्थानांतरण नीति तैयार करना। मुझे राज्य के बिक्री कर के आखिरी आयुक्त और पहले व्यापार कर आयुक्त के रूप में सेवा देने का गौरव प्राप्त हुआ।

मैंने देखा कि अधिकारी वांछित स्थानांतरण और पोस्टिंग प्राप्त करने के लिए वे एमएलए, एमपी और मंत्रियों की परिक्रमा करते रहते थे। यह दृश्य न केवल परेशान करने वाला था बल्कि प्रशासन के लिए भी अच्छा नहीं था। मैंने प्रत्येक अधिकारी को स्थानों और पोस्टिंग के संबंध में तीन वरीयताओं को इंगित करने का अवसर देकर स्थानांतरण नीति को बदल दिया। जहाँ तक संभव हो, मैंने उन्हें समायोजित करने का प्रयास किया। यदि किसी विशेष पद और स्थान के लिए अधिक उम्मीदवार होते थे, तो हमने उनकी गोपनीय रिपोर्ट में दर्ज उनके पिछले पाँच वर्षों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करके एक अंकन प्रणाली का सहारा लिया। श्रेष्ठ अधिकारी को उस स्थान पर तैनाती दी जाती थी। इस प्रकार हम किसी विशेष अधिकारी के स्थानांतरण और पोस्टिंग के फैसले का बचाव कर सकते हैं। इस प्रक्रिया से, मैं 80% से अधिक अधिकारियों को उनके पसंदीदा स्थानों में समायोजित करने में सक्षम रहा। इस प्रकार स्थानांतरण में उच्च-पक्षीयता, भाई-भतीजावाद और पक्षपात की शिकायतों को भी कम किया गया। अभी भी कई अधिकारी किसी विशेष स्थान पर किसी विशेष पद के लिए मंत्रियों और जनप्रतिनिधियों से संपर्क कर रहे थे। जब मुझे मंत्रियों और विधायकों से ये सिफारिशें मिलीं, तो मैंने इन अधिकारियों को आचरण नियमों के तहत तुरंत नोटिस जारी किया, जिसमें सवाल किया गया था कि अनैतिक और बाहरी दबाव बनाने के लिए उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई क्यों नहीं की जानी चाहिए। विभाग में अफरा तफरी मच गई और वित्त मंत्री ने मुझे अपने कार्यालय में बुलाया। उन्होंने विनम्रता से मुझसे कहा, ''मिश्राजी, ऐसा लगता है कि जनप्रतिनिधियों का विभागों के प्रबंधन में कोई महत्त्व नहीं है!'' मैंने मंत्री महोदय को इस तरह के दबाव को प्रतिबंधित करने वाले आचरण नियमों के प्रासंगिक प्रावधानों को दिखाया और कहा, ''महोदय, इन नियमों को जन प्रतिनिधियों द्वारा ही तैयार किया गया है और इन नियमों को लागू करना मेरा कर्तव्य है। यदि

नियमों को बदल दिया जाता है और जनप्रतिनिधियों को ही ट्रांसफर–पोस्टिंग की शक्तियाँ दे दी जाती हैं, तो मैं उसी के अनुसार काम करूँगा। इसके अलावा, सर, आप एक बहुत ही उच्च स्थान पर पदस्थ हैं और आप सभी का संबंध नीति निर्माण से है।'' मंत्री ने सिर्फ मुस्कुराते हुए कहा, ''ईमानदार सिफारिशों को कृपया देख लें।''

हम एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में काम कर रहे हैं, जनप्रतिनिधियों की ओर से सिफारिशें और दबाव आयेंगे ही। प्रत्येक सिफारिश को प्रशासन में हस्तक्षेप के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। इसके नफा–नुकसान को ध्यान में रखते हुए और सार्वजनिक हित के विषय में सोचकर ही इस बारे में कोई राय बनानी चाहिए। मैंने हमेशा इस सिद्धांत का पालन किया। एक बार मैं गोमती नगर में सेल्स टैक्स ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में विभाग के अधिकारियों को व्याख्यान दे रहा था। ठीक उसी समय मुझे मुख्यमंत्री के आवास से फोन आया और तत्काल उनसे मिलने के लिए बुलाया गया। जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने कहा, ''मिश्राजी, आपका विभाग इस उद्योगपति (पास में खड़े किसी व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए) को बिना किसी कारण के परेशान कर रहा है। कृपया इस पर गौर करें।'' मुख्यमंत्री ने हमें एक विशेष कमरे में जाने का निर्देश दिया। उद्योगपति ने मामले का अपना पक्ष सुनाया। उसकी बात सुनने के बाद, मुझे अंदाजा हुआ कि मेरे निर्देश के तहत उसकी फर्म पर छापा मारा गया था। यह सीमेंट के अवैध परिवहन और बिक्री के खातों में धोखाधड़ी का मामला था। उपायुक्त इस पूरे प्रकरण की जाँच कर रहे थे। मैं तुरंत समझ गया कि इसे हल करने में एक कठिन समस्या होने वाली थी। मैंने संबंधित फर्म की शिकायतों के बारे में अपनी डायरी में विस्तृत नोट लिए। एक घंटे के बाद, मैं कमरे से निकल गया और मुख्यमंत्री से मिला। संबंधित उद्योगपति ने मुख्यमंत्री को बताया कि आयुक्त ने उनकी शिकायतों को बहुत धैर्य से सुना। मुख्यमंत्री ने मुझे यह सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया कि व्यक्ति को परेशान नहीं किया जाए। अपने कार्यालय में वापस आने के बाद मैंने तुरंत उपायुक्त से बात की, जो मामले की जाँच कर रहे थे। मैंने उन्हें कुछ दिनों के भीतर जाँच खत्म करने का निर्देश दिया। यदि फर्म प्रथम दृष्ट्या टैक्स चोरी की दोषी थी, तो एक मजबूत केस बनाने के लिए उन्हें अधिक से अधिक सबूत एकत्र करने चाहिए, अन्यथा वह मुश्किल में पड़ जाता क्योंकि मुख्यमंत्री खुद मामले में दिलचस्पी ले रहे थे। कुछ दिनों बाद लगभग 11.00 बजे मुझे मुख्यमंत्री महोदय का फोन आया। वह क्रोधित हुए और

उन्होने मुझे बताया कि उपायुक्त (मूल्यांकन) ने फर्म पर कुछ करोड़ रुपये का जुर्माना लगा दिया है। मैंने मुख्यमंत्री से कहा, ''सर, अगर उपायुक्त ने गलत फैसला दिया है तो निश्चित रूप से उन्हें निलंबित किया जाएगा। मैं तुरंत फैसले की एक प्रति मंगाता हूँ, सचिव (कानून) द्वारा इसका निरीक्षण करवाता हूँ और फिर उचित कार्रवाई करता हूँ।'' मुख्यमंत्री ने जवाब दिया, ''कानून सचिव क्या करेंगे? जो कुछ भी करना है वह आपके द्वारा किया जाना है न कि विधि सचिव द्वारा।'' मैंने उत्तर दिया, ''महोदय, उस उद्योगपति को मेरे पास भेजें, मैं उससे बात करूँगा।'' मुख्यमंत्री सहमत हो गए और अगले दिन उद्योगपति आए और मुझसे मेरे कार्यालय में मिले। मैंने उसे स्पष्ट रूप से कहा, ''श्रीमान, आप मुख्यमंत्री के कीमती समय को ऐसे मामले पर क्यों बर्बाद कर रहे हैं। उनके पास और भी कई महत्त्वपूर्ण काम हैं। आप जानते हैं जब कोई निर्णय दिया जाता है तो इसे उचित अदालत में अपील दायर करने के अलावा नहीं बदला जा सकता है। न तो मुख्यमंत्री और न ही मैं इसे बदल सकता हूँ। मैं आपको सलाह दे रहा हूँ कि अपील को तुरंत अपीलीय न्यायालय में दायर करें!'' मैंने आगे जोड़ा, ''मुझे इस कुर्सी पर कोई दिलचस्पी नहीं है और जब भी मुझे स्थानांतरण आदेश प्राप्त होगा, मैं इसे लात मारकर चला जाऊँगा। आपको जो अच्छा लगता है आप वो कीजिए। मेरा और मुख्यमंत्री का कीमती समय बर्बाद मत कीजिए।'' वह व्यक्ति चला गया और उसके बाद मुझे कभी परेशान नहीं किया।

बिक्री कर विभाग राजस्व अर्जन करने वाले विभाग के नाते बहुत संवेदनशील है। यहाँ सकारात्मक प्रभाव के लिए उचित राजस्व खुफियातंत्र बेहद आवश्यक है। मैं हमेशा विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त सार्वजनिक शिकायतों, सूचनाओं और फीडबैक के प्रति सतर्क और संवेदनशील रहा। एक बार कराधान पर एक सेमिनार में भाग लेने के लिए मसूरी की यात्रा कर रहा था। मैं ट्रेन में सवार हो गया था और जब हम देहरादून पहुँचने वाले थे तो एक सज्जन ने खुद को नोएडा की एक प्रतिष्ठित कम्प्यूटर कंपनी का डीजीएम बताया और मुझसे कंप्यूटर और उसके सॉफ्टवेयर को किराए पर देने पर कराधान के संबंध में कुछ स्पष्टीकरण मांगे। मुझे तुरंत ही संदेह हो गया कि उनकी कंपनी कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के किराए में बिक्री कर छुपा रही है। सेमिनार के बाद, मैंने इस कंपनी पर छापा मारने का आदेश दिया। मेरा संदेह सही निकला, कंपनी ने जुर्माने के साथ कर के रूप में लाखों रुपये का भुगतान किया। यह मेरा अनुभव भी था कि जनता से प्राप्त होने वाली 90% टैक्स चोरी की शिकायतें सही होती थीं। हर महीने विभाग के प्रदर्शन

की समीक्षा करने के बाद, मैं अपने अधिकारियों को कर चोरी का पता लगाने के दिलचस्प मामलों को प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करता था। मैं उन अधिकारियों को पुरस्कृत करता था जिन्होंने कर चोरी के सर्वश्रेष्ठ तीन मामलों का पता लगाया था। इस रणनीति के परिणामस्वरूप अधिकारियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा पैदा हुई और साथ ही साथ राजस्व के संग्रह में वांछित परिणाम प्राप्त हुए।

कई बार छापेमारी की नियमित रणनीति से भटक कर, किसी को नायाब तरीकों का सहारा लेना पड़ता है। व्यावसायिक घरानों के पास स्वयं के मुखबिर और खुफिया तंत्र होते हैं जो नीतिगत स्तर पर हो रहे बदलावों और अधिकारियों की गतिविधियों पर नजर रखते हैं। कई बार छापेमारी दल को टैक्स की चोरी करने वालों की प्रतिकूल प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ता है। मुझे एक महत्त्वपूर्ण बाजार के बड़े व्यापारियों द्वारा की जा रही कर चोरी के बारे में लगातार जानकारी मिल रही थी। हिंसा से बचने और उन्हें आश्चर्य में डालने के लिए, मैंने पहली बार उस विशेष जिले में एक संगोष्ठी बुलाई और मंडलायुक्त को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया। दोपहर के भोजन के समय तक संगोष्ठी अच्छी तरह से चली। सेमिनार में भाग लेने वाले सभी अधिकारियों के साथ दोपहर के भोजन के बाद, बाजार में एक आश्चर्यजनक छापेमारी शुरू की गई, लोग हतप्रभ रह गए। छापेमारी अत्यधिक सफल रही।

यूपी में राष्ट्रपति शासन के दौरान (6 दिसंबर, 1992 से 4 दिसंबर, 1993 तक), गवर्नर के सलाहकार के रिश्तेदारों में से एक ने किसी विशेष तिथि से नई इकाइयों की स्थापना के लिए दिए जाने वाले कुछ बिक्री कर सब्सिडी के लिए आवेदन किया। प्रस्ताव पर निदेशक (उद्योग), एमडी (पिकप), उद्योग विभाग के प्रतिनिधि और आयुक्त बिक्री कर की समिति द्वारा विचार किया जाना था। पिकप भवन में बैठक बुलाई गई थी और जब मैं बैठक में पहुँचा तो समिति के अध्यक्ष द्वारा मुझे बताया गया कि यह एक बहुत ही सरल मामला था और इसकी सिफारिश की जानी चाहिए। मैंने पहले ही अपने विभागीय स्तर पर प्रस्ताव की पहले ही जाँच कर ली थी और पाया था प्रस्ताव सब्सिडी की श्रेणियों में फिट नहीं हो रहा था क्योंकि यह पारिभाषिक रूप से 'एक नई इकाई' नहीं थी। जब मैंने आपत्ति उठाई तो अध्यक्ष सहित समिति के अन्य सदस्य, जो मुझसे वरिष्ठ थे, नाराज हो गए और प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए मुझ पर दबाव बनाने लगे। मैं अपने मत से टस से मस नहीं हुआ और लिखित रूप में अपना असंतोष पत्र

जमा कर समिति कक्ष से निकल गया। मुझे इस बात की बड़ी संतुष्टि है कि मैं दबाव के सामने नतमस्तक नहीं हुआ और एक अवैध और अनैतिक निर्णय को रोकने में सफल रहा।

गवर्नर के सलाहकार, जिनके रिश्तेदार का काम नहीं हुआ था, वे मुझसे खुश नहीं थे और उन्होंने मेरे सचिव के सामने अपने विचार व्यक्त किए कि मैं विभाग में अच्छा काम नहीं कर रहा हूँ। जब मेरे सचिव, श्री सुशील त्रिपाठी ने मेरा बचाव किया, तो सलाहकार ने कहा कि वे अखबार में प्रकाशित विभाग द्वारा किए गए विभिन्न कार्यों को देखना चाहते थे। मैंने सभी अखबारों की कतरन एकत्र की जो दो विशाल बैग में समा पाए। बिक्री कर विभाग की गतिविधियों से संबंधित अखबारों की कतरन के ये दोनों बैग मैंने राज्यपाल के सलाहकार को भेजा। इस घटना पर सचिव साहब जमकर हँसे और मामला वहीं खत्म हो गया।

1991 में चुनाव के ठीक बाद, एक नई सरकार सत्ता में आई और बिक्री कर के मामले में कुछ कर राहत और छूट दी गई। इससे बिक्री कर संग्रह की दर कम हो गई। अक्टूबर में, तत्कालीन मुख्यमंत्री ने बिक्री कर विभाग की समीक्षा बैठक की जिसमें अन्य महत्त्वपूर्ण मंत्री, मुख्य सचिव और अन्य संबंधित सचिव भी उपस्थित थे। बैठक की शुरुआत में मुख्यमंत्री ने विकास दर में कमी के कारणों तथा इस असंतोषजनक प्रदर्शन के लिए जिम्मेदार अधिकारियों के नाम जानना चाहा। वह चाहते थे कि मैं तीन उपायुक्तों के नाम दे दूँ जिन्हें अच्छा प्रदर्शन नहीं करने के लिए निलंबित किया जाना चाहिए। मैंने कर संग्रह की वृद्धि दर में कमी का कारण बताया और कहा, ''सर, मैं विभाग का प्रमुख हूँ और अपने विभाग के असंतोषजनक प्रदर्शन के लिए मैं स्वयं जिम्मेदार हूँ।'' मेरे जवाब से मुख्यमंत्री नाराज थे। सभी की उपस्थिति में, उन्होंने चेतावनी दी, ''मिश्रा, आप हमेशा अपने अधिकारियों को बचाने के लिए सारी जवाबदेही अपने सिर पर ले लेते हैं। इसलिए, मेरे पास आपको स्थानांतरित करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है!'' बहुत विनम्रता से मैंने जवाब दिया, ''सर, यह आपका विशेषाधिकार है।'' इस उत्तर से मुख्यमंत्री का आपा खो गया और उन्होंने बैठक को समाप्त कर दिया। गहरा सन्नाटा छा गया था। मैंने अपनी सीट छोड़ दी और समिति कक्ष से बाहर चलना शुरू कर दिया तब सचिव श्री एस.ए.टी. रिजवी और मुख्यमंत्री के सचिव श्री योगेन्द्र नारायण भागते हुए आए और मुझे मुख्यमंत्री के कमरे में ले गए। जब मुख्यमंत्री वाशरूम से बाहर निकल रहे थे, तो श्री नारायण और श्री रिजवी दोनों मेरा बचाव करने लगे और उनसे कहा, ''सर,

प्रशान्त मिश्रा हमारे कैडर के एक उत्कृष्ट अधिकारी हैं।'' मुख्यमंत्री ने कहा, ''हाँ, मुझे पता है। वह बहुत ईमानदार अधिकारी भी हैं।'' इन शब्दों से मुझे यह कहने का प्रोत्साहन मिला कि, ''सर, अगर आप इन सभी बातों को जानते हैं, तो बैठक में मुझ पर क्रोध क्यों किया?'' उन्होंने जवाब दिया, ''मिश्रा, जिस तरीके से आपने उत्तर दिया उससे आपने सबके सामने मुख्यमंत्री को निरुत्तर कर दिया। यह मुख्य मन्त्री के पद और गरिमा के अनुरूप नहीं हैं।'' मैंने पूरी विनम्रता के साथ जवाब दिया, ''सर, आपकी भावना को ठेस पहुँचाना भी मेरा उद्देश्य नहीं था। हमारी परम्परा यह है कि एक वरिष्ठ को असफलताओं की जिम्मेदारी लेनी चाहिए और सफलता का श्रेय अपने अधीनस्थों को देना चाहिए।'' मुख्यमंत्री ने हँसते हुए मुझे चिंतित न होने का आश्वासन दिया। बाद में, उन्होंने इस घटना के लिए खेद महसूस किया और निष्पक्षता और न्याय के साथ विभाग को चलाने के लिए सभी को अपना समर्थन और आशीर्वाद दिया। मैं मुख्यमंत्री का सबसे ज्यादा सम्मान करता था। मैं श्री रिजवी और श्री योगेंद्र नारायण का भी आभारी था जो मेरे बचाव में आए। वर्तमान दौर में ऐसी स्थिति अकल्पनीय है। अब ईमानदार और जूनियर अधिकारियों के सिर पर वरिष्ठों के सुरक्षा का हाथ नहीं होता है। आईएएस सप्ताह के दौरान आईएएस अधिकारियों के एक समूह द्वारा खेले गए एक प्रहसन की याद आती है जिसमें यह दर्शाया गया कि हर साल बीतने के साथ, आईएएस अधिकारी प्रति वर्ष अपनी रीढ़ की एक हड्डी खो देता है। इस प्रकार जब तक कोई वरिष्ठ अधिकारी बनता है, तब तक वह अपनी रीढ़ की ज्यादातर हड्डियाँ खो देता है और रीढ़हीन बन जाता है।

बहुत कम लोग इस तथ्य को मानते हैं कि करों को इकट्ठा करने के विभागीय अधिकारी के प्रयास के अभाव में पूरे राज्य की मशीनरी में एक ठहराव आ जाएगा। ये अधिकारी बहुत बार अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए अपने जीवन को भी जोखिम में डालते हैं। ऐसी ही एक घटना मेरठ जिले के गौरीपुर चेक पोस्ट में हुई, जहाँ सेल्स टैक्स अधिकारी और उसके साथ के कर्मचारी एक आतंकवादी हमले का शिकार हो गए। चेक पोस्ट के सेल्स टैक्स ऑफिसर को बिल्कुल सामने से गोली मारी गई थी और एक गोली उनकी आँख के नीचे से लगी थी और दूसरी तरफ से निकल गई थी। मैं तुरंत राज्य सरकार के हेलीकॉप्टर से घटनास्थल पर पहुँचा। सेल्स टैक्स अधिकारी को बेहद गंभीर अवस्था में मेरठ मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया। दो अन्य अधिकारी थे

जो मृत थे और जिनके शवों का उस दिन अंतिम संस्कार किया गया था। मैंने दाह संस्कार में भाग लिया, मैं कर्मचारियों की आक्रोशित मनोदशा को समझ सकता था पर मैंने हड़ताल पर नहीं जाने के लिए मनाया। मैंने उस अधिकारी को सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा सहायता का आश्वासन दिया जो जीवन के लिए जूझ रहा था। पहला ऑपरेशन मेरठ मेडिकल कॉलेज में ही किया गया था। चूंकि वह एक गंभीर स्थिति में था, हमें न्यूरोसर्जरी के लिए उसे नई दिल्ली के पंत अस्पताल में स्थानांतरित करने की सलाह दी गई। वह दिन छुट्टी का दिन था। मैं मेरठ मंडल के कमिश्नर के आवास पर गया, जो मेरे मित्र थे और वहाँ से हमने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री के निजी सचिव से बात की, जो हमारे कैडर के थे। उन्होंने तत्काल निर्देश दिया और पंत अस्पताल में अधिकारी को भर्ती कराया। हम उसके जीवित रहने के बारे में निश्चित नहीं थे। वह कई महीनों से कोमा में था। जब मैं लखनऊ वापस आया तो मैंने उनके स्वास्थ्य के लिए सामुदायिक प्रार्थनाएँ कीं। यह एक सप्ताह से अधिक समय तक जारी रहा। दूर से की गई प्रार्थनाओं का भी प्रभाव पड़ता है। भगवान बहुत दयालु हैं, उन्होंने हमारी सच्ची प्रार्थना सुनी। अधिकारी कोमा से बाहर आया और बच गया। यह एक बड़ा चमत्कार था। इस घटना ने मुझे एक परम शक्ति की उपस्थिति के बारे में और भी आश्वस्त कर दिया जो हर किसी का मार्गदर्शन करती है। इसने मुझे सामुदायिक प्रार्थनाओं के प्रभाव के बारे में भी आश्वस्त किया। समुदाय एक व्यक्ति की तुलना में बहुत बड़ा होता है और प्रत्येक व्यक्ति के ईमानदार प्रयास का एक अकेले व्यक्ति के प्रयास की तुलना में अधिक प्रभाव पड़ता है।

मिर्जापुर में रहने के दौरान मेरे आध्यात्मिक विकास की गहरी नींव पड़ चुकी थी। मैंने योग, अध्यात्म और धर्म पर किताबें पढ़ना शुरू किया जिसने सूक्ष्म शक्तियों के आंतरिक खेल को समझने में बहुत मदद की। जब मैं 1991 में कमिश्नर (सेल्स टैक्स) के पद में आया तो मुझे इस बात का बहुत कम अहसास था कि इस अवधि के दौरान मेरा अधिकतम आध्यात्मिक विकास होगा। यह कैसी विडंबना है कि एक विभाग जो पैसे का लेन-देन करता है, उसने मुझे अध्यात्म के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किए।

समय बीत रहा था और मेरे बाल सफेद होने लगे थे। मैंने अपने जीवन की लगभग 50-55% यात्रा कर ली थी। लेकिन मैंने अध्यात्म के क्षेत्र में क्या हासिल किया? मैंने उस समाज के लिए क्या किया जिसने मेरा इतनी सावधानी और प्यार से पालन पोषण किया? क्या समाज और राष्ट्र या मानवता के प्रति मेरी कोई

जिम्मेदारी नहीं थी? ये ऐसे सवाल थे जो मुझे परेशान करने लगे और मैं तेजी से चिंतनशील और बेचैन हो गया। मैंने प्रतिष्ठा, अधिकार, मान्यता और समृद्धि के साथ भौतिक और पारिवारिक जीवन का भरपूर आनंद लिया। मैं इस दुनिया में अपने स्वयं के प्रदर्शन से संतुष्ट नहीं था। मुझे इसके लिए किसी को दोष नहीं देना चाहिए। हम अपने संस्कारों और कर्मों के साथ इस दुनिया में आए हैं और हम उसी के अनुसार विकसित होते हैं। हालांकि सफलता महत्त्वपूर्ण है पर यही जीवन का सबकुछ नहीं है। जन्म और मृत्यु दो निश्चित बिंदु हैं। जीवन का खेल इन्हीं दो बिन्दुओं के बीच है। हर बार जीतना हमेशा महत्त्वपूर्ण नहीं होता है, इससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण यह है कि हम किस उद्देश्य और दृष्टिकोण से इसमें भाग लेते हैं।

अध्यात्म की मेरी लालसा दिन-प्रतिदिन तीव्र होती जा रही थी। मैंने पतंजलि अष्टांग योग, श्री योग वशिष्ठ, कुंडलिनी योग, सहज योग, हठ योग आदि तथा अध्यात्म पर कई अन्य पुस्तकों का अध्ययन किया। यद्यपि सैद्धांतिक रूप से ये पुस्तकें हमारे ज्ञान में सुधार कर सकते हैं, पर दिव्य बल को केवल नियमित अभ्यास, अनुशासन और प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से ही तीव्रता से महसूस किया जा सकता है। आत्मज्ञान भौतिक समृद्धि के माध्यम से या बौद्धिक गतिविधि के माध्यम से नहीं आता है। यह प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से आता है। एक व्यक्ति बहुत ज्ञानी हो सकता है लेकिन वह एक प्रबुद्ध नहीं हो सकता है। एक अनपढ़ व्यक्ति भी दिव्य के प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से एक प्रबुद्ध व्यक्ति हो सकता है।

मैंने 1991 से ध्यान करना शुरू किया जब मैं उत्तर प्रदेश में बिक्री कर आयुक्त के पद पर आया, हालांकि मैंने 1972 में मसूरी एकेडमी में डिवाइन लाइफ सोसायटी (शिवानंद आश्रम) के माध्यम से 1972 में विभिन्न आसन और प्राणायाम सीखे थे। जैसे-जैसे मैं ध्यान में आगे बढ़ता गया, आँखों के सामने एक रोशनी चमकने लगी और थोड़ी-थोड़ी देर के लिए रुकी रहने लगी। एक रात मैंने सपना देखा कि मैं एक मेले में भटक रहा था और एक त्रिशूल पकड़े हुए एक लड़के के सामने दंडवत हुआ। उस पल मैंने खुद से पूछा, ''हे भगवान, कृपया अपने आप को प्रकट करें'' और मैंने एक विशाल चमकदार रोशनी देखी। मैंने देवताओं का एक समूह भी देखा जिसमें विघ्नराज शामिल थे, उनके मस्तक के चारों ओर शानदार आभामंडल था।

एक बच्चे के रूप में मैंने रामायण को पढ़ा था और चित्रकूट में इस महाकाव्य को अभिव्यक्ति मिली, जहाँ भगवान राम, उनके भाई लक्ष्मण और पत्नी देवी सीता ने अपने वनवास (निर्वासन) के दौरान कुछ समय बिताया था। 1993 में चार बार इस पवित्र स्थान पर जाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था और मैंने कामतगिरि की परिक्रमा की थी। परिक्रमा करते हुए मैं भगवान राम, सीता माता और लक्ष्मण द्वारा सामना की गईं परिस्थितियों और कठिनाइयों का अनुमान लगा सकता था। यात्रा के क्रम में बहुत सारे मंदिर, राम-भरत मिलाप का स्थान और वह स्थान जहाँ लक्ष्मण रात में राम और सीता की रक्षा करते थे आदि देखे जा सकते हैं। मैंने गुप्त गोदावरी का भी दौरा किया जो एक गुफा से निकलती है। यह प्रकृति का चमत्कार है। गुफा की घुमावदार धाराएँ, जो एक किमी के बाद गायब हो जाती हैं, को देखना एक अनोखा अनुभव है। मैंने महान हनुमान धारा का भी दौरा किया जहाँ भगवान हनुमान के शरीर को ठंडा करने के लिए प्राकृतिक धारा उन पर गिरती है। चित्रकूट और उसके आस-पास बहुत सारे मंदिर और आश्रम हैं। यह एक खूबसूरत जगह थी और इसकी प्राकृतिक सुंदरता और शांति के कारण दिमाग पर शांति का गहरा प्रभाव पड़ता है। जितना अधिक मैंने चित्रकूट का दौरा किया, उतना ही मैं यहाँ पुनः आने के लिए बेचैन होता गया। दुर्भाग्य से, इस पवित्र स्थान के विकास की ओर बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया गया है। यहाँ अब तक जितना कुछ काम हुआ है, उसकी तुलना में और भी बहुत कुछ किए जाने की जरूरत है।

मैंने पढ़ा था, 'चित्रकूट के घाट पर, भई संतन की भीर। तुलसीदास चंदन घिसै, तिलक देत रघुबीर।' यह एक भक्ति गीत है और जब भी मैं इस गीत को सुनता हूँ, तो मेरे आंसू छलक आते हैं। मेरे मन में रामघाट और तुलसीदास की पर्ण कुटी की यात्रा करने की गहरी इच्छा विकसित हो गई। सितंबर, 1993 में मैंने चित्रकूट का दौरा किया और रामघाट और तुलसीदास की कुटी में गया। वहाँ से मैंने एक पहाड़ी पर एक पुराने शिव मंदिर का अवलोकन किया और जब मैंने इसके बारे में पूछताछ की, तो मुझे बताया गया कि वनवास के दौरान राम इस मंदिर में शिव की पूजा करते थे। यह जगह भी खस्ताहाल थी। मैंने इस मंदिर में जाने की इच्छा व्यक्त की। खड़ी पहाड़ी के दो तिहाई हिस्से का भ्रमण करने के बाद हम अपने जूते निकालने के लिए एक पेड़ के पास रुक गए। मैंने मंदिर के बरामदे में एक बीमार व्यक्ति को देखा। हम मंदिर की सीढ़ियों पर चढ़ गए और भगवान शिव के दर्शन किए। हम वापस आए और अपने जूते पहन रहे थे

स्वामी रामजी के साथ सपरिवार उनके ऋषिकेश आश्रम में

जब मैंने उसी व्यक्ति को बरामदे पर फिर से देखा। वह नीचे उतरा और कुछ देर के लिए मेरे पास आकर खड़ा हो गया, मैंने उसे गौर से देखा और एक अजीब सा एहसास मुझ पर हावी हो गया–'प्रशान्त, वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है वह भेष में भगवान का एक महान दूत है', एक आंतरिक आवाज ने कहा। मैं तुरंत उसकी ओर बढ़ा और सीढ़ी उतरने में उसकी मदद की और फिर उसके सामने झुक गया। उसने मुझे आशीर्वाद दिया और गायब हो गया। मैं घाट के आस–पास भ्रमण करता रहा और दस मिनट के बाद मैंने उसे खोजने की कोशिश की लेकिन वह व्यक्ति मुझे नहीं मिला। मुझे नहीं पता था कि वह कौन था, लेकिन कहीं न कहीं मुझे यह महसूस हुआ कि वह भेष बदले हुए एक महान आत्मा थी। अभी भी जब मैं इस घटना को याद करता हूँ तो मुझे एक रोमांच का अनुभव होता है।

मैं आध्यात्मिकता की ओर बहुत ज्यादा आकर्षित हो रहा था, प्राय: वैराग्य यानि त्याग की भावना मुझ पर हावी हो जाती थी। ऐसे क्षणों में मुझे ऐसा लगता जैसे यह परिवार को उजाड़ने की भाँति हो। इस भौतिक दुनिया में हर जगह का वातावरण इतना भ्रष्ट है कि मैं अक्सर पीड़ा महसूस करता था। मुझे लगा कि मैं विक्षिप्त हो रहा हूँ और अक्सर मुझे अपने सिर के पीछे 'ॐ नम: शिवाय' का जाप सुनाई देता था। मैं डर गया और केजी मेडिकल कॉलेज में एक मनोचिकित्सक और विशेषज्ञों से परामर्श किया। यहाँ तक कि एक कैट स्कैन

सहित पूरी तरह से जाँच की गई लेकिन रिपोर्ट में कुछ भी प्रतिकूल नहीं मिला। मनोचिकित्सक ने मुझे जीवन को थोड़ी कम गंभीरता से लेने की सलाह दी। मुझे राहत मिली, लेकिन दूसरी ओर इसने मेरे आध्यात्मिक विश्वास को और भी मजबूत किया। मैंने आध्यात्मिक पुस्तकों को पढ़ना शुरू किया और विशेष रूप से स्वामी राम द्वारा लिखित किताब 'लिविंग विथ हिमालयन मास्टर्स' पुस्तक से प्रभावित हुआ। मुझे मार्च 1994 में स्वामी राम से उनके ऋषिकेश आश्रम में मिलने का सौभाग्य मिला। वे एक महान विद्वान और आध्यात्मिक गुरु थे, मैं इन उद्दात व्यक्तित्व से मिलने के लिए रोमांचित था। उन्होंने कहा, ''प्रशांत, आप मुझे बहुत प्रिय हैं'' और मुझे अपनी कुछ आध्यात्मिक पुस्तकें भेंट कीं।

जब मैं सेल्स टैक्स विभाग में था, अन्य अधिकारियों के साथ मैंने नीलकंठ महादेव तक 10 किमी की दूरी की ट्रेकिंग की थी। हमने चार घंटे में दूरी तय की और आनंद हासिल किया। भगवान शिव के दर्शन करते हुए मैंने एक जबरदस्त कंपन महसूस किया। यह एक पुराने पेड़ (पंचतरणी) के नीचे एक प्राचीन मंदिर था और माना जाता था कि इसकी खोज या स्थापना आदि शंकर ने की थी। मैं उस जगह की प्राकृतिक सुंदरता और कंपन से इतना प्रभावित हुआ कि मैंने यहाँ की तीन बार यात्रा की। इसी तरह जब भी मैं हरिद्वार जाता था, मैं चंडी देवी और मनसादेवी के दर्शन करता था जो महान शक्तिपीठ हैं। इस ऊँचाई से हरिद्वार और गंगा की सात धाराएँ देखने को मिलती हैं। मैंने मुक्तेश्वर का दौरा किया, जहाँ मैं एक मौनी स्वामीजी से मिला जिन्होंने भौतिकी में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की थी। नैनीताल में नीम करोली बाबा द्वारा स्थापित हनुमान मंदिर, हेराखन शिव मंदिर, कांची आश्रम, घोड़ाखाल गोला मंदिर, चितई मंदिर, बैजनाथ मंदिर जहाँ पार्वती की सुंदर मूर्ति है, और जागेश्वर जहाँ 124 मंदिरों का परिसर है, आदि स्थानों की भी यात्रा की। इन सभी स्थानों की यात्राओं का मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा और इन यात्राओं ने आध्यात्मिक अनुभव की मेरी लालसा को और बढ़ा दिया।

जब मैंने आयुक्त, बिक्री कर, का पदभार ग्रहण किया, एक उपायुक्त, श्री वी.के. चंदोला ने मुझे परमहंस योगानंद की 'योगी की आत्मकथा', एक सारगर्भित आध्यात्मिक किताब भेंट की जिसमें हेड़ाखान बाबा और उनकी तपस्थली का विशद वर्णन था। ऐसा माना जाता है कि हेड़ाखान बाबा महा अवतार बाबा का अवतार थे। पुस्तक इतनी रोमांचक थी कि मैंने काठगोदाम से 39 किमी की दूरी पर स्थित हेड़ाखान की यात्रा करने की इच्छा व्यक्त की। जब मैंने अपने

उपायुक्त, नैनीताल श्री जंगपाणी से इस मामले पर बात की, तो उन्होंने मुझे मना कर दिया क्योंकि इस जंगल क्षेत्र में आतंकवादियों की उपस्थिति की संभावना थी। एक साल बाद, जब मैंने फिर से उस जगह पर जाने की इच्छा जताई, जिसमें उन्होंने मुझसे कहा, ''सर, स्थिति थोड़ी ठीक हो गई है, आप मंदिर जा सकते हैं, लेकिन मैं आपको सलाह दूँगा कि आप उस क्षेत्र में एक रात रुकने से बचें।'' मैंने अपनी पत्नी और बच्चों के साथ हेड़ाखान की यात्रा की योजना बनाई। पहाड़ी इलाकों की वजह से काठगोदाम से हम जीप से गए थे। दरअसल हमने नदी तल की सड़क पर काफी दूरी तय की और उस स्थान तक पहुँचने के लिए आखिरी कुछ किलोमीटर तक पैदल चले। शाम हो गयी। हमने हेड़ाखान मंदिर के शिवलिंग की पूजा की और जब मैं पूजा करके वापस आया तो मुझे मंदिर के परिसर में एक बूढ़ा व्यक्ति खड़ा मिला। मैंने उसके चरण स्पर्श किए। उन्होंने पूछा कि क्या मैं एक पर्यटक के रूप में यहाँ आया था। मैंने उन्हें बताया कि इस पवित्र स्थान के बारे में मैंने पढ़ा था और आध्यात्मिक उद्देश्यों से यहाँ आया था। फकीरानंदजी नाम के इस व्यक्ति ने मुझे आशीर्वाद दिया और कुछ साहित्य मुझे प्रदान किया। प्रसाद पाने के बाद हम वापस काठगोदाम पहुँचे।

हेड़ाखान एक सुंदर जगह है जो गोला नदी के तट पर स्थित है जिसे कुमाऊँ की पहाड़ियों की गोदावरी माना जाता है। यहाँ मुश्किल से कुछ झोपड़ियाँ हैं और पहाड़ी क्षेत्र सुंदर हिमालय के जंगलों से घिरा हुआ है, उनकी मनोरम सुंदरता और गोला नदी की मनमोहक आवाज इस स्थान की सुंदरता को और बढ़ा देती है। यह अप्रैल, 1994 का समय था। इस क्षेत्र में आतंकवादी खतरे काफी हद तक कम हो गए थे। मैंने उपायुक्त, नैनीताल से बात की और एक रात के लिए हेड़ाखान निरीक्षण बंगले में रहने की इच्छा व्यक्त की। वह आसानी से सहमत हो गए क्योंकि स्थिति में व्यापक सुधार हुआ था। 3 अप्रैल, 1994 को मैं अपनी पत्नी के साथ बरेली और काठगोदाम के रास्ते लखनऊ से हेड़ाखान के लिए रवाना हुआ। यह एक थका देने वाला सफर था और हम 2 किमी की पैदल यात्रा करने के बाद लगभग 7.30 बजे हेड़ाखान निरीक्षण बंगला पहुँचे। यह गोला के किनारे हिमालय के जंगल के बीच स्थित एक सुंदर निरीक्षण बंगला था। शाम सुखद थी और जल्द ही रात अपनी छटा बिखेर रही थी। कमरे में बाबा हेड़ाखान की एक तस्वीर थी। मैंने उसके सामने झुककर उनके आशीर्वाद के लिए प्रार्थना की। हमने रात और अगली सुबह आराम किया। मैं नदी के घुमावदार रास्ते पर टहलता रहा, इसकी संगीतमय ध्वनि का आनंद लेता रहा। एक चट्टान पर बैठ

कर कुछ देर तक ध्यान किया और वापस निरीक्षण बंगले में आ गया। फिर मैं, मेरे उप आयुक्त (कार्यकारी) श्री जंगपाणी और एसटीओ श्री फलतियाल, हिमालय नदी के ठंडे जल में स्नान करने चले गए। हमने स्नान का बहुत आनंद लिया। मैं निरीक्षण बंगले में वापस आया और हेड़ाखान 'शिवलिंग' के दर्शन के लिए तैयार हो गया। यह एक सुंदर आश्रम था जिसमें आम तौर पर विदेशी लोग आते थे जो शांति और अध्यात्म के लिए आते थे। वास्तव में, यूरोपीय महिलाओं को साड़ी पहनकर भगवान शिव के मंत्र का जाप हिन्दी में करते हुए देखना एक अनूठा अनुभव था।

मेरी पत्नी और मैंने पूरी श्रद्धा के साथ शिवलिंग की पूजा की। जब मैं मंदिर से बाहर आया, तो वही वृद्ध फकीरानंदजी परिसर में खड़े थे। जब मैं उनसे दूसरी बार मिला तो उन्होंने मुझसे कहा, ''मैं पिछले एक साल से आपका इंतजार कर रहा था।'' मैंने जवाब दिया, ''फकीरानंदजी, मैं एक पारिवारिक व्यक्ति हूँ, इसलिए मैं यहाँ बार-बार नहीं आ सकता। जिस पल मुझे मौका मिला, मैं यहाँ आ गया।'' फिर उन्होंने पूछा ''क्या आप सात दिनों तक यहाँ रह सकते हैं?'' मैंने जवाब दिया, ''नहीं''; उन्होंने पूछा, ''तीन दिन नहीं?'' मैंने जवाब दिया, ''नहीं।'' फिर उन्होंने कहा, ''बेटे, कृपया कम से कम एक दिन के लिए यहाँ रुक जाओ।'' मैंने इस बात पर हामी भर दी क्योंकि मेरे दौरे के कार्यक्रम में ऐसा करना संभव था। वे मुझे और मेरी पत्नी को अपनी कुटिया में ले गए। उन्होंने पूछा, ''सुबह किस तरह की पूजा और मंत्र का जप करते हो?'' मैंने उत्तर दिया, ''मूल रूप से मैं भगवान शिव का भक्त हूँ लेकिन मैं विभिन्न देवताओं के कई मंत्रों का जाप

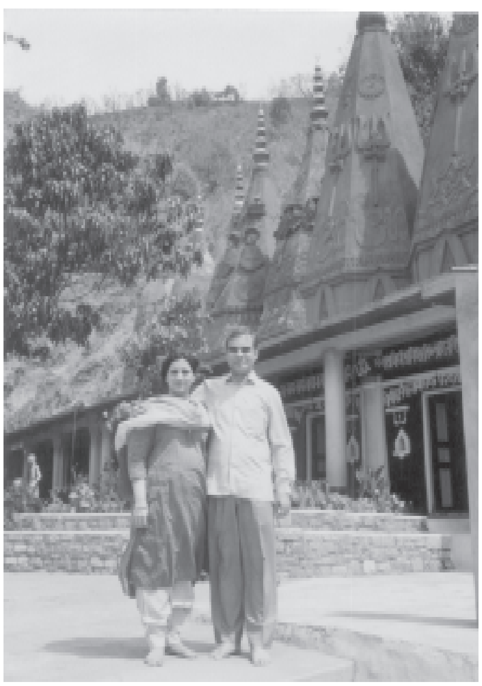

कैंची मन्दिर (नैनीताल के समीप) पर पत्नी के साथ

करता हूँ।'' फिर एक दिलचस्प तरीके से फकीरानंदजी ने कहा, ''मुझे आशा है कि आपने विज्ञान में दबाव के बारे में पढ़ा होगा। जितना अधिक क्षेत्रफल होगा, उतना ही कम दबाव होगा। चूंकि आप इतने सारे मंत्रों का जाप कर रहे हैं और इतने सारे देवताओं की पूजा करते हैं, तो आपकी आध्यात्मिक ऊर्जा एक बड़े क्षेत्र पर एक विस्तृत कैनवास में बिखर जाती है। परिणामस्वरूप आप अपने प्रयासों में एक गहन प्रभाव नहीं डाल रहे हैं।'' उन्होंने मुझे एक ईश्वर पर ध्यान केंद्रित करने और उस देवता के केवल एक मंत्र का जप करने की सलाह दी, ताकि इसका सही प्रभाव पड़े। उन्होंने आगे पूछा कि क्या मैं उपवास करता हूँ या नहीं। जब मैंने हाँ में उत्तर दिया, तो उन्होंने मुझे 'शवासन' में लेटने और इष्टदेव पर तीसरे नेत्र में ध्यान केंद्रित करने, यानि शिव पर मंत्रों के मानसिक पाठ के ध्यान केन्द्रित करने की सलाह दी। उन्होंने मेरी पत्नी को मेरे दाहिने पैर के पास बैठने को कहा। फिर वह एक मोर पंखों की एक झाड़ू लेकर आए और मंत्रों का उच्चारण करते हुए, लगभग एक घंटे तक मेरे शरीर के विभिन्न हिस्सों पर उसे फेरना शुरू कर दिया। अचानक मुझे रीढ़ के निचले हिस्से में फड़कन महसूस हुई। मेरे शरीर की मांसपेशियाँ लकड़ी के लठ्ठ की तरह अकड़ गईं और मैं बहुत दर्द महसूस करने लगा, जो मैंने अपने जीवन में कभी अनुभव नहीं किया था। जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि कोई गरम चीज ऊपर की ओर बढ़ रही थी। कुछ मिनटों के बाद, मेरा पूरा शरीर कांपने लगा और मैं अपने शरीर में एक मजबूत धारा को महसूस कर सकता था। यह मेरे आज्ञा चक्र तक आया और इसके बाद मैंने आकाश में प्रकाश का एक विशाल विस्तार देखा। एक घंटे के बाद मैं गहरी नींद से उठा और मुझे थकावट महसूस हो रही थी। फकीरानंदजी ने मुझे गर्म दूध का गिलास दिया। जब मैंने अपनी पत्नी को देखा, तो बेकाबू आँसू मेरे गालों पर उतर आए। फकीरानंदजी ने हस्तक्षेप किया और कहा, ''मेरे प्यारे बेटे, आपके पास जबरदस्त आध्यात्मिक ऊर्जा है लेकिन मार्ग अवरुद्ध था। मैंने रुकावट हटा दी है। अब हर दिन ध्यान लगाकर इसे आगे ले जाना आपकी जिम्मेदारी है।''

यह जीवन का एक अनोखा अनुभव था एवं मैं पूरी तरह से चकित हो गया था। मेरा दिमाग शून्य था। मैं अपनी मानसिक स्थिति को लेकर आशंकित था। संभवत: मेरा शरीर इतना शुद्ध नहीं था कि वह प्रबल मानसिक ऊर्जा का सामना कर सके। मैंने फकीरानंदजी को धन्यवाद दिया और उनके चरण स्पर्श किए। मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझे हेड़ाखान छोड़ना पड़ा क्योंकि मेरे अल्मोड़ा और बेरीनाग में

कुछ अन्य काम थे। अल्मोड़ा के रास्ते में मैंने नीम करोली बाबा द्वारा स्थापित कैंची मंदिर का दौरा किया। यह एक सुंदर आश्रम था जो नैनीताल से लगभग 20 किमी दूर एक धारा के पास स्थित था। इस मंदिर में बड़ी संख्या में देवी-देवता थे। बाबा नीम करोली की मूर्ति के सामने ध्यान केंद्रित करते समय, मुझे एक अजीब अनुभव हुआ। मैं महसूस कर सकता था कि मैं आकाश से किरणों की एक लहर प्राप्त कर रहा था जो मेरे सिर में प्रक्षेपित हो रहे थे। मैं रोमांचित था।

हम अल्मोड़ा के लिए रवाना हुए और दोपहर 2.30 बजे तक पहुँच गए। दोपहर के भोजन और विश्राम के बाद हम बेरीनाग के लिए रवाना हुए। रास्ते में हमने गोला देव के प्रसिद्ध चितई मंदिर का दौरा किया। इस मंदिर में कई भक्तों के पत्र उनकी इच्छाओं की पूर्ति के लिए दीवार पर लटकाए गए थे। मंदिर के चारों ओर घंटियों की एक कभी न खत्म होने वाली श्रृंखला थी। हम लगभग 8 बजे बेरीनाग पहुँचे। यह एक थकाऊ यात्रा थी।

बेरीनाग में सुबह बहुत मनोहारी थी। हिमालय की ठंडी हवा, सूर्य की किरणों के प्रतिबिंब में चमकती हुई बर्फ से ढकी चोटियों की लंबी श्रृंखला और पक्षियों के सुरीले कलरव वातावरण को और अधिक शांत और मादक बना रहे थे। बेरीनाग से चकोरघाट तक की सुबह की ड्राइव ने हमें तरोताजा कर दिया था। चकोरघाट से आप हिमालय की चोटियों की पूरी शृंखला देख सकते हैं। हमने 19वीं सदी की शुरुआत में अंग्रेजों द्वारा स्थापित बेरी टी गार्डन का दौरा किया। ब्रिटिश राज के दौरान बेरीनाग की चाय इंग्लैंड को निर्यात की जाती थी। यह एक विशिष्ट प्रकार की मीठी गंध थी। वहाँ एक घंटा बिताकर हम बेरीनाग वापस आ गए। हमने कुमाऊँनी शैली का नाश्ता किया जो स्वादिष्ट था। मैं उस प्यार, स्नेह और देखभाल को नहीं भूल सकता, जिसके साथ एक स्थानीय निवासी श्री वर्मा ने हमारे इस शानदार नाश्ते का इंतजाम किया था।

हम 6 अप्रैल को सुबह 10.30 बजे पाताल भुवनेश्वर के लिए रवाना हुए। बेरीनाग से 25 किमी की दूरी पर यह स्थान स्थित था। हमारी कार हमें पास के गाँव तक ले गई। आखिरी लगभग एक किमी पैदल चलना पड़ा। इस गुफा को देखने के लिए मैं काफी उत्साहित था। 1993 में मैंने पाताल भुवनेश्वर के बारे में एक लेख पढ़ा था। उस दिन के बाद से मैंने इसे देखने का सपना सँजो लिया था। अब सपना सच हो गया था। गुफा के मुहाने पर स्कंद पुराण का एक श्लोक अंकित किया गया था। इसमें कहा गया था कि पाताल भुवनेश्वर को उस समय

तक मनुष्यों के लिए निषिद्ध कर दिया गया था जब तक कि दक्षिण से एक ऋषि आकर एक शिवलिंग स्थापित करेगा। वास्तव में यह व्यापक रूप से माना जाता था कि आदि शंकराचार्य ने इस गुफा का दौरा किया और शिवलिंग स्थापित किया।

ऐसी अद्‌भुत गुफा की यात्रा करना एक अनोखा अनुभव था। यहाँ प्रवेश द्वार बहुत छोटा है और एक बार में एक व्यक्ति रेंगकर अंदर जा सकता है। 100 फीट से अधिक रेंगने के बाद एक तरंगमय विशाल क्षेत्र तक पहुँचा जा सकता है जो सैकड़ों लोगों को समायोजित कर सकता है। यहाँ प्राकृतिक रूप से बनी हुई एक विशाल साँप जैसी छवि की एक सुंदर छाप देखी जा सकती है। स्थानीय लोग इसे शेष नाग कहते हैं। एक गाय के थन की छाप से शिव लिंग पर सफेद रंग का पानी भी गिरता हुआ दिखाई देता है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश पर भी क्रमिक रूप से गुफा की छत से पानी गिरता है। 1000 फुट के हाथी 'ऐरावत' की मूर्ति भी यहाँ है। कुत्ते की आकृति में भैरव की लंबी जीभ भी है। इस तरह पौराणिक कथाओं, संस्कृति और धर्म से जुड़ी कई अन्य बातें यहाँ हैं।

एक अप्रत्याशित अनुभव था। गुफा में चित्रण के धार्मिक पहलू का विवाद हो सकता है। लेकिन फिर भी, यह प्रकृति की एक अद्‌भुत वास्तुकला है। मैं सर्वशक्तिमान प्राकृतिक शक्ति के सामने विस्मय और श्रद्धा से अवाक रह गया। यह गुफा आध्यात्मिक तरंगों से कंपित हो रही थी। चित्रकूट की गुप्त गोदावरी की तुलना में यह गुफा ज्यादा सुंदर है।

गुफा का दौरा करने के बाद हम गंगोलीहाट के महाकाली मंदिर गए। इसे कुमाऊँ रेजिमेंट का पीठासीन देवता कहा जाता है। वहाँ दोपहर का भोजन करने के बाद हम रात में पिथौरागढ़ पहुँचे। पिथौरागढ़ एक छोटा और खूबसूरत हिल स्टेशन है। यह नैनीताल, देहरादून और मसूरी जैसे कई हिल स्टेशनों की तुलना में बहुत अधिक सुंदर है। हम 7 अप्रैल को पिथौरागढ़ से 3.30 बजे रवाना हुए और शाम 6 बजे तक लोहाघाट पहुँच गए। हम घने देवदार के जंगलों में स्थित निरीक्षण बंगले में रुके थे। अगली सुबह मैं तरोताजा महसूस करते हुए जल्दी उठ गया। मैं निरीक्षण बंगले की तरफ से बहने वाली धारा के पास गया और एक सीमेंट की बेंच पर बैठ गया। सुबह की हवा इतनी मोहक थी कि मेरी आँखें अपने आप बंद हो गईं और मैं तुरंत गहरे ध्यान में चला गया। कुछ ही मिनटों के बाद मैं अपने शरीर में जबरदस्त कंपन और मानसिक ऊर्जा की दौड़ को महसूस कर सकता था। मैं रोमांचित हो गया और तुरंत अपनी पत्नी के पास

पहुँचा और उससे कहा कि मैं कुछ हद तक ऊर्जा को जागृत कर सकता हूँ। मैं फकीरानंदजी का बहुत आभारी था जिनके आशीर्वाद से मैं इसे हासिल कर पाया।

हम मायावती आश्रम के लिए रवाना हुए जो लोहाघाट से 15 किमी की दूरी पर था। आश्रम की स्थापना स्वामी विवेकानंद ने 1899 में की थी और वे जनवरी, 1901 में एक पखवाड़े तक यहाँ रहे। मैंने उस स्थान का दौरा किया, जहाँ स्वामीजी ध्यान के लिए बैठते थे। उस अनुभव ने मेरी आँखों में आँसू ला दिए। यह एक सुंदर आश्रम था जहाँ से हिमालय की बर्फ की चोटियाँ देखी जा सकती थीं। मैंने स्वामीजी और रामकृष्ण परमहंस पर कुछ पुस्तकें खरीदीं। कुछ समय बिताने के बाद हम लोहाघाट स्थित निरीक्षण बंगले में आए। नाश्ते के बाद हम चंपावत के रास्ते बनबसा के लिए चल पड़े और दोपहर 1.30 बजे वहाँ पहुँचे। यहाँ का निरीक्षण बंगला बहुत सारे फूलों के पौधों और पेड़ों के कारण बहुत सुंदर था। अगली सुबह 9 अप्रैल 1994 को मैं एक पेड़ के नीचे ध्यान के लिए बैठा और 20 मिनट बाद मेरा शरीर कांपने लगा। मैं वहाँ से संतुष्ट होकर वापस आया, कुछ देर टहला, नाश्ता किया और बरेली के लिए निकल पड़ा और दोपहर तक वहाँ पहुँच गया। उसी दोपहर हम लखनऊ के लिए निकल गए।

लखनऊ लौटने के बाद मैं कुछ दिन के लिए निष्क्रिय रहा। जब भी मैंने इस जागरण का अनुभव किया, तो मुझे घबराहट महसूस हुई और मैं इस मानसिक ऊर्जा से निपटने की अपनी क्षमता के बारे में आशंकित था और मुझे सामान्य होने में कुछ समय लगा। ऊर्जा को जगाने के अनूठे अनुभव से मैं इतना भावविभोर था कि अपने अस्तित्व को भूल गया। मुझे भगवान पर पूरा भरोसा था कि वह मुझे किसी भी संकट से बचाएगें। प्रारंभ में मुझे इसे जागृत करने में 30 मिनट का समय लग रहा था, लेकिन बाद में इसे सहजता से करने लगा। एक बार देर रात मैंने ध्यान करना शुरू किया। मुझे प्रकाश की चमक और ईश्वर की छवियों का अनुभव हुआ। यह अवस्था लगभग चार दिनों तक जारी रही। मुझे लगा कि मैं अपने विशुद्धि चक्र (कंठ) तक ऊर्जा का प्रवाह कर सकता हूँ, लेकिन इसके आगे नहीं। फिर भी अगर इसे ठीक से नहीं किया तो इसके नुकसान के बारे में मैं आशंकित रहता था। मेरा अनुभव यह था कि जब मूलाधार चक्र में ऊर्जा जागृत होती है तो शरीर विशेष रूप से कमर के नीचे की ओर, जोर से कांपने लगता है। इसके बाद यह धीरे-धीरे ऊपर की ओर बढ़ता है। मैं अंदर एक रेंगने वाली सनसनी महसूस करता था। मेरे लिए सबसे आरामदायक स्थिति शवासन की थी। मैं आनंदित महसूस करता था और अपनी रीढ़ के साथ झुनझुनी सनसनी महसूस

कर सकता था।

मैं अपने अभ्यास से इतना अधिक भाव विभोर था कि रात 11 बजे यह ऊर्जा अपने आप जागृत होती और मुझे परेशान करती थी। इडा और पिंगला के अद्‌भुत नृत्य के अलावा, मैं अपने पूरे शरीर के माध्यम से गर्म ऊर्जा को महसूस करता था। रात में दो अलग-अलग मौकों पर, मैंने इत्र और चंदन की खुशबू भी महसूस की। प्रकाश बाईं ओर से मेरे सिर में प्रवेश करता था। मुझे देवी-देवताओं के दर्शन होते थे। कभी-कभी दिन के समय में भी मैं अपने शरीर के विभिन्न हिस्सों में चुभन और गर्मी महसूस करता था। मेरी आँखों की पुतलियाँ ऊपर की ओर लुढ़कने लगतीं। 14 अगस्त, 1994 की रात मैं महसूस कर रहा था कि ऊर्जा मेरे मस्तिष्क में दौड़ रही है। मुझे अपने मुँह के चौड़ा होने और अपनी जीभ के फैलने का अजीब अनुभव भी होता था। दहाड़ती हुई आवाज भी साथ-साथ निकलती थी। मेरे मनोभाव तुरंत बदलते थे, पहले उदासी आती, फिर आनंद और फिर मैं भावुक हो जाता था। यह क्रिया कुछ घंटों तक जारी रहती। क्रियाओं के अंत में, मैं एक छोटे से नीले रंग के बिंदु को करीब से देख सकता था। नीला बिन्दु दिखाई देता, फिर गायब हो जाता और फिर से दिखाई देने लगता। मुझे यह नहीं पता कि मेरे साथ क्या हो रहा था।

मैं कायापलट के एक दौर से गुजर रहा था, कई बार अस्थायी उल्लास, अवसाद, क्रोध और हताशा आदि का अनुभव होता। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, मैं अपने शरीर में ऊर्जा की उपस्थिति को महसूस करता, अलग-अलग समय में शरीर के अलग-अलग हिस्सों में गर्माहट का अहसास होता और यह गर्माहट आम तौर पर बढ़ती जा रही थी। शुरू में पीठ, कमर, हाथ आदि कांपते थे। फिर मैं अपने सीने, गले और सिर में कंपकंपी महसूस कर सकता था। मैं हर दिन बेचैन हो रहा था। मैं चाहूँ या नहीं, ऊर्जा मेरे साथ स्वचालित रूप से कार्य कर रही थी, खासकर सोने के दौरान और और सुबह उठने के समय। लंबे समय तक ध्यान करने की वजह से, मुझे अपने परिवारिक और सरकारी कार्यों में अरुचि होने लगी। यह असहनीय होता जा रहा था। इस तरह की स्थिति मुझे मुसीबत में डाल सकती थी, लेकिन इसी दौरान रविवार की सुबह मेरे घर पर एक संत व्यक्ति का आगमन हुआ। उन्होंने मेरे स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की और मैंने उन्हें बताया कि मैं अपने ध्यान के कारण बुरे दौर से गुजर रहा था। उन्होंने हँसकर पूछा, आप कितने घंटे ध्यान में व्यतीत कर रहे हैं? मैंने उत्तर दिया, ''स्वामीजी, हर दिन मैं लगभग चार घंटे ध्यान करता हूँ।'' उन्होंने कहा, ''आप गृहस्थ आश्रम

में हैं, संन्यासी नहीं हैं। एक परिवारिक व्यक्ति के लिए एक बार में आधे घंटे से अधिक ध्यान करना वांछनीय नहीं है। यदि आप सुबह शाम आधे घंटे ध्यान का अभ्यास करेगें तो मुझे यकीन है कि आपके मन में स्थिरता आएगी।'' उन्होंने मुझे 'चित्तशक्ति विलास' नामक पुस्तक दी और मुझे इसका अध्ययन करने की सलाह दी।

मुझे 'एक योगी की आत्मकथा' 'लिविंग विथ हिमालयन मास्टर्स', 'द इनर गवर्नमेंट ऑफ द वर्ल्ड', 'लाइट एंड फायर', 'रियलिटी ऑन द डॉन', 'कुंडलिनी योग', 'हठ योग', 'सेलेस्टाइन प्रोफेसी', स्वामी विवेकानंद पर किताबें, रामकृष्ण परमहंस, श्री अरबिंदो और ऐसी अन्य पुस्तकों को पढ़ने में बहुत आनंद आता था। अपने करियर के दौरान मैंने ऐसी दुर्लभ पुस्तकों से अपनी खुद की एक लाइब्रेरी बनाने का प्रयास किया है। इन किताबों पर बस नजर डालने भर से एक खुशी का एहसास होता है। 2 मई 1994 को, मैंने लोधेश्वर महादेव मंदिर का दौरा किया। यह कहा जाता था कि महाराजा युधिष्ठिर ने अज्ञातवास के दौरान यहाँ शिवलिंग की पूजा की थी। हम कुरुक्षेत्र आश्रम भी गए जहाँ पांडवों ने युद्ध के बाद यज्ञ किया था। वहाँ से हम बाराबंकी में पारिजात के पेड़ को देखने गए। मैंने इस पेड़ के बारे में पढ़ा था और किंवदंती के अनुसार, यह वृक्ष समुद्र के मंथन से निकला था और द्वापर युग के दौरान श्रीकृष्ण इसे नंदन कानन से यहाँ लाए थे। 50 फीट व्यास वाले इस विशाल वृक्ष को देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। यह अगस्त-सितंबर के दौरान फूलता है और प्रत्येक फूल का वजन लगभग 250 ग्राम होता है। जब यह फूलता है, तो यह सफेद होता है, लेकिन सूख जाने पर सुनहरा हो जाता है। किवदंती के अनुसार, माँ कुंती इस फूल से कुन्तेश्वर महादेव की पूजा करती थीं। गीता में 'फूलों में मैं पारिजात हूँ' के रूप में प्रशंसा की गई है। मैंने पेड़ की पूजा की और पवित्र वृक्ष के तने को छूकर आनन्द का अनुभव किया। यह कहा जाता है कि पेड़ अद्वितीय है और यह प्रजाति देश के किसी अन्य हिस्से में नहीं पाई जाती है। जहाँ तक मुझे याद है, सुल्तानपुर में एक ऐसा पेड़ है जो बहुत पुराना है। हमने देवा शरीफ के खुबसूरत परिसर का भी दौरा किया जो मुस्लिम-हिंदू एकता का प्रतीक है।

मेरा आध्यात्मिक आग्रह दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। मैं हिमालय पर मोहित था। मैं इसके सौन्दर्य और यहाँ से जुड़ी किंवदंतियों से पूरी तरह से मंत्रमुग्ध था। सभी पवित्र स्थानों में श्री केदार खण्ड को देव भूमि (देवताओं की भूमि) के रूप में जाना जाता है। यह स्थान पंच केदार से घिरा हुआ है जिसमें

सपरिवार केदार-बद्रीनाथ की यात्रा पर

बद्रीनाथ धाम भी शामिल है। इस क्षेत्र को शिव भवन के रूप में भी जाना जाता है। महाभारत के अनुसार, जब महान युद्ध समाप्त हो गया और पांडवों को हस्तिनापुर का सिंहासन वापस मिला तो ऋषि वेद व्यास ने उन्हें भगवान शिव के दर्शन पाने के लिए केदार खंड जाने की सलाह दी। यह दर्शन उन्हें अपने पूर्वजों और परिवार के सदस्यों को मारने के पापों से छुटकारा पाने और इस प्रकार मोक्ष प्राप्त करने के लिए करना था।

तदनुसार वे सभी केदार खंड के लिए निकले। श्री केदारनाथ में भगवान शिव पवित्र मंदाकिनी नदी के पास महेंद्र पर्वत के नीचे बैठकर ध्यान करते थे। जैसे ही पांडव वहाँ पहुँचे, भगवान शिव अपने शरीर को भूमि में छिपा कर वहाँ से अंतर्ध्यान हो गए। उनके शरीर के अंग पाँच अलग-अलग स्थानों पर दिखाई दिए, केदारनाथ में उनके नितंब और पीठ दिखाई दिए, मदमहेश्वरनाथ में उनकी नाभि दिखाई दी, वहीं तुंगनाथ में उनकी छाती और हाथ दिखाई दिए। रुद्रनाथ में उनका सिर दिखाई दिया और कल्पेश्वरनाथ में उनकी जटाएँ दिखाई दी। ये सभी अंग पंच केदार लिंगों के रूप में दिखाई दिए। ये बहुत पवित्र हैं और पंच केदार के

इस क्षेत्र को शिव भवन के रूप में भी जाना जाता है। व्यास जी के अनुसार, जो प्रातः काल इन पाँच तीर्थस्थलों का स्मरण करता है, उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और उसे तुरंत मोक्ष मिल जाता है।

पूरा केदार मंडल श्री शिव का अलौकिक प्रासाद है और यह उनकी ईश्वरीय क्रीड़ा का क्षेत्र है। गंगा की पाँच पवित्र धाराएँ, केदारनाथ के पवित्र क्षेत्र में महेंद्र पर्वत, उमलदा सागर और वासुकीताल से निकलती हैं और ऐसा लगता है मानो भगवान केदारेश्वर के पवित्र स्नान के लिए ये धाराएँ उनकी जटाओं में समाहित हो जाती हैं। इन धाराओं को मधु गंगा, खीर गंगा, स्वर्गद्वार, मंदाकिनी और केदार गंगा के नाम से जाना जाता है। केदारनाथ, मंदाकिनी के तट पर हिमालय के ऊँचे सहयाद्रि शिखर की गोद में स्थित है, जहाँ ऋषियों, सिद्धों, इंद्र, देवताओं, राक्षसों और यक्षों द्वारा निरंतर भगवान शिव की पूजा की जाती है।

मैंने 21 मई से 30 मई 1994 के बीच केदार नाथ, बद्रीनाथ और तुंग नाथ की स्मरणीय यात्रा की थी। केदारनाथ के रास्ते में हम सबसे पहले शिवानंद आश्रम में रुके थे। दिव्य जीवन सोसायटी के स्वामी प्रेमानंदजी और स्वामी राम का आशीर्वाद लेने के बाद, हम 23 मई की सुबह सड़क मार्ग से गुप्त काशी के लिए रवाना हुए। श्री एन सी शर्मा और श्री सी एस सेमवाल हमारे साथ थे। इन सभी यात्राओं में ये दोनों अधिकारी मेरे आध्यात्मिक साथी रहे हैं। रास्ते में हमने वशिष्ठ गुफा और लछमोली के स्वामी अद्वैतानंदजी के सास्वत धाम का दौरा किया और शाम तक हम गुप्त काशी पहुँच गए। यह एक खूबसूरत जगह थी। मंदाकिनी अपने निर्मल-स्वच्छ जल और संगीतमयता के साथ पहाड़ पर बह रही थी। हम पीडब्ल्यूडी बंगले पर रुके थे, बहुत बारिश हो रही थी। सरिता बीमार हो गई, उसे रात में कई बार उल्टी हुई और हमने सोचा कि अगली सुबह हम केदारनाथ नहीं जा पाएँगे। हमने प्रार्थना की और वह अगली सुबह बिलकुल ठीक हो गई और हम अपनी यात्रा पुनः शुरू करने के लिए तैयार थे।

केदारनाथ की यात्रा गौरीकुंड से शुरू हुई। यह लगभग 15 कि.मी. की यात्रा थी। हमने नुकीले डंडे, प्लास्टिक कवर, पानी की बोतलें और एक प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स के साथ धीरे-धीरे चलना शुरू किया। यह घने जंगल और नदी वाला एक सुंदर स्थल था। हमने दोपहर 3.00 बजे रामबाड़ा में दोपहर का भोजन किया। हम इतने भूखे थे कि खाना अमृत की तरह प्रतीत हो रहा था। रामबाड़ा से यह चढ़ाई कठिन हो गई। हम थक गए थे लेकिन आगे की ओर बढ़ते रहे। शाम ढल रही थी और हम अभी भी लक्ष्य से 2 किमी की दूरी पर थे। केदारनाथ

मंदिर के दर्शन मात्र से ही मैं अभिभूत हो गया और कुछ मिनटों के लिए सिसकने लगा। मैंने खुद से कहा, ''प्रशांत, तुम जिसके लिए आए हो, वह तुमने पा लिया है।'' आखिरकार हम रात 8 बजे तक केदारनाथ पहुँच गए। हम सभी बेहद थके थे। रात में हमने केदारनाथ का एक बिहंगम दर्शन किया। हम मंदिर के करीब ही एक घर में रुके थे। यहाँ बहुत ठंड थी और हमें तीन रजाइयों का उपयोग करना पड़ा। बर्फ की चोटियों पर चाँद चमक रहा था। यह एक ऐसा दृश्य था जिसका केवल अनुभव किया जा सकता है। हम प्रातः काल काफी जल्दी उठ गए। 25 मई को हमने विशेष दर्शन और पूजा की। यहाँ शिवलिंग पर भगवान गणेश और पार्वती की छवियाँ दिख सकती हैं। हम आदि शंकर की समाधि पर भी गए।

मैं थक गया था और मेरे पैरों में छाले हो गए थे। मेरे पैर के अंगूठे बुरी तरह दर्द कर रहे थे। मेरी टांगें और जांघें सख्त हो गई थीं। अगली सुबह, हम दुगालबिट्टा और चोपता के लिए रवाना हो गए। गुप्तकाशी से ऊखी मठ से दुगलबिट्टा और चोपता की यात्रा बहुत सुखद थी, क्योंकि हमें घने जंगलों से गुजरना पड़ता था। हिमालय के स्वर्गिक सौंदर्य से अधिक सुंदर और कुछ भी नहीं हो सकता है। हम 11.45 बजे तक चोपता मंडालिया विकास निगम रिजॉर्ट पहुँचे। यह तुंगनाथ की ट्रैकिंग के लिए बेस कैंप था, जो 12000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। तुंगनाथ गंधमर्धन पर्वत पर है जहाँ हजारों सुगंधित पौधे उगते हैं और अपनी खुशबू फैलाते हैं जो तीर्थयात्रियों के दिलों को रोमांचित करते हैं और उनकी थकान मिटाते हैं। तुंगनाथ का मंदिर चंद्रशिला शिखर पर स्थित है और यह पंच केदारों में सबसे ऊँचा मंदिर है। जो तुंगनाथ और चंद्रशिला में जाता है, वह चारों ओर प्रकृति की अद्भुत सुंदरता से मोहित हो जाता है। यहाँ से हिमालय की हिम-आच्छादित चोटियों, शिवलिंग, बंदरपूंछ, गंगोत्री, यमुनोत्री, महेंद्र, चौखम्बा, चंद्र पर्वत, नंदा देवी और स्वेतगिरी के सौंदर्य का आनंद लिया जा सकता है। ये सभी तुंगनाथ में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। यह स्थान एक आभासी स्वर्ग की भांति है, कोई भी मंदिर इतना उदात्त और पवित्र नहीं है। मकोकोमठ गाँव में तुंगनाथ (मृकंडेश्वर) का एक सुंदर मंदिर है जहाँ मैथिली ब्राह्मण तुंगनाथ की पूजा करते हैं। यह भी कहा जाता है कि त्रेता युग के दौरान, शक्तिशाली राक्षस रावण ने रावणशिला पर बैठकर घोर तपस्या की और चंद्रमौलेश्वर के भेष में भगवान शिव का दर्शन किया था।

प्रारंभ में मैं तुंगनाथ तक चढ़ाई करने में थोड़ा हिचकिचा रहा था क्योंकि मेरे पैरों में छाले हो गए थे। यह 4 किमी की कठिन और खड़ी चढ़ाई थी। अंततः

मैंने साहस जुटाया और शुरुआत की। मेरा परिवार चोपता में ही रह गया। रोडोडेंड्रोन के घने जंगल से होकर जाने वाली यह सुंदर चढ़ाई थी। आमतौर पर गढ़वाल पहाड़ियों के अधिकांश हिस्सों में फूल लाल रंग के होते हैं, लेकिन यहाँ तुंगनाथ घाटी में, विभिन्न फूलों जैसे लाल, सफेद, गुलाबी, नीले और विविध रंग के फूलों का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है। यहाँ से खूबसूरत हिमालय का शानदार दृश्य भी देखा जा सकता है। तुंगनाथ पहुँचने में हमें 4 घंटे लगे। शास्त्रीजी ने हमारे लिए एक विस्तृत पूजा की। यह एक पुराना शिव मंदिर था और पंच केदार के पवित्र स्थानों में से एक था। पूजा करते समय मैं कांपने और सिहरने लगा। मैंने इसका पूरा आनंद लिया और पूजा के बाद हम बेस कैंप लौट आए।

27 मई की सुबह हम चोपता से बद्रीनाथ के लिए रवाना हुए और शाम तक वहाँ पहुँच गए। हम पीडब्ल्यूडी के निरीक्षण बंगले पर रुके थे। बर्फ से ढकी चोटी में त्रिशूल अपनी भव्यता और दिव्यता के साथ हमारे सामने खड़ा था। लगभग 9.30 बजे हम मंदिर जाने से पहले दर्शन के लिए रवाना हुए। तत्पश्चात हमने नारद कुंड गर्म झरने में स्नान किया। प्रकृति का क्या अनोखा चमत्कार है। एक ही स्थान पर अलकनंदा का ठंडा पानी और कुंड में गरम पानी। सल्फर स्प्रिंग में नहाने से मेरी सारी थकान दूर हो गई। ऐसा माना जाता है कि आदि शंकर ने इस नारद कुंड से ही बद्री-विशाल प्राप्त किये थे। हमने अगली रात बद्रीनाथ में बिताई। चाँदनी रात खूबसूरत थी। मैंने त्रिशूल को देखा और आध्यात्मिक स्पंदन का अनुभव किया। मैं और मेरी पत्नी अन्य लोगों के साथ मंदिर गए। हमने एक विशेष दर्शन किया जो दो घंटे तक चला। तत्पश्चात नाश्ते के बाद, हम तिब्बत सीमा के आखिरी भारतीय गाँव माणा गए। हम सरस्वती नदी के ऊपर भीम बाँध भी गए। हम वापस आए, दोपहर का भोजन किया और जोशी मठ के लिए रवाना हुए और शाम 5 बजे तक वहाँ पहुँच गए। यह एक सुंदर छोटा सा पहाड़ी शहर था। यहाँ तपोवन से आसपास के हरे पहाड़ों का एक सुंदर दृश्य दिखाई देता है। तपोवन का प्रमुख आकर्षण वसंत में होता है। पर्यटक तपोवन को भविष्य बद्री के लिए एक यात्रा मार्ग के रूप में भी इस्तेमाल करते हैं जो यहाँ से 3 किमी की दूरी पर स्थित है। जैसा कि किंवदंती है, भविष्य बद्री वह स्थान है जहाँ भविष्य में भगवान बद्रीनाथ की पूजा की जाएगी जब नर और नारायण के पहाड़ प्राकृतिक शक्तियों के माध्यम से एक साथ मिल जाएँगे। हम जोशीमठ से 20 किमी की दूरी पर तपोवन गए। हमने 2500 फीट की गहराई से सल्फर के गर्म पानी के झरने को देखने का अनूठा अनुभव हासिल किया।

29 मई को मेरे बेटे सुशांत का जन्मदिन था और इसलिए हम सुबह तैयार होकर पूजा करने के लिए नरसिंह मंदिर गए। यह उसका जन्मदिन मनाने का एक शानदार तरीका था। अपनी वापसी यात्रा पर हमने कमलेश्वर शिव मंदिर, श्रीनगर, पौड़ी गढ़वाल में भी पूजा की। मुनि-की-रेती में हमने कई आश्रमों का दौरा किया जैसे कि स्वर्ग आश्रम, गीता भवन और परमार्थ निकेतन जो कि पौड़ी गढ़वाल जिले में गंगा के दूसरी ओर स्थित थे। यह एक अविस्मरणीय यात्रा थी जिसने आध्यात्मिक रूप से मुझे समृद्ध किया।

मेरा आध्यात्मिक अभ्यास और सेल्स टैक्स कमिश्नर के रूप में मेरे कामों की व्यस्तता दोनों एकसाथ आगे बढ़ रहे थे। जब भी मुझे किसी पवित्र स्थान पर जाने का मौका मिला, मैंने हमेशा ही काम के बाद वहाँ दर्शन किए। जून 1994 में मेरी पत्नी, मेरी सास और मैं कानपुर से लगभग 40 किलोमीटर दूर शोभन मंदिर गए। आम के पेड़ों से सुशोभित एक विशाल सुंदर परिसर था। मुख्य रूप से यह भगवान हनुमान का मंदिर है लेकिन परिसर में कई अन्य देवता हैं। इस मंदिर में कोई चढ़ावा नहीं चढ़ाया जाता है। कोई भी यहाँ शांत होकर बैठ सकता है और ध्यान कर सकता है। मैं बाबाजी से मिला जो एक पीपल के पेड़ के नीचे खड़े थे। मैं उनके सामने झुक गया। उन्होंने मेरे बारे में पूछताछ की और पूछा कि क्या मैं महेश्वर की पूजा करता हूँ? जब मैंने कहा, 'हाँ,' तो उन्होंने कहा कि आपको अपने पिछले संस्कारों के कारण यह आध्यात्मिक झुकाव है।

वह स्थान इतना चुंबकीय था कि जब भी मैं कानपुर आता था, मैं इस परिसर में जरूर जाता था। मार्च 1997 में शिवरात्रि के दिन मैं इस स्थान पर बनखण्डेश्वर महादेव, साईं मंदिर, विठूर के वाल्मीकि आश्रम और गजानन मंदिर के दर्शन करने के बाद गया। शोभन में लगभग डेढ़ घंटे के इंतजार के बाद हमें बाबा के साथ एक विशाल भीड़ को देखने का मौका मिला। हालांकि भीड़ में भी उन्होंने मुझे पहचाना और मेरी ओर इशारा किया। जब मैं उनके पास गया, मैं आध्यात्मिक भावना से अभिभूत था। जैसे ही मैं उनके समीप गया, उन्होंने मुझे प्यार और स्नेह से थपकी दी और कहा, ''इतना भाव कहाँ से पाया रे, मुझे भी कुछ दे।'' उन्होंने मुझे कुछ प्रसाद दिया जो वे खा रहे थे। दर्शन के बाद, हम वापस कानपुर आ गए और अपनी ससुराल में ठहरे। रात को मुझे एक अजीब सा अनुभव हुआ; देर रात अपने शरीर में ऊर्जा के एक मजबूत प्रवाह को मैंने महसूस किया। अचानक मुझे लगा कि मैं अपने शरीर से बाहर आ गया हूँ और

अपनी पत्नी की परिक्रमा कर रहा हूँ। मैं झटके से उठ गया। मैंने इस दृश्य को इस रूप में समझा कि मैं अभी भी अपनी पत्नी से काफी जुड़ा हुआ हूँ और पहले मुझे अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करना है।

शोभन मंदिर से अपनी ससुराल वापस आते समय हमने आध्यात्मिकता के बारे में जीवंत चर्चा की। श्री दीक्षित, जो 75 वर्षीय थे और राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता शिक्षक थे, हमारे साथ थे। उन्होंने टिप्पणी की कि हम नश्वर प्राणी 'माया' के प्रभाव में हैं। परिवार, पत्नी और रिश्तेदारों सहित पूरी दुनिया 'माया' के अलावा कुछ नहीं है। मेरी पत्नी ने नाराज होकर कहा, ''अंकल, आप परिवार और बच्चों आदि को 'माया' के रूप में क्यों कहते हैं, अगर, एक माँ के रूप में मैं अपने बच्चों के हितों की देखभाल नहीं कर सकती और अगर एक पत्नी के रूप में मैं अपने पति की देखभाल नहीं कर सकती तो मैं माँ या पत्नी दोनों कहे जाने के योग्य नहीं। अपने परिवार की देखभाल करना मेरा पहला कर्तव्य है। इसके बाद, मैं पड़ोसियों की देखभाल करूँगी और इस प्रक्रिया में हम अपने आप को समाज, राष्ट्र और मानवता की देखभाल के लिए विस्तारित करेंगे।'' विस्तार ही जीवन और संकुचन मृत्यु है।

जून, 1994 के अंतिम सप्ताह में मैं निरीक्षण के लिए आगरा गया। सोमवार का दिन था और सुबह स्नान करने के बाद मैं अपने अधिकारियों के साथ कैलाश शिव मंदिर गया। मैंने भगवान शिव की पूजा की और मंदिर के पास के यमुना के तट पर गया। घाट पर दीवार के किनारे पर, मैंने तीन साल के एक आकर्षक बच्चे को देखा। मैं इस सोच से आशंकित हो गया कि बच्चा गिर सकता है। मैं उन माता-पिता के गैरजिम्मेदाराना व्यवहार को कोस रहा था, जिन्होंने बच्चे को अकेला छोड़ दिया था। जब मैं बच्चे की ओर बढ़ा तो वह धीरे-धीरे शांत हो गया और एक शिवलिंग के पास बैठ गया। मैंने बच्चे को गौर से देखा और एक अजीब सी खुशी ने मुझे अभिभूत कर दिया। मुझे लगा कि भगवान शिव इस वेश में मुझे दर्शन दे रहे हैं। कुछ समय बाद मैं बच्चे के पास गया, उसे प्यार से थपथपाया और उससे कहा, ''मैं तुम्हारे लिए और नहीं रुक सकता। मेरे जाने का समय हो गया है।'' आगरा की पूरी यात्रा के दौरान उस बच्चे का चेहरा मेरे सामने बार-बार प्रकट होता रहा।

अध्याय-२०

सचिव, संस्थागत वित्त

(जुलाई 1994-अप्रैल 1995)

जनहित के लिए त्याग ही वह चीज है जिसने भारत की सभ्यता को ज्ञान रूपी आलोक से आलोकित कर उसे अपनी पराकाष्ठा तक पहुँचाया। लेकिन अब बलिदान की वह भावना कहाँ गायब हो गई?

मैंने आयुक्त (बिक्री कर) के रूप में तीन साल पूरे कर लिए थे और अब इससे ऊबने लगा था। मैंने मुख्य सचिव से मुलाकात की और उनसे नैनीताल में ए टी आई निदेशक (प्रशिक्षण) जैसे किसी पोस्टिंग का अनुरोध किया। उन्होंने मुस्कुराकर कहा, ''प्रशान्त, मैं किसी कुशल अधिकारी को प्रशिक्षण जैसे कम महत्त्व वाले पद पर नियुक्त नहीं करने जा रहा हूँ। आप इससे अधिक महत्त्व वाले पद पर नियुक्ति के योग्य व्यक्ति हैं।'' कुछ महीनों के बाद, मुझे बिक्री कर, मनोरंजन कर, स्टांप पंजीकरण और बैंकिंग के सचिव, संस्थागत वित्त के रूप में तैनात किया गया। यह एक महत्त्वपूर्ण कार्य था जिस पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता थी। मैं अपने कर्तव्यों के निर्वहन में कभी नहीं लड़खड़ाया। हालांकि यह एक कठिन पद था, फिर भी मैं आध्यात्मिक स्थानों की यात्रा करने के लिए कुछ समय निकालने में कामयाब रहा। इस तरह जुलाई, 1994 में मैं मुक्तेश्वर के स्वामीजी से मिलने जिला नैनीताल स्थित मुक्तेश्वर गया। स्वामीजी ने मुझे साधना के लिए प्रोत्साहित किया और उनके अनुसार मेरा आध्यात्मिक विकास हुआ है परंतु अभी तक सिद्धि नहीं हो पायी है। उन्होंने मुझे आशीर्वाद और 'अभयदान' (सुरक्षा के लिए आशीर्वाद) दिया। मैं वापस लखनऊ लौट आया। मैं अपने भीतर ऊर्जा के स्पंदन को बहुत प्रभावशाली ढंग से महसूस करने लगा। अक्सर गहन रात्रि में, आध्यात्मिक ऊर्जा के बढ़ने के साथ, कई क्रियाएँ स्वचालित रूप से घटित होने लगीं। हाथ उठाने एवं निरंतर सिर चकराने के अलावा मुझसे मूलबंध, जालंधरबंध और उड्डियानबंध अपने आप होने लगे थे। जीभ मुँह के भीतर घूमती और खेचरी मुद्रा में जीभ तालू से छू जाती। रात में आध्यात्मिक क्रियाकलाप करते समय, मैं मस्तिष्क में प्रवेश करने वाली एक तेजमयी सफेद रोशनी को महसूस करने लगा था।

1994 के दशहरे के दौरान मैं सीतापुर में चक्रतीर्थ के नाम से मशहूर नैमिषारण्य के दर्शन करने गया। नैमिषारण्य आध्यात्मिक स्पंदन से भरपूर एक सुंदर जगह है। मैंने नारदानंद आश्रम जाकर उनकी समाधि पर श्रद्धा अर्पित की। मैंने शीतला देवी और देवेश्वर शिवलिंग की भी पूजा की और भगवान हनुमान की पूजा के लिए हनुमानगढ़ी गया। लोकप्रिय लोककथाओं के अनुसार व्यास ने नैमिषारण्य (व्यास गद्दी) पर तपस्या की और महाकाव्य महाभारत लिखने की कल्पना की। भगवान गणेश की मदद से उन्होंने बिना रुके महाभारत-महाकाव्य की रचना की। इस स्थान पर एक बड़ा बरगद का पेड़ था जिसके नीचे ऋषि ध्यान करते थे। इसकी स्तम्भ जड़ें भी बरगद के पेड़ों की तरह दिखती हैं। स्थानीय किंवदंती को सुनने के बाद, मुझे रात में यहाँ ध्यान करने की बड़ी इच्छा हुई। गहन रात्रि में मैंने अपने कारचालक के साथ निरीक्षण बंगला से प्रस्थान किया और निस्तब्धता से इस जगह पर पहुँचा। मैं बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर एक घंटे तक ध्यान करता रहा और वापस आ गया। मुझे ऐसे परमानंद का अनुभव हुआ जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। लखनऊ लौटते समय मैंने मिश्रिख में महर्षि दधीच के आश्रम और समाधि के दर्शन किए। इसी स्थान पर उन्होंने ध्यान किया था और वज्र तैयार करने के लिए इंद्र को अपनी अस्थियाँ भेंट की थीं। इस महान ऋषि के बलिदान के सामने मैंने अपना शीश झुकाया। इस तरह के बलिदान के कारण ही प्राचीन भारत हर क्षेत्र में ज्ञान के प्रकाश का उत्सर्जन करते हुए चरम पर पहुँच गया था। लेकिन बलिदान की वह भावना कहाँ गायब हो गई है? आजकल हर कोई आत्मकेंद्रित हो गया है। कोई आश्चर्य नहीं कि समाज हिंसा, घृणा और विभाजनकारी ताकतों से पीड़ित है।

मैं अपनी तपस्या में नियमित था। ध्यान करते हुए 2 दिसंबर की सुबह माँ वैष्णो देवी की तस्वीर बार-बार मेरे मन की आँखों के सामने प्रकट होने लगी। एक सप्ताह पहले ही एक सेवानिवृत्त एसडीओ श्री शर्मा वैष्णो देवी गए थे और उन्होंने मुझे कुछ प्रसाद के साथ देवी की तस्वीर भेंट की थी। मैंने फोटो की पूजा की। इसलिए मैंने सोचा कि मेरे ध्यान में माँ वैष्णो देवी की उपस्थिति मनोवैज्ञानिक है, जरा भी अनुभव न हुआ कि यह माँ का आह्वान है। उसी सुबह मैं जल्दी से कैबिनेट की बैठक के लिए मुख्यमंत्री सचिवालय जाने के लिए तैयार हो गया। चूंकि मुझे कुछ देर हो गयी थी, इसलिए बिना नाश्ता किए ही मीटिंग में पहुँच गया। बैठक के बाद मैं नीचे आ ही रहा था कि निचली मंजिल पर मैं यूपी के प्रमुख सचिव, नागरिक उड्डयन और पर्यटन से मिला जो सरकारी

काम पर सरकारी विमान से जम्मू जा रहे थे। उन्हें वैष्णो देवी की तीर्थ यात्रा भी करनी थी। इसलिए मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे मेरी ओर से भी माँ वैष्णो देवी के समक्ष प्रार्थना करें। उन्होंने तुरंत मुझे अपने साथ चलने के लिए आमंत्रित किया। मुझे लगा कि वे मजाक कर रहे थे, लेकिन वह इस विषय पर गंभीर थे। मुझे केवल एक घंटे का समय मिला और कहा गया कि साढ़े ग्यारह बजे तक एअरपोर्ट पहुँच जाना है। मैं तुरंत अपने आवास पर वापस आ गया। मेरी पत्नी दाँतों की जाँच के लिए किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज गयी हुई थीं और दुर्भाग्य से इस अवसर से चूक गयीं। मैं तुरंत हवाई अड्डे पर पहुँच कर विमान पर सवार हो गया। हम शाम चार बजे जम्मू पहुँचे और लंच के बाद सड़क मार्ग से कटरा के लिए रवाना हो गए। कटरा से हम वैष्णो देवी के लिए ट्रेकिंग करते हुए रात 11 बजे पहुँचे और दोपहर 1 बजे हमें दर्शन करने का सौभाग्य मिला। यह एक अनूठा अनुभव था। यह माँ की पुकार थी। 1975 में मैं सरिता के साथ वैष्णो देवी आया था और उस समय यह स्थान इतना व्यवस्थित नहीं था, गुफा के लिए केवल एक ही द्वार हुआ करता था। तब से लेकर अब तक काफी विकास हुआ साथ ही ट्रेकिंग मार्ग को चौड़ा और खूबसूरत बना दिया गया था। आधुनिक शॉपिंग कॉम्प्लेक्स सभी मार्ग पर पनप गये थे और यह जगह मेरी उम्मीद से काफी अधिक बदल गई थी। 27 जनवरी 1995 को मैं कानपुर देहात जिले के ब्लॉक भीतरगाँव के ग्राम अमौर के दौरे पर गया था। मैंने गाँव में बिना देख-रेख किए गये पीएचसी में रात बिताई। इस दौरान मुझे ऐसा लगने लगा जैसे मेरा पूरा शरीर अकड़ गया हो और मैं धीरे-धीरे ऊपर उड़ रहा हूँ। मुझे लगा जैसे मैं अंतरिक्ष में पहुँच जाऊँगा। मैं घबरा गया और अपनी सारी शक्ति के साथ खाट के किनारो को कसकर पकड़ लिया। यह पूरी तरह से एक अलग तरह का अनुभव रहा।

समय गुजरने लगा, मैं 6 फरवरी को अपने गाँव आठमल्लिक में एक पारिवारिक समारोह में शामिल होने गया। जब मैं गाँव पहुँचा तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। मैं अपने चाचा डॉ. आई सी मिश्र से मिला जो हमारे वरिष्ठ पीढ़ी के एकमात्र जीवित सदस्य थे। तब वह 84 वर्ष के थे। मेरी मुलाकात मेरे बचपन के प्यारे दोस्त सुशील मिश्र से हुई जो गाँव के हाईस्कूल में शिक्षक के रूप में कार्यरत थे। अगली सुबह महानदी पहुँचते ही बचपन में जलक्रीडा की यादें ताजी हो गयीं। ऐसा लगा जैसे बचपन के दिनों को फिर से जीने लगा हूँ। मैं अतीत की यादों में खो गया। नदी के पानी की कल-कल आवाज को सुनने लगा। मैं आधे घंटे तक पानी में रहा। यह वही नदी, वही धारा, वही चट्टान, वही जंगल,

वही टूटू (मेरा उपनाम) है, ऐसा लगने लगा जैसे मैं बचपन में वापस आ गया हूँ। मेरी आँखों से आँसू टपकने लगे। मैंने नदी और पहाड़ को नमन किया और उनसे विदाई ली। अपने पुश्तैनी मकान तक पहुँचने में मुझे करीब आधा घंटा लग गया। मुझे अपने इष्टदेव 'रुद्र भवानी' (शिव-पार्वती) की पूजा करने की प्रबल इच्छा महसूस हुई। इसलिए मैं एक विस्तृत पूजा के लिए बैठ गया। मेरी भतीजी इली ने सभी व्यवस्थाएँ कर रखी थीं। मैंने देवी-देवताओं और शालिग्राम को दूध से नहलाया, 108 बेल पत्रों और फूलों से 'लिंग' सजाकर ध्यान के लिए बैठ गया। मैंने शरीर में एक सिहरन का अनुभव किया, जैसे मेरा पूरा शरीर कांप रहा हो। हालांकि मैंने बचपन में कई बार शालिग्राम देखा था, लेकिन पहली बार ध्यान से देखने पर चमकते काले शालिग्राम में सूर्य की किरणों के निशान देखे। मैं चकित रह गया। आठमल्लिक में अल्पकालीन अवकाश के बाद मैं अपने कर्तव्य का निर्वाह करने पुनः लखनऊ लौट आया।

जीवन चलता रहा। फरवरी का अंत था और शिवरात्रि आने वाली थी। मैंने इस पावन अवसर पर हेड़ाखान शिव मंदिर जाने का मन बना लिया। शुरू में मेरा मन फकीरानन्दजी के साथ तीन दिन बिताने का था, जिन्होंने अप्रैल, 1994 में मेरी शक्ति को जागृत किया था। लेकिन मेरे नैनीताल के उपायुक्त (कार्यकारी) श्री जंगपाणी ने मुझे सूचित किया कि फकीरानन्दजी दिल्ली गये हैं और अप्रैल, 1995 में ही लौटेंगे। मैंने योजना स्थगित करने की सोची लेकिन हेड़ाखान शिव मंदिर जाने के प्रलोभन को रोक नहीं पाया। दरअसल, मैं प्रकृति की गोद में जाने के लिए आतुर था। मैं लखनऊ में रात में अपने सरकारी आवास पर सो रहा था, इस दौरान मैंने अपने मस्तिष्क से सांप की फुंफकार की आवाज सुनी जिससे मैं आशंकित तो हुआ लेकिन हर्षित भी। 25 फरवरी शनिवार की सुबह मैं बरेली और हल्द्वानी होते हुए अकेले ही हेड़ाखान के लिए रवाना हो गया। मैंने बरेली और हल्द्वानी में समीक्षा बैठक की। जब तक मैं हेड़ाखान पहुँचा तब तक शाम के साढ़े आठ बज चुके थे। मशालों से लैस अंधेरे में हम गोला नदी के तट पर स्थित विश्राम गृह की ओर जाने वाली घुमावदार कच्चे रोड पर तेजी से चलने लगे। यह 1980 के दशक में राज्यपाल के लिए विशेष रूप से डिजाइन, निर्माण और सजाई गई एक सुंदर विश्राम कुटी थी। मैं ऊपरी कमरे में रहा। मुझे इस कमरे में मुश्किल से नींद आयी। पिछले साल भी जब मैंने अपनी पत्नी के साथ इस कमरे में रात बिताई थी तो मुझे नींद नहीं आई थी। मुझमें यह डर समा गया था कि कमरे में कोई अच्छी आत्मा बसी है। मुझे ऐसा भी लगा जैसे कोई बड़ा सांप आसपास

हो। मैं डर गया और आशंकित हो गया था। मेज पर रखे हेड़ाखान बाबा की तस्वीर के सामने झुककर उनका आशीर्वाद मांगा। मैंने बाबा की फोटो अपनी जेब में रखी और लाइट जलाकर सो गया। सुबह उठते ही मेरे अंग काँपने लगे। यह समय तपस्या का था। मैं सुबह 5 बजे से सुबह 7 बजे तक ध्यान की मुद्रा में रहा। सुबह साढ़े सात बजे मैं जाकर एक चट्टान पर बैठ गया और नदी एवं हिमालय की सुंदरता को टकटकी लगाए देखता रहा। सही में यह एक अनूठा अनुभव रहा।

27 फरवरी, सोमवार के दिन ही शिवरात्रि थी और हमेशा की तरह मैं 5 बजे उठ गया। मैं सुबह ध्यान की मुद्रा में रहा और फिर से एक चट्टान पर बैठकर सुबह साढ़े सात बजे से 8 बजे तक ध्यान करने लग गया। इसके बाद मैं नदी में नहाने चला गया। जब मैंने अपनी आँखें बंद की, मैंने देखा कि दो गहरे हरे रंग के वृत्त एक दूसरे में समा कर हृदय के आकार का चित्र हैं। यह सिलसिला काफी देर तक चलता रहा। मैं हेड़ाखान शिव मंदिर में पूजा करने के लिए तैयार हो गया। मैंने गंगाजल, दूध, शहद, शक्कर, लौंग, बेल के पत्ते, बेर, फूल और अगरबत्ती के साथ लिंग की पूजा की। उस पल मेरी खुशी का ठिकाना न रहा।

हम मंदिर जा रहे थे, बस तभी आश्रम के प्रवेश द्वार पर, शिव की जटाओं की तरह बालों वाले एक छोटे से सुंदर लड़के ने हमें बताया कि यह कैलाश जाने वाली सड़क नहीं थी। उसने हमें वह सड़क दिखाई, जहाँ हर शिवरात्रि के दिन महामेला का आयोजन किया जाता था। शायद लड़के ने सोचा कि हम अपना रास्ता भटक गये है। मैं लड़के की बुद्धिमत्ता से बहुत प्रभावित हुआ। साथ ही, उसकी चमक और आकर्षण से मोहित हो गया। मैंने सोचा, भगवान शिव इस बालक के वेश में आए हैं। लौटते समय पूजा करने के बाद अचानक लड़का गेट के पास दिखाई दिया। मैंने तुरंत मौके का फायदा उठाकर उसे कुछ प्रसाद दिया। उसने प्यारी मुस्कान के साथ प्रसाद लिया और गायब हो गया।

विशेष रूप से मई और जून के दौरान हिमालय के विभिन्न पवित्र स्थानों की यात्रा करना मेरी आदत बन गई थी। मैं अल्मोड़ा, हेड़ाखान और जागेश्वर की यात्रा करने के लिए कुमाऊँ की पहाड़ियों पर जाने की योजना बना रहा था। लेकिन अचानक अप्रैल, 1995 में मेरा तबादले का आदेश आ गया। कर संबंधी कुछ प्रस्तावों पर मेरा रुख मुख्य सचिव और प्रमुख सचिव, भारी उद्योग को पसंद नहीं आया। अध्यादेश के जरिए सिगरेट और तंबाकू पर लग्जरी कर लगाया गया था और तीन महीने में विभाग ने इस स्कोर पर करीब 20 करोड़ रुपये वसूले थे। लेकिन अध्यादेश समाप्त हो गया और इसके स्थान पर कोई अधिनियम नहीं

बना। मुझे सचिव से लेकर मुख्यमंत्री तक से लिखित आदेश मिला जिसमें संबंधित फर्मों को एकत्र किए गए कर को वापस करने का निर्देश दिया गया था। मुझे कुछ गड़बड़ का अंदेशा हुआ, इसलिए वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मैंने इस मामले पर चर्चा की। फर्म केवल कर संग्राहक थे न कि करदाता। सिगरेट और तंबाकू खरीदने वालों ने कर चुकाया था। चूंकि करदाताओं की पहचान ठीक से नहीं हो सकी थी, इसलिए यूपी सेल्स टैक्स एक्ट के प्रावधानों के अनुसार ऐसी राशि यूपी विकास कोष में जमा करनी होती। इसके अलावा अध्यादेश को भले ही किसी अधिनियम से बदला न गया हो, लेकिन अस्तित्व में रहने पर इसे कानून का दर्जा हासिल था। इसलिए मैंने आदेश को लागू नहीं किया। इसके बजाय मैंने इस स्थिति को स्पष्ट करने के लिए मुख्यमंत्री से मिलने की मांग की। मैंने उनसे कहा, सर, आप राजनीतिक कार्यकारी प्रमुख हैं और मैं आपकी मजबूरियों को समझता हूँ। लेकिन मैं एक सिविल सेवक हूँ और मुझे स्वंय भी आचार संहिता का पालन करना होगा। यह संभव है कि आपकी राजनीतिक मजबूरी और मेरे सिद्धांतो में संघर्ष हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में, आप मुझे स्थानांतरित कर सकते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा, मुझे समझ नहीं आ रहा है कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं। मुझे सीधे समस्या बताइए। मैंने कानूनी स्थिति को स्पष्ट रूप से समझाया और आगाह किया कि यदि संगृहीत किए गये कर को एकत्र करने वाली फर्मों को लौटाया गया तो यह बहुत बड़ा कांड बन जाएगा। मुख्यमंत्री ने मेरे सुझाव पर सहमति जताई। समय बर्बाद किए बिना, मैंने चर्चा में जो कुछ भी निर्णय हुआ, उसे तुरंत लिखा और राशि को फर्मों को वापस करने की बजाए यूपी विकास कोष में जमा करने के लिए फाइल पर भी मंजूरी ले ली। मैं मामले की गंभीरता को समझने के लिए मुख्यमंत्री को उचित श्रेय देना चाहता हूँ। अक्सर दबाव में हम अपने दृष्टिकोण को साफ-साफ नहीं रख पाते और उचित कार्यवाही का मार्ग भी नहीं सुझा पाते। अगर नौकरशाह राजनीतिक आदेश देने वाले को निष्पक्ष, निडर और निस्वार्थ भाव से लिखित रूप में उचित सलाह देने की सरल तकनीक सीख लेते हैं तो मुझे यकीन है कि ज्यादातर मामलों में राजनीतिक आदेशकर्ता उनकी सलाह स्वीकार करेंगे।

एक अन्य मामले में, उत्तर प्रदेश में स्थापित की जाने वाली कुछ नई इकाइयों को सब्सिडी/स्थगन प्रदान करने के लिए उत्तर प्रदेश बिक्री कर अधिनियम में कुछ संशोधन किए जाने थे। मुख्य सचिव की अध्यक्षता वाली सचिवों की समिति ने बैठक बुलाई और संशोधन को तत्काल मंजूरी देने और उसे लागू करने का फैसला

लिया। मैंने मुख्य सचिव से अनुरोध किया कि अधिनियम में कोई संशोधन न होने पर इस फैसले को लागू करना संभव नहीं होगा। बाद में इस प्रस्ताव को कैबिनेट ने मंजूरी दे दी और मुझे इसे लागू करने का निर्देश दिया गया। मैंने मुख्य सचिव के ध्यान में फिर से यह बात लाई कि यह मंत्रिमंडल का निर्णय था और जब तक उचित प्रक्रिया का पालन करते हुए इसे अधिनियम में उल्लेख नहीं किया जाता, तब तक इसे तत्काल लागू करना संभव नहीं होगा। मेरी यह बात मुख्य सचिव को अच्छी नहीं लगी और मुझे एमडी, यूपी विकास प्रणाली निगम (यूपी डेस्को) के पद पर स्थानांतरित कर दिया गया। जैसा भी यह महत्त्वहीन था मैंने इसे समभाव से ग्रहण करते हुए तुरंत अपनी जिम्मेदारी सौंप दी।

अध्याय-२१

प्रबन्धक निदेशक, यूपी डेस्को (UP DESCO)

(मई 1995-जुलाई 1995)

हिमालय के सौन्दर्य, आध्यात्मिक अनुभव और संत पुरुषों के आशीर्वाद ने मुझे पूरी तरह निर्भीक, स्वार्थरहित बना दिया; साथ ही संतुलन, आत्मविश्वास और समभाव से जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार कर दिया।

यूपी डेस्को में नियुक्ति को प्राय: एक सजा के तौर पर देखा जाता था पर मैंने यहाँ अपनी नियुक्ति का पूरा आनंद लिया। यहाँ मेरे पास नई चीजें पढ़ने और सीखने के लिए पर्याप्त समय होता था। यहाँ मैंने कंप्यूटर चलाना सीखा, रिपोर्ट की प्रस्तुति और परामर्श में दिलचस्पी ली, अधिकारियों-कर्मचारियों के सूचना-प्रौद्योगिकी के प्रशिक्षण में दिलचस्पी ली और विभिन्न विभागों में सूचना-प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों की नियुक्ति कराई। इसी दौरान मैंने नरेंद्र कोहली की किताब 'राम कथा' का भी अध्ययन किया, जो असल में महाकाव्य की औपन्यासिक प्रस्तुति है। कामकाज के लिहाज से यह आरामदायक समय था और काम के कम दबाव के कारण मुझे अपनी अनोखी आध्यात्मिक यात्रा के पथ पर अग्रसर होने का अवसर मिला। मैंने जागेश्वर (कुमाऊँ पहाड़ियों में) गंगोत्री और गोमुख की यात्रा की। 25 अप्रैल 1995 की शाम मैं और मेरी पत्नी बरेली के रास्ते अल्मोड़ा जाने के लिए निकले। अगले दिन वहाँ पहुँचे, एक रात वहाँ पर विश्राम किया। रात में ध्यान लगाने के समय मुझे तूफानी हवा की आवाज और डमरू की आवाज सुनाई दे रही थी। 27 अप्रैल को हम जागेश्वर गए, जो प्रकृति की गोद में बसा एक शांत स्थल है। वहाँ स्थित मंदिरों के समूह हमारी महान प्राचीन संस्कृति और स्थापत्य की गवाही देते हैं। देवदार के पेड़ों की मौजूदगी और पास से बहती जटा गंगा के कारण यहाँ के सौन्दर्य में चार चाँद लग जाते हैं। ध्यान लगाने के लिए यह एक आदर्श स्थल है। यहाँ 124 मंदिर मौजूद हैं, जिनमें से जागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर, महामृत्युंजय मंदिर, नवदुर्गा और नवग्रह चंडी मंदिर प्रमुख हैं। महामृत्युंजय मंदिर सबसे प्राचीन है जबकि परिसर के बाहर बना हुआ दंडेश्वर मंदिर यहाँ का सबसे बड़ा मंदिर है। हमने महामृत्युंजय और

जागेश्वर मन्दिर समूह के समक्ष

जागेश्वर ज्योतिर्लिंग दोनों मंदिरों में पूजा-अर्चना की। परिसर से बाहर आते समय हमें पास ही में स्थित कुबेर मंदिर के बारे में पता चला। हम वहाँ भी पूजा-अर्चना के लिए गए और मेरी पत्नी ने मुझसे कहा, ''प्रशांत, मैंने कुबेरेश्वर शिवलिंग से यह प्रार्थना की कि वे हम पर हमेशा ही अपनी दया दृष्टि बनाए रखें ताकि बुरे से बुरे संकट के समय भी हमें आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर न होना पड़े।'' यह स्थान इतना विस्मयकारी था कि मैंने आधे दर्जन बार इस स्थान की यात्रा की। अल्मोड़ा लौटने के क्रम में हम दंडेश्वर मंदिर और मृतोला आश्रम भी गए।

हिमालय हमेशा ही मेरे लिए मोहक-मनोहर रहा है और अचेतन रूप से मैं हिमालय की ओर आकर्षित होता रहा हूँ। जब भी मैं पवित्र-पावन हिमालय की यात्रा करता हूँ, मुझे स्वयं में एक सम्पूर्ण बदलाव की अनुभूति होती है। इस बार मैंने गंगोत्री और गोमुख की यात्रा की योजना बनाई थी। 4 जून 1995 की रात हम ट्रेन पर बैठे और अगले दिन 11 बजे हरिद्वार पहुँच गए। वहाँ आईडीपीएल गेस्ट हाउस ऋषिकेश में स्नान और जलपान के बाद हम स्वामी प्रेमानंदजी से मिलने शिवानंद आश्रम गए। गंगोत्री यात्रा के क्रम में स्वामी जी ने मुझे चार लोगों से मिलने के लिए कहा था, स्वामी हंसानंद जी, स्वामी दिनेशानन्द जी, फलाहारी बाबा और एक साध्वी जो गोमुख से आगे रह रही थीं। स्वामीजी ने मुझे आशीर्वाद

दिया, उसके बाद हमने 5 जून को 2 बजे वहाँ से आगे उत्तरकाशी के लिए प्रस्थान किया। 7 बजे तक हम गणेशपुरी के शिवानंद आश्रम पहुँचे। भागीरथी नदी के किनारे बसा यह आश्रम बहुत सुंदर और आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण था। आसपास का वातावरण बेहद लुभावना था। एक उड़िया साधू स्वामी प्रेमानन्द मोहंती आश्रम की देखरेख करते थे। वे बेहद सामान्य व्यक्ति थे जिनके चेहरे से मासूमियत टपकती हुई प्रतीत होती थी। उन्होंने हमारा स्वागत किया और हमारे आराम से ठहरने की व्यवस्था की। मैं हिमालय और भागीरथी के मनोहर और निर्मल सौन्दर्य का आनंद लेने के लिए अधीर था। हालाँकि अंधेरा हो रहा था फिर भी मैं नदी तट की ओर भागता हुआ गया। मैं एक चट्टान पर बैठा और वहाँ आधे घंटे तक ध्यानमग्न रहा। ऐसा प्रतीत हुआ मानो समूची पृथ्वी गतिमान है। नदी के प्रवाह की आवाज से विस्मय और श्रद्धा का वातावरण निर्मित हो रहा था। मैंने नदी को प्रणाम किया और ध्यान लगाने में रमा रहा।

अगली सुबह हम जल्दी उठे और मैं नदी जाकर ध्यानस्थ होने का लोभ संवरण नहीं कर पाया। मैंने फिर से एक चट्टान पर ध्यान लगाया, इसने मुझे पूरी तरह पवित्र कर दिया। मैं अपनी आँखों के समक्ष अलग-अलग रंगों के ऊर्जा के छल्लों को तैरते हुए देख सकता था। नाश्ते के बाद हमने संन्यासी से विदा लिया और लगभग 9 बजे गंगोत्री की यात्रा शुरू की। रास्ते में हमने मानेरी भाली प्रोजेक्ट के सुंदर झरने, गंगवानी के गरम झरने और हर्शिल नामक मनोहारी स्थान देखे। हर्शिल तो कई झरनों वाले परियों के देश की तरह था। हमने एक झरने के पास लगभग एक घंटे का समय बिताया और 5 बजे गंगोत्री पहुँचे। हमने माँ गंगा की आराधना की और भागीरथी के पवित्र जल से अपने हाथ पाँव और सिर धोये। यह वही स्थान था जहाँ भागीरथ ने भगवान शिव से गंगा को इहलोक में लाने की प्रार्थना की थी।

गंगोत्री निश्चित रूप से एक बहुत ही सुंदर स्थल है, जहाँ की सुंदरता में भागीरथ की गर्जना चार चाँद लगा देती है। मैंने सितंबर 1972 में एक आईएएस परिवीक्षाधीन अधिकारी के रूप में वहाँ की यात्रा की थी। उस समय आज की तरह की भीड़ का कोई नामोनिशान नहीं होता था। अब यह स्थान संकरा और गंदगी से भरा हुआ बन गया था। पूजा के बाद हम 100 वर्ष से अधिक आयु के साधु हंसानंदजी की तलाश में निकले। जब मैं उनसे मिला और उनके समक्ष अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के लिए वज्रासन की मुद्रा में बैठा, मेरी आँखों से आनंद

के आँसू निकल गए और मैं मंत्रमुग्ध रह गया। ऐसा प्रतीत हुआ मानो मैं इस साधु से पिछले जन्मों से ही जुड़ा हुआ हूँ। मैंने ऐसा महसूस किया मानों मैं अपने श्रद्धेय अभिभावक के समक्ष बैठा एक छोटा सा बच्चा हूँ। स्वामीजी ने मुझसे पूछा, 'यहाँ क्यों आए हो? क्या तुम शक्ति, प्रतिष्ठा या अधिकार हासिल करने के लिए यहाँ आए हो?' मैंने जवाब दिया, ''बाबा, मैं यहाँ अध्यात्म की तलाश में आया हूँ और अपने परिवार को भी साथ लाया हूँ ताकि वे संस्कार को आत्मसात कर सकें।'' उन्होंने फिर पूछा, ''क्या तुम्हें शक्ति, प्रतिष्ठा या अधिकार नहीं चाहिए?'' मैंने केवल इंकार में अपना सर हिलाया। तब उन्होंने पूछा, ''मोक्ष हासिल करना चाहते हो और ईश्वर का दर्शन करना चाहते हो?'' मैंने हाँ में सर हिलाया। कुछ मंत्रों और श्लोकों का उच्चारण करते हुए उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और कहा कि इसी जीवन में मुझे ईश्वर का साक्षात् दर्शन होगा।

इसके बाद हम स्वामी दिनेशानन्दजी की खोज में निकले। स्वामी दिनेशानन्दजी एक नागा बाबा थे जो निर्वस्त्र रहते थे। मेरी पत्नी ने हिचक दिखाई, पर मैंने उसे समझाया कि स्वामीजी एक संन्यासी हैं, उनसे मिलने में किसी प्रकार का अवरोध नहीं मानना चाहिए। हम शाम के समय उनके आश्रम पहुँचे। नागा बाबा ऐसी मुद्रा में बैठे थे कि उनकी निर्वस्त्रता उस मुद्रा में ढंकी हुई जान पड़ रही थी। जब मैं उनके समक्ष बैठा मेरा पूरा शरीर काँप रहा था। मैंने बाबा को कहा, ''मैं इस वर्तमान संसार से बहुत खिन्न हूँ जहाँ बुरा और भ्रष्ट फलता-फूलता है जबकि अच्छे लोग कष्ट भोगते हैं। कई बार मैं सोचता हूँ कि ऐसे संसार और समाज का त्याग कर दूँ।'' इस पर बाबा क्रोधित हो गए और कहा, ''हम लोगों ने पहले ही समाज का त्याग कर दिया है और साधना करने यहाँ आ गए हैं। जो भी अच्छे विचार हम यहाँ से तरंगों के माध्यम से समाज में भेजते हैं, समाज में रह रहे अच्छे लोगों द्वारा उन्हें उन अच्छे विचारों को हासिल किया जाना चाहिए। अगर ऐसे अच्छे लोग भी समाज छोड़ देंगे तो सब कुछ नष्ट हो जाएगा।'' उन्होंने मुझे गीता के दर्शन पर ज्ञान दिया और कहा, ''अपना कर्तव्य पूरी ईमानदारी और नि:स्वार्थ भाव से पूरा करो और बाकी उसके ऊपर छोड़ दो।'' उन्होंने मुझे आश्वस्त किया कि चूंकि मैं सही रास्ते पर चल रहा हूँ, कोई भी मेरा बाल बांका नहीं कर सकता।

अगले दिन हम गोमुख के लिए निकले। यह स्थान गंगोत्री से 20 किलोमीटर दूर है। भोजबास के लिए हमने अपनी कठिन परंतु अविस्मरणीय चढ़ाई लगभग

साढ़े ग्यारह बजे शुरू की। लगभग 2 किलोमीटर चलने के बाद हम फलाहारी बाबा के आश्रम पहुँचे। एन.सी. शर्मा के साथ मैं फलाहारी बाबा से मिला जो भगवान राम के भक्त थे। उन्होंने मुझे जीवन के सही दृष्टिकोण के विषय में बताया। उनके आश्रम में कुछ मिनट बिताने के बाद हमने अपनी यात्रा पुनः शुरू की। यह चढ़ाई बेहद मुश्किल थी और एक बार पाँव फिसलने का मतलब था हजारों फुट गहरी खाई में गिर जाना। हमने बेहद संभल कर चढ़ाई की और रास्ते में मिले एक छोटे ढाबे में थोड़ी देर आराम किया। ज्यादा लोग गोमुख की यात्रा नहीं कर रहे थे। हालांकि पहाड़ गंजे और अनावृत प्रतीत हो रहे थे पर हमने इन पहाड़ों के खुरदुरेपन, यहाँ की चमकीली बर्फ-आच्छादित चोटियों और प्रवाहमान झरनों का पूरा आनंद लिया। साहचर्य के कारण यात्रा और आनंददायक रही। हम पूरे रास्ते एक दूसरे के साथ मजाक करते, मस्ती करते और हँसते रहे। लगभग 3.30 बजे में हम चीड़बास पहुँचे। चीड़बास के सोते को पार करना बेहद रोमांचकारी अनुभव था। वहाँ हमने कुछ देर विश्राम किया, उसके बाद पुनः भोजबास की अपनी यात्रा पर निकाल पड़े। चीड़बास में चीड़ के वृक्ष थे। इसके बाद से जंगल में केवल भोजपत्र के वृक्ष दिखने शुरू हो जाते हैं। 7.30 बजे तक भोजबास पहुँचे तब तक हम सब लोग बेहद थक चुके थे। वहाँ हम गढ़वाल मण्डल विकास निगम के अतिथिगृह में ठहरे। मुझे इतनी गर्मी महसूस होने लगी कि रात में मैंने अपना स्वेटर उतार दिया। भोजबास 13000 फीट की ऊँचाई पर बसा हुया है। वहाँ के विषम मौसम के कारण हम सब को सांस लेने में तकलीफ के साथ-साथ तेज सिरदर्द भी हो रहा था।

अगले दिन हम जल्दी सो कर उठे और साढ़े आठ बजे तक तैयार हो गए। मेरे आठ वर्षीय बेटे सुशांत को ऊँचाई के कारण स्वास्थ्य संबंधी तकलीफ हो रही थी, इसी कारण हमने उसे भोजबास में ही छोड़ दिया और 9 बजे गोमुख की यात्रा प्रारम्भ की। हालांकि आरंभ में यह बहुत मुश्किल चढ़ाई नहीं थी, पर आखिर के ढाई किलोमीटर बहुत कठिन थे। भूस्खलन के कारण पहले से बने हुए रास्ते का कोई निशान नहीं था। इस कारण हमें बड़े-छोटे चट्टानों के बीच से रास्ता तलाशते हुए आगे बढ़ना पड़ा। आखिरकार हम साढ़े ग्यारह बजे गोमुख पहुँच पाए। हम बहुत उत्साहित थे और आश्चर्य की बात यह थी कि गोमुख में उतनी भी ज्यादा ठंड नहीं प्रतीत हो रही थी। केवल एक ऊनी पतलून और कॉट्सवूल शर्ट से मेरा कम चल जा रहा था। लेकिन पानी बिलकुल बर्फीला था। भागीरथी में हमने

एक बड़ी बर्फ की चट्टान को बहते हुए देखा। गोमुख में डुबकी लगाने की मेरी अत्यंत प्रबल इच्छा थी। 1972 में भी मैंने गोमुख की यात्रा की थी, पर तब डुबकी नहीं लगा पाया था। इस बार मैंने सोते में कदम रखने का साहस किया, ऐसा प्रतीत हुआ मानो मेरे पैर कट रहे हों। मैं भयभीत हो गया और पीछे लौट गया। दूसरी बार, मैं फिर से पानी में गया, पर फिर लौट गया। आखिरकार 'ॐ नमः शिवाय' के उच्चारण के साथ मैंने डुबकी लगाई और ऐसी महान संतुष्टि का अनुभव किया जिसे मैं बयां नहीं कर सकता। मैं शिवलिंग शिखर की ओर उन्मुख होकर एक चट्टान पर ध्यानमग्न हो गया और चंद ही मिनटों में मैंने अपने भीतर तेज कंपन महसूस किया और मेरे गालों से होकर अश्रु बहने लगे। मैंने हिमनद की बर्फ चखी, संभवतः यह हजारों साल की थी। हम गोमुख में लगभग एक घंटे तक रुके। हम इतने थके थे कि उससे आगे की चढ़ाई पार करके साध्वी से मिलने का साहस नहीं जुटा पाए। मैंने गोमुख से ही श्रद्धापूर्वक उनको दंडवत नमन किया।

वहाँ से लौट कर हम रात में भैरों घाटी में ठहरे और अगली सुबह उत्तरकाशी के लिए निकल पड़े। दोपहर के 3 बजे तक हम गणेशपुरी आश्रम पहुँचे। उत्तरकाशी में हमने विश्वनाथ और शक्ति मंदिर जाकर दर्शन किया। यह एक विशाल प्राचीन मंदिर था, जहाँ एक शक्तिशाली शिवलिंग स्थापित था। शक्ति मंदिर में एक विशाल त्रिशूल था जो एक दर्शनीय चीज थी। अंततः 12 जून 1995 को हम लखनऊ लौट आए। हिमालय छोड़ते हुए मैं बिछुड़ने की तीव्र पीड़ा को महसूस कर सकता था। हिमालय के सौन्दर्य, आध्यात्मिक अनुभव और संत पुरुषों के आशीर्वाद ने मुझे पूरी तरह निर्भीक, स्वार्थरहित बना दिया; साथ ही संतुलन, आत्मविश्वास और समभाव से जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार कर दिया।

अध्याय-२२

सचिव, पंचायती राज और युवा मामले

(जुलाई 1995-सितंबर 1995)

एक मंत्री को संवैधानिक और कानूनी प्रावधानों के दायरे में रहकर हर काम करने का अधिकार प्राप्त है, पर वह लक्ष्मण रेखा पार नहीं कर सकता।

उत्तर प्रदेश में बड़ी राजनीतिक घटनाएँ घटित हो रही थीं। एक नई सरकार ने पदभार संभाला था और मुझे जुलाई 1995 में सचिव, पंचायती राज और युवा मामले का पद दिया गया। यहाँ मेरा कार्यकाल बहुत संक्षिप्त रहा, पर यह काफी दिलचस्प और महत्त्वपूर्ण रहा। पंचायती राज मंत्री ने कुछ जिलों का औचक निरीक्षण करने के बाद मुझे तीन जिलों के जिला पंचायती राज अधिकारियों को निलंबित करने का निर्देश दिया, क्योंकि इन जिलों में पुराने प्रधानों से नए प्रधानों को पदभार देने का काम पूरा नहीं हुआ था। मैंने जब घटनाओं का विश्लेषण किया, तब मैंने पाया कि इन जिलों में लगभग 95 प्रतिशत ग्राम सभाओं में पदभार देने का काम पूरा हो चुका था। मैंने मंत्रीजी से यह अनुरोध किया कि इन तीन अधिकारियों को निलंबित करने के स्थान पर हम कारण बताओ नोटिस जारी कर सकते हैं क्योंकि पदभार देने का काम 95 प्रतिशत पूरा हो चुका है। अन्यथा, समान प्रदर्शन के आधार पर लगभग सारे पंचायती राज अधिकारी निलंबित किये जा सकते थे। मंत्रीजी ने मेरी सलाह को माना और उन अधिकारियों के निलंबन पर बल नहीं दिया।

एक अन्य मौके पर मंत्रीजी ने मुझे यह लिखित आदेश दिया कि मैं कुछ खास व्यक्तियों को किसी ऐसे विशेष पदों पर नियुक्त करूँ जो कि जिला परिषद में नहीं थे। उन्हें पद सृजन की प्रक्रिया और ऐसे निर्णय लेने में सक्षम अधिकारी के विषय में पता नहीं था। मैंने उस पर एक विनयपूर्ण टिप्पणी की जिसमें मैंने पद सृजन प्रक्रिया और सक्षम अधिकारी के विषय में बताया। इन चीजों के अभाव में मेरे लिए मंत्रीजी के आदेश का पालन करना असंभव था। अपनी टिप्पणी के साथ मैंने विधि विभाग का मत भी संलग्न कर दिया। मैंने फाइल को

पुनर्विचार के लिए मंत्रीजी को भिजवा दिया और अपने आवास पर चला आया। लगभग साढ़े आठ बजे रात में मुझे मंत्रीजी ने फोन किया। वे काफी चिढ़े हुए थे। उन्होंने कहा, ''मिश्राजी, आपको क्या ऐसा लगता है कि लोकतान्त्रिक व्यवस्था में एक मंत्री का कोई अधिकार नहीं?'' मैंने विनम्रता से कहा, ''सर, आप को संवैधानिक और कानूनी प्रावधानों के दायरे में रहकर हर काम करने का अधिकार प्राप्त है, पर आप लक्ष्मण रेखा पार नहीं कर सकते। चूंकि मैं आपका सचिव हूँ, यह मेरा दायित्व है कि आपको उचित सलाह दूँ और एक सचिव के रूप में मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि आप लक्ष्मण रेखा पार न करें।'' उन्होंने उपहास के अंदाज में कहा, ''आपको मेरा शत-शत प्रणाम।'' मैंने जवाब दिया, ''सर, मेरी ओर से आपको कोटि-कोटि प्रणाम।'' इस प्रकार यह बातचीत समाप्त हो गई।

इस घटना के बाद उन्होंने मुख्यमंत्री को यह शिकायत की कि पंचायती राज सचिव एक दुराग्रही अधिकारी हैं और वह मंत्री के आदेश का पालन नहीं करते। मुख्यमंत्री ने अपने सचिव को बुलाया और मुझे निलंबित करने का निर्देश दिया। सचिव मुझे अच्छी तरह जानते थे, उन्होंने मुख्यमंत्री के समक्ष विचार रखा कि श्री मिश्रा एक ईमानदार और कुशल अधिकारी हैं, उनका निलंबन नौकरशाही में गलत संदेश दे सकता है। मुख्यमंत्री ने उनकी बात नहीं सुनी और उपहास के अंदाज में कहा कि नौकरशाह केवल एक दूसरे को मदद करने में ही लगे रहते हैं। सचिव ने परिस्थिति की जटिलता को समझा और चले आए। अगले दिन मुख्यमंत्री सचिवालय के सारे अधिकारी सचिव के नेतृत्व में मुख्यमंत्री से मिलने गए। सचिव एक होशियार अधिकारी थे, वे जानते थे कि राजनेता केवल शक्ति और राजनीति की भाषा ही समझते हैं। इस कारण उन्होंने मुख्यमंत्री को यह बताया कि श्री मिश्रा केवल एक ईमानदार और समर्पित अधिकारी ही नहीं हैं, बल्कि वे तीन साल लगातार आईएएस एसोसिएशन के निर्विरोध सचिव भी चुने जा चुके हैं। मुख्यमंत्री, जो एक चतुर राजनेता भी थे, इस लहजे और बात को समझ गए और उन्होंने निलंबन की बजाए केवल स्पष्टीकरण मांगा। इस तरह सचिव ने परिस्थितियों को कुशलता से संभालते हुए मुझे निलंबन से बचा लिया।

कुछ महीने बीते, इस दौरान मैं ऊर्जा के जादुई एहसास को महसूस करता रहा, ऊर्जा का प्रवाह, शरीर का कड़ा होना, जलन का एहसास, टिमटिमाती रोशनी, आँखों और होंठों पर दबाव आदि महसूस होते रहे। कई बार मैंने कैप्सूल

जैसी लाल, नीली और सफेद रोशनी देखने का अनुभव किया। एक रात मैंने एक बहुत ही सुंदर खुशबू को काफी देर तक महसूस किया। एक दूसरी रात मैंने स्पष्ट रूप से किसी नूपुर की आवाज सुनी, बाद में इसके स्थान पर बादल के गरजने की आवाज सुनाई देने लगी। मैंने ऐसा महसूस किया कि कोई अदृश्य शक्ति मेरी रक्षा कर रही है। मेरे विभाग के मंत्री मुझे नुकसान पहुँचाना चाह रहे थे, मेरे खिलाफ मुख्यमंत्री के कान भरना चाह रहे थे, पर अदृश्य शक्ति की कृपा से कुछ भी अनिष्ट नहीं हुआ। मैं अभिभूत था और उस शक्ति के प्रति अपने हृदयानुभूत आभार की अभिव्यक्ति स्वरूप फूट कर रोया। वह मेरे लिए बहुत दयालु रहा।

एक दिन मैं 3 बजे सुबह ही उठ गया। शौच से निवृत्त होने के बाद मैं फिर से बिस्तर पर चला आया, पर एक भक्ति गाने की धुन मेरे दिमाग में गूंज रही थी। धीरे-धीरे मैंने यह महसूस किया कि एक महान शक्ति मुझे अपने आगोश में ले रही है। मैं 'ओम नमः शिवाय' का जाप करने लगा और यौगिक क्रियाएँ घटित होने लगीं। पर मेरी एकाग्रता गहन नहीं थी। मेरा ध्यान बार-बार भंग हो जा रहा था और मैंने महसूस किया कि मेरे पूर्व कर्मों में कुछ ऐसा है जो मेरी प्रगति में बाधक बन रहा है। मैंने महान संतों जैसे स्वामी हंसानन्द जी, गंगोत्री के स्वामी दिनेशानंद जी, स्वामी चिन्मायानंद, स्वामी विवेकानंद और इन सब से बढ़कर शिरडी के साईं बाबा का स्मरण किया। मैंने स्वयं को पूरी तरह अलौकिक शक्ति के हवाले कर दिया और इन संतों का आह्वान करते हुए मैंने इनसे दया की विनती की और निष्ठापूर्वक उनसे बाधाओं को हटाने की प्रार्थना की। इसके बाद मुझे कमरे में शान्तिदायक रोशनी दिखाई देने लगी। मुझे शुरू में ऐसा लगा कि यह चाँद की रोशनी है। यह दीप्ति असल में मेरे समक्ष महान रहस्योद्घाटन था, पर अपने अज्ञान के कारण मैं ईश्वर को पहचान नहीं सका। उस दिन आसमान में कोई चाँद नहीं था, अंधेरी रात थी। निश्चित रूप से महान शक्ति ने अपने अस्तित्व और अपने चमत्कार का एक अंश मेरे समक्ष प्रकट किया था। मैं भावनात्मक रूप से इतना उद्वेलित था कि मैं एक बच्चे की तरह रोने लगा।

अध्याय-२३

सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी

(अक्टूबर 1995-दिसंबर 1995)

अपने जीवन में मेरा कोई प्रशासनिक या राजनीतिक गुरु नहीं है। मेरा गुरु केवल एक है और वह है ईश्वर।

पंचायती राज सचिव के रूप में मेरा कार्यकाल केवल तीन महीने तक चला, उसके बाद मेरा स्थानांतरण सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के पद पर हो गया। इसे सजा के तौर पर दी जाने वाली नियुक्ति माना जाता था। मैंने तुरंत ही पदभार ग्रहण कर लिया और नए पद पर काम शुरू कर दिया। जब मैंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री, जिनके बारे में यह माना जाता था कि वे के कुशल प्रशासक थे, को फोन किया, तो उन्होंने कहा, ''मिश्राजी, आपको विभाग कैसा लगा?'' जब मैंने यह उत्तर दिया कि यह एक अच्छा विभाग है जहाँ बहुत संभावनाएँ हैं, तो उन्होंने विनोदपूर्ण अंदाज में कहा कि पहली बार वे ऐसी प्रतिक्रिया सुन रहे हैं। उस विभाग में मुश्किल से एक या दो फाइलें आया करती थीं और व्यवहारत: वहाँ कोई काम नहीं होता था। मैं वहाँ काम का सृजन करना चाहता था इसीलिए मैंने वैज्ञानिकों और वैज्ञानिक संस्थानों से बातचीत करना शुरू किया और राज्य की नई विज्ञान नीति की रूपरेखा तैयार करने के लिए कदम बढ़ाने लगा। मुझे डॉ. कस्तूरीरंगन जैसे महान अंतरिक्ष वैज्ञानिक से बातचीत करने का सौभाग्य मिला। मैंने उत्तर प्रदेश सरकार के हर विभाग को वैज्ञानिक निवेशों के लिए बजट में एक खास प्रतिशत निर्धारित करने, साथ ही साथ शैक्षणिक संस्थाओं में विज्ञान क्लबों को प्रोत्साहित करने के माध्यम से छात्रों के मध्य जागरूकता और वैज्ञानिक चेतना का निर्माण करने के लिए कदम उठाने का भी सुझाव दिया। 24 अक्टूबर 1995 को पूर्ण सूर्यग्रहण लगा। इस अवसर का मैंने छात्र समुदाय को जानकारी देने और ग्रहण के बारे में प्रचलित अंधविश्वासों को दूर करने के लिए जागरूकता यात्रा, वाद-विवाद प्रतियोगिता और वैज्ञानिकों के भाषण आदि आयोजित करने में इस्तेमाल किया। ग्रहण का अवलोकन करने के लिए पहली बार विद्यार्थियों के बीच खास तरह के चश्में बाँटे गए। विभाग के इन प्रयासों की बहुत सराहना की

गई। लखनऊ में जब यह ग्रहण 7 बजकर 26 मिनट में शुरू हुआ, मैं खास धूप चश्में से इसे देखने का लोभ-संवरण नहीं कर पाया। टीवी नेटवर्क इस ग्रहण का नीमकाथाना (राजस्थान), डायमंड हार्बर (पश्चिम बंगाल), इरादतगंज (इलाहाबाद) और दिल्ली से इस ग्रहण का सीधा प्रसारण कर रहे थे। इस ग्रहण का डायमंड रिंग प्रभाव इतना शानदार था कि मेरे रोम खड़े हो गए और आँखों में आँसू आ गए। सूर्य देवता की जीवदायिनी शक्ति ने अपने वैभव और व्यक्तित्व का एक छोटा सा अंश हमें दिखाया। इस शानदार खगोलीय परिघटना को देखकर मैं श्रद्धा से अवाक रह गया। मैं स्वत: ही इस महान ब्रह्मांडीय आत्मा के समक्ष श्रद्धा से झुक गया।

2 नवंबर 1995 को लगभग 20 साल बाद मैं ऑफिस के किसी काम से महोबा गया। मैं इस जगह से जुड़ी अपनी यादों से भावुक महसूस करने लगा। मैं यहाँ अगस्त 1975 से लेकर जुलाई 1976 तक ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट रहा था। उन दिनों के अनुभव और तस्वीरें मेरे दिमाग में आने लगे। उस समय मैं चंद्रिका देवी के दर्शन हेतु जाया करता था, खासतौर पर तब जब मैं निराश या तनाव में होता था। 20 साल बाद माता के दर्शन को लेकर मैं बहुत उत्साहित था। मैं शाम के समय मंदिर गया। मौसम बहुत शांत और निर्मल था और जब मैंने मूर्ति को देखा, मैं उसके सौन्दर्य और तेज से अभिभूत हो गया। ऐसा महसूस होने लगा कि मैं उस स्थल को छोड़ूँ ही नहीं। माता बहुत सुंदर, सौम्य और दयालु दिख रही थीं। लेकिन मुझे पीड़ा के साथ वहाँ से विदाई लेनी पड़ी।

जब मेरा मन अच्छा नहीं होता तो मेरे पास अपनी भावनाएँ व्यक्त करने के लिए ईश्वर के अलावा कोई अन्य मित्र नहीं होता। मैं ईश्वर से एक बच्चे और एक मित्र के रूप में बात करता हूँ। इससे मेरे संतप्त हृदय को सांत्वना मिलती है। 18 नवंबर 1995 की अगली सुबह मैं उठा, प्रात:कालीन कर्मों से निवृत्त हुआ और ध्यान लगाने बैठा। धीरे-धीरे मैं ऊँचाई पर पहुँचता चला गया। आग्नेय चक्र के क्षेत्र में मुझे शांत श्वेत रोशनी का छोटा सा चक्र दिखाई दिया। धीरे-धीरे यह छोटा चक्र बढ़ता गया और अंतत: इसने मेरे पूरे मस्तक को आच्छादित कर लिया।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग में काम बहुत मुश्किल नहीं था और मुझे अपने परिवार और बच्चों के लिए पर्याप्त समय मिलता था। ऐसी आरामदायक नियुक्ति इस अर्थ में एक वरदान थी कि मैं बच्चों पर ज्यादा समय दे सकता

था और आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ सकता था। जीवन बहुत मजे में चल रहा था कि एक दिन अचानक मुझे राज्यपाल के सचिव का फोन आया। उन्होंने मुझसे कहा कि क्या मैं सीईओ नोएडा के पद पर नियुक्ति में दिलचस्पी रखता हूँ? उस समय राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू था। मैं इस नियुक्ति को लेकर थोड़ा हिचकिचा रहा था क्योंकि इस समय मेरे तबादले के कारण मेरी बेटियों की बोर्ड परीक्षा की तैयारी में समस्या आ सकती थी। मैंने उनको जवाब दिया, ''नहीं'', लेकिन सचिव चाहते थे कि मैं उन्हें ऐसे ईमानदार अधिकारियों की सूची दूँ जो इस पद के लिए उपयुक्त हो सकते हैं। जब मैं यह सूची बना रहा था, मेरी पत्नी जो यह बातचीत सुन रही थीं, ने कहा, ''प्रशांत, ईश्वर ने तुम्हें अवसर दिया है। इसे ठुकराओ नहीं। इसके अलावा, इससे बच्चों की कॉलेज शिक्षा में भी फायदा मिलेगा क्योंकि नोएडा दिल्ली के करीब है।'' मैंने सचिव से मुलाकात की और उन्हें कहा, ''सर ये निष्ठावान और ईमानदार अधिकारियों की सूची है। पर आप मुझे यह बताइये कि क्या मेरा तबादला लखनऊ के बाहर होगा?'' उन्होंने कहा, ''अगर तुम नोएडा में दिलचस्पी नहीं रखते हो तो तुम्हारा तबादला बनारस डिवीजन के कमिश्नर के रूप में किया जाएगा क्योंकि तुम एक आध्यात्मिक व्यक्ति हो।'' मैंने कहा, ''सर, अगर मेरा तबादला होना ही है तो आप नोएडा के लिए भी मेरे नाम पर विचार कर सकते हैं।'' इस प्रकार 8 दिसंबर 1995 को मुझे ट्रांसफर ऑर्डर मिल गया और अगले दिन मैंने पदभार ग्रहण कर लिया।

नोएडा के सीईओ पद को एक प्रतिष्ठित और महत्त्वपूर्ण पद माना जाता है और अधिकारी इस पद को हासिल करने के लिए राजनीतिक और प्रशासनिक दबाव बनाते हैं। पर मेरे मामले में यह ऐसे ही हो गया। मैंने अपने जीवन में तबादले, नियुक्ति या प्रोन्नति के लिए किसी राजनेता या प्रशासनिक अधिकारी के पास गुहार नहीं लगाई, न ही अपने जीवन में मेरा कोई प्रशासनिक या राजनीतिक गुरु है। मेरा गुरु केवल एक है और वह है ईश्वर। जीवन के हर कदम पर वही मेरा ध्यान रखता है।

अध्याय-२४

सीईओ, नौएडा

(दिसंबर 1995-अगस्त 1996)

जब तुम प्राधिकार की स्थिति में रहो, लाभ स्वयं मत हथियाओ, बल्कि दूसरों को लाभ प्रदान करो। यदि आप इस सिद्धान्त का पालन करोगे तो कोई भी उंगली तुम्हारी ओर नहीं उठेगी।

नोएडा में मेरा प्रवास बमुश्किल आठ महीने रहा क्योंकि निहित स्वार्थ मेरे कामकाज के अंदाज से मेल नहीं खा रहे थे। नोएडा हमेशा ही भ्रष्ट प्रशासकों और राजनेताओं के लिए दुधारू गाय के रूप में जाना जाता रहा है। मुझे उस स्थान को स्वच्छ करने का शासनादेश मिला था। यह एक ऐसी जगह है जहाँ बड़ी हस्तियों जैसे कलाकारों, प्रशासकों, न्यायाधीशों, सांसदों, बौद्धिकों, शिक्षाविदों, रक्षा अधिकारियों और व्यावसायिक हस्तियों का बड़ा समूह निवास करता है। पर दुर्भाग्य से कभी इस स्थान के गुणात्मक विकास में इन हस्तियों की सेवा नहीं ली गई। जिस दिन मैंने वहाँ कदम रखा, उसी दिन मैं वहाँ व्याप्त भ्रष्टाचार को महसूस कर सकता था, वह स्पष्टगोचर था। चूंकि सीईओ का आवास खाली था, मैं वहीं ठहरा और वहाँ दोपहर के भोजन की विस्तृत व्यवस्था देख कर बहुत हैरान हुआ। रात का खाना भी वैसे ही बहुत शानदार था। मैं शंका में पड़ गया और वहाँ के सेवक से पूछा कि यह व्यवस्था कौन कर रहा है। मैंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि मैं इन सब का भार वहन नहीं कर सकता और यहाँ केवल सादा भोजन ही परोसा जाए। सेवक ने बताया, ''सर, यहाँ की सारी व्यवस्था की देखभाल चीफ इंजीनियर करते हैं।'' मैं भौचक रह गया और तुरंत ही इस प्रचलन को खत्म कर दिया।

मेरे बेहद संक्षिप्त प्रवास के दौरान बहुत ज्यादा काम तो नहीं किया जा सका पर बहुत सारी पहलकदमी ली गई। इनमें वृहत स्तर पर वृक्षारोपण, फव्वारों के साथ यमुना फ्रंट गार्डेन का सौंदर्यीकरण, नक्शा पास करने की प्रक्रिया का सरलीकरण, नोएडा के प्रबंधन में ईमानदार अवकाश प्राप्त अधिकारियों को

शामिल किया जाना, स्मृति वन की शुरुआत, रैनी वेल स्थापित किया जाना और पेयजल सुविधाओं में सुधार के लिए गंगाजल की आपूर्ति का आदि शामिल थे। मेरे पास एक बॉटनीकल गार्डेन, साइन्स सिटी और एक आईआईटी परिसर की भी विस्तृत योजना थी। बॉटनीकल गार्डेन की योजना में मुझे सफलता मिली, हालांकि अगस्त 1996 में मेरे तबादले के बाद इसमें काफी समस्याएँ भी आयीं। नोएडा में साइन्स सिटी की योजना के लिए भी मुझे स्वीकृति मिली और आईआईटी दिल्ली ने भी नोएडा में कैंपस बनाने के लिए हामी भरी पर इन योजनाओं को आर्थिक लाभ के लिए आवासीय प्लॉट की वेदी पर कुर्बान कर दिया गया। मैंने झुग्गी में रहने वालों के लिए आवास सुविधाओं के लिए भी पहल की थी पर मेरे तबादले के बाद यह योजना भी त्याग दी गई।

दिल्ली और गुड़गाँव से निकटता के कारण नोएडा बहुत महत्त्वपूर्ण शहर बन गया था और हर कोई यहाँ किसी भी कीमत पर एक घर या एक प्लॉट चाहता था। इसके कारण यहाँ प्लॉट और आवास आवंटन योजनाओं के क्रियान्वयन में कई अनुचित गतिविधियों का मार्ग प्रशस्त हो गया था। इसी से जुड़े एक आरोप की जाँच का निर्देश मुझे मिला था और जब मैंने उसकी जाँच की तो मुझे पता चला कि कई क्षेत्रों की अनेक प्रभावशाली हस्तियों को अनुचित लाभ पहुँचाया गया है। जब मैंने इस बात को अपने चेयरमैन और गवर्नर के सचिव के ध्यानार्थ रखा तो उन्होंने मुझे पूरी जाँच करने और रिपोर्ट देने का निर्देश दिया। मैंने यह पूरी तरह स्पष्ट कर दिया कि मैं रिपोर्ट में किसी तरह का छल का आवरण लगाने में असमर्थ हूँ और रिपोर्ट में पूरी बात स्पष्ट रूप से कही जाएगी। जाँच के बाद मैंने यह पाया कि 105 मामलों में अवैध आवंटन/परिवर्तन किया गया है। जीवन में पहली बार मैंने थोड़ी विकलता महसूस की क्योंकि इस मामले में कई महत्त्वपूर्ण हस्तियों के नाम थे। फाइल मेरे पास ताले में सुरक्षित रखी हुई थी, मैं बेचैन महसूस कर रहा था। मार्गदर्शन के लिए शाम में मैंने ध्यान लगाया, मेरे अन्त:करण ने मुझसे कहा, ''प्रशांत, तुम स्वयं को साहसी और ईमानदार अधिकारी मानते हो, पर तुम निर्णय लेने में हिचक रहे हो। कहाँ गया तुम्हारा साहस, तुम्हारी ईमानदारी?'' मुझे उत्तर मिल गया।

उसी रात मैंने आदेश अपने हाथ से लिखे और पूजागृह में जाकर फाइल ईश्वर को प्रस्तुत करते हुए कहा, ''हे ईश्वर! मैंने अपना दायित्व निभा दिया है, अब मेरी रक्षा करने की आपकी बारी है।'' असल में मेरी छवि बिगाड़ने के हर

प्रयास से अलौकिक शक्ति ने मेरी रक्षा की, जैसा कि आगे के घटनाक्रमों ने स्पष्ट किया।

जैसे ही मैंने अवैध आवंटन/परिवर्तन को निरस्त करने का निर्णय लिया, तुरंत ही मेरा तबादला कर दिया गया। 16 अगस्त की शाम को तबादले का आदेश आ गया और हालांकि मेरे चेयरमैन और मुख्य सचिव किसी चर्चा में मेरे साथ ही थे, पर वे इस खबर को मुझे बताने का साहस नहीं जुटा पाए। जब मैं शाम को अपने घर पहुँचा, मेरी पत्नी ने मुझे सचिव, सहकारिता के पद पर लखनऊ तबादले के आदेश की सूचना दी। मैंने इस बात को बिलकुल समभाव से लिया। यह बात चल ही रही थी कि मुझे मेरे उत्तराधिकारी का फोन आया। उन्होंने मुझसे कहा, ''प्रशांत, मुझे दुख है, पर दुर्भाग्य से मुझे तुम्हारे बाद सीईओ नोएडा का पदभार ग्रहण करना है। मैं कब आ जाऊँ?'' मैंने कहा, ''सर, इस बारे में आप क्यों दुखी होते हैं? यह तो हमारे काम का हिस्सा है। आप किसी भी समय आकर पदभार ले सकते हैं। अगर आप पहले से ही नोएडा में हैं, तो अभी ही चले आ सकते हैं।'' वे हँसने लगे और मुझसे कहा कि अगले दिन वे फ्लाइट से आएँगे। अगले दिन वे थोड़ी देर से ऑफिस आए। उनके आने से पहले ही मैंने जरूरी कागजों पर दस्तखत कर दिये थे और जब वे आए तो मैंने उन्हें जरूरी कागजात सौंप दिए। पदभार लेते हुए उन्होंने मुझसे पूछा, ''प्रशांत, वह जाँच वाली फाइल कहाँ है?'' मैंने उनको कहा, ''सर, मैंने पहले ही प्लॉट खारिज कर दिए हैं और दुर्भाग्य से उसमें आपका भी एक प्लॉट है।'' वे फिर से हँसने लगे और कहा ''तुम्हें रोक पाना बहुत मुश्किल है।'' उन्होंने किसी प्रकार का विद्वेष नहीं दिखाया, वे विनम्र थे और उन्होंने बहुत सहायता भी की। मेरे अनुरोध पर उन्होंने मेरे परिवार के लिए एक आवास आवंटित कर दिया, क्योंकि मेरे बच्चे डीपीएस नोएडा में पढ़ रहे थे।

मैं जानता था मैंने मुश्किल रास्ते का चुनाव कर लिया है, पर इन अल्पकालिक बाधाओं और कष्टों ने ऐसी कठिन परीक्षाओं का सामना करने के लिए मुझे और भी प्रतिबद्ध बनाया। अपने सख्त रवैये और सिद्धान्तवादिता के कारण सत्ता ने 15 महीनों की अल्प अवधि में मेरा पाँच बार तबादला किया! मुझे प्रताड़ित करने के लिए फर्जी शिकायतें दर्ज कराई गयीं, पर मैं विचलित नहीं हुआ। मेरे एक सहकर्मी ने मेरे और कुछ और सहकर्मियों के खिलाफ दुर्भावनापूर्ण आक्षेप लगाए। मैं आहत हुआ फिर भी मैं इस पर हँसा। शुरू में मैं

थोड़े क्रोध में आ गया पर तुरंत ही ठंडा भी हो गया। पहली बार मैंने यह अनुभव किया कि एक सहकर्मी कितना विद्वेषी हो सकता है। बहरहाल, मेरे लिए यह एक अच्छा सबक था और मैंने पहली बार यह अनुभव किया कि ऐसे मौकों पर केवल ईश्वर पर विश्वास ही आपकी रक्षा कर सकता है। मैंने ऐसी हर शिकायतों का विस्तृत जवाब दिया। ऐसी जाँचों से परेशान होकर मैंने मुख्य सचिव को एक विनम्र पत्र लिखा कि एक ईमानदार अधिकारी के सम्मान को बनाए रखें, अन्यथा 'ईमानदार अधिकारी' कही जाने वाली पूरी प्रजाति दुर्लभ हो जाएगी। जिन लोगों ने मेरे खिलाफ शिकायत और षड्यंत्र किए, उन सब पर सीबीआई और न्यायिक जाँच बिठाई गई और अंततः उनको सजा मिली। चूंकि सत्य मेरी ओर था, इसलिए मेरा कुछ नुकसान नहीं हुआ। मेरा सम्मान बना रहा और अदृश्य शक्ति ने मेरी छवि को नुकसान पहुँचाने के सारे प्रयासों को असफल कर दिया।

नोएडा में नियुक्ति को पुरस्कार स्वरूप मिलने वाला पद माना जाता था, पर मेरे मामले में संभवतः यह मेरे करियर की सबसे बुरी नियुक्ति थी। चरित्र पर कीचड़ उछालना किसी भी अच्छे आदमी को बदनाम करने का एक शक्तिशाली हथियार बन गया है। मैंने अपने कड़वे अनुभवों से काफी कुछ सीखा, यह कि एक व्यक्ति को अपने ही बूते प्रदर्शन करना चाहिए और संकट के समय अपने सहकर्मियों, उच्च अधिकारियों या राजनीतिक आकाओं के सहयोग पर निर्भर नहीं होना चाहिए। मेरे बड़े भाई ने मुझे एक संयत सलाह दी थी जो मैंने हमेशा अपने दिमाग में बनाये रखी। उन्होंने कहा था, ''प्रशांत, जब तुम प्राधिकार की स्थिति में रहो, लाभ स्वयं मत हथियाओ बल्कि दूसरों को लाभ प्रदान करो। यदि आप इस सिद्धान्त का पालन करोगे तो कोई भी ऊँगली तुम्हारी ओर नहीं उठेगी।'' मैंने इस सिद्धान्त का अपने कैरियर पर्यंत पूरी सतर्कता से पालन किया। सीईओ नोएडा की हैसियत से हालांकि मैं एक प्लॉट पाने का हकदार था, पर मैंने प्लॉट लेने से इंकार कर दिया। इसके अलावा, मेरे पास इसके लिए लाखों की रकम जमा करने के लिए वित्तीय साधन नहीं थे। नोएडा के एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति मेरे आवास पर आए और मुझे तोहफे या अधिक से अधिक ब्याज रहित कर्ज के रूप में मदद करने का प्रस्ताव दिया, पर मैंने उनके प्रस्ताव को ठुकरा दिया। मैंने उनको कहा, ''श्रीमान आप पी.के. मिश्रा के चरित्र को समझ नहीं पाए हैं। आप जा सकते हैं।'' जीवन के प्रति इस दृष्टिकोण ने मुझे कई प्रकार के संकटों से बचाया और मुझ पर होने वाले कई हमलों को मोड़ दिया।

मैं काफी समय से बेचैन महसूस कर रहा था। रात में मैंने ब्रह्मांड में विचरण कर रही प्राणशक्ति से पथ-प्रदर्शन की प्रार्थना की। एक रात मुझे उत्तर मिल गया; 'अपने इष्ट देवता का ध्यान करो और मूल की ओर लौटो।' इस निर्देश ने निस्संदेह मेरी मदद की और मेरी बेचैनी समाप्त हो गई। इस दौरान मैंने विंध्याचल, इलाहाबाद, वृन्दावन, गोवर्धन, मदमहेश्वर और शिरडी की यात्रा की। सामान्य तौर पर हर नवरात्र, चाहे वह चैत्र नवरात्र हो या शारदीय नवरात्र, मैं माँ विंध्यवासिनी, कालीखोह और अष्टभुजा के दर्शन के लिए मिर्जापुर में विंध्याचल की यात्रा किया करता था। पर इस बार मैंने यह सोचा कि चूंकि मैं विंध्याचल से काफी दूर हूँ इसलिए शायद मैं दर्शन कर पाने में समर्थ न हो पाऊँ। पर आश्चर्यजनक रूप से, ठीक नवरात्र के ही दौरान मुझे राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा एक विशेषज्ञ के रूप में साक्षात्कार में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया। 20 मार्च 1996 को सुबह में प्रयागराज एक्सप्रेस से मैं इलाहाबाद पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर मैं अध्यक्ष से मिला, अपना काम समाप्त किया और मिर्जापुर के लिए रवाना हो गया। मिर्जापुर के पुलिस अधीक्षक श्री सबत ने मेरे दर्शन की व्यवस्था करने में काफी मदद की। वह नवरात्र का पहला दिन था और माँ विंध्यावासिनी की पूजा करते समय मैं रो पड़ा। इसके बाद मैं अष्टभुजा पहाड़ पर नरहरि बाबा से मिला और उनका आशीर्वाद लिया। उन्होंने मुझे फिर से आश्वस्त किया कि मैं अपनी आध्यात्मिक यात्रा में असफल नहीं होऊँगा। दरअसल उन्होंने कहा कि मैं दिन प्रतिदिन इस मामले में प्रगति हासिल करूँगा। अष्टभुजा मंदिर की गुफा में मैं अवधूत राम से मिला। मैंने सोचा कि मैंने उन्हें पहले भी देखा है पर याद नहीं कर पा रहा हूँ। उन्होंने अपनी आँख बंद कर ली और मेरे बारे में भविष्यवाणी करने लगे। उन्होंने बताया कि साधना के कारण मैं अपना वजन कम कर रहा हूँ और यह भी कि पिछले जन्म में मैं योगी था। उन्होंने सलाह दी, 'हृदय में बंसी बजाओ।' मैं इसका अर्थ समझ नहीं पाया; शायद वे मुझे अपने मन में ध्यान करने की सलाह दे रहे थे या शायद वे मुझे अपने हृदय के द्वार दूसरों के लिए बंद कर लेने की सलाह दे रहे थे।

इलाहाबाद में अपने प्रवास के दौरान 23 मार्च 1996 की सुबह मैंने हनुमान मंदिर और शंकराचार्य मंदिर के दर्शन किए। उसी शाम सेना के अधिकारियों की अनुमति से मैंने किले के अंदर के वट वृक्ष के दर्शन किये। यह वही बरगद का पेड़ है जो पुराणों में उल्लिखित है। यह भारद्वाज मुनि का आश्रयस्थल था और

ऐसा कहा जाता है कि भगवान राम भी इस पेड़ के दर्शन के लिए आए और प्रलय के साक्षी बने। उस पवित्र वृक्ष के नीचे बीस मिनट तक साधना करना एक अद्‌भुत अनुभव था। मैंने अशोक के स्तम्भ को भी देखा जो हजारों सालों से प्रकृति की मार झेल रहा है। इलाहाबाद की यात्रा ने हमें फिर से तरोताजा कर दिया और 24 मार्च को मैं नोएडा लौट आया।

तीन दिन बाद, दिन में लगभग 11 बजे मैं अकस्मात् ही सुल्तानपुर के पंडित राम चन्द्र शुक्ल के घर चला गया, जो अंतरज्ञानी भविष्यवाचन के लिए विख्यात थे। दरअसल, गाजियाबाद के एसएसपी श्री पीके तिवारी इस मुलाकात को संभव बनाने में प्रमुख भूमिका में रहे। शुक्ला जी ने यह भविष्यवाणी की कि मैं सिद्ध लोगों के परिवार से संबंध रखता हूँ और मैंने अपने पिछले जन्मों में काफी अच्छी साधना की है। मैं प्रतिदिन कुछ न कुछ आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करता रहता था और यह मेरे जीवन का एक अंग बन गया था। पर 1 अप्रैल 1996 की रात को जब मैं 'ओम नम: शिवाय' मंत्र का जाप करते हुए सोने गया तब एक असाधारण घटना घटित हुई। अचानक से मैंने अपने मस्तक पर रोशनी की भीषण बाढ़ महसूस की, जिसकी चमक को झेल पाने में मैं असमर्थ था। मैं भयभीत हो गया और इस भय से काँपने लगा कि कुछ अनिष्ट होने की संभावना है। मैं हाँफने भी लगा। इसके बाद रोशनी गायब हो गई पर काफी देर तक मैं प्राणहीन रहा, सामान्य होने में मुझे कुछ मिनटों का समय लग गया।

काफी दिनों से मेरे मन में 'परिक्रमा' के लिए गोवर्धन गिरि जाने का विचार आ रहा था, पर यह विचार कार्यरूप में परिणत नहीं हो पा रहा था। 10 मई 1996 को जाकर वह दिन आया जब मेरा यह सपना पूरा हुआ। कई दिनों से मैं छुट्‌टी बिताने के लिए किसी आध्यात्मिक जगह जाने के बारे में सोच रहा था। शुरू में मैं यमुनोत्री जाने के बारे में सोच रहा था, पर यह संभव नहीं हो पाया। एक दिन श्री एनसी शर्मा मेरे घर आए और तुरंत ही हमने अगले सप्ताह वृन्दावन जाने की योजना बना ली। 10 मई को शाम 4:00 बजे के लगभग हमने अपनी यात्रा शुरू की। लगभग 7:30 बजे शाम को हम वृंदावन पहुँचे और हमने 10:00 बजे से गोवर्धन की रात्रि परिक्रमा शुरू की। गोवर्धन गिरिराज जी के समक्ष प्रार्थना करते हुए वहाँ के वातावरण के कारण मेरा शरीर कांप रहा था। श्री शर्मा, श्री मान सिंह (चपरासी) और महादेव जी के साथ मैंने यात्रा शुरू की। महादेव जी हर स्थान के महत्त्व के बारे में हमें बताते चल रहे थे। वे बहुत अनोखे व्यक्तित्व के स्वामी थे। हमने रात्रि परिक्रमा का पूरा आनंद लिया। 21 किलोमीटर की चढ़ाई

हमने भरपूर उत्साह के साथ पूरी की। देर रात को सड़क के किनारे मिट्‌टी के प्याले में गरमा गरम चाय ने हमें भरपूर ताजगी दी। हमारे साथ कुछ और लोग भी परिक्रमा कर रहे थे। इस पूरी अवधि में मैं 'हरे कृष्ण' का जाप करता रहा। सड़क के किनारे ढेरों लोगों को सोता देखकर मैं बहुत आश्चर्यचकित हुआ। मुझे यह बताया गया कि ये 'यात्री' हैं जो अगली सुबह अपनी 'यात्रा' पुनः प्रारम्भ करेंगे। इनमें एक दो लोग 1008 दंडवती करने वाले भी थे। इसका अर्थ यह मैं समझ नहीं पाया। महादेवजी ने बताया कि कुछ लोग यहाँ परिक्रमा करते हुए अपना शरीर होम कर देने के प्रण के साथ यहाँ आते हैं। ऐसे तीर्थयात्री अपने साथ 1008 कंकड़ रखते हैं, सड़क पर एक बार दंडवत करते हैं और एक कंकड़ अपने बाजू में धारण कर लेते हैं। इस प्रकार जब उनके सारे 1008 कंकड़ समाप्त हो जाते हैं तब वे अगले स्थान पर जाते हैं और वहाँ यही प्रक्रिया शुरू हो जाती है। यह बहुत ही कठिन यात्रा होती है और इसे पूर्ण होने में लगभग समूचा जीवन लग जाता है। महादेवजी इस इलाके और इसके महत्त्व के बारे में अपनी जानकारी से हमें मोहित करने का प्रयास कर रहे थे। हालांकि हमें कुछ फफोले पड़े, पर हमने अपनी यात्रा जारी रखी। रास्ते में हमने राधा कुंड और कृष्ण कुंड देखे। वहाँ हमने 15 मिनट के विश्राम का आनंद लिया। जब हम कुंड से आगे बढ़े तब रात के लगभग 2:45 बज रहे थे। लगभग एक किलोमीटर आगे बढ़ने के बाद हमें तेज धूल भरी आँधी और साथ ही गरज के साथ बारिश का सामना करना पड़ा। आसपास बचने की जगह के नाम पर केवल जंगल का एक स्कूल था। हम स्कूल के बरामदे में खड़े रहे। ठंडी हवा बह रही थी। हम थक भी चुके थे। हम चारों में किसी को यह पता नहीं चला कि हम कब सो गए। वहाँ लगभग 2 घंटे की नींद बहुत आनंददायक रही। जब मैंने अपनी आँख खोली तो 5 बज चुके थे। हमने भगवान कृष्ण और गिरिराज जी को धन्यवाद दिया। हमारे विचार में आया कि इंद्र के क्रोध से अपने भक्तों की रक्षा करने का दृश्य ही लघु रूप में पुनः उपस्थित हुआ। बारिश के बाद सुबह ठंडी और खुशनुमा थी। हमने अपनी यात्रा पुनः प्रारम्भ की, रास्ते में हमें कुसुम सरोवर मिला। गाथाओं के अनुसार इसी सरोवर की सीढ़ियों पर कृष्ण राधा को फूलों से सजाया करते थे। इस सरोवर का नाम राधा की सखी कुसुम के नाम पर है। यह असल में एक विशाल झील है जिसमें बहुत सुंदर वृत्ताकार किनारे हैं और स्नान के सुंदर घाट हैं। 7 बजे सुबह तक हम अपनी परिक्रमा समाप्त कर इस्कॉन के अथितिगृह पहुँच गए।

हम बेहद थके हुए थे। मैंने स्नान किया, फिर सोने चला गया। शर्माजी ने मुझे साढ़े नौ बजे जगाया। इसके बाद हमने प्रसाद के रूप में खिचड़ी खायी। यह काफी स्वादिष्ट थी और हमें अमृत की तरह प्रतीत हुई। इसके बाद मैं फिर से सोने चला गया। फिर हमने दोपहर का भोजन किया, इसके बाद मैं फिर सो गया और साढ़े पाँच बजे तक सोता रहा। 6 बजे हम कात्यायनी पीठ, बाबा हरिदास पंथ के तातिया आश्रम, रंगजी मंदिर और बाँके बिहारी मंदिर गए। आश्रम में हमें बूढ़े बाबा के सत्संग का भी सौभाग्य मिला। आश्रम में अभी भी परंपरागत वातावरण को बरकरार रखा गया है। हम 9 बजे लौटे और सोने चले गए। अगली सुबह 9 बजे हमने वहाँ से प्रस्थान किया और 11:45 बजे तक नोएडा पहुँच गए।

मदमहेश्वर पूरे केदारखंड के पंच केन्द्रों में से एक है। श्री मदमहेश्वर चौखम्बा हिमालय के निचले इलाके में गंधमर्धन पर्वत पर अवस्थित है। यह तीर्थस्थान वास्तव में धरती पर स्वर्ग है। चौखम्बा की बुलंद चोटियाँ इस तीर्थ के शिखर पर ऐसे चमकती हैं जैसे यह कीमती हीरे और रत्न जड़ित चाँदी का मुकुट हो। जो भी तीर्थयात्री यहाँ आता है यहाँ प्रकृति के चमत्कारिक सौन्दर्य को देखकर अभिभूत हो जाता है। यहाँ का मंदिर भी स्थापत्य और उत्कीर्णन की शानदार कलाकृति है। ऐसा कहा जाता है कि आज से लगभग 5200 साल पहले द्वापर युग के अंत में इस मंदिर को पांडवों ने बनवाया था।

पंच केन्द्रों में मदमहेश्वर की ढलान सबसे तीखी है। 25 मई 1996 को अपने सहकर्मी श्री आर के शर्मा और मेरे आध्यात्मिक साथी श्री एनसी शर्मा और सीएस सेमवाल के साथ हमने नोएडा से अपनी यात्रा शुरू की। उस दिन हमने मुनि की रेती में शिवानंद आश्रम में रात्रि विश्राम किया। हम वहाँ स्वामी प्रेमानन्द जी से मिले जिन्होंने विमर्श के दौरान कहा कि पाश्चात्य दर्शन में 'गॉड फीयरिंग मैन' (ईश्वर से डरने वाला आदमी) शब्द का प्रयोग किया जाता है, पर हमें ईश्वर से डरना क्यों चाहिए? अपने दर्शन में हम ईश्वर से प्रेम करते हैं, उससे भय नहीं करते। इसी प्रकार, पश्चिमी जगत के लोग 'फॉल इन लव' (प्रेम में गिरना) शब्द का इस्तेमाल करते हैं। पर हमें प्रेम में 'फॉल' क्यों होना चाहिए? वास्तव में प्रेम में उत्थान होना चाहिए, न कि पतन।

अगली सुबह मैं जल्दी उठ गया और लगभग एक घंटे तक ध्यान लगाया। इसके बाद मैं डुबकी लगाने के लिए गंगा तट पर गया। उस समय लक्ष्मण झूला की पहाड़ियों के पीछे से सूर्योदय हो ही रहा था जब मैंने जल का अर्घ्य देते हुए

सूर्य की प्रार्थना की, मुझे एक विचित्र अनुभव हुआ। मन की आँख में मैं नीले रंग के सूर्य को उदित होते हुए देख सकता था। यह दृश्य कुछ मिनट तक चलता रहा।

8 बजे के आस-पास हम आश्रम से निकले और रास्ते में हमने वशिष्ठ गुफा के दर्शन किए। मैंने वहाँ शिवलिंग के समक्ष लगभग आधे घंटे तक ध्यान लगाया। उसके बाद हम गुफा से निकले और कुछ समय कौड़ियाला राफ्टिंग कैंप पर व्यतीत किया। गंगा की प्रवाहमान धारा को देखते हुए मुझे ऐसा आभास हुआ मानों मैं भी प्रवाह के साथ बह रहा हूँ। कौड़ियाला से हमने ऊखीमठ के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में हम स्वामी अद्वैतानंद जी के शाश्वत आश्रम गए और वहाँ सादा भोजन का आनंद लिया। वहाँ पूजा करने के बाद हम पुन: ऊखीमठ की अपनी यात्रा में आगे बढ़े। 26 मई की शाम 7 बजे हम ऊखीमठ पहुँचे। यहाँ मौसम सुहाना, शीतल और शांत था। यह स्थान लगभग 5000 फीट की ऊँचाई पर मंदाकिनी नदी के किनारे बसा हुआ एक छोटा और सुंदर शहर है। यहाँ हम पीडबल्यूडी निरीक्षण बंगले में ठहरे। सेमवाल जी और उनके परिवार ने हमारी बहुत ही अच्छी आवभगत की। हमने उनके ही आवास पर रात्रिभोज किया।

27 मई को सुबह चाय के बाद हम कालीमठ के लिए निकल पड़े जो केदारखंड का एक प्रसिद्ध शक्तिपीठ है। कालीमठ पहुँचने के लिए हमने लगभग एक घंटे तक एक घुमावदार सड़क पर यात्रा की। इस मंदिर के बगल से सरस्वती नदी अलौकिक आभा के साथ बहती है। नदी का जल इतना स्वच्छ था कि मैं एक डुबकी लगाने का लोभ संवरण नहीं कर पाया। हम संभवत: कुछ उन सौभाग्यशाली लोगों में से एक रहे होंगे जिन्होंने इस नदी में स्नान का

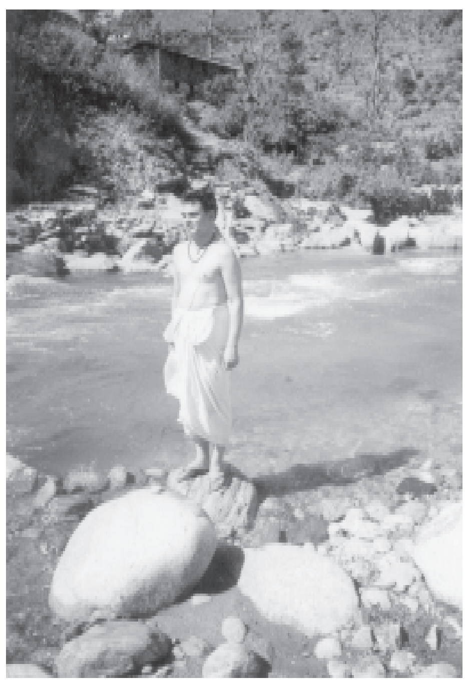

कालीमठ के समीप सरस्वती नदी में पवित्र स्नान के उपरांत

सुख हासिल किया हो। इसके बाद हमने कालीमठ में विस्तार से पूजा की। यहाँ 'यंत्र' की उसकी समस्त जटिलताओं के साथ पूजा की जाती है। मंदिर की परिक्रमा के बाद हम अन्य मंदिरों के दर्शन के लिए निकले। शिव-पार्वती की उनके समस्त परिवार और वाहन के साथ मूर्ति, श्रृंगार रस से परिपूर्ण बेहद चमत्कारिक और कलापूर्ण लग रही थी। यह शिव मूर्ति मिर्जापुर के रॉबर्ट्सगंज के शिवद्वारा की मूर्ति से बेहद मिलती-जुलती थी। ऐसा कहा जाता है कि कालिदास ने इस मंदिर में पूजा-अर्चना की थी और इस क्षेत्र का वर्णन उन्होंने अपनी प्रसिद्ध कृति 'मेघदूत' में किया है। प्रसिद्ध 'काली शिला' जिस पर यंत्र खुदे हैं, इसी स्थान पर 12000 फीट की ऊँचाई पर अवस्थित है। यह अनादिकाल से ही यंत्र साधना का स्थल रहा है। 'काली शिला' का भी वर्णन मेघदूत में हुआ है। अंत में हम कालीमठ के व्रती बाबा से मिले। वे एक वयोवृद्ध पुरुष थे जिन्होंने अपना जीवन पूरी तरह अध्यात्म को समर्पित कर दिया था। उन्होंने पितामह-तुल्य स्नेह और प्रेम से हमें नाश्ता परोसा। हमने ताजा मक्खन, हलवा और चाय के साथ आलू पकौड़े खाए। वे एक महान आध्यात्मिक पुरुष थे और उनसे सत्संग का अवसर मिला, इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। दोपहर के एक बजे तक हम ऊखीमठ के कैंप में लौट आए। हमने सेमवाल जी के आवास पर भोजन किया और एक घंटे के विश्राम के बाद हमने मदमहेश्वर के लिए चढ़ाई शुरू की।

शुरुआत के 20 किलोमीटर की यात्रा हमने कार से की, उसके बाद हम एक पुल पर पहुँचे जहाँ से हमें अपनी यात्रा पैदल करनी पड़ी। ढलान बहुत तीखी थी और भूखंड शुष्क, खुरदरा और कठोर। शाम के साढ़े छह बजे तक हम रंशी गाँव पहुँचे, रात्रि विश्राम हमने वहीं किया। गाँव के प्रधान और स्कूल के शिक्षक के द्वारा की गई आवभगत ने हमारी कठिन यात्रा को आरामदायक बना दिया। श्री भट्ट ने हमारे लिए बढ़िया रात्रि भोजन का प्रबंध किया, मुझे यह बेहद पसंद आया।

28 मई को हम सुबह जल्दी उठे, स्नान के बाद हमने रंशी देवी मंदिर के दर्शन किए जो एक शक्तिपीठ है। यहाँ यह गाथा है कि रंशी देवी की आराधना के बाद चंद्रमा का दमा ठीक हो गया। व्रती बाबा ने हमें बताया कि इस गाँव के किसी निवासी को दमा नहीं होता। चाय और बिस्किट के बाद लगभग साढ़े सात बजे सुबह हम आगे की यात्रा के लिए निकले। यात्रा खड़ी चढ़ाई थी। हम सब

कमजोर और थके महसूस कर रहे थे, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों रास्ता अंतहीन है। मेरे कदम लड़खड़ा रहे थे, कंठ सूख गया था और सिर घूम रहा था। मैं थोड़ी देर के लिए बैठ गया और एक कोका कोला पिया। दूसरे साथियों ने भी यही किया। तुरंत ही शुगर के कारण हम सबमें ऊर्जा आ गई और उसके बाद हम मदमहेश्वर पहुँचने से पहले तक नहीं रुके।

हिमालय की विशाल घाटी में बर्फ–आच्छादित चोटियों वाली पृष्ठभूमि में अवस्थित इस पवित्र मंदिर को देख कर मैंने एक अनोखे आनंद का अनुभव किया। जब हम पवित्र घाटी में पहुँचे, आरती उसी समय ही समाप्त हुई थी। हमने केवल एक झलक देखी। हम एक घर में गए और कुछ देर तक आग के सामने बैठे। इसके बाद हम विश्राम करने के लिए मंदिर के एकदम नजदीक के एक घर में गए। बारिश हो रही थी, तापमान गिर गया था, मैं तुरंत ही रजाई लेकर सो गया। एक लालटेन जल रही थी। उस रात मुझे कुछ भी खाने का मन नहीं किया। बहुत आरामदायक नींद आयी। 29 मई की सुबह हम जल्दी उठे। बिस्तर से ही हमें झरने की गर्जना सुनाई दे रही थी। हमने स्नान किया और दर्शन के लिए तैयार हो गए। साढ़े आठ बजे पुजारी, जो दक्षिण के थे, आए और हमें मंदिर के प्रांगण में प्रवेश कराया। सजावटी रंगों में भगवान शिव की प्रतिमा बेहद सुंदर और आकर्षक लग रही थी। उन्होंने हमें वहाँ से जुड़ी गाथा के बारे में बताया। एक समय एक कबीले के सरदार की एक गाय इस शिवलिंग के पास आती थी और रोज शिवलिंग को अपना दूध समर्पित करती थी। कबीले के सरदार को यह जान के बहुत हैरत हुई कि गाय घर पर दूध नहीं दे रही है। एक दिन उसने गाय का पीछा किया और पाया कि वह अपना सारा दूध शिवलिंग पर उड़ेल रही है। आवेश में आकार उसने गाय को मारने के लिए कुल्हाड़ी उठाई। गाय तेजी से उछली और कुल्हाड़ी शिवलिंग पर गिर गई। परिणामस्वरूप शिवलिंग झुक गया और उस पर निशान पड़ गया। रात में सरदार के सपने में भगवान शिव आए और उस स्थान पर मंदिर बना कर प्रायश्चित करने का निर्देश दिया। सरदार ने मंदिर बनाने का बहुत प्रयास किया पर हर बार मंदिर गिर जाता था। कई बार असफल होने के बाद सरदार ने मंदिर निर्माण संभव करने के लिए अपने इकलौते बेटे की बलि चढ़ाने का विचार किया। भगवान शिव प्रसन्न होकर उसके समक्ष प्रकट हुए और उसे वरदान दिया। आज भी मंदिर में दो गाय हैं और शिवलिंग को रोज इन्हीं के दूध से नहलाया जाता है। एक दूसरी व्याख्या यह है कि मंदिर का नाम मध्य महेश्वर अर्थात् शरीर का मध्य हिस्सा है। यही कारण है कि यह वक्राकार है।

समय के साथ यह नाम बिगड़ते हुए 'मदमहेश्वर' हो गया।

व्याख्या चाहे जो हो, मुझे यह स्थल बहुत पसंद आया और मैं यहाँ ध्यान में तल्लीन हो गया। अचानक से मेरे दिमाग में आया कि मैं तो गंगाजल की बोतल लाना ही भूल गया जिसे मैं गोमुख से लखनऊ फिर लखनऊ से नोएडा और नोएडा से मदमहेश्वर तक लाया था। मैंने आर.के. शर्मा से अनुरोध किया कि वे मेरे कमरे में जल्दी से जाएँ और गंगाजल लेते आएँ। वो बिना देर किए गंगाजल ले आए और हमने शिवलिंग पर गंगाजल अर्पित कर पूजा अर्चना की। पुजारी ने उदारता के साथ मंत्रों के उच्चारण द्वारा हमें सविस्तार पूजा अर्चना करायी। दैवीय शक्ति की उपस्थिति का अनुभव करते हुए मैं एक दूसरे ही संसार में चला गया।

पूजा के बाद हम भैरव के दर्शन के लिए एक किलोमीटर और ऊपर गए। वहाँ पहुँच कर हमने बूढ़े मदमहेश्वर को देखा और उसके समक्ष नतमस्तक हुए। वहाँ से लौटकर हमने पूरी और आलू की सब्जी का नाश्ता किया। मैंने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई और ऐसा महसूस किया मानों मैं इस पवित्र स्थान की ऊर्जा लहरों को अपने भीतर समाहित कर रहा हूँ। इस स्थान को छोड़ते हुए मैं बहुत दुखी महसूस कर रहा था। मदमहेश्वर से रंशी गाँव के लिए हमने यात्रा शुरू की। रास्ते, पर्वत, झरने सभी वही थे, पर अपने हृदय में कहीं न कहीं मैं मदमहेश्वर से बिछुड़ने की पीड़ा और वेदना का अनुभव कर रहा था।

रात के लगभग साढ़े आठ बजे तक हम रंशी गाँव पहुँचे और रात्रि विश्राम वहीं किया। 30 मई की सुबह हमने अपनी यात्रा पुन: शुरू की, दोपहर के खाने के समय तक हम ऊखीमठ पहुँच गए। वहाँ हमने दोपहर का स्वादिष्ट खाना श्री सेमवाल के घर पर खाया और पीडबल्यूडी के निरीक्षण बंगले पर रात्रि विश्राम किया। अगली सुबह हम जल्दी उठे। हिमालय के निर्मल और शांत वातावरण में मुझे ध्यान लगाने की इच्छा हुई। साढ़े छह बजे हम ऊखीमठ मंदिर गए। सर्दियों के मौसम में केदारनाथ और मदमहेश्वर की छड़ी यहीं रहती है। हमने यहाँ शिवलिंग की पूजा की और पँच केदार के लघु रूप के साथ-साथ चामुंडा देवी और अन्य देवताओं के दर्शन किए। नाश्ते के बाद हम नोएडा के लिए निकल पड़े और रात के 11 बजे के लगभग पहुँच गए। हालांकि यह एक मुश्किल यात्रा थी पर मैं नई ऊर्जा और उत्साह के साथ लौटा।

काफी दिनों तक अस्वस्थ महसूस करने के बाद अंतत: मैं तरोताजा, उल्लसित और उत्साहित महसूस कर रहा था। मुझे नहीं पता कि किस कारण

से मैं ऐसा महसूस कर रहा था, शायद 4 दिनों तक एक नौकरशाह की भागदौड़ भरी जिंदगी के कोलाहल से दूर, एकांत और ठहराव के साथ विश्राम का आनंद लेने के कारण या शायद जो किताब मैं पढ़ रहा था यह उसके कारण था। इन दिनों मैं जेम्स रेडफील्ड की किताब 'सेलेस्टिन प्रोफेसी' पढ़ रहा था। इस किताब में उन रहस्यों और अंतर्दृष्टियों की चर्चा है जो संसार को बदल रही हैं। पेरु के एक प्राचीन पाण्डुलिपि पर बात करते हुए यह इस बात की विस्तृत चर्चा करती है कि किस प्रकार किसी व्यक्ति के जीवन में अभी घट रही घटनाओं का और आने वाले समय में घटने वाली घटनाओं के मध्य संबंध स्थापित किया जा सकता है। इसमें 9 प्रकार की अंतर्दृष्टि का वर्णन है जो जीवन के रहस्यों का उद्घाटन करते हैं। तीसरी अंतर्दृष्टि सौन्दर्य की प्रकृति और इसके अभिमूल्यन व संवेदनाओं का वर्णन करती है जिसके माध्यम से मानव पदार्थ के चारों ओर व्याप्त ऊर्जा क्षेत्रों का अनुभव करता है। यह बताता है कि क्यों एक सुंदर वन हमारी अनुभूतियों को विस्तार देता है, इसलिए कि वन अपने सौन्दर्य, जैव-विविधता और वैभव से ऐसी ऊर्जा का निस्सरण करता है जो हमें प्रभावित करती है। मैं अब समझ पाता हूँ कि मैं बार-बार क्यों हिमालय जाने के लिए प्रवृत्त होता हूँ। जब भी मैं हिमालय, यहाँ की बर्फ-आच्छादित चोटियों और नदियों के इलाके में आता हूँ तो मैं पूरी तरह से रूपांतरित और ऊर्जावान हो जाता हूँ। इस बात का अनुभव मैंने 1990 में ही कर लिया था। इस कारण, 'सेलेस्टिन प्रोफेसी' में वर्णित अंतर्दृष्टियाँ जीवन के रहस्यों को समझने के लिहाज से बेहद प्रासंगिक हैं।

मैं सामान्य तौर पर योग मन में मंत्रोच्चार के माध्यम से करता हूँ। 1995 में मैं माता निर्मला देवी के सहज योग और स्वामी रामचंद्र जी के सहज मार्ग में दिलचस्पी लेने लगा था। लगभग हर प्रकार के योग एक जैसे ही हैं, केवल थोड़ा बहुत ही अंतर है। कुछ समय तक मैंने इन तीनों विधियों से योग किया, पर बाद में मैं मंत्रों के माध्यम से योग की अपनी पुरानी पद्धति पर लौट आया। बाद में मैं महेश योगी इंस्टीट्यूट, नोएडा के डॉ. महापात्रा के संपर्क में आया। डॉ. महापात्रा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में न्यूक्लियर मेडिसिन के डॉक्टर थे, लेकिन नौकरी छोड़ कर महर्षि महेश योगी इंस्टीट्यूट में आ गए। उन्होंने मुझे बीज मंत्र 'शिव' के माध्यम से ट्रान्सेंडैंटल ध्यान सिखाया। ध्यान का यह तरीका कमोबेश वैसा ही है, पर इसमें मंत्र केवल 'शिव' है, न कि ओम नमः शिवाय। चूंकि इस पद्धति में मेरी पुरानी पद्धति से ज्यादा अंतर नहीं था, इस कारण मैंने

इसे आसानी से सीख लिया। श्री एनसी शर्मा के निर्देशन में मैंने अपना अन्त: प्रक्षालन भी किया। कुछ दिनों के बाद रात में एक विचित्र घटना घटी। मेरी पत्नी 'माँ' का कोई भक्ति गीत सुन रही थी। संगीत इतना मधुर था कि इसने मेरे भीतर नृत्य करने की इच्छा उत्पन्न कर दी। मेरा शरीर हलचल में आ गया और मैं संगीत के साथ थिरकने लगा। इसका मेरे भीतर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि मैं हवा में अपने हाथ पैर फेंकने लगा और एक ओर से दूसरी ओर लुढ़कने लगा। मैंने ऐसा महसूस किया मानों ऊर्जा का एक ज्वार मेरे भीतर उमड़ रहा है।

प्रति दिन मैं कुछ न कुछ अनुभव करता ही जा रहा था। एक रात मैंने ऐसा महसूस किया कि मेरी बाईं आँख से चमकीला श्वेत प्रकाश निकल रहा है और मेरे पूरे मस्तिष्क में फैल रहा है। 6 अगस्त को हम सब लोग शिरडी जाने के लिए तैयार थे। उस समय तक मेरे तबादले की अफवाह हवा में तैर चुकी थी। मेरे अधीनस्थ अधिकारियों ने मुझे अपनी यात्रा रद्द करने का सुझाव दिया, लेकिन मैंने दृढ़ता से ऐसा करने से मना कर दिया। मैं इस कहावत पर विश्वास करता था कि जो भी होता है ईश्वर की इच्छा से होता है और ईश्वरीय कार्य हमेशा अपने प्राणियों के हित में होता है। मैं प्राकृतिक घटनाक्रम के साथ बह चलना पसंद करता हूँ। कई सालों से मैं शिरडी जाना चाह रहा था। मैं इस ईश्वर प्रदत्त अवसर को तबादले जैसे सांसरिक मामले के कारण छोड़ना नहीं चाह रहा था।

अंतत: श्री आर.के. शर्मा, श्री उपाध्याय और मैं निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन नई दिल्ली गए और दोपहर के 3 बजे मनमाड जाने के लिए गोवा एक्सप्रेस में बैठे। मैं आध्यात्मिक भावना से लबरेज था। बाबा के स्थान की यात्रा करने के उत्साह के कारण मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। मैं हमेशा बाबा के ही बारे में सोच रहा था–साईं बाबा और भोला शंकर बाबा। ट्रेन की यात्रा के दौरान एक दिलचस्प घटना हुई। एक भिखारी जिसका केवल एक हाथ था यात्रियों से भीख मांग रहा था। उस समय मैं बाबा के साथ चित्रकूट में अपने पहले साक्षात्कार के बारे में सोच रहा था। भिखारी मेरे पास आया, मैंने उसे अनायास ही 2 रुपए दे दिए। अचानक, आश्चर्यजनक रूप से उसने अपना एकमात्र हाथ मेरे सिर में रखा और मुझे आशीर्वाद देने लगा। मैंने ऐसा महसूस किया मानों बाबा स्वयं ही मुझे आशीर्वाद देने के लिए अवतरित हुए हैं। 7 अगस्त को 11 बजे दिन में हम मनमाड स्टेशन पहुँचे। वहाँ से हमने एक टैक्सी ली और दोपहर तक शिरडी पहुँच गए।

वहाँ हम महाराष्ट्र टूरिस्ट होटल में ठहरे जो बाबा के मंदिर से एकदम निकट

था। स्नान के बाद लगभग 1 बजे हम अपने प्रथम दर्शन के लिए निकले। भीड़ ज्यादा नहीं थी और हमने अच्छे से दर्शन किया। सारी आरतियों में हम शामिल हुए। 5 बजे सुबह की आरती में शामिल होने के लिए हम 4 बजे सुबह ही तैयार हो जाते थे। इसके बाद 11 बजे, 6 बजे शाम और रात 10 बजे आरती होती थी। आरतियों के दौरान मैंने जबर्दस्त आध्यात्मिक भावना का अनुभव किया। आरतियों के दौरान बाबा के जयकारे से लहर उत्पन्न होती थी और प्राय: मेरे हाथ-पैर संगीत की लय में थिरकने लगते थे। आरतियों के बाद हम गुरु स्थान की यात्रा करते थे जहाँ एक नीम के वृक्ष के नीचे बाबा ने बहुत दिनों तक ध्यान किया था। इस पेड़ की सबसे अनोखी बात यह थी कि इसके पत्ते कडवे नहीं लगते हैं। मैंने नीम का एक गिरा हुआ पत्ता उठाया और उसे चबाकर देखा, आश्चर्यजनक रूप से वह मुझे बिल्कुल भी कड़वा नहीं लगा। गुरु स्थान के बाद हम द्वारका माई गए। हमने वह पत्थर देखा जिसपर बाबा बैठा करते थे। हमने मूल रूप से बाबा द्वारा जलायी गई धूनी के समक्ष माथा टेका। हमने बाबा का नहाने का पत्थर और चूल्हा भी देखा। चूल्हे के ठीक सामने बाबा द्वारा बनाया

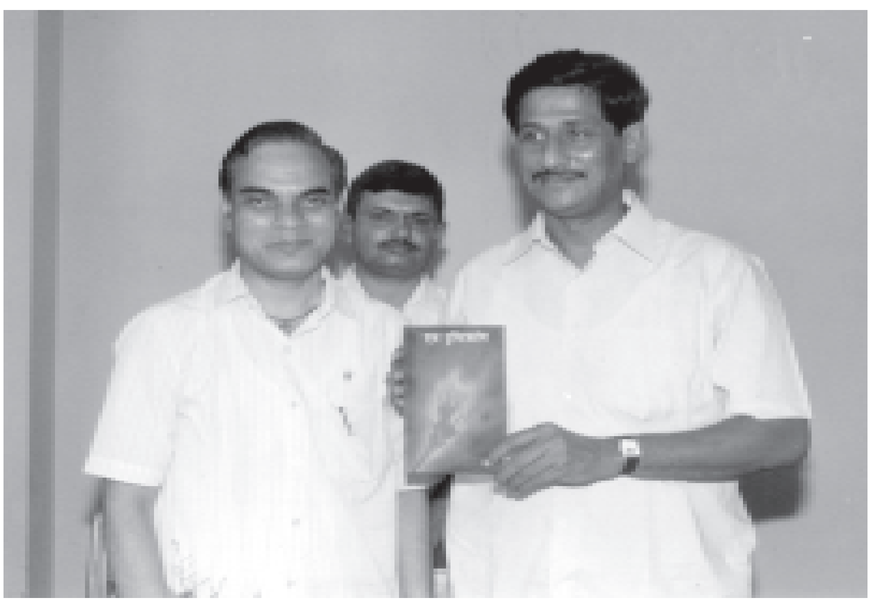

साँई बाबा के अनन्य भक्त श्री सी.बी सत्पथी से.नि. आई.पी.एस. मेरी पुस्तक 'एक दृष्टिकोण' का लोकार्पण करते हुए

गया लकड़ी का स्तम्भ था। ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को जोड़ों में दर्द है तो उस खंभे के सहारे शरीर टिकाने से सारा दर्द गायब हो जाएगा। मुझे भी बाईं पीठ और कंधे में दर्द रहता था, मैंने भी उस खंभे से अपना शरीर टिकाया। पहली ही बार में 80 प्रतिशत दर्द गायब हो गया। मैंने तीन बार अपना शरीर उस खंभे के सहारे टिकाया और आश्चर्यजनक रूप से सारा दर्द गायब हो गया। द्वारका माई के बाद हम खंडोबा मंदिर गए जहाँ मंदिर के पुजारी द्वारा पहली बार साईं बाबा को 'साईं' के रूप में संबोधित किया गया था। उसके बाद हमने नवद्वीप की यात्रा की। यहाँ लोग दो वृक्षों की पूजा करते हैं जिनके बारे में यह माना जाता है कि वे बाबा द्वारा वृक्ष योनि से निकाले गए। हमने उस वृद्ध व्यक्ति के घर का भी दर्शन किया जिसे बाबा ने गणेश की श्याम प्रतिमा दी थी। यहाँ मुझे एक दिलचस्प वाकया याद आ रहा है। गुरुवार की रात आखिरी आरती के बाद मैं 11 बजे अपने कमरे में लौट आया, पर 2 बजे तक सो नहीं पाया। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था मानों ऊर्जा का कोई भीषण प्रवाह मेरे भीतर घुमड़ रहा था। मैंने कुछ देर तक इसे सहन किया, फिर मेरे लिए इस प्रवाह को सहन करना मुश्किल हो गया। हाथ जोड़ कर मैंने प्रार्थना की, ''बाबा! मैं आपकी ऊर्जा को ग्रहण करने लायक पर्याप्त मजबूत और शुद्ध नहीं हूँ। कृपया मुझे क्षमा करें।'' अगले ही क्षण ऊर्जा का प्रवाह थम गया और मैं सोने चला गया।

8 अगस्त को मैंने दो तस्वीरें खरीदीं, एक भगवान शिव की और एक दत्तात्रेय की। मैंने मंदिर में इन दोनों तस्वीरों की पूजा कराई। द्वारका माई में हमारे एक सहयात्री श्री बख्शी इन तस्वीरों को मोड़ रहे थे, एक साधू हमारे सामने आए, खड़े रहे और तेजी से एक मंत्र पढ़ा। उन्होंने मुझसे कहा, ''भगवान शिव और दत्ता गुरु की इन तस्वीरों के साथ आप बाबा की सारी शक्ति अपने साथ ले जा रहे हैं।'' मुझे आश्चर्य हुआ कि कैसे इस आदमी को मोड़ी जा चुकी तस्वीरों के विषय में पता है। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानों बाबा स्वयं इस साधू के रूप में आए हैं। हमने उनका आशीर्वाद लिया। अगली सुबह हमने बाबा से विदाई ली। टैक्सी से हम मनमाड तक आए और साढ़े तीन बजे कर्नाटक एक्सप्रेस पकड़ कर 10 अगस्त की सुबह 11:30 तक हम दिल्ली पहुँच गए।

शिरडी से लौटने के बाद जब भी मैं साईं बाबा के भक्ति गीत सुनता था मेरे भीतर प्रबल लहरें उठने लगती थीं। इस यात्रा के बाद से मैं आत्मविश्वास और आध्यात्मिकता से लबरेज था। मैंने नोएडा के चीफ मेंटेनेंस इंजीनियर को निलंबित

करने और सैक्टर 43, 44 और 45 में अवैध बदलावों को रद्द करने का कड़ा फैसला ले लिया, जिसके कारण 16 अगस्त 1996 को मेरा तबादला कर दिया गया। अगले दिन मैंने पदभार सौंप दिया और 23 अगस्त को सचिव (सहकारिता) का नया कार्यभार ले लिया।

ईश्वर पर आस्था और आध्यात्मिक गतिविधियों ने संकट की परिस्थितियों में, चाहे वे निजी संकट हों या राजनीतिक या प्रशासनिक, से कई बार निकालने में मुझे समर्थ बनाया। मेरे जीवन में अकेलेपन ने एकांत और आध्यात्मिक गतिविधियों की मेरी तड़प को और बढ़ा दिया। मैं ध्यान, आध्यात्मिक पुस्तकों के अध्ययन और भजन सुनने में और भी ज्यादा समय व्यतीत करने लगा। धीरे-धीरे मैंने अपना आत्म-संयम पुनः हासिल कर लिया। मैंने हर व्यक्ति में सकारात्मक पक्ष ढूँढ़ना शुरू कर दिया। इस दौरान दो महत्त्वपूर्ण बदलाव हुए; पहली बार मैंने यह महसूस किया कि केवल व्यक्तिगत विकास के लिए आध्यात्मिक विकास का कोई उपयोग नहीं है, जब तक इस ऊर्जा का प्रयोग लोगों के कल्याण के लिए न किया जाए तब तक यह अर्थहीन है। दूसरा बदलाव जिसे मैंने गहराई से महसूस किया वह था करुणा की समझ। मैंने करुणा और 'करुणा अवतार के रूप में तथागत' के विषय में पढ़ा था, पर नोएडा में अपने संक्षिप्त प्रवास के दौरान मैंने करुणा को काफी गहराई से महसूस किया और प्रायः मेरे हृदय के अंतरतम से गहरी सिसकियाँ निकलने लगतीं। प्रायः मैं ऐसे अच्छे लोगों के लिए दुआ करता जिन्हें मैं जानता था। मैं उन्हें भौतिक सुविधा नहीं प्रदान कर सकता था, पर निश्चित रूप से मैं उन्हें अपनी दुआएँ और आध्यात्मिक ढाढ़स दे ही सकता था।

अध्याय-२५

सचिव, सहकारिता

(अगस्त 1996-नवंबर 1996)

मैं पूरी तरह आश्वस्त हूँ, अपनी आखिरी साँस लेने तक मैं सत्य को जान जाऊँगा और इस प्रक्रिया में अपने वास्तविक रूप को भी जान जाऊँगा।

मैंने तबादले को एक वरदान के रूप में लिया। मैं पिकप बिल्डिंग लखनऊ के अतिथिगृह में ठहरा। चूंकि लखनऊ में मैं अकेला था, मैं ध्यान-साधना, भजन और आध्यात्मिक किताबों के अध्ययन में अब ज्यादा समय दे सकता था। 2 अक्टूबर का दिन था, महात्मा गाँधी का जन्मदिवस! क्या अनोखा व्यक्तित्व था उनका। कितना दुर्बल शरीर था उनका, पर मानवता के उत्थान के लिए उन्होंने कितने अमूल्य योगदान दिए। मैं बहुत दार्शनिक हो रहा था राष्ट्रपिता के जीवन संघर्षों और योगदानों पर चिंतन कर रहा था। कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं जिस पर उन्होंने कुछ न कहा हो। कोई आश्चर्य नहीं कि महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने गाँधीजी पर टिप्पणी करते हुए कहा था, ''भावी पीढ़ी यह आश्चर्य करेगी कि कभी पृथ्वी पर हाड़-मांस का ऐसा इंसान भी हुआ था।'' यह विडंबना है कि जहाँ एक ओर दिन प्रतिदिन पूरे संसार में गाँधीजी की प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है, वहीं दूसरी ओर हम भारतवासी अपने ही राष्ट्रपिता को भूलते जा रहे हैं। यह कितनी शर्मनाक और त्रासदी की बात है। यदि हम उनके आदर्शवाद और जीवन मूल्यों के एक छोटे अंश को भी अपना लेंगे तो हम अविश्वसनीय स्तर तक देश का बदलाव कर सकते हैं।

उस दिन की सुबह से ही मैं विचारमग्न अवस्था में था। मैंने सचिवालय के तिलक हॉल में आयोजित एक कार्यक्रम में भाग लिया। बापू का प्रिय भजन सुनने के बाद मैं बहुत भावुक होने लगा और स्वतंत्रता संघर्ष के दौर पर विचार करने लगा। श्याम बेनेगल की फिल्म 'द मेकिंग ऑफ महात्मा' का ट्रेलर देखने के बाद मैं फूट पड़ा। इस महापुरुष ने अपने जीवन की आखिरी साँस तक 'सत्य' के साथ प्रयोग किए थे। मैं भी 'सत्य' के साथ अपने सीमित दायरे में प्रयोग कर रहा हूँ। मैं पूरी तरह आश्वस्त हूँ, अपनी आखिरी साँस लेने तक मैं सत्य को जान जाऊँगा और इस प्रक्रिया में अपने वास्तविक रूप को भी जान जाऊँगा।

अध्याय-२६

दिल्ली में अपर रेजीडेंट कमिश्नर, उ.प्र.

(नवंबर 1996-सितंबर 1997)

हम ब्रह्मांड में सबसे बुद्धिमान जीवन होने का दावा करते हैं, पर इसका एहसास हम नहीं कर पाते कि अगले की क्षण क्या होने वाला है, इसके बारे में हम बहुत कम जानते हैं।

लखनऊ में जीवन शांति से चल रहा था। अतिथि गृह का एकांत, खासकर रात में, मुझे ज्यादा दार्शनिक प्रवृत्ति का बना देता था। मैं अपने अकेलेपन का आनंद लेता था और अपने आप को महान ब्रह्मांडीय शक्ति से जोड़ता था। दिन बीतते गए और फिर से मेरा तबादला दिल्ली में उत्तर प्रदेश के अपर रेजीडेंट कमिश्नर के रूप में लखनऊ से दिल्ली हो गया। यह कोई अच्छी पोस्टिंग नहीं थी पर अच्छी बात यह थी कि मैं फिर से परिवार के साथ आ गया। इसके अलावा, इस पोस्टिंग में चूंकि ज्यादा काम नहीं था इस कारण मुझे अवकाश बहुत मिल जाता था। वहाँ चार अपर रेजीडेंट कमिश्नर नियुक्त थे और दिन भर में बमुश्किल एक या दो फाइल आती थीं। हम सभी उस फाइल को लेने के लिए झपट पड़ते थे। बिना किसी तनाव-दबाव के जीवन बहुत आराम से चल रहा था। मेरे आध्यात्मिक अभ्यास पूरी गंभीरता से जारी रहे। 30 जनवरी को शहीद दिवस के दिन, यानि जिस दिन हमारे राष्ट्रपिता को एक हत्यारे ने गोली मारी थी, हम चारों 11 बजे दो मिनट का मौन रखने के लिए आर.सी. के कमरे में इकठ्ठे हुए। मैं उदास और चिंतनशील मिजाज में था। मैं जहाँ खड़ा था वहाँ से आसमान साफ तौर पर देख सकता था। मौन रखने के दौरान मैंने गाँधीजी से निरंतर मार्गदर्शन की प्रार्थना की, तभी मैंने दूर आसमान में रोशनी की चमक देखी। ऐसा मैंने एक बार नहीं, बल्कि कम से कम 3 या चार बार देखा। शायद मेरी प्रार्थना सुन ली गई थी।

हम नोएडा में ठहरे थे। 1 फरवरी 1997 को यमुना रिवरफ्रंट पार्क में सुबह टहलते समय एक दिन मेरे और सरिता के बीच विवाद हो गया। उसने दोस्तों के यहाँ जाने के एक कार्यक्रम के आखिरी वक्त पर 'मूड बदलने' के नाम पर रद्द

होने की शिकायत की और कहा कि हमारा यह कार्य उन्हें अपनी तौहीन लगेगा। उसका यह कहना था कि भले ही मिजाज ठीक न हो, पर हमें पहले से किए गए वादों का मान रखना चाहिए। मेरा यह मानना था कि नकारात्मक ऊर्जा फैलाकर माहौल को खराब करने से बेहतर है कि सच कह दिया जाए। उदाहरण देते हुए मैंने कहा, ''आज रात हमने हिमांशु जोशी और उनके परिवार को खाने पर बुलाया है। यदि उनके परिवार में कोई बीमार पड़ जाता है तो हम कैसे यह उम्मीद कर सकते हैं कि वह केवल इसलिए हमारे यहाँ आएं कि उन्होंने हमारा आमंत्रण स्वीकार कर लिया था?'' बहस तीखी होने लगी थी। मैंने यह कहते हुए बहस समाप्त की कि चूंकि हम दोनों के मत एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं, इस कारण इस पर आगे और चर्चा करने का कोई लाभ नहीं है। मैं ऑफिस चला गया और शाम को जब घर लौटा तो पत्नी ने कहा कि रात के खाने का कार्यक्रम रद्द हो गया है, क्योंकि जोशीजी बीमार पड़ गए और उन्हें एम्स में भर्ती कराया गया है। धीरे-धीरे मैंने यह अनुभव किया कि कोई व्यक्ति उस परम-आत्मा के जितना करीब होते जाता है, वह भविष्य का उतना अच्छा अनुमान लगाने लगता है।

मैंने 12 अप्रैल को छुट्टी ली और अपने बड़े भाई गामा दादा से मिलने कोलकाता चला गया। वे मुझे लेने के लिए रेलवे स्टेशन तक आए। हम उनके गार्डेन रीच वाले आवास पर गए। यह हुगली के किनारे एक सुंदर फ्लैट था (नवीं मंजिल पर) जिसके दूसरी ओर बॉटनीकल गार्डेन था। घर की सुंदर अवस्थिति, बंगाल की खाड़ी से आने वाली ठंडी हवा और बॉटनीकल गार्डेन, तीनों ने मिलकर मेरी आत्मा को गहरे तौर पर प्रभावित किया। गामा दादा और सुधा भाभी ने मेरी विशेष देखभाल की। 14 अप्रैल को मैं और गामा दादा दक्षिणेश्वर और बेलूर मठ गए। हम दोनों ने बेलूर मठ के साधना कक्ष में साधना की, जहाँ गामा दादा को 'साईं बाबा' का दर्शन हुआ। गामा दादा मुझे नेशनल बॉटनीकल गार्डेन भी ले गए। वहाँ घूमना बहुत आनंददायक रहा। हमने एक विशाल बरगद का पेड़ देखा जो कई एकड़ में फैला हुआ था। जब हम वहाँ से लौट रहे थे, मैं एक सुगंध से आकर्षित हुआ। जब मैं इस सुगंध का अनुसरण करते हुए आगे बढ़ा तो मैंने देखा कि यह सुगंध शिवलिंग के फूलों से आ रही थी। ये सुंदर गुलाबी रंग के फूल थे जिनमें एक छोटा शिवलिंग होता था। पूरा स्थान इसकी खुशबू से भरा था।

कोलकाता से लौट कर मैंने अपना काम दोबारा शुरू किया। कुल मिलाकर जीवन शांतिपूर्ण चल रहा था। 20 मई को हमें यह पता चला कि छवि के पेट

में एक सिस्ट है। हम चिंतित हो गए, मैं तो रोने लग गया। इसके पहले ही तीन ऑपरेशन हो चुके थे। कई टेस्ट हुए थे। हम चिंतित रहे और प्रार्थना करते रहे कि सब ठीक हो जाए।

तीन महीनों से ज्यादा का समय बीत गया। इस दौरान मैंने अपने जीवन का सबसे बड़ा निजी संकट का दौर झेला। मई 1997 से लेकर जून 1997 तक का पूरा समय छवि की बीमारी का पता लगाने में लग गया। हम कैलाश हॉस्पिटल, सफदरजंग, एम्स, अपोलो, पंत और आनंद हॉस्पिटल गए। हमें कई विशेषज्ञों से बात की, इस उम्मीद के साथ कि बिना ऑपरेशन के कोई समाधान मिल जाए। हर विशेषज्ञ ने ऑपरेशन का ही सुझाव दिया। हम मानसिक रूप से ऑपरेशन के लिए तैयार थे, और हमने हरिद्वार, पुरी, विंध्याचल और तिरुपति में छवि के लिए पूजा की।

अपोलो अस्पताल के सर्जिकल विशेषज्ञ डॉ. अरुण कुमार, डॉ. कौशिक और डॉ. महेश शर्मा ने शुरू में ऑपरेशन के लिए 2 जुलाई की तारीख तय की। बाद में इसको आगे बढ़ा कर 7 जुलाई कर दिया गया। ऑपरेशन की सारी तैयारी हो चुकी थी। उस दिन सुबह टहलने के लिए मैं यमुना रिवरफ्रंट गार्डेन गया और धतूरे के फूल और फल जमा किए जो भगवान शिव को प्रिय हैं। मैंने पूरी श्रद्धा के साथ छवि के स्वास्थ्य के लिए पूजा की। साढ़े 9 बजे हम कैलाश हॉस्पिटल के पहुँचे। विचित्र संयोग देखिए, वह सोमवार का दिन था, यानि भगवान शिव का दिन, अस्पताल का नाम 'कैलाश' और हॉस्पिटल के मालिक का नाम 'महेश'।

कई मित्र और शुभचिंतक हॉस्पिटल में जमा हो चुके थे। छवि बिल्कुल भी घबराई हुई नहीं थी। जब उसे व्हील चेयर में ऑपरेशन थिएटर के लिए ले जाया जा रहा था, उसने हमारी तरफ देख कर हाथ लहराए। हमने उसे शुभकामना दी, पर मेरा हृदय घबराया हुआ था। सिस्ट और उसके मवाद को सफलतापूर्वक निकाल दिया गया था। हम सबने राहत की सांस ली।

यह खुशी का समय बहुत संक्षिप्त रहा। हम मानव, ब्रह्मांड में सबसे बुद्धिमान जीवन होने का दावा करते हैं, पर इसका एहसास हम नहीं कर पाते कि अगले की क्षण क्या होने वाला है इसके बारे में हम बहुत कम जानते हैं। हमने ऑपरेशन से पहले 2 महीने तक कई संस्थानों और कई विशेषज्ञ डॉक्टरों से मुलाकात की थी, तब ऑपरेशन तय किया था और हमें यह उम्मीद थी कि कोई समस्या नहीं

होगी। पर कुछ और ही होना लिखा था। छवि तीन दिन से मलत्याग नहीं कर पा रही थी और तरल खाद्य भी लेने से इनकार कर रही थी। वो कुछ भी नहीं खा रही थी। अगर हम जबरन कुछ खिला रहे थे तो वह कै कर दे रही थी। ऑपरेशन के बाद तीसरे दिन मैंने महसूस किया कि कुछ गड़बड़ है। मैंने अपनी पत्नी को बताया कि छवि के साथ वैसा ही कुछ हो सकता है जैसा उसकी एक साल की उम्र में हुआ था। पत्नी ने मेरे शक को खारिज कर दिया, पर मेरा डर सही निकला।

जुलाई 11 का दिन बहुत दुर्भाग्यपूर्ण दिन था। छवि बहुत कमजोर हो चुकी थी और बोल पाने में भी उसे समस्या हो रही थी। इस दिन उसकी परीक्षा के परिणाम आए थे और उसने दिल्ली विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष में तीसरा स्थान हासिल किया था। मैंने शाम को उसे यह खबर दी, वह खुश हुई। मैं घर चला आया, संध्या-पूजा अर्चना की और ध्यान किया। मैं रात के खाने के लिए तैयार हो ही रहा था कि रात के 9 बजे मेरी पत्नी ने कैलाश हॉस्पिटल से फोन किया कि एक त्रासद घटना हुई है। छवि की आँतें दोबारा फट गयी थीं। मेरा सर घूमने लगा और ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं डूब रहा हूँ। कुछ मिनट के भीतर ही मैंने खुद पर नियंत्रण किया और ईश्वर से प्रार्थना की कि वे मुझे इस परिस्थिति को सहने की शक्ति और साहस प्रदान करें।

मैं भाग कर अस्पताल आया। हर कोई घबराया हुआ था, यहाँ तक कि डॉक्टर भी घबराए हुए थे। डॉ. अरुण प्रसाद शहर में नहीं थे, वे रांची गए हुए थे। उनकी गैरमौजूदगी के कारण स्थिति और जटिल हो गई थी। कैलाश हॉस्पिटल में कोई भी दूसरा डॉक्टर मामले को लेना नहीं चाह रहा था। हमें यह सलाह दी गई कि हम उसे जल्द से जल्द एम्स ले कर जाएँ। तब रात के 11 बज रहे थे, हम सब बहुत घबराए हुए थे। बिना उचित तैयारी के उसे एम्स ले जाने का कोई औचित्य नहीं था। हम रांची में डॉ. अरुण प्रसाद से संपर्क करने का बहुत प्रयास कर रहे थे। काफी देर के प्रयास के बाद उनसे संपर्क हो पाया। उन्होंने हमें सलाह दी कि ऑपरेशन की जल्दबाजी न करें क्योंकि अगले 48 घंटों में कोई गंभीर समस्या नहीं होगी। डॉक्टर ने हमें बताया कि मामले को प्रकृति पर छोड़ देना बेहतर है, पूरी संभावना है कि 2-4 सप्ताह में प्रकृति इसे स्वत: ठीक कर देगी। अगले दिन डॉ. अरुण वापस आ गए। कुछ टेस्ट किए गए। चूंकि पेट में किसी प्रकार का फैलाव नहीं हुआ था और बुखार भी नहीं था और अंदरूनी भाग

में हरकत थी, इस कारण उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा का परंपरागत तरीका अपनाया। यह हम सब के लिए पूरी तरह नई अवधारणा थी। शुरू में मैं थोड़ी उलझन में था, पर हमारे पास कोई विकल्प नहीं था। इसके साथ-साथ हम ईश्वरीय चिकित्सा भी कर रहे थे-महामृत्यंजय जाप और रुद्राभिषेक के माध्यम से। जगन्नाथ मंदिर, पुरी, हमारे घर की पीठासीन देवी आठमल्लिक की रुद्र भवानी, गार्डेन रीच के काली मंदिर, आगरा के मनकामेश्वर मंदिर और विंध्याचल के माँ विंध्यवासिनी मंदिर में प्रार्थना की गई। नोएडा की जनता, कैलाश हॉस्पिटल, खास कर डॉ. महेश शर्मा, मेरे दोस्तों, भाइयों और रिश्तेदारों से मिले सहयोग से मैं अभिभूत हो गया। हर कोई मदद के लिए प्रस्तुत था। मेरी सास और मेरा साला प्रेम तुरंत कानपुर से सड़क मार्ग से निकल पड़े। लगभग 10 बजे वे नोएडा पहुँच गए। दोस्तों और रिश्तेदारों की उपस्थिति, नोएडावासियों और अस्पताल कर्मियों के सहयोग ने हमें इस संकट से पार पाने का साहस प्रदान किया।

यह हम सब लोगों के लिए एक डरावना सपना था और उस बच्ची के लिए बहुत ही दर्दनाक अनुभव। हमें दिन-रात उसकी देखरेख करनी होती थी। काफी समय तक उसे नस के जरिए पानी चढ़ाया जाता रहा। टोटल पैरेंटल न्यूट्रेन्ट्स (टीपीएन, पोषण की दवा) बहुत महंगी आती थी। हर घंटे उसकी पट्टियाँ बदलने की जरूरत होती थी। रात में हम लोगों के लिए सोना असंभव होता था। छवि को देखना बहुत भयावह अनुभव होता था। उसकी बड़ी-बड़ी भावुक आँखें जैसे दया की याचना करती थीं। उसका चेहरा ऐसा मर्मस्पर्शी दिखाई देता था कि मैं बहुत हतोत्साहित महसूस करता था।

संकट के इस दौर में मैं पूरी तरह ईश्वर और अध्यात्म पर निर्भर रहा। मैं घंटों तक महामृत्यंजय मंत्र का जाप किया करता था और सूर्य के 70 नामों के जाप के साथ उनको अर्घ्य चढ़ाया करता था। मैं हमेशा ही छवि की अच्छी सेहत और जीवन के लिए प्रार्थना करता था। मैंने अपने माता-पिता का सपना देखा जिन्होंने छवि के लिए अभयदान दिया था। मेरे आध्यात्मिक प्यास और मेरी प्रार्थनाएँ व्यर्थ नहीं गईं। मेरी बेटी ने चमत्कारिक रूप से अपनी सेहत में सुधार का प्रदर्शन किया, वह भी ठीक उसी दौरान जब डॉ. अरुण प्रसाद आए और ऑपरेशन की योजना बना रहे थे। दो सप्ताह तक ड्रिप पर रहने के बाद उसे रेकापेक्स (चिकित्सकों द्वारा सुझाया जाने वाला एक प्रकार का पोषक आहार)

मौखिक रूप से दिया गया। पर उसके रिसाव से 500 मि.ली. द्रव बाहर आ गया। एक दिन यह रिसाव 1500 मि.ली. तक पहुँच गया। डॉ. अरुण बहुत घबरा गए और जल्द ही ऑपरेशन की योजना बनाने लगे। एक दिन बाद छवि का दोबारा ऑपरेशन होने वाला था। दिन में जब मैं भोजन के बाद विश्राम कर रहा था, मैंने ऐसा महसूस किया कि मेरी आँखों से गुलाबी रंग की रोशनी निकल रही है और वह छवि के पेट में जाकर समाती जा रही हैं। उस रात ध्यान करने के दौरान मैं रो पड़ा और ईश्वर से अपने भक्त को बचा लेने की भीख माँगी। अगली सुबह, आश्चर्यजनक रूप से रिसाव बहुत कम होकर 1500 मिली से 500 मि. ली. में चला आया। यह बहुत जबर्दस्त सुधार था और डॉक्टर की सलाह पर ऑपरेशन को टाल दिया गया था। अगली सुबह मुझे अपने दोस्त, दिशानिर्देशक और योगी श्री सीबी सतपथी का कॉल आया। उन्होंने मुझे शनिवार को दिल्ली के छतरपुर इलाके के साईं मंदिर में मिलने का सुझाव दिया। मैंने उनसे 5 बजे शाम में मुलाकात की। उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और कहा कि छवि के साथ कुछ भी अनिष्ट नहीं होगा और वो जल्द ही पूरी तरह ठीक हो जाएगी। हमें छवि को जल्द ठीक करने के लिए एक रुद्राक्ष की माला भी पहना दी। 1 अगस्त के बाद से वो बहुत तेजी से स्वस्थ होने लगी। 7 अगस्त तक रिसाव केवल 5 मि. ली. ही रह गया। इस प्रकार प्रकृति ने अपना काम शानदार तरीके से किया। 7 अगस्त को छवि को अस्पताल से छुट्टी मिली और उसे हम आवास पर ले आए। हालांकि उसका शरीर सूख कर कंकाल हो गया था, पर मैं उसकी आँखों में चमक देख सकता था। उसकी बड़ी-बड़ी भावुक आँखें उसकी अद्‌भुत प्रसन्नता को दर्शा रही थीं। कठिन समय अंततः समाप्त हुआ। दो-तीन दिन के अंदर रिसाव पूरी तरह खत्म हुआ। धीरे-धीरे वह सामान्य हो रही थी और अगस्त 25 के बाद से उसने ठोस भोजन भी लेना शुरू किया। दो दिन के बाद वह कॉलेज भी जाने लगी। इस संकटकाल में उसने भी यह अनुभव किया कि कोई ऐसी परम शक्ति है जो हर कुछ को नियंत्रित करती है। उसके व्यक्तित्व में बदलाव हुआ था।

छवि की अस्वस्थता मेरे जीवन के सबसे बुरे समय में से एक है। इस एक महीने के दौरान मैंने जीवन के बारे में बहुत कुछ सीखा। मुझे उसे बचाने का एक अवसर मिला, मैंने शरीर की उपयोगिता और उसकी क्षणभंगुरता दोनों के बारे में बहुत कुछ अनुभव किया। मैंने इस कहावत को व्यवहारतः महसूस किया कि 'मनुष्य माँगता है और ईश्वर देता है।' इसने मुझे असीम धैर्य और ईश्वर पर भरोसा रखने के बारे में भी सिखाया। इस अवधि में अपनी पूजा और अपने ध्यान

में मैं ईश्वर के साथ खुलकर बात किया करता था। मैं प्रार्थना करता था, झगड़ा करता था, बहस करता था, दया के लिए भीख भी मांगता था। महान सार्वभौम शक्ति के साथ इस सत्र के बाद मैं शांति और आत्मविश्वास से लबरेज महसूस करता था। वह दयालु है, वह मेरी ईमानदार प्रार्थनाओं को सुना करता था। इस संकट के दौर ने मुझे और आध्यात्मिक तथा ईश्वर के प्रति और भी उत्कट श्रद्धावान बना दिया। मैं प्राय: दिल्ली में उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त रेजीडेंट कमिश्नर के रूप में अपने पास काम बहुत कम होने के कारण अपनी पोस्टिंग पर आश्चर्य किया करता था। पर इस संकट के दौर में मैंने यह समझा कि कम काम वाली जगह पर नियुक्ति की योजना मेरे हित में कितनी औचित्यपूर्ण थी कि इसी के कारण मैं अपनी बेटी की बीमारी के समय उसे पूरा समय दे पाया। जीवन जिस रूप में सामने आता जाए उसे उसी रूप में स्वीकार करते चला जाना ही बेहतर है, न कि इसके बारे में शिकायती रवैया अपनाना। जो जीवन के साथ बहते चलते हैं, उस पर जीवन भी मुस्कुराता है। जीवन उनको सलाम करता है जो दूसरों को जीवन में प्रसन्न करते हैं।

हर शाम मैं गायत्री मंत्र और महामृत्युंजय मंत्र का जाप किया करता था। ध्यान के दौरान मैं पायल की आवाज सुना करता था। तेज रोशनी चमका करती थी और उसके बाद मैं देखता था कि पीली रोशनी का घेरा सफेद में बदल गया। ऐसा प्रतीत होता था कि पीली रोशनी के गोले से सफेद रोशनी लगातार निकलती रहती थी। एक रात, सुबह होने के लगभग के समय में मैंने यह महसूस किया कि मैं कुछ संतों के साथ आसमान में यात्रा कर रहा हूँ। मैं उस समय धरती पर रह रहे लोगों पर खीज दिखा रहा था क्योंकि वे उसूलों और ईमानदारी का जीवन नहीं जी रहे थे। अचानक ऐसा महसूस हुआ कि मैं चेतना खो रहा हूँ और मेरे प्राण शरीर से निकल रहे हैं। मैं झटके के साथ उठ गया और पाया कि मैं सांस लेने में हाँफ रहा हूँ। मैंने अपनी पत्नी को बुलाया, जब वह नजदीक आई तब मुझे भरोसा हुआ कि मैं सकुशल हूँ। मुझे बिल्कुल नहीं पता कि मुझे ऐसा अनुभव हुआ ही क्यों? क्या यह मंत्रों के अत्यधिक जाप के कारण हुआ या क्या यह कमजोर शरीर और कमजोर मस्तिष्क को दर्शाता है? क्या यह एक आध्यात्मिक अनुभव था या केवल एक सपना?

अध्याय-२७

मंडलायुक्त, मेरठ

(अक्टूबर 1997-जनवरी 1998)

करनी कथनी की तुलना में ज्यादा प्रभावी होती है। प्रचार या प्रसिद्धि की चिंता किए बिना ईमानदारी से अपना कर्तव्य निभाएँ।

मुझे अपर रेजीडेण्ट आयुक्त, यूपी के पद से आयुक्त, मेरठ मंडल के रूप में स्थानांतरित किया गया था और मैंने 3 अक्टूबर को पदभार संभाला। मैंने कुछ ही समय के लिए यहाँ काम किया। आयुक्त की भूमिका केवल डीएम और सरकार के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करना ही नहीं है, बल्कि नियमित निगरानी के माध्यम से और डीएम के मार्गदर्शन के माध्यम से अपने अधिकार क्षेत्र के तहत के जिलों में योजनाओं का उचित कार्यान्वयन सुनिश्चित करना है। पर इसका मतलब यह नहीं है कि आयुक्त को हर मामले में हस्तक्षेप करना होता है। मैंने कभी हस्तक्षेप नहीं किया पर जब भी मुझे लगता था कि कुछ गलत या धीमा हो रहा है तो मैं उन्हें सावधान करता था। समीक्षा बैठकों के दौरान, मैं डीएम और मंडल स्तर के अधिकारियों को नए विचारों के लिए प्रोत्साहित करता था। ग्राम सभा की भूमि और छोटे और सीमांत किसानों की भूमि में सुधार के लिए ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम को लागू करने के विचार को इस तरह से सुझाया गया था। पांडवेश्वर महादेव क्षेत्र और प्रतापपुरा के मंदिर परिसर के पास विशाल तालाब के सुधार और नवीनीकरण के लिए भी काम किया गया। मुख्यमंत्री हर प्रकरण के बारे में आयुक्त की निगरानी बैठकों पर विशेष रूप से बल देते थे। प्रत्येक मण्डल और जिला स्तर के अधिकारी, जिसमें जिला मजिस्ट्रेट और आयुक्त भी शामिल थे, को निर्देश दिया गया कि वे काम की दैनिक डायरी रखें। इसी तरह की एक समीक्षा बैठक में, जोनल चीफ इंजीनियर ने दावा किया कि मेरठ-बागपत रोड के सभी गड्ढ़ों को पूरी तरह से भर दिया गया है। इस बात की जांच के लिए भोजन के तुरंत बाद मैंने उस अधिकारी को अपने साथ लिया और उस सड़क के दौरे पर चल पड़ा। यह देख कर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि सड़क पहले ही की तरह खराब थी। मैंने इंजीनियर को घूर कर देखा। उसने माफी मांगी और कार्य पूरा करने के लिए एक सप्ताह का समय माँगा। मैंने उसे चेतावनी दी कि यदि वह परिणाम

प्राप्त करने में विफल रहा तो उसे निलंबन झेलना पड़ेगा। उसने मुझे आश्वासन दिया और समय पर काम पूरा कर दिया। प्रशासन में आतंक का माहौल बनाना महत्त्वपूर्ण नहीं है बल्कि इच्छित परिणाम प्राप्त करना कहीं अधिक जरूरी है।

मैं यहाँ राज्य के दो कैबिनेट मंत्रियों के साथ बैठक की घटना सुनाता हूँ। वे लखनऊ से आए थे और मेरठ सर्किट हाउस में ठहरे थे। जिला मजिस्ट्रेट ने आकर मुझसे अनुरोध किया कि मैं मंत्रियों से मिल लूँ ताकि उनकी स्थिति मजबूत हो। मैं सहमत हो गया। शाम को वे मुझे अपने साथ सर्किट हाउस ले गए। वहाँ पहुँच कर मैं ड्राइंग रूम में इंतजार करने लगा। जब मंत्री आए तो जिलाधिकारी ने उनसे मेरा परिचय कराया। इन मंत्रियों को मैं आगरा में अपने कार्यकाल के दौरान से ही जानता था। वहाँ अपनी पोस्टिंग के दौरान, मैंने उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की थी। जब उन्होंने मुझे देखा, तो वे शर्मिंदा हो गए और उन्होंने तुरंत डीएम से कहा, ''हम सभी पहले से ही इन्हें जानते हैं!'' मैं भी संकोच में पड़ गया। चाय के बाद मैं तेजी से सर्किट हाउस से निकल आया।

यहाँ मेरे कार्यकाल के दौरान मुझे मुजफ्फरनगर जिले में गोलीबारी की घटना की जाँच का काम सौंपा गया था। इस घटना में कुछ लोगों की मौत हो गई थी। मुजफ्फरनगर मेरे अधिकार क्षेत्र में नहीं था, लेकिन फिर भी सरकार ने मुझे इस प्रकरण में जाँच करने का निर्देश दिया। मैंने 15 दिनों के भीतर जाँच खत्म कर दी और 500 पृष्ठों की एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। मैंने यह गौर किया कि राजनीतिक लाभ के लिए इस घटना का बहुत ज्यादा राजनीतिकरण किया गया।

एक दिन नोएडा के एक पत्रकार ने मुझसे शिकायत की कि यमुना रिवरफ्रंट क्षेत्र अवैध फार्म हाउसों से भरा हुआ है। इस पत्रकार के साथ मैंने संबंधित क्षेत्र की गुप्त यात्रा की। इसके बाद मैंने वहाँ के जिला मजिस्ट्रेट और एडीएम को बुलाया और उन्हें उचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। कुछ ही दिनों में इन अवैध निर्माणों को ध्वस्त कर दिया गया था। अगले दिन जब मैं कार्यालय जा रहा था, मीडियाकर्मियों ने मुझे कार्रवाई के लिए बधाई दी और उस पर एक संक्षिप्त जानकारी मांगी। मामले का श्रेय लेने की बजाय मैंने ऐसा प्रदर्शित किया कि मैं मामले से अनभिज्ञ हूँ और उन्हें पूरी तस्वीर प्राप्त करने के लिए डीएम और सीईओ, नोएडा से मिलने के लिए कहा। जानबूझकर अनावश्यक जटिलताओं और प्रचार से बचने के लिए मैंने ऐसा रुख अपनाया। गुमनामी, निष्पक्षता और ईमानदारी एक अच्छे सिविल सेवक की पहचान है और मैंने अपने सम्पूर्ण कैरियर में इन आदर्शों का ईमानदारी से पालन किया है। करनी कथनी की तुलना में ज्यादा प्रभावी होती है। प्रचार या प्रसिद्धि की चिंता किए बिना ईमानदारी से

अपना कर्तव्य निभाएँ। मैं हमेशा भगवद्गीता के दर्शन 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्' पर विश्वास करता हूँ।

मेरठ के सर्किट हाउस में मैं दो महीने तक रहा। वहाँ होने के दौरान मैं बहुत नियमित रूप से ध्यान नहीं कर पाता था क्योंकि वातावरण अनुकूल नहीं था, लेकिन मैं नियमित रूप से भगवान शिव के मंत्र का जाप किया करता था। नवंबर, 1997 की एक रात मैं एक सांप के फुफकारने की आवाज सुनकर झटके से उठ बैठा। मुझे लगा जैसे कोई बड़ा सांप मेरे सिर के पास फुफंकार भर रहा हो। दरअसल यह घटना एकदम भोर की है। मैंने सोचा कि यह एक मतिभ्रम है। लेकिन अगली सुबह मुझे ठीक वही अनुभव हुआ। इस घटना के मतिभ्रम होने का मेरा संदेह खत्म हो गया था। वास्तव में यह एक आध्यात्मिक अनुभव था।

यहाँ मेरे संक्षिप्त प्रवास के दौरान मुझे सरधना, बिलकेश्वर महादेव, पांडवेश्वर महादेव, पुरा महादेव और जम्बूद्वीप मंदिर जाने का सौभाग्य मिला। बेगम समरू का सरधना चर्च अपनी वास्तुकला और मूर्तिकला के लिए विश्वप्रसिद्ध है। कहा जाता है कि यहाँ की गई प्रार्थनाओं का हमेशा उत्तर मिलता है। जब मैंने मदर मैरी और जीसस के पवित्र स्थान में प्रवेश किया, तो मुझे जबरदस्त कंपन का अनुभव हुआ। जब भी मैं इस चर्च का दौरा करता हूँ मैं खुद को ऊँचा महसूस करता हूँ।

बिलकेश्वर महादेव मंदिर एक पुराना मंदिर है। किंवदंती है कि रावण की पत्नी मंदोदरी, बिलकेश्वर महादेव की पूजा किया करती थी। पांडवेश्वर महादेव हस्तिनापुर में एक अलग-थलग स्थान पर स्थित है जो बहुत दिनों तक उपेक्षित रहा है। मैंने इस मंदिर का तीन बार दौरा किया और हर बार कंपन महसूस किया। मैं इस मंदिर की दयनीय स्थिति से निराश हुआ और मेरठ के डीएम को निर्देश दिया कि इस मंदिर का सौंदर्यीकरण किया जाए ताकि यह अपनी खोई हुई चमक पुनः प्राप्त कर सके। मैं समझता हूँ कि कुछ हद तक डीएम ने यह काम किया। पुरा महादेव मंदिर बागपत जिले का एक और प्रसिद्ध मंदिर है। कहा जाता है कि इस मंदिर की स्थापना परशुराम ने की थी। मैंने दो बार इस मंदिर का दौरा किया और आध्यात्मिक रूप से उद्वेलित महसूस किया। 27 दिसंबर को हम माँ शाकुंभरी देवी के दर्शन के लिए सहारनपुर गए। यह मंदिर सहारनपुर से 40 किमी की दूरी पर शिवालिक की तलहटी में स्थित है। मंदिर की सीढ़ियों से उतरते समय लगभग 80 वर्ष की आयु की एक महिला, जिन्हें माताजी के नाम से जाना जाता था, ने मुझे बुलाया और आशीर्वाद दिया। मुझे लगा जैसे माँ शाकुंभरी देवी ने स्वयं अपना प्रेम और स्नेह मुझ पर बरसा दिया।

अध्याय-२८

प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम, नई दिल्ली

(जनवरी 1998-जनवरी 2003)

सुबह-सुबह मैंने महसूस किया मानो कोई मुझे अपने हाथ के मधुर स्पर्श से जगा रहा हो। मैं उठ गया, बाईं ओर घूमा और एक महिला को देखा जो धीरे-धीरे माँ विंध्यवासिनी का रूप ले रही थी।

हालांकि मेरठ में मेरा प्रवास बहुत कम अवधि का था पर मैंने इसके हर क्षण का पूरा आनंद लिया। मुझे नवंबर 1997 में ही रेजीडेंट कमिश्नर और मुख्य सचिव से संकेत मिल गया था कि प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (एनसीडीसी) के पद के लिए मेरे नाम पर विचार हो रहा था। 31 दिसंबर 1997 को भारत सरकार के कृषि सचिव श्री कमल पांडे का फोन मुझे आया कि मैं इस पद के लिए चुन लिया गया हूँ। मैं ना ही प्रसन्न हुआ न ही अप्रसन्न हुआ। हालांकि मुझे ऐसा लगा कि मार्च 1998 में चुनाव के बाद शायद मैं इस पद से मुक्त हो जाऊँगा। पर चुनाव आयोग ने मुझे भारत सरकार का पद ग्रहण करने की अनुमति देने की उदारता दिखाई। परिणामस्वरूप मैंने 14 जनवरी को अपना पदभार त्याग किया और 15 जनवरी 1998 को एनसीडीसी के प्रबंध निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण किया।

मैंने इस पद को अपने कैरियर के सबसे महत्त्वपूर्ण दायित्वों में से एक माना। हालांकि यह एक अपेक्षाकृत कम चर्चित संगठन है, पर सहकारी विकास के क्षेत्र में यह एक महत्त्वपूर्ण संस्थान है। एनसीडीसी का रवैया पूरी तरह पेशेवर है और इसका अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व है। इसका मुख्य उद्देश्य है सहकारी संगठनों की विभिन्न गतिविधियों को वित्तीय सहायता प्रदान करना। जब मैंने पदभार ग्रहण किया शुरू से ही मुझे यह आभास होता था कि इसके अधिकारियों, खास कर पुराने अधिकारियों और नए अधिकारियों, के बीच बहुत ज्यादा गुटबाजी है। मैंने दोनों समूहों को यह समझाया कि वे स्वयं को एनसीडीसी परिवार का महत्त्वपूर्ण

सदस्य मानें। मैंने उनकी खुशामद की, उनको मनाया और कई बार फटकार भी लगाई। इन अथक प्रयासों का नतीजा यह हुआ कि उन दोनों गुटों के बीच मामले सुलझ गए और मैं एकता बना पाने में सफल हुआ।

यहाँ अपने पाँच साल के कार्यकाल के दौरान मैंने कई नये कदम उठाये और एनसीडीसी में कई नई परियोजनाएँ बनीं। कई सालों से अधिकारियों की प्रोन्नति नहीं हुई थी और इसके परिणामस्वरूप अधिकारियों में निराशा थी। मैंने इस मामले को अपने हाथ में लिया और उन विभिन्न पदों पर प्रोन्नति सुनिश्चित कराने में सफल रहा जो काफी समय से खाली पड़े थे। अधिकारी खुश हुए और मुझे उनका सहयोग मिलने लगा। जेएनएल श्रीवास्तव समिति की सिफारिशों के आधार पर कई सुधार किए गए। जमीनी स्तर पर सहकारी संगठनों को सशक्त करने के उद्देश्य से कई पायलट परियोजनाओं का सूत्रपात किया गया। प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता के लिए दिशानिर्देश बनाए गए। अतिदेय के एक निपटारे के मुद्दे को गंभीरता से लिया गया और काफी हद तक इस समस्या का समाधान कर लिया गया। एक समेकित सहकारी विकास कार्यक्रम तैयार किया गया। होनहार छात्रों को छात्रवृत्ति, कंप्यूटर के लिए कर्ज और तेज छात्रों के लिए प्रशंसा पत्र आदि के रूप में कर्मचारियों के परिवारों के लिए कई कल्याणकारी उपबंध किए गए। अच्छे सहकारी संगठन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार की भी योजना निर्मित हुई। मैंने प्राकृतिक आपदाओं से हुई क्षति का आंकलन करने के लिए अरुणाचल प्रदेश, कर्नाटक, उड़ीसा, राजस्थान व जम्मू-कश्मीर में एक राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल की अध्यक्षता भी की। जम्मू-कश्मीर के दौरे के दौरान केन्द्रीय प्रतिनिधिमंडल को भारी सुरक्षा प्रदान की गई थी। जब मैं पुंछ के पास एक खुले मैदान में किसानों की एक बैठक कर रहा था, मुझे थोड़ी-थोड़ी देर के अंतराल पर गोलियों की बहुत आवाज सुनाई दे रही थी। सेना का अधिकारी जो वहाँ मौजूद था मेरे पास आया और कहा, ''सर, नदी के उस पार से पाकिस्तान ने मोर्टार दागने शुरू कर दिए हैं। अगर आप चाहें तो हम बैठक को समाप्त कर देते हैं और फिर यहाँ से हम निकाल सकते हैं।'' मैंने कहा, ''यहाँ आए किसानों के चेहरे पर मुझे कोई भय नहीं दिखाई दे रहा। इस कारण हमें यहाँ से भाग कर प्रशासनिक अधिकारियों और भारत सरकार की प्रतिष्ठा को कम नहीं करना चाहिए।'' मैंने बैठक जारी रखने पर जोर दिया। मैंने बैठक की, किसानों की शिकायतों को सुना और उसके बाद जमीनी पड़ताल के बाद बैठक को समाप्त किया।

इस समय संगठन का मुनाफा कई गुना बढ़ कर प्रतिवर्ष 20 करोड़ से प्रतिवर्ष 100 करोड़ तक पहुँच गया। इसी प्रकार टर्न ओवर में भी इजाफा हुआ। इसके एक अधिकारी, उस समय के वित्त सचिव, जो मेरे ही कॉडर से आते थे, ने मुझे सुझाव दिया कि एनसीडीसी को अपनी गतिविधियों को संचालित करने के लिए सरकारी संसाधनों और अनुदान पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। मैंने उन्हें भरोसा दिलाया कि मैं इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए पूरी कोशिश करूँगा। मेरी टीम के अधिकारी और मैंने भारत सरकार के कृषि सचिव श्री जेएनएल श्रीवास्तव के निर्देशन में प्रत्यक्ष वित्त सहायता के विस्तृत दिशानिर्देश बनाने के लिए कई विचार-मंथन सत्र आयोजित किए। मुझे यह उल्लेख करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि एनसीडीसी अब अपनी गतिविधियों के संचालन के लिए वित्तीय रूप से सरकार पर निर्भर नहीं है।

एनसीडीसी के प्रबंध निदेशक के रूप में मैं इंडियन पोटाश लिमिटेड का भी अध्यक्ष था। यह संस्था पोटाश और इस तरह के अन्य सूक्ष्म पोषकों का काम करती है। यह एक खास तरह का संगठन है जो अपने चरित्र में न तो सरकारी है न ही सहकारी। यह सरकार के लगभग सभी दिशानिर्देशों के अधीन है और कृषि और उर्वरक मंत्रालय से करीबी से जुड़ा है, पर चूंकि इस संगठन में सरकार एक रुपए का भी निवेश नहीं करती इसी कारण यह अपनी नीति का अनुसरण करता है। मैंने यहाँ का प्रभार लिया और यह गौर किया कि यह संगठन 60 करोड़ रुपए के संचयी घाटे में चल रहा है। बोर्ड की पहली बैठक में मैंने प्रबंध निदेशक को कहा कि मैं रोजमर्रा के कामकाज में दखल नहीं दूँगा। पर कुल मिलाकर मुख्य बात यह होनी चाहिए कि हमें मुनाफा सुनिश्चित करना है। मैंने बहुत सावधानी के साथ इस सिद्धान्त का अनुसरण किया और मुझे इस बात का बहुत संतोष हुआ कि जब मैंने इस कार्यालय को छोड़ा तब तक यहाँ न सिर्फ सारे नुकसान की भरपाई की जा चुकी थी बल्कि लगभग 65 करोड़ का संचित लाभ भी हासिल किया गया था। एक पारदर्शी नीति का अनुसरण करके, प्रबंध निदेशक के गंभीर प्रयासों को हर तरह का समर्थन प्रदान करके और अहस्तक्षेप की नीति का पालन करके ऐसा करना संभव हो सका था। जब प्रबंध निदेशक का कार्यकाल पूरा हो गया, प्रबंधन बोर्ड ने फिर से उसी प्रबंध निदेशक का चुनाव किया क्योंकि उनका प्रदर्शन बहुत अच्छा था, पर उर्वरक मंत्रालय ने सोचा कि प्रबंध निदेशक का चुनाव उनका विशेषाधिकार है। मंत्रालय ने फाइल मंगाई, मैंने स्पष्ट तौर पर लिखा कि चूंकि सरकार इस संगठन में एक रुपए का भी

निवेश नहीं करती इसीलिए इस मामले में मंत्रालय को हस्तक्षेप का कोई अधिकार नहीं है। इसके अलावा प्रबंध निदेशक बहुत क्षमतावान हैं और उनका प्रदर्शन भी प्रशंसनीय रहा है। सद्बुद्धि आई और मंत्रालय ने बोर्ड के निर्णय में दखल देने से अपने कदम पीछे खींच लिए।

एनसीडीसी आईपीएल, इफ्को, कृभको और इस तरह के सहकारी संस्थानों जैसे कई अच्छे संस्थानों की जननी है। परिणाम के रूप में एनसीडीसी का प्रबंध निदेशक इन संस्थानों की गतिविधियों से जुड़ा होता है। शुरुआत के छह महीनों में मैंने नैफेड के प्रबंध निदेशक के रूप में काम किया। चूंकि एनसीडीसी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अच्छा प्रदर्शन किया, इस कारण मुझे नेटवर्क फॉर दि डेवलपमेंट ऑफ एग्रिकल्चरल कोऑपरेटिव फॉर दि एशिया पैसेफिक रीजन (एनईडीएसी) का भी चेयरमैन बनाया गया। इस संस्थान का मुख्यालय बैंकॉक में है। यह एफएओ द्वारा शुरू किया गया एक गैर सरकारी संगठन था। अपने तीन साल के कार्यकाल के बाद मुझे फिर से एनईडीएसी के मामलों का प्रबंधन करने के लिए 2 साल तक कार्यकारी चेयरमैन के रूप में चुना गया। इससे मुझे एशिया क्षेत्र में सहकारी गतिविधियों में अच्छा खासा अनुभव मिला।

मेरे कार्यकाल के दौरान कई स्मरणीय घटनाएँ हुईं। मेरे यहाँ आने के कुछ ही दिनों के बाद वित्तीय सलाहकार मेरे लिए कार भत्ते का प्रस्ताव ले कर आए। मैंने हैरानी जताई और मैंने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया क्योंकि मैं पहले से ही स्टाफ कार का इस्तेमाल कर रहा था। यह मेरा अनुभव है कि प्राय: अधीनस्थ अधिकारी अपने बॉस की ईमानदारी का परीक्षण करने की कोशिश करते हैं। ऐसी चीजों से सावधान रहना चाहिए।

केन्द्रीय कृषि मंत्री एनसीडीसी काउंसिल के अध्यक्ष हुआ करते थे। जब मंत्रीजी ने पदभार लिया, मुझे उनके एपीएस से संदेश मिला कि एनसीडीसी की तरफ से मंत्री आवास की पूरी तरह साज-सज्जा होनी चाहिए और वहाँ एसी लगाकर जल्द से जल्द नवीकरण किया जाना चाहिए। असल में यह एनसीडीसी की नहीं बल्कि सीपीडबल्यूडी का दायित्व था। मैंने अनुमानित रूप से लगभग 25 लाख रुपए के खर्च का आंकलन किया। चूंकि मुझे कुछ आपत्तियाँ थीं, इस कारण मैंने मंत्रीजी के निजी सचिव से बात की और उन्हें कहा कि वे मंत्रीजी से बात करें। मंत्रीजी की अच्छी प्रतिष्ठा थी। कुछ ही घंटों में निजी सचिव ने मुझसे बात की और कहा, ''सर, मंत्रीजी अपने एपीएस से बहुत नाराज हैं। उनके निर्देश स्पष्ट हैं। यह काम नियमों के अनुसार सीपीडबल्यूडी करेगी और यदि

ऐसा जरूरी प्रतीत होगा तो केवल एक न्यूनतम राशि एनसीडीसी से ली जाएगी।'' इस प्रकार मेरे द्वारा दिखाई गई थोड़ी सी सतर्कता और निजी सचिव के साथ मेरी साफगोई भरी बातचीत के कारण स्थिति को संभाल लिया गया। प्राय: ही किसी प्रस्ताव पर आपत्ति होने के बावजूद भी हम उचित सुझाव नहीं देते। इसका परिणाम यह होता है कि कई ऐसे गलत निर्णय ले लिए जाते हैं जो प्रशासन के हित में नहीं होते। नौकरशाहों की ओर से मिलने वाली स्वतंत्र, स्पष्ट, निर्भीक और स्वार्थहीन सलाह एक उचित निर्णय लेने में सहायक होती है।

एनसीडीसी की एक एजीएम में कुछ सदस्यों ने मंत्रीजी से शिकायत की कि प्रबंध निदेशक बहुत कंजूस हैं और उन्होंने जान बूझ कर बैठक को साढ़े तीन बजे से रखा है ताकि उन्हें दोपहर के खाने का प्रबंध न करना पड़े। इसके अलावा जनरल बॉडी मीटिंग में प्रबंध निदेशक हमें केवल नोट बुक और पेंसिल ही देते हैं, घड़ी जैसे उपहार नहीं देते। मंत्रीजी हंस पड़े और कहा, ''मिश्रा जी, कभी कभार सदस्यों को लंच या डिनर करा दीजिए।'' लेकिन वे उपहार के विचार पर बुरी तरह नाराज हुए। उन्होंने जोर से कहा, ''श्री मिश्रा काफी अच्छा काम कर रहे हैं और केवल नोट बुक और पेंसिल देने का उनका काम पूरी तरह उचित है। एक एजीएम में शामिल होने के लिए इससे अधिक किसी चीज की जरूरत नहीं है। उपहारों में धन का अपव्यय करना एक अपराध है।''

कृषि राज्यमंत्री एनसीडीसी के प्रबंधन बोर्ड के अध्यक्ष थे। निवेश से संबन्धित हर फैसला बोर्ड की बैठक में विस्तृत चर्चा के बाद ही लिया जाता था। चीनी से संबन्धित एक सहकारी संस्था में निवेश के प्रस्ताव पर बोर्ड ने अतिरिक्त जानकारी इकठ्ठा करने का फैसला किया। जब बैठक की कार्यवाही लिखी जा चुकी तो अध्यक्ष ने कहा, ''मिश्राजी, बैठक के मिनट्स को इस तरह से सुधारा जा सकता है जिससे यह स्पष्ट हो कि अध्यक्ष को इस मामले में फैसला लेने का अधिकार है।'' मैं बहुत हैरान हुआ क्योंकि बोर्ड की बैठक में ऐसा फैसला नहीं हुआ था। मैंने इस बात को रेखांकित किया और उन्हें यह सुझाव दिया कि यदि ऐसे बदलाव किए जाते हैं तो भविष्य में शिकायतें हो सकती हैं और हम मुसीबत में पड़ सकते हैं, हम पर सीबीआई जाँच भी हो सकती है। इसके बाद उन्होंने परिवर्तन करने के लिए जोर नहीं दिया।

मैंने नैफेड के प्रबंध निदेशक के रूप में भी छह महीने तक काम किया। उस समय प्याज का संकट पैदा हुआ था और कृषि सचिव ने मुझे प्याज के

आयात पर एक रिपोर्ट भेजने को कहा था। मैंने इस मामले का अध्ययन किया और मेरा यह मत बना कि प्याज का आयात न किया जाए क्योंकि इससे घरेलू स्थिति में जटिलता आ सकती है। अपर सचिव, कृषि ने मुझे बुलाया और मेरे साथ रूखापन दिखाने की कोशिश की। वे मेरे सुझाव से संतुष्ट नहीं थे और उन्होंने कहा कि किस आधार पर मैंने प्याज आयात के विरुद्ध सिफारिश की है? मैंने कहा, ''सर, मैंने रिपोर्ट में हर चीज की समीक्षा की है और इसके अलावा मेरे पास कुछ और कहने को नहीं है। यह सरकार के ऊपर है कि वह क्या निर्णय ले, मैं अपनी रिपोर्ट नहीं बदलने जा रहा हूँ।'' जहाँ तक मुझे पता है, केवल कुछ समय के लिए ही प्याज के आयात की अनुमति दी गई, जैसे ही संकट समाप्त हुआ वैसे ही आयात को समाप्त कर दिया गया।

भारत सरकार ने सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती, 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय सतर्कता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया जाना था और सचिव ने मुझे 'भ्रष्टाचार' पर एक लेख प्रस्तुत करने के लिए कहा। मैं बहुत उत्साहित था क्योंकि यह विषय मेरी पसंद का विषय था। मैंने भ्रष्टाचार और उसके निवारण के तरीकों पर एक लेख लिखा और उसे स्वीकृति के लिए सचिव को सौंप दिया। उस लेख में मैंने कई गैर-परंपरागत सुझाव दिए थे। सचिव ने कहा, ''मिश्रा, यह एक बहुत बढ़िया लेख है पर यह पत्रकारिता की भाषा में लिखा गया है। इसमें कई ऐसी चीजें हैं जो काफी कड़वी हैं। यदि यह लेख प्रस्तुत किया जाता है तो काफी लोगों की भृकुटियाँ तन जाएँगी। इस कारण, इसमें कुछ बदलाव कर दो।'' मैंने ऐसा करने से मना कर दिया क्योंकि यह मेरी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के खिलाफ था। तब उन्होंने कहा, ''ठीक है, यह लेख सेमिनार में बाँटा नहीं जाएगा पर तुम सेमिनार में बोल सकते हो।'' मैं सहर्ष तैयार हो गया और जब मैंने सेमिनार में अपने मत रखे, तो इसकी काफी सराहना हुई और लोगों ने मेरे लेख की प्रतियाँ माँगी। सचिव मेरी तरफ देख रहे थे और मैं सचिव की तरफ देख रहा था। यह एक निराशाजनक स्थिति थी। सेमिनार समाप्त हुआ और मेंने अपना लेख मुख्य विजिलेंस कमिश्नर श्री एन. विठ्ठल को भेज दिया। उन्होंने मुझे जवाब भेजा, ''मैंने आपका लेख पढ़ा। आपने बहुत सारे गैर-परंपरागत सुझाव दिए हैं। मैं इनको ध्यान में रखूँगा।''

भारत सरकार में अपने कार्यकाल के दौरान मैंने कई देशों की यात्रा की, जिनमें सोवियत संघ, थाईलैंड, फिलीपींस, चीन, जापान, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड,

पुर्तगाल, फ्रांस, संयुक्त अरब अमीरात, कनाडा, केन्या, जिम्बाबे, लेसोथो और पश्चिमी सामोआ शामिल हैं। ये सारी यात्राएँ बहुत शिक्षाप्रद रहीं। चीन की यात्रा विशेष तौर पर उल्लेखनीय है। मैं चीन दो बार गया उधर उनके कम्यून उद्यमों का दौरा किया। हालांकि चीन एक कम्युनिस्ट देश है पर उसने काफी पहले ही पूंजीवाद के आर्थिक सिद्धांतों के अनुसार तंत्र में सुधार करने की पहल शुरू कर दी है। हमने वहाँ के एक किसान संघ का दौरा किया। चर्चा के दौरान हमें पता चला कि वहाँ के किसान संघ एक अन्तरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय ख्याति की कंपनी को अपना सदस्य बनाकर अंगीकृत करते हैं। इस बहुराष्ट्रीय कंपनी का यह दायित्व होता है कि वह किसानों की जरूरत के अनुसार बीज, उर्वरक और अन्य कृषि आवश्यकताओं की पूर्ति सुनिश्चित करे और किसान कंपनी के अनुसार फसल का उत्पादन करते हैं। कंपनी ही फसल के भंडारण, प्रसंस्करण और बाजार में बेचने की व्यवस्था करती है। साथ ही कंपनी ही वैज्ञानिक तरीके से खेती के विकास के लिए शोध प्रयोगशालाएँ भी स्थापित करती हैं। यह एक अनोखा प्रयोग है जिससे चीन को जबर्दस्त फायदा हुआ है। चीन के साथ अपने मतभेद को भूलते हुए हमें उनके अनुभवों से सीखना चाहिए और जो अच्छा है उसे स्वीकार करना चाहिए।

एनसीडीसी की वार्षिक आय में जबर्दस्त इजाफा हुआ था और इससे प्रोत्साहित होकर उप प्रबंध निदेशक, कार्यकारी निदेशक और वित्तीय सलाहकार ने एमडी कार्यालय समेत पूरे एनसीडीसी कार्यालय के नवीकरण का प्रस्ताव रखा ताकि यह बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कार्यालय की तरह दिखे। इस काम में चंद करोड़ रुपए खर्च होने थे। मैं हैरत में पड़ गया। जब ये सभी लोग इस प्रस्ताव के लिए दबाव बनाने मेरे पास आए तो मैंने उन्हें चाणक्य की कहानी सुनाई। चाणक्य सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री थे। सेल्यूकस मौर्य साम्राज्य पर हमला करना चाहता था, इस उद्देश्य से उसने मौर्य साम्राज्य की अंदरूनी जानकारी हासिल करने के लिए अपने गुप्तचर को भेजा। गुप्तचर पाटलिपुत्र आया और उसने वहाँ के निवासियों से जानकारी ली। लोगों ने चाणक्य और चन्द्रगुप्त की बहुत प्रशंसा की। जब गुप्तचर ने चाणक्य के आवास के बारे में पूछा तो लोगों ने उसे गंगा तट पर जाने की सलाह दी। वह गंगा तट पर आया और वहाँ एक झोंपड़ी देखकर उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ कि मौर्य साम्राज्य का प्रधानमंत्री एक झोंपड़ी में रहता है। तब उसने एक आदमी को देखा जो गंगा से

स्नान कर उस झोंपड़ी की तरफ आ रहा था। गुप्तचर ने उस व्यक्ति के समक्ष चाणक्य से मिलने की इच्छा जाहिर की। कुछ समय पश्चात वह व्यक्ति झोंपड़ी से निकला और कहा, ''मैं ही चाणक्य हूँ।'' गुप्तचर पूरी तरह हतप्रभ रह गया और चाणक्य की सरलता और ईमानदारी से बहुत प्रभावित हुआ। लौट कर उसने सेल्यूकस को ऐसे राज्य में हमला न करने की सलाह दी जहाँ का प्रधानमंत्री इतना सरल, ईमानदार और स्पष्टवक्ता हो और जहाँ का राजा उसकी सलाह पर पूरी गंभीरता से अमल करता हो। सेल्यूकस ने इस बात को अनसुना करके मौर्य साम्राज्य पर हमला कर दिया और बुरी तरह पराजित हुआ। इस कहानी को सुनकर अधिकारी मेरे कक्ष से चले गए। कुछ दिनों के बाद वे लोग फाइल के बारे में पूछने के लिए फिर से आए। मैंने कहा, ''मैंने आप लोगों को चाणक्य की कहानी सुनाई थी। पूरी उम्मीद है कि आपने इसे सुनकर सबक लिया होगा।'' उन्होंने कहा, ''हम अब समझ गए'' और शांति के साथ वहाँ से चले गए।

मेरठ से दिल्ली आने पर मेरी आध्यात्मिक गतिविधियाँ कम हो गई थीं। नए पद के शुरुआती उत्साह के बाद मेरा मन एक छोर से दूसरे छोर पर डोलता रहता था। चूंकि मुझे सुबह 9 बजे से अपने ऑफिस पहुँच जाना होता था, इस कारण मैं अपनी पूजा छोड़ने लगा। मैं अपनी आध्यात्मिक गतिविधियों और व्यायाम दोनों में अनियमित हो गया। स्वाभाविक तौर पर मुझे इसके परिणाम भुगतने पड़े। शारीरिक तौर पर मैं कमजोरी महसूस करने लगा। मैंने ऐसा महसूस किया कि मेरी आध्यात्मिक ऊर्जा भी कमजोर पड़ रही है। जो मन की स्थिरता मैंने पिछले सात सालों में हासिल की थी अब उसके स्थान पर अवसाद, क्रोध और निराशा स्थान ले रहे थे। मैंने यह अनुभव किया कि किसी से कुछ उम्मीद करना निरर्थक है। यह एक अंधी दौड़ है जहाँ हर कोई अपने ही बारे में सोच रहा है। क्या अजीब संसार है! मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि वो मुझे संसार के इस आक्रमण को सहने के लिए पर्याप्त बल दें। इसी समय मैंने यह भी महसूस किया कि कुछ अंदरूनी बदलाव भी मुझमें हो रहे हैं। मैं अपनी मानसिक अवस्था से भयभीत हो गया। मैं ईश्वर से प्रायः प्रार्थना करता था, ''हे ईश्वर, मुझे ऐसी विपत्ति से बचाओ। मुझे अपने जीवन की समस्याओं से जूझने की पर्याप्त शक्ति दो।''

आध्यात्मिक शांति हासिल करने के लिए मैंने हेड़ाखान में शिवरात्रि मनाने का निर्णय किया। श्री एनसी शर्मा और अपने सहायक महावीर के साथ मैं एक जीप में 24 फरवरी को हेड़ाखान गया। लगातार बारिश हो रही थी और मौसम बहुत

ठंडा था। सुबह के सवा छह बजे के लगभग हम नोएडा से निकले और शाम के 6 बजे हेड़ाखान पहुँचे। हेड़ाखान तक पहुँचने के लिए बनी कच्ची सड़क (39 कि.मी.) यात्रा के लिहाज से बिलकुल सुरक्षित नहीं थी। बहरहाल, ईश्वर का नाम लेते हम शाम तक वहाँ पहुँच गए। अभी भी बारिश हो ही रही थी और कोई चौकीदार वहाँ दिखाई नहीं दे रहा था। उसे ढूँढने में हमें लगभग घंटे भर का समय लग गया। अंततः हमें निरीक्षण बंगले में जगह मिली। संध्या वंदन के बाद हम लगभग साढ़े 7 बजे शिव मंदिर के लिए निकले। अभी भी बूँदाबाँदी हो रही थी और घना अंधेरा था। हमने मंदिर पहुँच कर संध्या भजन का आनंद लिया। मैं भजन में इतना तल्लीन हो गया था कि मैं प्रसाद बाँट रहे एक भक्त की बात नहीं सुन पाया। नाराज होकर भक्त ने कहा, ''अगर आपको सोना है तो कृपया अपने कमरे में सोएँ।'' मैं चौंक पड़ा और अपनी गहरी तल्लीनता से बाहर आया। प्रसाद लेने के बाद हम अपने बंगले पर लौट आए।

बंगले पर हमारे लिए खाना बनाने वाला कोई नहीं था। इसीलिए हमें ब्रेड, मक्खन और फलों से संतोष करना पड़ता था। मैं निचले तल पर कक्ष में सोया। गहरा अंधेरा था, बिजली नहीं थी। एक मोमबत्ती तक नहीं थी और ठंड भी काफी थी। मैं सो गया। सुबह-सुबह मैंने महसूस किया मानो कोई मुझे अपने हाथ के मधुर स्पर्श से जगा रहा हो। मैं उठ गया, बाईं ओर घूमा और एक महिला को देखा जो धीरे-धीरे माँ विंध्यवासिनी का रूप ले रही थी। उन्होंने मुझसे बहुत मंद ध्वनि में स्नेहपूर्वक कहा, ''प्रशांत, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ। किसी बात की चिंता मत करो।'' उसके बाद वह आकृति गायब हो गई। मेरी आँखों में आँसू आ गए और मुझे यह एहसास हो गया कि मेरी यात्रा पूरी तरह सफल हो गई है।

25 फरवरी की सुबह शिवरात्रि के दिन हमारे निरीक्षण बंगले पर पानी की एक बूंद भी नहीं थी। इस कारण हमने गोला नदी में स्नान करने का विचार बनाया। हालांकि ठंड बहुत ज्यादा थी, नदी में स्नान से हमें बहुत स्फूर्ति मिली। हम पूजा के लिए तैयार हुए और शिव मंदिर जाकर शिवजी की पूजा की। इसके बाद हमने नदी पार की और उस पार स्थापित अनेकों देवी देवताओं की पूजा की। यह बाबा हेड़ाखान की तपोस्थली थी। हम बाबा गौरहरी जी की सादगी और भक्ति से बहुत प्रभावित हुए जो वहाँ के मंदिरों की देखरेख करते थे। सामान्य तौर पर किसी भी व्यक्ति को उन गुफाओं में जाने की अनुमति नहीं थी जहाँ बाबा अपनी तपस्या किया करते थे। इसके बावजूद गौरहरी जी ने हमें गुफा में

प्रवेश की अनुमति दी और वहाँ कुछ देर बैठने का सुझाव दिया। एक आज्ञाकारी शिष्य की तरह मैंने उनके सुझाव का पालन किया। मैं और महावीर गुफा के अंदर गए। हम 20 मिनट तक गुफा के अंदर ध्यानस्थ रहे। मैं प्रफुल्लित और शांतचित्त होकर गुफा से बाहर आया। लगभग 1:30 बजे हम हेड़ाखान से निकल पड़े और 11 बजे रात तक नोएडा पहुँच गए।

ऐसे अनोखे आध्यात्मिक अनुभव के बाद मैं सुस्त पड़ गया और दृढ़ तरीके से अपनी गतिविधियाँ करने की मेरी भूख कम पड़ती चली गई। यह इस बात का संकेतक था कि मैं धीरे-धीरे अपने अनुशासन और अध्यात्म की दृढ़ता से विचलित हो रहा था। रोज जिस तनाव को मैं महसूस करता था वह धीरे-धीरे बढ़ता चला गया। अब तक मैं इन तनावों को नियंत्रित कर लेता था पर जैसे-जैसे समय बीतता चला जा रहा था, वैसे-वैसे मैं तनाव सहने की स्थिति में नहीं रह पा रहा था।

चूंकि मेरी थकान बढ़ती जा रही थी, इस कारण मैंने और मेरे परिवार ने शांति की तलाश में मुंबई, शिरडी, पुणे, नासिक, महाबलेश्वर और गोवा जाने की योजना बनाई। 4 मई को हमने त्र्यंबकेश्वर शिवलिंग की यात्रा की। यह एक ज्योतिर्लिंग था। केवल यहीं ब्रह्मा, विष्णु और महेश का दर्शन एक ही लिंग में दर्पण के माध्यम से किया जा सकता है। यहाँ के बाद, हम शिरडी के लिए निकले और अगली सुबह हमने शिरडी साईं बाबा मंदिर जाकर प्रात: आरती का आनंद लिया। दर्शन के बाद हम पुणे के लिए निकले। रास्ते में हमने शिंगणापुर के प्रसिद्ध शनि मंदिर का दर्शन किया। इस मंदिर में महिलाओं को जाने की अनुमति नहीं थी। उन्हें कुछ दूरी से दर्शन करना होता था और इससे छवि व्यथित हो गई। मैंने एक केसरिया रंग की धोती पहनी थी और नंगे बदन ही मंदिर की सीढ़ियों पर चढ़ा। चूंकि मैंने रुद्राक्ष की माला पहन रखी थी, इस कारण बहुत सी महिलाओं ने सोचा कि मैं पंडितजी हूँ और अपनी पूजा सामग्रियाँ भगवान पर चढ़ाने के लिए मुझे दे दी, जिसे मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। प्राय: मैं यह सोचता हूँ कि हम महिलाओं को लेकर इतने भेदभावपूर्ण रवैये क्यों रखते हैं जबकि हम उन्हें देवी भी मानते हैं। जो भी कारण हो, हम अपनी आधी आबादी को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन में उनकी उचित हिस्सेदारी से वंचित रखकर प्रगति नहीं हासिल कर सकते। समस्या हमारे दृष्टिकोण में है, सुधार और महिलाओं का शक्तिकरण घर से ही शुरू होना

चाहिए। केवल महिला दिवस के आयोजन और महिलाओं के शक्तिकरण के लिए कुछ योजनाओं की घोषणा कर देने से कोई लाभ नहीं होगा। हमें अपनी मानसिकता को बदलने की जरूरत है और इसकी शुरुआत परिवार से होनी चाहिए।

जुलाई 1998 में मैंने एनसीडीसी द्वारा आयोजित एक सेमिनार में भाग लेने के लिए कोल्हापुर के इचल करंजी नाम नामक स्थान की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान मुझे नरसिंह घड़ी, दत्तात्रेय मंदिर, कोल्हापुर के महालक्ष्मी मंदिर और पंढरपुर के विठ्ठल मंदिर की यात्रा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दत्तात्रेय मंदिर में अपनी पूजा के दौरान मैंने जबरदस्त कंपन महसूस किए और कांपने लगा। यह मंदिर कृष्णा और पंचगंगा नदियों के संगम पर स्थित है। इस मंदिर में दत्तात्रेय के खड़ाऊँ की पूजा होती है। यहाँ पर मैंने कुत्तों को प्रसाद खिलाते हुए आध्यात्मिक भावनाओं का अनोखा उभार भी महसूस किया। मैंने तिरुपति मंदिर, कालाहस्ती मंदिर और चेन्नई के प्रसिद्ध शिव मंदिर की भी यात्रा की। इन यात्राओं ने मुझे आध्यात्मिक रूप से तरोताजा कर दिया।

इस दौरान जो एक सकारात्मक चीज हुई वह यह है कि मैं अपने अवसाद से बाहर चला आया। राखी पूर्णिमा के लिए सरिता कानपुर चली गई और मैं अपनी दोनों बेटियों के साथ 12 अगस्त को लखनऊ चला आया। वहाँ उसे नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट में दाखिला दिलाना था। काफी सोच-विचार के बाद उसने इसे अपने कैरियर के रूप में चुना था। 12वीं में उसने मानविकी में अच्छे अंक हासिल किए थे और लेडी श्रीराम कॉलेज में राजनीति विज्ञान प्रतिष्ठा में उसे दाखिला मिल रहा था। इसी दौरान अखिल भारतीय परीक्षा और इंटरव्यू पास कर उसने होटल मैनेजमेंट में दाखिला लिया। वहाँ रुनु के दाखिले के बाद हम 13 अगस्त को सरिता के पास कानपुर चले गए। उस रात ऊर्जा के प्रवाह से मैंने खुद को अभिभूत महसूस किया, मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा हृदय इतना विस्तृत हो गया है मानों वह सारे संसार को आच्छादित कर ले। ऐसा प्रतीत हुआ मानो मेरा हृदय चक्र पूरी तरह खुल चुका है। जीवन में पहली बार मैंने प्रेम और करुणा कि इतनी गहन भावना को महसूस किया।

कानपुर में संक्षिप्त विश्राम के बाद मैं दिल्ली वापस चला आया। यह अक्टूबर की 5 तारीख थी और चूंकि यह शनिवार था, मैं घर पर ही था। मैं भजनों की शांतिदायक धुन का आनंद ले रहा था। ऐसा करते हुए मैं पूजा कक्ष

की खाली जगह पर ध्यान लगा रहा था। मैंने रोशनी का एक वृत्ताकार स्थान देखा जो धुंधली पीली रोशनी को सफेद रोशनी और फिर सफेद रोशनी को पीली रोशनी में बदल रही थी। लगभग 1 मिनट के बाद मैंने देखा कि मेरी आँखों से बैगनी रंग की रोशनी के वृत्ताकार बादल निकल रहे हैं और अंतरिक्ष में समाहित होते जा रहे हैं। शीघ्र ही यह बैंगनी रंग हरे में बदल गया। अंतरिक्ष रोशनी के द्वारा खेला जा रहा लुकाछिपी का यह खेल मुझे बड़ा आनंद दे रहा था। मुझे उत्साह और परमानंद की उच्च अनुभूति हुई।

आजकल के परिवार किस प्रकार काम करते हैं उसको ना तो मैं समझ पाता हूँ ना ही उसकी प्रशंसा कर पाता हूँ। आजकल के परिवार न्यूक्लियर फैमिली की तरह हैं जहाँ सदस्यगण दूसरों की भावनाओं और जरूरतों की अवहेलना करते हुए अपने स्वार्थों की पूर्ति करते हैं। परंपरागत मूल्य खत्म हो रहे हैं। परंपरागत मूल्यों के वातावरण में पले–बढ़े होने के कारण मैं तथाकथित आधुनिक समाज के मूल्यों के साथ खुद को संयोजित कर पाने में असफल रह जाता था। हर जगह हर क्षेत्र में अंधी दौड़ मची हुई है और आध्यात्मिक मूल्य पीछे छोड़ दिए गए हैं। लेकिन मुझे विश्वास है एक दिन समाज भौतिकतावाद की क्षणभंगुरता को समझेगा और समाज के सदस्यों को सद्‌बुद्धि आयेगी।

24 जनवरी 1999 को मैं और मेरी पत्नी सड़क मार्ग से पुष्कर के लिए निकले। रास्ते में अजमेर झील के पास एक पहाड़ी पर बने सुंदर सर्किट हाउस में हम थोड़ी देर के लिए रुके। योजना के अनुसार हमें थोड़ी ही देर रुकना था पर आश्चर्यजनक रूप से अजमेर शरीफ के प्रतिनिधि हमारे पास आए और हमसे दरगाह चलने का अनुरोध किया क्योंकि यह सलीम चिश्ती के पीर का जन्मदिन था। यह उन बेहद चुनिंदा दिनों में से एक माना जाता था जिस दिन जन्नत के द्वार खुले होते हैं। हम जल्दी से दरगाह गए जहाँ लोगों का एक लंबा हुजूम उमड़ा हुआ था। काफी कठिनाई से पुलिस की सुरक्षा में हम जन्नत द्वार से गुजरे और मजार पहुँचे। इतनी भीड़ थी कि लगभग हमारा दम घुट गया था। मजार के समक्ष मैंने अपने स्व को पहचान पाने के लिए दुआ मांगी। मैंने छवि, सुशांत और रेनू के लिए भी प्रार्थना की। परिसर के भीतर मैंने बाबा फरीद की मजार के सामने भी माथा टेका। माथा टेकते समय फकीर ने मेरी पीठ पर कई बार मोर के पंख फेरे। इसे दुआ माना जाता है। अजमेर शरीफ से हम सीधे पुष्कर गए जहाँ ब्रह्मा की पूजा होती है। यह देश का इकलौता ऐसा स्थान है जहाँ ब्रह्मा का मंदिर है।

हमने रंगजी मंदिर और गौ घाट की यात्रा की और वहाँ पूजा और तर्पण किया। इसके बाद हम ब्रह्मा मंदिर और इसी परिसर में एक गुफा में मौजूद शिव मंदिर गए।

मैं कुछ समय से ब्रह्मकुमारी आश्रम से जुड़ा हुआ था। मुझे माउंट आबू में उनके संस्थान में एक आध्यात्मिक सम्मेलन में जाने का मौका मिला जो फरवरी 1999 में आयोजित होने वाला था। मैं इसमें शामिल नहीं हो पाया क्योंकि मैं राजस्थान में सूखे का जायजा लेने के लिए एक केंद्रीय टीम का नेतृत्व कर रहा था। इसके बाद 12 फरवरी को उनके दिल्ली संस्थान में 'शिव' पर एक चर्चा में शामिल होने का आमंत्रण आया। यहाँ भी मैं नहीं जा पाया। एक और दिन जब मैं ब्रह्म कुमारी आश्रम द्वारा प्रकाशित एक किताब 'प्रैक्टिकल मेडिटेशन' पढ़ रहा था, मुझे ब्रह्म कुमारी आश्रम की एक बहन का फोन आया। मुझे उन्होंने 14 अक्टूबर को अपने कार्यक्रम में शामिल होने का आमंत्रण दिया। इस बार भी मैं शामिल नहीं हो पाया क्योंकि मैं उसी रात बैंकॉक जाने वाला था। मैं इन्हें केवल संयोग नहीं मानता, बल्कि मैंने महसूस किया कि इन घटनाओं के पीछे कोई रहस्य है। वास्तव में शीघ्र ही यह साकार हुआ जब मुझे दिल्ली में उनकी एक चर्चा में शामिल होने का मौका मिला। मैंने माउंट आबू स्थित ब्रह्म कुमारी संस्थान के ज्ञान सरोवर की यात्रा भी की।

फरवरी, 1999 में मैं एफएओ की एक शाखा एनईडीएसी की बैठक में भाग लेने बैंकॉक गया। 17 फरवरी को एनईडीएसी के एक प्रोजेक्ट ऑफिसर के साथ मैं बैंकॉक के महान राष्ट्रीय महल को देखने गया। पूरी दुनिया के हजारों पर्यटक वहाँ आए हुए थे। महल बहुत बड़े इलाके में विस्तृत है और परिसर के अंदर कई मंदिर व बौद्ध मठ हैं। पूरे महल की दीवारें रामायण की तस्वीरों से भरी हुई हैं। थाईलैंड के राजा का नाम हमेशा ही राम रखा जाता है, जैसे राम प्रथम, राम द्वितीय आदि। 'पन्ना बुद्ध' (एमरल्ड बुद्धा) यहाँ का सबसे पवित्र मंदिर है। इस मंदिर की भव्यता, सुंदरता और पवित्रता को देख कर मेरी आँखें चकरा गयीं। मैं कुछ देर वहाँ ध्यान में बैठा और स्वत:स्फूर्त ढंग से 'बुद्धम् शरणम् गच्छामि' का जाप करने लगा। बैंकॉक में कुछ दिन बिताकर मैं वापस दिल्ली लौट आया।

दिल्ली की कड़ाके की सर्दी मुझे प्रात: साधना की अनुमति नहीं देती थी। इसका यह अर्थ नहीं कि मुझे आध्यात्मिक अनुभव नहीं हो रहे थे। कुछ तो पुराने अनुभव ही हो रहे थे, जैसे बिजली का कौंधना, फुंफकार की आवाज, ऊर्जा का

आवेग आदि। जैसे-जैसे साल गुजरता गया, मैंने एक विशिष्ट बदलाव महसूस किया; अब मुझे देवी-देवताओं की आकृतियाँ नहीं दिखाई देती थीं। ऊर्जा का प्रवाह, रोशनी की चमक, खासकर चमकीली रोशनी की टिमटिमाहट आदि महसूस होती थी। कई मौकों पर मैंने ऐसा महसूस किया मानों मैं तेज रोशनी में नहा गया। मैं पश्चदृष्टि में ऊर्जा का प्रवाह भी महसूस कर सकता था। यह प्रवाह काफी पहले (शायद 1991 से) मेरे पैरों से शुरू हुआ था। इसके बाद मैंने अपने जननांग और नाभि स्थल में ऊर्जा का प्रवाह महसूस किया। इसके बाद मैंने छाती और गले के हिस्से में इस ऊर्जा के प्रवाह को महसूस करना शुरू किया। बाद में यह प्रवाह गले से मस्तक (ब्रह्म रंध्र) की ओर चला गया। मस्तक में दाहिने से बाएँ और फिर बाएँ से दाहिने लयबद्ध गति होती थी। मैंने अपने चेहरे और मस्तक पर ठंडी हवा का बहाव महसूस किया। मैंने प्रात: काल टहलने के दौरान इसकी चर्चा अपनी पत्नी से की। उसने यह बताया कि ऊर्जा का प्रवाह मूलाधार चक्र से शुरू होकर विशुद्धि चक्र तक पहुँच चुका है। अब ऊर्जा आज्ञा चक्र से प्रवाहित हो रही है और एक-एक कर सहस्रार चक्र के द्वार खोल रही है। सरिता द्वारा की गई यह व्याख्या दिलचस्प थी।

जब 1997 में छवि गंभीर रूप से बीमार पड़ी थी, मुझे सूर्य की आराधना करने की सलाह दी गई थी। सूर्य को मंत्रोच्चार के साथ जल अर्पित करने का कार्य मैंने कई वर्षों तक जारी रखा। जब भी मैं प्रात: काल सूर्य की झलक देखता था, मैं स्वत: ही झुक जाता था और मंत्र का जाप करने लगता था। धीरे-धीरे मैं अपने भीतर परिवर्तन देखने लगा। मैंने यह गौर किया कि जब भी मैं स्नान और पूजा के बाद सूर्य को जल और फूल अर्पित करता था, मैं अपने मस्तक में ऊर्जा की धारा प्रवाहित होते हुए महसूस करता था। उन दिनों मैंने एक मजेदार सपने में देखा कि मैं अपने दोस्तों के साथ किसी पवित्र स्थान की यात्रा में गया हुआ हूँ। हम एक कुंड के किनारे चल रहे हैं, अचानक से मैं कुंड में गिर पड़ा और धाराओं के बीच फंस गया। मैं भयभीत हो गया और मैंने ओम नम: शिवाय का जाप करना शुरू किया। जैसे ही मैंने मंत्र का उच्चारण शुरू किया, धाराओं की दिशा बदल गई और मैं मुक्त हो गया। मैं जाग गया और मैंने राहत की सांस ली।

अपने ऑपरेशन के बाद जब छवि गंभीर रूप से बीमार थी, मैंने उसके स्वस्थ होने पर शिरडी और केदारनाथ की यात्रा का संकल्प लिया था। मई 1998 में हम सब शिरडी गए पर किसी कारण से केदारनाथ नहीं जा पाए। 1999 में मेरा यह संकल्प पूरा हो पाया। मेरा भानजा बीकन, श्री एनसी शर्मा और मैं 24

अप्रैल को दिल्ली से हरिद्वार के लिए निकले। सोमवार का दिन था और यह गंगा दशहरा का भी दिन था। हम 4 बजे शाम को हरिद्वार पहुँचे और वहाँ बाहरी इलाके में एक होटल में ठहरे। हम दक्षेश्वर शिव मंदिर और पारदेश्वर शिव मंदिर गए। इसके बाद हम आरती और स्नान के लिए गंगा घाट की ओर गए। इस समय तक यह हमारे ध्यान में नहीं था कि यह मलमास में गंगा दशहरा का दिन था जिसे काफी शुभ माना जाता है। हम उस दिन हरिद्वार में ठहरे और अगले दिन हम रोप-वे से चलकर चंडी देवी गए। दिन मंगलवार का था जिसे देवी का दिन माना जाता है। जब मैं 1992-93 के दौरान इस स्थान की यात्रा किया करता था, उस समय बहुत कम श्रद्धालु यहाँ आते थे। यहाँ तक पैदल चल कर आना होता था, पर रोप-वे के चालू होने के बाद लोग इस स्थान पर बड़ी संख्या में आने लगे। मंदिर में काफी भीड़ थी, पर पुजारी ने मुझे पहचान लिया और हमारे लिए दर्शन की विशेष व्यवस्था की। अंजनी माता मंदिर और हनुमान मंदिर की यात्रा के बाद हम लौट आए और परमार्थ निकेतन आश्रम में ठहरे।

26 मई को मैं प्रातः जल्दी उठा और गंगा तट पर चहलकदमी के लिए गया। मैं काफी देर तक टहला और एक चट्टान पर बैठकर ध्यान भी लगाया। मन को आनंदित करने वाली अनुभूति हुई। शाम को हम स्वामी चिदानंद सरस्वतीजी के साथ आरती में शामिल हुए। पूरा माहौल आध्यात्मिक और परम आनंद दायक हो गया। अगले दिन हम गुप्तकाशी के लिए निकले और शाम में 5 बजे वहाँ पहुँचे। गुप्तकाशी मंदाकिनी घाटी के बीच इतनी सुंदर प्रतीत हुई कि मुझे लगा मानों मैं स्वप्नलोक में आ गया हूँ। हिम-आच्छादित चोटियों की मनोहारी सुंदरता देखने लायक थी। हम वहाँ गुप्तकाशी इंस्पेक्शन बंगले में ठहरे। 28 मई को नाश्ते के बाद हमने गौरीकुंड के लिए यात्रा शुरू की और वहाँ 9 बजे पहुँच गए। गौरीकुंड से हमने केदारनाथ के लिए चढ़ाई शुरू की। मंदाकिनी नदी के किनारे-किनारे घुमावदार रास्तों पर केदारनाथ की यात्रा में मैं बहुत उल्लसित महसूस कर रहा था। यह ढेर सारे पहाड़ी झरनों और हरियाली भरे वातावरण वाली एक सुंदर घाटी थी। देश के विभिन्न हिस्सों और अलग-अलग क्षेत्रों से आए हुए लोगों से मिलना बहुत अनोखा अनुभव था-अमीर, गरीब, वृद्ध, युवा, बच्चे सभी शामिल थे। मैं वृद्ध लोगों की इच्छा शक्ति को देखकर आश्चर्यचकित था, जो केदारनाथ की 10 से 12 घंटे की मुश्किल चढ़ाई चढ़ने के लिए दृढ़संकल्प थे।

यह केदारनाथ की मेरी तीसरी यात्रा थी पर हर बार मुझे ऐसा प्रतीत होता

था कि जैसे यह मेरी पहली यात्रा हो। हिमालय मानवता को बहुत कुछ प्रदान करता है–अपनी शक्ति, अपनी शांत भव्यता, आध्यात्मिक तरंगें और इन सबसे बढ़कर ईश्वर के साथ एकाकार होने की अनुभूति। एक घंटे तक चलने के बाद हम एक चट्टी नाम की एक छोटी दुकान पर रुके जहाँ हमने स्वादिष्ट चाय का लुत्फ उठाया। यहाँ हम वृद्ध राजस्थानी महिलाओं के एक समूह से मिले। उनमें से एक ने मुझसे केदारनाथ के बारे में पूछा और यह पूछा कि वह पहुँच पाएगी या नहीं। मैंने उसको भरोसा दिलाया कि ईश्वर की कृपा से वह जरूर पहुँच पाएगी। वह एक प्रसन्न और जीवंत वृद्ध महिला थी। चाय की दुकान से चलते समय उसने मुझे आशीर्वाद दिया। मैंने ऐसा महसूस किया मानों स्वयं पार्वती माता उनके रूप में अवतरित होकर आई हैं।

हम चट्टी से निकले और अपनी यात्रा फिर से शुरू की। कुछ देर बाद मैं लड़खड़ा कर गिर गया। मेरा भांजा बीकन चिंतित हो गया, पर सौभाग्य से छोटी खरोंच के अलावा कुछ और नहीं हुआ। अगर मैं सँकरे किनारे के दूसरी ओर गिरा होता तो बहुत भयानक हादसा हुआ होता। मैंने हृदय से ईश्वर को धन्यवाद दिया। इस छोटी घटना से मेरे जीवन की कोई बड़ी घटना टल गई।

हम चलते रहे और लगभग 2 बजे हम रामबाड़ा पहुँचे जहाँ श्रद्धालु भोजन और विश्राम करते हैं। हमने वहाँ भोजन किया और कुछ देर तक विश्राम किया। उसके बाद बारिश होने लगी। जब बारिश रुकी तब हमने शरीर को प्लास्टिक से ढँककर अपनी यात्रा पुनः शुरू की। कुछ देर बाद फिर से बारिश होने लगी और हम पूरी तरह भीग गए। मैंने 'ओम नमः शिवाय' का जाप करना प्रारम्भ किया और ईश्वर की दया से बारिश रुक गई। राम बाड़ा से केदारनाथ की चढ़ाई तीखी ढलान वाली और मुश्किल थी। हमने एक शॉर्ट-कट लिया। मैं पूरी तरह थक गया था। मैं महसूस कर रहा था कि उम्र के साथ मेरी शक्ति क्षीण पड़ रही थी। तथापि, दृढ़ इच्छा शक्ति और ईश्वर पर आस्था के साथ मैंने चढ़ाई पूरी की। मंजिल से ठीक 2 किलोमीटर पहले मुझे केदारनाथ मंदिर की झलक दिखाई देने लगी। उत्साह और परम आनंद की अनुभूति मेरे शरीर में दौड़ गई। जब मैंने 1993 में पहली बार इसी स्थान से मंदिर की झलक देखी थी तो ठीक ऐसी ही अनुभूति हुई थी।

मंदिर के पास ही एक अतिथिगृह में हम ठहरे और चूंकि मंदिर बंद हो रहा था, जल्दी से केदारनाथजी के दर्शन के लिए गए। हमने आराम से और शांति के

साथ दर्शन किया। रात्रि विश्राम हमने केदारनाथ में ही किया। बहुत ज्यादा ठंड थी और ऊँचाई और हवा के कम दबाव के कारण मुझे तेज सिरदर्द होने लगा और कई बार साँस लेने में भी तकलीफ होने लगी। भोजन की इच्छा नहीं हुई। मैंने सिर्फ सूप पिया और एक पूड़ी खाई। बीकन और मैं एक ही कमरे में ठहरे। ठंड, सिरदर्द और साँस लेने में तकलीफ के कारण मैं ठीक से सो नहीं पाया। केवल कुछ ही घंटे की नींद आई और सुबह मैं 5 बजे उठ गया। हमने स्नान किया और साढ़े छह बजे तैयार हो गए। हम विशिष्ट दर्शन के लिए मंदिर के अंदर गए। हमने दर्शन किए और पूजा की। वह शिव चतुर्दशी का शुभ दिन था। हमने इसकी योजना नहीं बनाई थी, पर संयोग से हमने शिव चतुर्दशी के दिन वहाँ पूजा की। यह सब पूर्व निर्धारित था।

दर्शन के बाद मैं प्रार्थना के लिए शंकराचार्य मंदिर चला गया। मुख्य मंदिर के पीछे बने इस मंदिर में बहुत कम ही लोग जाते हैं। हम उन आदि गुरु को भूल चुके हैं जिन्होंने आध्यात्मिक और राष्ट्रीय एकता के लिए चार धामों की स्थापना की। वहाँ से लौट कर हमने नाश्ता किया और गौरीकुंड के लिए यात्रा शुरू की। नीचे उतरना आसान था। रात्रि विश्राम गुप्तकाशी निरीक्षण बंगले पर हुआ।

अगली सुबह हम गुप्तकाशी से हरिद्वार के लिए निकले। रास्ते में हमने कीर्तिनगर के पास लक्ष्मोली में अद्वैत आश्रम में भोजन किया। हमने आश्रम में स्थापित सभी 12 ज्योतिर्लिंगों की पूजा की। शाम को हम हरिद्वार पहुँचे और बीएचईएल के अतिथि गृह में ठहरे। 31 मई की सुबह हम हरिद्वार से निकले और 1 बजे दोपहर तक दिल्ली पहुँच गए।

आध्यात्मिक अनुभवों के क्षेत्र में इस दौरान कुछ खास प्रगति नहीं हुई। मैं पारिवारिक जीवन और आध्यात्मिक जीवन के बीच इस दौरान बहुत ज्यादा उतार-चढ़ाव के दौर से गुजरता रहा। आजकल के परिवारों में हर सदस्य और खास कर नई पीढ़ी के सदस्य सोचते हैं कि वे दूसरों से पूरी तरह स्वतंत्र हैं। वे यह भूल जाते हैं कि एक सामंजस्यपूर्ण, सहयोगपूर्ण जीवन परिवार और समाज की सेहत के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। चारों ओर मौजूद तनावपूर्ण माहौल, बड़ों का अनादर और सदस्यों के बीच शुष्क संबंध आदि ने मुझे सामाजिक जीवन जीने के विवेक पर पुनर्विचार करने के लिए बाध्य कर दिया। ऐसे तुच्छ जीवन का क्या अर्थ? आत्मज्ञान की तलाश में केन्द्रित संन्यासी जीवन ज्यादा

उचित था। मैंने अपने आध्यात्मिक जीवन पर ज्यादा ध्यान देना प्रारम्भ किया। मैंने काफी हद तक वैराग्य विकसित कर लिया और सांसारिकता का त्याग करने का लगभग मन बना लिया। उस दिन मैं अपने पूजा कक्ष में सोया। प्रातः काल मैं तड़के उठ गया और बिना किसी को सूचित किए घर छोडने के लिए तैयार हो गया। मैं बाथरूम जाने लगा और ठीक उसी समय मैंने अपने बेटे सुशांत का मासूम चेहरा देखा जो अपनी माता के बगल में सो रहा था। उस मासूम चेहरे का मुझ पर बहुत गहरा असर हुआ। मैंने यह एहसास किया कि चूंकि मैंने गृहस्थ आश्रम को अपनाया है, इस कारण यही मेरा प्रथम और परम कर्तव्य है कि मैं अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देकर उन्हें अच्छा मनुष्य बनाने के लिए एक अभिभावक के कर्तव्य का निर्वाह करूँ। इस पड़ाव पर अपने परिवार को बेसहारा छोड़ देना मेरे लिए बहुत बड़ा अपराध होगा। इसके अलावा, मेरा परिवार कोई अभिशाप नहीं बल्कि कई गुणों–जैसे धैर्य, सहनशीलता, एक दूसरे के मतों का सम्मान, भरोसा, अनुशासन और त्याग के विकास के लिहाज से एक वरदान है। मैंने स्वयं के साथ तर्क किया कि गृहस्थ जीवन में भी संतोचित जीवन जिया जा सकता है। एक पारिवारिक मनुष्य जो अस्थायी जीवन के समस्त संकटों के साथ के संतोचित जीवन जी रहा है वह सांसारिकता का त्याग कर चुके संन्यासी से ज्यादा बड़ा योगी है। मेर मन बदल गया और मैं फिर से स्थिर हो गया।

काफी पहले, 1991 में मेरे मन में केरल के गुरुवायुर मंदिर की यात्रा की इच्छा थी पर इस इच्छा की पूर्ति करने में मुझे एक दशक का समय लग गया। 2 अगस्त 1999 को मैं एनसीडीसी की योजनाओं की एक समीक्षा बैठक के लिए तिरुअनंतपुरम गया। वहाँ मैं कोवलम् बीच पर अशोका होटल में ठहरा। होटल एक बहुत सुंदर स्थान पर है जहाँ अरब सागर इसके आधार का स्पर्श करता है। अगली सुबह मैं 6 बजे उठा और समुद्र का नजारा लेने के लिए बाल्कनी में चला गया। जिस क्षण मैंने लहरों और आवाज पर अपना ध्यान केन्द्रित किया, मेरे ऊपर इसका चमत्कारिक असर हुआ। मेरे भीतर एक जबर्दस्त लहर दौड़ गई और मेरा पूरा शरीर काँपने लगा।

5 अगस्त को मैंने गुरुवायुर मंदिर के लिए प्रस्थान किया और शाम को साढ़े छह बजे वहाँ पहुँच गया। केवल एक धोती और अंगवस्त्र धारण कर मैं मंदिर में गया। यह दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध कृष्ण मंदिर है। गाथाओं के अनुसार, प्रलय के बाद नई सृष्टि की शुरुआत के समय एक मछुवारे को कृष्ण की मूर्ति

समुद्र में मिली। वह इस मूर्ति को राजा के पास ले गया और राजा ने उस मूर्ति के लिए एक मंदिर का निर्माण करा दिया। जब मैंने मंदिर में प्रवेश किया, आरती का समय हो चुका था। मैं मंदिर के फर्श पर बैठ गया और 'हरे कृष्ण, हरे कृष्ण' का जाप करने लगा। शीघ्र ही मुझे अद्‌भुत तरंगों का अनुभव होने लगा। आरती के बाद, कृष्ण की मूर्ति को एक हाथी में रखकर शोभायात्रा निकाली गई, मूर्ति के पीछे-पीछे लोगों का हुजूम चल रहा था। मैंने भी शोभा यात्रा में हिस्सा लिया और परिक्रमा पूरी की। गुरुवायुर मंदिर की यात्रा ने मेरे मन में गहरा प्रभाव छोड़ा और अध्यात्म से मेरा लगाव फिर से शुरू हो गया। स्वयं की पहचान का मार्ग सचमुच में बहुत लंबा है और इस पर धैर्य, विश्वास और निष्ठा के साथ चलना पड़ता है।

मेरे मन में कांचीपुरम् के कामाक्षी मंदिर जाने और कांची कामकोटि पीठम् के शंकराचार्य को श्रद्धासुमन अर्पित करने की बहुत लालसा थी। 18 अगस्त 1999 को तमिलनाडु सरकार के सचिवों के साथ एक राज्य स्तरीय बैठक में शामिल होने के बाद मैं अगली दोपहर कांचीपुरम् के लिए निकाल पड़ा। मैं शंकरचार्य से मिला। मुझे मालूम नहीं था कि अगला दिन, यानि गुरुवार एक शुभ दिन है। शंकराचार्य के शांत मुख और निश्चल मुस्कान से मैं अभिभूत हुआ। उन्होंने समेकित रूप से विकास सुनिश्चित करते हुए गाँव की ओर लौटने की अपनी भविष्य दृष्टि समझायी। उन्होंने मुझे इस शुभ दिन को दक्षिण मूर्ति शिव के दर्शन का सुझाव दिया जो समस्त ब्रह्मांड के प्रथम गुरु माने जाते हैं। मैं वहाँ से 10 किलोमीटर आगे शिव की आराधना करने गोविंदपुर गाँव गया। दक्षिण मूर्ति को अधिगम, एकाग्रता, ज्ञान और अध्यात्म का देव माना जाता है। शाम को मैं एक युवा ओजस्वी साधु से मिला जो शंकराचार्य के उत्तराधिकारी बनने के अधिकारी थे। मैंने जब उनसे पूछा कि आदि शंकर की समाधि कहाँ स्थित है? उन्होंने बताया कि आदि शंकर की समाधि लंबे समय तक केदारनाथ में थी और जब वे अवतरित हुए तब वे मूर्तरूप लेकर कांचीपुरम् मीनाक्षी मंदिर आ गए और पुनः मूर्तरूप धारण कर देवता में विलीन हो गए। 20 अगस्त की सुबह मैं कामाक्षी मंदिर गया। यह एक भव्य और विशाल मंदिर है तथा यहाँ की देवी शक्तिशाली और सुंदर हैं।

3 सितंबर, शुक्रवार के दिन जन्माष्टमी थी। यह एक बहुत ही शुभ दिन था और मैं भक्ति संगीत सुनते हुए मन में उत्साह महसूस कर रहा था। मध्यरात्रि में

सरिता और सुशांत के साथ मैंने कृष्ण भगवान की आरती और शंख बजा कर पूजा की। रात में मैंने राम और कृष्ण के मंत्र और श्लोक सुने और मुझे पता नहीं चला कि कब मैं पूजा कक्ष में ही सो गया। 4 बजे सुबह अर्धचेतन अवस्था में मैंने पाया कि माँ काली मेरे चारों ओर घूम रही है। मैं घबरा गया और यह समझ नहीं पाया कि यह दृश्य किस बात को प्रदर्शित करता है। 2 दिन बाद 5 सितंबर को दिल्ली में चुनाव था। सुबह आठ बजे मैं, सरिता, छवि और रूनु अपना वोट डालने गए। 4 बजे शाम को तेज आँधी आई और गरज के साथ बारिश भी होने लगी। मुझे इस बात का भय होने लगा कहीं इसकी वजह से चुनाव प्रक्रिया बाधित ना हो जाए। मैंने 'ओम नमः शिवाय' का जाप करना शुरू किया ताकि यह बारिश समाप्त हो और लोग अपने लोकतांत्रिक अधिकार का इस्तेमाल कर सकें। ऐसा लगा कि भगवान शिव ने मेरी प्रार्थना सुन ली और बारिश समाप्त हो गई।

ध्यान के दौरान की एक और दिलचस्प घटना का मैं यहाँ पर वर्णन करना चाहता हूँ। एक सुबह जब मैं ध्यान में था, कुछ समय बाद आदि शंकराचार्य मेरे मन की आँखों के समक्ष प्रकट हुए। सबसे पहले उन्होंने अपना दंड मेरे मस्तक से सटाया, फिर उनके दाहिने हाथ से किरणें निकल कर मेरे हृदय में समाने लगी। मेरा पूरा शरीर कंपित होने लगा और कुछ समय के बाद यह असहनीय हो गया। मैं बहुत घुटन महसूस कर रहा था पर जब मैंने अपनी आँख खोली तो सब कुछ सामान्य हो गया।

अक्टूबर 1999 (27 से 29 अक्टूबर) को इस सदी का सबसे बड़ा चक्रवात ओडिशा तट से टकराया और इस राज्य को पूरी तरह तहस नहस कर दिया। 29 अक्टूबर को मेरे मित्र राजेश शर्मा और उनकी पत्नी सुमन हमारे घर आए। हम ओडिशा चक्रवात और उससे हुए विनाश के बारे में चर्चा कर रहे थे। मैंने उनको कहा कि यदि राहत कार्यों में मेरी सेवा ली जाती है तो मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली मानूँगा। ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली, क्योंकि उसी दिन रात में 11:30 बजे मुझे सचिव महोदय ने फोन किया और अगली सुबह वायुमार्ग से कलकत्ता जाने और वहाँ राहत कार्य शिविर स्थापित करने को कहा। मैं अगली सुबह कलकत्ता चला गया। यह एक दुरूह और चुनौतीपूर्ण काम था और मैं हवाई जहाज से खाने के पैकेट गिराने की योजना की सफलता को लेकर सशंकित भी था। पर ईश्वर ने मेरी सहायता की, सचिव महोदय ने गिराए

जाने वाले पैकेटों की संख्या प्रतिदिन 10 हजार से बढ़ा कर एक लाख कर दी। हर तरफ से मदद मिलनी शुरू हुई और यहाँ तक कि अनिच्छुक संगठन भी आगे आने लगे। मैं तनाव में था और घबराया हुआ था। पर ईश्वर ने कुछ और ही तय कर रखा था। ईश्वर की मदद के कारण बिना समय व्यतीत किए विभिन्न संगठनों से हमारा जुड़ाव स्थापित हो गया।

श्री पवित्र मोहन राणा वैनशा, आयुध कारखाने के डिप्टी जीएम थे जिनसे मैं 1965 से नहीं मिला था, हालांकि वो मेरे गाँव के ही थे, ने गामा दादा को फोन किया जिनके पास मैं ठहरा हुआ था। मेरे बड़े भाई से उनको मेरी वहाँ उपस्थिति के बारे में पता चला। जब मुझे पता चला कि वे आयुध कारखाने के डिप्टी जीएम हैं तो मैंने इसे ईश्वर प्रदत्त मौके के रूप में देखा और उनसे सहायता की अपील की। वे तुरंत ही प्रतिदिन 50 हजार पैकेट की व्यवस्था के लिए तैयार हो गए। आयुध कारखाने के अवर महाप्रबंधक, सुश्री चतुर्वेदी, जो खाने के पैकेटों की व्यवस्था की प्रभारी थीं, यूपी काडर के एक आईएएस की बहन निकल गईं जो मेरा मित्र था। ऑक्सफेम जिसने हमारी बहुत मदद की, के प्रभारी मेरे साले श्री संजय अवस्थी थे। कलकत्ता में हिंदुस्तान लीवर का प्रबंधन अधिकारी मेरे भतीजे सृजित मिश्रा, मुंबई में हिंदुस्तान लीवर के मार्केटिंग मैनेजर का दोस्त था। मेरे बड़े भाई श्री पीसी मिश्रा एक वरिष्ठ रेलवे अधिकारी थे, इस कारण रेलवे की तरफ से कोई समस्या नहीं थी। बैरकपुर एयर बेस का एयर फोर्स अधिकारी एक उड़िया था। इस प्रकार नेटवर्क पूरा हो गया। खाने के पैकेटों को हवाई जहाज से गिराने का काम आसानी से चलने लगा। हमने लक्ष्य से ज्यादा ही काम किया और इस संवेदनशील काम को अच्छे से पूरा कर मुझे बहुत संतोष मिला। इस प्रयास की एनसीडीसी के बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट और जेनरल काउंसिल द्वारा बहुत सराहना की गई और इससे संबंधित प्रस्ताव भी पारित किया गया। मैं अभिभूत हुआ और मुझे यह एहसास हुआ कि ईमानदारी से किए गए प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाते। यदि उद्देश्य स्पष्ट हो, इरादा नेक हो और प्रयास ईमानदार हों तो काम को सहज तरीके से सम्पन्न करने के लिए दैवीय शक्ति स्वयं आ जाती है।

जब 14 दिसंबर, 1999 को मेरे ससुर जी का देहावसान हुआ, मैं और सरिता मगध एक्सप्रेस से तुरंत कानपुर के लिए रवाना हुए, जो दिल्ली से रात 8 बजे खुली। 11 बजे रात को मैंने अचानक से एक तेज खुशबू का अनुभव किया जो काफी शान्तिदायक और तरोताजा करने वाली था। इसी प्रकार का अनुभव ट्रेन में

मुझे तब हुआ था अगस्त 1987 में जब मेरी माता का अवसान हुआ था। मैं इस बात को समझ नहीं पाया हूँ कि आखिर ऐसा क्यों हुआ। संभवत: मुक्त हुई आत्मा उस खास क्षण हमारे पास आती है। चूंकि आत्मा पवित्र और अनश्वर होती है, इस कारण यह अपनी उपस्थिति से एक सुगंध उत्पन्न करती है। प्राय: ही मैंने अपने ध्यान करने के दौरान रोशनी की टिमटिमाहट महसूस की है। एक बार मैंने गौर किया कि गुलाबी और नीली रोशनी मेरे मस्तक के चारों ओर घूम रही है। मैं पौधों के जैविक-ऊर्जा क्षेत्रों को भी ज्यादा स्पष्ट और प्रत्यक्ष रूप से देखने लगा।

मेरे मन में राजस्थान के नाथद्वारा मंदिर की यात्रा करने की गहन इच्छा थी और 20 जनवरी 2000 को मुझे इस इच्छा को पूरा करने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं उदयपुर गया जहाँ एनसीडीसी के क्षेत्रीय निदेशक ने मेरा स्वागत किया। नाश्ते के बाद हम दोपहर तक नाथद्वारा पहुँच गए। सामान्य तौर पर मंदिर 1 बजे बंद होता था पर दुर्भाग्य से उस दिन यह दोपहर में ही बंद हो गया था। मुझे नाथद्वारा के दर्शन की प्रबल इच्छा थी, पर जब मौका आया तब मैंने अवसर खो दिया। पर मैं मंदिर की दोबारा यात्रा के लिए कृतसंकल्प था। मैंने दिसंबर 2001 में एक विस्तृत योजना बनायी, जब मेरा पूरा परिवार एलटीसी पर नाथद्वारा के लिए रवाना हुआ। हम नाथद्वारा में ही ठहरे ताकि दर्शन के अवसर से चूक न जाएँ। अगली सुबह स्नान के बाद हम तुरंत मंदिर के लिए निकले और भगवान कृष्ण के दर्शन किए। इसी तरह की एक घटना मेरे साथ तब हुई थी जब निदेशक (युवा) के रूप में मैं मैसूर गया था। मैंने चामुंडी पहाड़ी जाने की योजना बनायी। जब मैं वहाँ पहुँचा तो मंदिर बंद हो चुका था। अगले साल भी मैंने वहाँ जाने का प्रयास किया पर नतीजा वही रहा। 1991 में मैं जब एलटीसी पर अपने परिवार के साथ मैसूर और बैंगलोर आया, तब चामुंडी देवी के दर्शन की कोई योजना नहीं थी। मैसूर से निकलने से पहले मैंने कुछ दूरी से पहाड़ियों को देखा और अचानक सपरिवार चामुंडी देवी की पूजा के लिए प्रलोभित हो गया। मैं वहाँ गया और जब मैं मंदिर पहुँचा तो पाया कि यह एक शुभ दिन था और हमने संतुष्टि के साथ पूजा की। मैं इस सिद्धान्त पर विश्वास करता हूँ कि मनुष्य मांगता है और ईश्वर उसे पूरा करता है। हम किसी चीज की सूक्ष्मता से योजना बना सकते हैं, उसे हासिल करने के लिए बहुत ईमानदारी से प्रयास कर सकते हैं, पर अंतिम परिणाम बहुत सारे सहज कारकों पर निर्भर करता है। हमारा दायित्व है कि हम अपने कर्तव्यों का पूरी कुशलता, निष्ठा और ईमानदारी से निर्वाह करें, पर फल

की चिंता न करें। यह एक मुश्किल काम है, तथापि यह दर्शन हमें जीवन की चुनौतियों से निपटने हेतु जरूरी शक्ति प्रदान करता है।

मैं पूजा, ध्यान, भजन, प्राणायाम और आध्यात्मिक साहित्य के अध्ययन में अधिकतम संभव समय देने का पूरा प्रयास करता था। 11 फरवरी 2000 को सुबह के साढ़े चार बजे 20 मिनट तक ध्यान कर चुकने के बाद मैंने अनुभव किया कि मेरे मस्तक से विभिन्न रंगों की रोशनी का गोला निकल रहा है। कुछ दूरी पर जाकर रोशनी के ऐसे गोले एक बिन्दु में बदल जा रहे थे। यह एक अनोखा अनुभव था जहाँ एक व्यक्ति के मस्तक से निकलती रेखाएँ ब्रह्मांड के किसी दूसरे बिन्दु में समाहित हो रही थीं। मैंने कुछ मिनट तक इसका अनुभव किया। इसके बाद मैंने किरणों के एक वृत्त का अनुभव किया जो दो फीट की दूरी पर था और मुझ तक इस वृत्तीय रोशनी से किरणों का प्रवाह पहुँच रहा था। रोशनी स्थिर नहीं थी, कभी यह ऊपर की ओर जाती थी, कभी नीचे और कभी अगल बगल। मैंने इस अनुभव की समीक्षा का प्रयास किया, पर अपने निष्कर्षों के बारे में मैं आश्वस्त नहीं था। संभवत: पहले मामले में वैयक्तिक ऊर्जा ब्रह्मांडीय ऊर्जा से एकाकार होने के लिए ऊपर उठ रही थी और दूसरे मामले में ब्रह्मांडीय ऊर्जा वैयक्तिक ऊर्जा का पुनर्नवीनीकरण करने के लिए नीचे आ रही थी। यह ऊर्जा के आरोह और अवरोह की भाँति था।

मैं अपना ज्यादातर खाली समय भजन, ध्यान, प्राणायाम और आध्यात्मिक किताबों के अध्ययन में लगाता था। 5 फरवरी 2000 ईस्वी को मैंने भक्ति संगीत सुना और ध्यान करने के दौरान रो पड़ा। मैं पूजा कक्ष में ही सोया अगली सुबह मेरे साथ दो खास घटनाएँ हुईं। नींद में मैंने महसूस किया कि ध्यान के दौरान मैं उड़ने लगा और कुछ देर तक आशीर्वाद मुद्रा में आकाश में मैंने विचरण किया। ऐसा माना जाता है कि ऐसे अनुभव आध्यात्मिक प्रगति को दर्शाते हैं। कई और विशिष्ट चीजें हो रही थीं। मैंने पैरों से शुरू अपने अंगों में संकुचन भी महसूस किया। ध्यान के दौरान मैंने अंगों के विस्तार का भी अनुभव किया। अपना कद बढ़ते-बढ़ते आसमान तक पहुँच जाने की भी अनुभूति हुई। रात्रि में और प्रात: काल मेरा सिर तेजी से घूमता था और ऊर्जा लहरें मेरे ब्रह्मरंध्र पर ध्वनि के साथ प्रहार करती थीं। एक दिन प्रात: काल मैं अनंत नीले आकाश की ओर देख रहा था कि अचानक मैंने उड़नतश्तरी की भाँति नीली रोशनी देखी और अपनी माता को देखा जो मेरे पूजा कक्ष में सफेद साड़ी पहने बैठी थीं। मैंने उनकी मृत्यु के काफी समय बाद उन्हें स्वप्न की भाँति देखा। एक बार मैंने

सपना देखा कि मैं शिव-शक्ति मंदिर गया हूँ और वहाँ काफी भीड़ है। मैं थोड़ा घबरा रहा हूँ और ठीक उसी समय एक दाढ़ी वाला आदमी मुझे आशीर्वाद देता है। मैंने इस पर विचार किया और यह समझने का प्रयास किया कि वह आदमी कौन हो सकता है। अचानक मेरे दिमाग में आया कि वह व्यक्ति अवश्य ही सांई समर्थ रहे होंगे।

एक दिन मुझे श्री सीबी सत्पथी, ईडी विजिलेन्स, इंडियन ऑइल कॉर्पोरेशन से उनके वरिष्ठ कार्यकारियों को ''मूल्य तंत्र के माध्यम से प्रबन्धकों की व्यक्तिगत कुशलता'' विषय पर संबोधित करने का आमंत्रण मिला। यह दिव्यता के संदेश के प्रसार का एक ईश्वर प्रदत्त अवसर था। यह मेरा पसंदीदा विषय था और मैंने सभा को तीन घंटे तक संबोधित किया। सभा में पूरी तरह सन्नाटा रहा और मैंने ऐसा महसूस किया मानों माँ सरस्वती स्वयं मुझे बिना रुके भाषण देने की प्रेरणा दे रही थीं। अधिकारियों ने कहा कि उनको कभी ऐसे शानदार मूल्य आधारित विषय को जानने का अवसर नहीं मिला था। कुछ लोगों ने टिप्पणी की कि सारी बातें मेरे हृदय के अंतरतम से निकल रही थीं। कुछ लोगों ने ऐसा महसूस किया कि इस व्याख्यान के बाद अब वे आत्म-निरीक्षण और जीवन व कर्म के प्रति अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार के लिए बाध्य होंगे। मैंने ब्रह्मांडीय शक्ति के प्रति हृदय से आभार प्रकट किया जिसके आशीर्वाद के बिना यह व्याख्यान संभव ही नहीं हो पाता।

मैं अपने भीतर धीरे-धीरे कुछ बदलाव होते हुए महसूस कर रहा था। मई 2000 के पहले सप्ताह में एक दिन मैं और मेरी पत्नी सुबह की सैर से लौट कर बालकनी में आराम कर रहे थे। अचानक ही आसमान गहरा हो गया, हवा तेज हो गई और बारिश शुरू हो गई। मेरा हृदय प्रफुल्लित हो गया और इसने प्रकृति के साथ एकता स्थापित कर ली। मैं पवन के संगीत, पत्तों और बारिश की बूंदों की लय को सुनने लगा इसी बीच अचानक मैंने महसूस किया कि सारा वातावरण उत्साह से नृत्य कर रहा है। मैंने दोनों हाथ जोड़ कर प्रकृति की वंदना की और कहा, ''माँ, अपने उन बेटों पर इसी तरह उदार बनी रहो जो तुम्हारी सदाशयता और उदारता को नहीं समझते। उनके अपराधों को क्षमा करो और उनको सद्‌बुद्धि दो।''

अब मैं यह समझता हूँ कि इस संसार में भी आदान-प्रदान का सिद्धान्त काम करता है। यदि हमें कुछ प्राप्त होता है तो हम इसे-उसे या किसी अन्य को इस

जीवन में या किसी अन्य जीवन में प्रदान करते हैं। देना लेने के मुकाबले चिरस्थायी और संतोषप्रद होता है। ज्यादा से ज्यादा देने का प्रयास करना चाहिए और यदि हमें किसी से कोई चीज हासिल होती है तो हमें उस चीज को किसी न किसी रूप में दाता को या किसी अन्य जरूरतमन्द व्यक्ति को जरूर प्रदान करना चाहिए। मैंने यह भी अनुभव किया है कि जब मैं कुछ देता हूँ, यह शीघ्र ही मेरे पास पुनः लौट आता है। अगर कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को कुछ देकर मदद करने का प्रयास करता है, देने वाले व्यक्ति के पास यह चीज कई गुना होकर लौटती है ताकि वह और लोगों का भला कर सके।

मुझे हिमालय फिर से जाने की इच्छा हमेशा से ही थी। इस बार हमने रुद्रनाथ जाने की योजना बनायी। मई 2000 के अंत में श्री एनसी शर्मा और मेरा भतीजा बीकन हरिद्वार गए और तीन दिन तक शांतिकुंज आश्रम में रुके। यह एक प्रतिष्ठित और सुंदर आश्रम था जिसे आचार्य श्रीराम शर्मा ने स्थापित किया था। आश्रम के आध्यात्मिक वातावरण, इसके अनुयायियों के अनुशासन और यहाँ के कुशल प्रबंधन ने हमें बहुत प्रभावित किया। यहाँ की कैंटीन में भोजन बहुत सस्ता था; डोसा मात्र 4 रुपए, इडली 2 रुपए और जलेबी मात्र 25 रुपए किलो। अगले दिन हम कनखल में दक्षेश्वर शिव लिंग के दर्शन के लिए गए। गंगा में स्नान के बाद हमने शर्मा जी से अनुरोध किया कि वे पता लगाएँ कि आस-पास में कहीं प्राचीन शिव मंदिर या प्राचीन शक्ति मंदिर है क्या। जब उन्होंने एक साधु से इसके बारे में पूछा तो साधु ने बहुत दार्शनिक अंदाज में कहा, ''बच्चा अभी लगता है मन स्थिर नहीं हुआ है। जहाँ मन स्थिर होता है वहीं बैठ जाओ। भटकना जरूरी नहीं है।'' कुछ ही शब्दों में उन्होंने जीवन के सम्पूर्ण दर्शन की व्याख्या कर दी। हमने पारदेश्वर शिवलिंग और ब्रह्म वर्चस, यानि शांति कुंज के ब्रह्म विद्या शोध संस्थान का भी दौरा किया। हर की पौड़ी में हमने शाम को गंगा आरती का भी आनंद लिया। मैंने कई बार यह आरती देखी है पर हर बार यह आरती नई और स्फूर्तिदायक लगती है। तीसरे दिन हम रोप वे से चंडी देवी के दर्शन के लिए गए। काफी पहले मैंने चंडी देवी इलाके के विकास का खाका तैयार किया था और आज यह देख कर प्रसन्न था कि धीरे-धीरे वह सपना पूरा हो रहा था। शांति कुंज में हमारा प्रवास बहुत आरामदायक रहा, हमें अच्छा भोजन मिला, खास कर बोंडा और जलेबी। श्री एनसी शर्मा एक दिलचस्प व्यक्ति थे जिनके पास बहुत से आध्यात्मिक अनुभव थे। उनके उपाख्यान और जीवन्त टिप्पणियाँ हमेशा हमारा मनोरंजन करते थे। जब मैंने यह टिप्पणी की कि शायद

हम यहाँ केवल भोजन करने आए थे, तो उन्होंने तुरंत जवाब दिया कि जठराग्नि के शमन के लिए खाना बहुत जरूरी होता है। भोजन ग्रहण करना एक यज्ञ है। उनकी उपस्थिति और उनकी हाजिरजवाबी ने वातावरण को जीवंत बना दिया।

1 जून 2000 को रुद्रनाथ की यात्रा के क्रम में हमने अद्वैत आश्रम लक्ष्मोली में दोपहर का भोजन किया। रात्रि विश्राम हमने रुद्रप्रयाग में होटल मोनल में किया। होटल नदी के किनारे अवस्थित था और नीचे एक प्राचीन शिव मंदिर था जिसकी स्थापना संत मछेन्दरनाथ ने की थी। हमने वहाँ पूजा की। शिव लिंग कनेर के फूलों से सजाया हुआ था। एक बाबा वहाँ पाण्डुलिपि पढ़ रहे थे। हमें उनसे लगभग आधे घंटे बात की और इस बातचीत के क्रम में हमने रुद्रनाथ के बारे में कई महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ हासिल कीं।

श्री सेमवाल ने होटल मोनल में हमारा प्रबंध किया था। उन्होंने होटल के मालिक श्री बिष्ट को हमें कोटेश्वर शिव मंदिर ले जाने का निर्देश दिया था। 2 जून की सुबह हम तैयार हुए और हमने बाजार में नाश्ता करने का निर्णय लिया। उस समय कोटेश्वर शिव मंदिर की यात्रा करने का हमारा कोई इरादा नहीं था। हम होटल से तुरंत ही आए थे और अचानक से श्री बिष्ट हमारे सामने आए और हमसे अपने साथ मंदिर चलने का अनुरोध किया। हमने अपनी तरफ से उनकी बात टालने की पूरी कोशिश की पर वे हमारे साथ मुख्य सड़क तक आए और हमें नदी के उस पार गुफा मंदिर दिखाया। हमने कुछ दूरी से मंदिर को देखा। मंदिर इतना आकर्षक और सुंदर लगा कि हमने तुरंत ही अपना इरादा बदल दिया और मंदिर के दर्शन करने का निर्णय लिया। मंदिर के अंदर सैंकड़ों शिवलिंग थे। इसी स्थान पर एक योगी ने जल समाधि भी ली थी। वहाँ से लौट कर हम होटल आए और मैंने इस घटना पर मंथन किया। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि जो होना है वह होकर ही रहेगा। हमें अपनी तरफ से गुफा मंदिर न जाने की पूरी कोशिश की पर अंततः नियति हमें वहाँ ले ही गई।

हम शाम को गोपेश्वर पहुँचे और चमोली के युवा जिलाधिकारी हमसे मिलने निरीक्षण भवन पर आए। हमने साथ में गर्मागर्म चाय पी, मैंने उनसे रुद्रनाथ की यात्रा की जानकारी ली। उन्होंने बताया कि यात्रा बहुत दुरूह है और मार्ग में कोई चट्टी या मानव बसावट नहीं है। चढ़ाई बहुत तीखी है। उनके सुझाव हमारी यात्रा में बहुत सहायक रहे। उसके बाद हम बैरंगना गए और वहाँ मत्स्यपालन विभाग के निरीक्षण बंगले पर रात्रि विश्राम किया। बैरंगना एक सुंदर स्थान है जहाँ मधुर

संगीतात्मक ध्वनि वाली धाराएँ बहती हैं। 3 जून को हल्के नाश्ते के बाद 7 बजे सुबह हमने रुद्रनाथ की अपनी यात्रा प्रारम्भ की। शुरुआती कुछ घंटों की चढ़ाई बहुत आनंददायक थी, पर धीरे-धीरे चढ़ाई तकलीफदेह होती चली गई। चढ़ाई बहुत तीखी थी और रास्ते काई से भरे हुए थे। इससे बचने के लिए हमने अपने पैर घुटनों तक सरसों के तेल और नमक से लेप लिए थे। हम लगातार चलते गए पर रास्ते में न आदमी, न गाँव, कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। न ही वहाँ चढ़ाई का कोई समुचित रास्ता ही था। पत्तों और पत्थरों के बीच से हमें अपना रास्ता खुद ही बनाना पड़ रहा था। इससे चढ़ाई और मुश्किल प्रतीत हो रही थी। लगभग 4:30 बजे शाम को हमने पूड़ी, अचार और छोले का भोजन किया।

जब हम अपना खाना खा रहे थे, तभी अचानक से एक काला कुत्ता प्रकट हुआ। मैंने सोचा कि यह भैरव देवता हैं जो एक कुत्ते के रूप में प्रकट हुए हैं। कुत्ते ने बहुत ही शालीन व्यवहार किया और मैंने अपने दिमाग में सोचा कि मुझे काले कुत्ते के रूप में भैरव की आराधना करनी चाहिए। ऐसा प्रतीत हुआ कि कुत्ते ने मेरे मस्तिष्क की बात पढ़ ली और आकर मेरे सामने अपने दोनों पैर आगे कर पिछले पैरों पर शांति से बैठ गया। मैंने कुत्ते के समक्ष अपना माथा टेका और उसके बाद वह कुत्ता शांति से चला गया। निश्चित रूप से यह एक विचित्र अनुभव था।

अंधेरा होने लगा था और बारिश भी हो रही थी। 11 घंटे की चढ़ाई के बाद हम केवल आधी दूरी ही तय कर पाए थे। इस कारण हमने रात रास्ते में ही किसी स्थान पर व्यतीत करने का निर्णय लिया। हमने पनहोर में एक छोटा आर्मी आउटपोस्ट देखा जहाँ एक सूबेदार था जो खुद को वहाँ का कमांडिंग ऑफिसर कहता था। वह एक दिलचस्प व्यक्ति था। उसने कहा कि हम उसकी अनुमति के बिना उसके कामचलाऊ रूप से बनाए गए कमरे में प्रवेश नहीं कर सकते। मैंने परिस्थिति को समझा और उसे कहा कि हमें केवल वही अनुमति दे सकता है। उसे ऐसा लगा कि हम उसकी खुशामद कर रहे हैं। सेना के जवान सिविल अधिकारियों में केवल डीएम और कमिश्नर को पहचानते हैं। मैंने उसे बताया कि मैं कमिश्नर रैंक का आईएएस अधिकारी हूँ और मेरे दोनों साथी डिप्टी कमिश्नर रैंक के अधिकारी हैं। कमिश्नर नाम सुनने के बाद वह थोड़ा समझा और कहा कि उसे कमिश्नर के किसी कार्यक्रम की सूचना नहीं है। मैंने उसे समझाया कि असल में यहाँ रुकना हमारे कार्यक्रम में शामिल नहीं था, पर खराब मौसम और

स्थितियों के कारण हमें यहाँ रात में रुकने के लिए बाध्य होना पड़ा। मैंने कहा कि हम पूरी तरह से उसकी दया पर निर्भर हैं। वह पिघल गया। उसने हमारा नाम-पता लिया और जरूरी अनुमति के लिए वायरलेस सेट पर जोशीमठ बात की। उसके बाद उसने हमें अंदर आने की अनुमति दे दी। इस संवेदनशील आउटपोस्ट में केवल चार लोग रहा करते थे, जो देश के चार अलग-अलग हिस्सों के थे। सूबेदार यूपी से था, दूसरा जवान राजस्थान से, तीसरा दक्षिण से और चौथा पहाड़ों से। यह सही मानों में राष्ट्रीय एकता का प्रतीक था। सूबेदार ने हमें मांसाहारी भोजन और ड्रिंक्स पेश की, जिसे मैंने विनम्रतापूर्वक ठुकरा दिया। उसने चुटकी ली, ''आप तो सबका मजा किरकिरा कर देंगे।'' उसका व्यवहार बहुत अच्छा था और उसने हमें रोटी, दाल, चावल, सब्जी और खीर खिलाई। उन लोगों ने अपने बिस्तर हमें दे दिए और खुद जमीन पर सोये। रसोइये ने सूबेदार को खुश करने के उद्देश्य से मुझे कहा कि मैं बहुत सौभाग्यशाली हूँ कि मैं कमांडिंग ऑफिसर के बिस्तर पर सो रहा हूँ। सबसे मुश्किल स्थितियों में भी जीवन का आनंद लेने की उनकी क्षमता पर मैं मोहित हो गया।

अगली सुबह मैं बहुत सवेरे उठ गया। बर्फ जैसे ठंडे पानी में हाथ धोना बहुत कठिन था। मेरे हाथ सुन्न पड़ गए। नाश्ते में चाय और परांठे खाने के बाद हमने 8 बजे सुबह रूद्रनाथ की अपनी यात्रा पुनः शुरू की। पूरा रास्ता केवल चढ़ाई का था। हमने चने, नमक और नींबू से काम चलाया। हम एक घाटी में पहुँचे जो प्रचुर मैदान और बर्फ आच्छादित चोटियों के कारण बेहद खूबसूरत लग रही थी। विभिन्न रंगों के बुराँस के खुशबूदार फूलों की उपस्थिति वातावरण को और सुंदर बना रही थी। हम घास पर कुछ देर बैठे और जब हम वहाँ से उठे हमारे शरीर में भी फूलों की गंध बस गई थी। यहाँ हर पत्ता, हर घास का तिनका और हर फूल उसी खुशबू से सराबोर था। झरने का पानी भी बिलकुल मिनरल वॉटर की तरह था।

रास्ते में एक स्थान था जहाँ हमें पहाड़ियों पर पुरखों के लिए कुछ पत्थर रखने थे। इस स्थान को पितृधर कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि एक घर की आकृति में पत्थर रखने पर पूर्वज प्रसन्न होते हैं। यह गया, इलाहाबाद, वाराणसी और हरिद्वार में पिंडदान की ही भाँति था। पितृधर के बाद चढ़ाई आसान थी। घाटी बहुत सुंदर थी, खुशबूदार और चमकीली घास से आच्छादित उस भूभाग को बुग्याल कहा जाता है। हमें पहाड़ों में होने वाली बारिश और ठंड का

भी थोड़ा सामना करना पड़ा। साढ़े तीन बजे दोपहर तक हम रुद्रनाथ पहुँच गए। पुजारी श्री प्रयाग दत्त भट्ट, जो गोपेश्वर के थे, ने हमारा स्वागत किया और हमें एक झोंपड़ी में ठहराया। रुद्रनाथ 13000 फीट की ऊँचाई पर बसा हुआ है। यहाँ यात्रियों के लिए तीन झोपड़ियों के अलावा और कोई सुविधा नहीं है। यहाँ से हिमालय का नजारा बहुत मनोहारी है। श्री रुद्रनाथ का प्राकृतिक सौन्दर्य बहुत उद्दात और निर्मल है। पुजारी ने हमारा स्वागत रोटी, शुद्ध घी और दाल के साथ किया। हम बहुत भूखे थे और हमें सादा भोजन बहुत पसंद आया। दाल बहुत स्वादिष्ट थी। जब मैंने इसके बारे में पूछा तो पुजारी ने बताया कि लहसुन से मिलते-जुलते एक प्रकार के जंगली पौधे को दाल में डाला गया है।

शाम में हम आरती के लिए गए। गुफा के अंदर स्वत: प्रकट हुआ शिवलिंग था। मुख्य्य गुफा मंदिर के चारों तरफ प्राचीन मूर्तियाँ और गुफा मंदिर थे। यहाँ शिव रौद्र रूप में हैं। इससे जुड़ी गाथा यह है कि जब सती ने दक्ष के यज्ञ कुंड में अपने प्राणों की आहुति दे दी तब शिव रुद्रनाथ में ध्यान कर रहे थे। नारद मुनि द्वारा उन तक समाचार पहुँचाया गया। शिव क्रोधित हो गए। उन्होंने अपनी जटाएँ खोल लीं और एक जटा को पहाड़ों पर फेंका जिससे दक्ष के यज्ञ का विनाश करने के लिए वीरभद्र प्रकट हुए। लिंग को इस रूप में सजाया गया था कि यह बहुत भयानक रूप में दिखाई दे रहा था।

रात में हम झोंपड़ी के कच्चे फर्श पर जंगली घास पर कंबल ओढ़ कर लेटे। ऊँचाई के कारण रात में मुझे सांस लेने में तकलीफ हुई। मैं ठीक से सो नहीं पाया। सुबह जब हम उठे, हम ठंड से अकड़ गए थे और हममें झरने के बर्फीले पानी से स्नान करने का साहस नहीं था। हमने प्रतीकात्मक स्नान के रूप में अपने सिर पर पानी छिड़क लिया। हमने जंगली पुष्पों से नारद मुनि की पूजा की, उसके बाद कठिनाई झेलते हुए ऊपर की चढ़ाई शुरू की।

हम प्रात: काल की पूजा के लिए तैयार हुए और गुफा मंदिर गए। परंपरागत पगड़ी धारण किए पुरोहित समय पर आ गए। यह निर्वाण आरती का समय था अर्थात् एक-एक कर समस्त आभूषण उतारे गए जब तक कि लिंग पूरी तरह आभूषणविहीन न हो गया। निर्वाण दर्शन बहुत शांतिपूर्ण और मधुर लगा। इसके बाद पुन: समस्त अनुष्ठानों के साथ लिंग को पुन: आभूषण पहनाए गए। गाथाओं के अनुसार इस मंदिर का निर्माण पांडवों के द्वारा किया गया था। प्रात:कालीन आरती बहुत ऊर्जादायक थी और हमारा मन उल्लसित हो गया। मैंने बहुत आनंद

का अनुभव किया। वास्तव में रुद्र भवानी हमारे परिवार की कुल देवी हैं और उस समय मिश्रा परिवार से मैं और बीकन ही रुद्र भवानी को उनके मूल स्थान हिमालय में देखने वाले दो सदस्य थे। इस अर्थ में हम बहुत सौभाग्यशाली थे।

नाश्ते के बाद हमने बैरागना बेस कैंप लौटने हेतु यात्रा शुरू की। मैं वहाँ से आना नहीं चाहता था। श्री एनसी शर्मा ने चुटकी ली कि इस लंबी और कठिन यात्रा ने हमारी अशुद्धियों को धो दिया था और अब हम निर्विकार हो गए थे। उन्होंने यह भी टिप्पणी की कि नारद मुनि अपने मंदिर के चारों ओर श्रद्धालुओं द्वारा फैलाए गए प्रदूषण के कारण बहुत तनाव में होंगे। हम बारिश के बीच चलते-चलते पनहार आर्मी पोस्ट तक पहुँचे जहाँ सूबेदार साहब दोपहर के खाने के साथ तैयार थे। मैं अपनी सेना के जवानों के व्यवहार से बहुत अभिभूत हुआ।

हालांकि बारिश हो ही रही थी, पर हमने अपनी यात्रा जारी रखी। पत्तों और बारिश के कारण रास्ता फिसलन भरा था। हम डंडों के सहारे संतुलन बनाते हुए धीरे-धीरे चलते रहे। मैं कम से कम आधे दर्जन बार लड़खड़ाया, पर डंडे के कारण संतुलन बना पाने में सफल रहा। लगभग साढ़े 6 बजे हम समतल इलाके में पहुँचे जहाँ हमने कुछ आराम किया। नजदीक के एक घर से हमें एक ग्लास गरम दूध भी मिला। इसके बाद हमने फिर से अपनी यात्रा शुरू की। आखिरी हिस्सा जो ज्यादा लंबा नहीं था, पर ऐसा लग रहा था कि वह अंतहीन है। अंधेरा

बद्रीनाथ मन्दिर पर सी.एस. सेमवाल के साथ

बढ़ रहा था और चलना मुश्किल होता जा रहा था। हालांकि हमारे पास तीन टॉर्च थे, पर जंगली जानवरों के खतरे से हम डरे हुए थे। 8 बजे डॉ. पुरोहित एक गैस लाइट और ज्यादा टॉर्च लेकर आए ताकि हम अपना रास्ता ढूंढ सकें। एक मोड़ पर हमने दो बाघों को रास्ता पार करते हुए देखा। अंततः रात साढ़े नौ बजे हम निरीक्षण भवन तक पहुँच गए। इस प्रकार एक कठिन, तथापि रोमांचक यात्रा समाप्त हुई। इस यात्रा का मेरे मन में अमिट प्रभाव पड़ा। इस यात्रा ने मुझे पूरी तरह शुद्ध कर दिया और मैं काफी हद तक ऊर्जावान महसूस करने लगा।

अगस्त, 2000 में मैं कांचीपुरम् गया और वहाँ शंकराचार्य के प्रायोगिक विद्यालय का दौरा किया। मठ द्वारा स्थापित यह विद्यालय आधुनिक ज्ञान और प्राचीन बौद्धिकता, साथ ही पाश्चात्य विज्ञान और भारतीय आध्यात्म को एक साथ प्रदान करने का अनोखा प्रयोग है। मैं छात्रों से बहुत प्रभावित हुआ। छात्र प्रातः काल साढ़े चार बजे पूजा और मंत्रोच्चार के माध्यम से अपने दिन की शुरुआत करते थे। उसके बाद वे योग करते थे। दिन में वे स्कूल जाते थे जहाँ उन्हें कम्प्यूटर समेत तमाम आधुनिक विषय पढ़ाए जाते थे। पाश्चात्य वैज्ञानिक पद्धति को हमारे आध्यात्म से जोड़ने के इस अनोखे प्रयोग से मैं बहुत प्रभावित हुआ।

अप्रैल 1991 में मैंने पहली बार कन्याकुमारी की यात्रा की। दोबारा यात्रा का अवसर मुझे सितंबर 2000 में मिला। देवी कन्याकुमारी, जिनकी नाक की बाली रात में बहुत शानदार रूप में चमकती है, की पूजा करने का अनुभव बहुत अनोखा था। मैंने विवेकानंद रॉक और आदि कन्या तपस्या स्थल का भी दौरा किया। यह सोच कर मैं आश्चर्य में पड़ गया कि किस प्रकार स्वामी लहरों से तैर कर इस चट्टान पर ध्यान करने के लिए आते थे। जनवरी 2001 में पांडिचेरी में चक्रवात से हुए नुकसान का जायजा लेने वाली एक टीम का नेतृत्व करने के दौरान मैंने श्री अरबिंदो आश्रम पांडिचेरी और औरोविले इंटरनेशनल सिटी का भी दौरा किया। श्री अरविंदो और माता की समाधि की परिक्रमा करते हुए मैं रो पड़ा और मैंने वहाँ जरबरदस्त ऊर्जा की उपस्थिति महसूस की। इसी यात्रा के दौरान कराईकल रवाना होते समय रास्ते में मैंने चिदम्बरम् में भगवान नटराज और भगवान वैथीस्वरन की पूजा की। वैथीस्वरन मंदिर में मैंने मार्स और जटायु की भी आराधना की। गाथाओं के अनुसार इसी स्थान पर जटायु रावण से युद्ध करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुए थे और भगवान राम ने यहीं उनकी अंतिम क्रिया की थी। ऐसा माना जाता है कि वैथीस्वरन मंदिर में आराधना करने से कई प्रकार के रोग

मिट जाते हैं। शाम को मैं वेलंकन्नी चर्च गया। बालक जीसस के साथ माँ मरियम की मूर्ति बहुत चमत्कारिक प्रतीत हुई। मेरे भीतर भावना की लहर उमड़ पड़ी और मैं सुबकने लगा। इस चर्च को 'चमत्कारों का चर्च' भी कहा जाता है।

20 जनवरी 2001 को हमने तिरुनल्लर शनि मंदिर की यात्रा की। सामान्य मान्यता यह है कि जो भी व्यक्ति दरबेश्वर महादेव और भगवान शनि के दर्शन करता है उसे शनिदेव कभी परेशान नहीं करते, बल्कि उसे समृद्धि और प्रगति का आशीर्वाद मिलता है। यहाँ हमने मरकट शिवलिंग के दर्शन किए। ऐसा माना जाता है कि यह करोड़ों रुपए का है। हमने शनिदेव की सवारी स्वर्णिम कौवा भी देखा और प्रातःकालीन प्रसादम् भी पाया। ऐसे स्थानों की यात्रा से मुझे शांति और तसल्ली हासिल हुई और मैंने खुद को फिर से जीवंत महसूस किया। एक रात मैंने जबर्दस्त ऊर्जा और रोशनी की चमक का अनुभव किया। एकदम सुबह में भगवान शिव मेरे सपने में आए। उनका आकार इतना विशाल था कि मैं एक बौने की भाँति दिखाई देने लगा।

गर्मी का मौसम आ रहा था और मैं फिर से हिमालय की यात्रा का बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा था। 1993 से ही मैंने हर साल मई के आखिरी सप्ताह या जून के पहले सप्ताह में हिमालय की यात्रा को अपनी आदत बना ली थी। इस यात्रा में श्री एनसी शर्मा, सीएस सेमवाल और मेरा भतीजा बीकन मेरे आध्यात्मिक

अल्का ग्लैशियर (वसु धारा) पर सेमवाल बन्धुओं के साथ

सहयोगी थे। 2001 में हमने कल्पेश्वरनाथ और बद्रीनाथ यात्रा की योजना बनाई। पंच केदारों में मैंने पहले ही केदारनाथ, तुंगनाथ, मदमहेश्वर, और रुद्रनाथ की यात्रा कर ली थी। कल्पेश्वरनाथ आखिरी केदार था। इस कारण इस बार हमने कल्पेश्वरनाथ की यात्रा करके पंचकेदार यात्रा पूर्ण करने का निर्णय लिया। हमने 2 जून की सुबह दिल्ली से प्रस्थान किया और शाम तक मुनि की रेती में शिवानंद आश्रम पहुँच गए। हम सीधे ही स्वामी प्रेमानंदजी से मिलने चले गए। मेरा उनसे जुड़ाव 1979 से शुरू हुआ जब मैं टहरी गढ़वाल में नियुक्त था। वह हमें देख कर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने हमसे 2 घंटे तक बातचीत की। उन्होंने शीतल पेय, मिठाई, नमकीन और आध्यात्मिक प्रवचनों से हमारा स्वागत किया। उन्होंने हमें आध्यात्मिक पुस्तकें और साहित्य भेंट किया। वे एक विनोदी स्वभाव के व्यक्ति थे और उनकी बातें मनोरजन के पुट से भरी होती थीं। उन्होंने कहा, ''मैं अपने संस्थान का चेयरमैन हूँ'' और तुरंत ही जोड़ा, ''लेकिन इसमें केवल 'मैन' है, चेयर नहीं।'' उन्होंने जो बातें कहीं उनका सारांश था-ईश्वर पर भरोसा रखो, अपना काम पूरी निष्ठा से करो और जो भी चीजें होती हैं उन्हें स्वीकार करो। 3 जून को हमने कल्पेश्वर के बेस कैंप हेलेंग के लिए प्रस्थान किया। वहाँ से हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए 15 किलोमीटर की चढ़ाई करनी थी। साढ़े दस बजे दिन में हम दुर्गम देवस्थाम गाँव पहुँच गए जहाँ हमने रात्रि विश्राम किया।

अगली सुबह पास की प्राकृतिक जलधारा में स्नान करने के बाद हमने ट्रेकिंग जारी रखी और 40 मिनट के भीतर कल्पेश्वर पहुँच गए। यह एक गुफा मंदिर है जो एक नदी के पास स्थित है। पवित्र हिरण्यवती नदी श्री कल्पेश्वरनाथ की गुफा के पास ऐसे बहती है मानो प्रभु को पवित्र स्नान करा रही हो। किंवदंती है कि इंद्र कल्पतरु (इच्छा पूरी करने वाले पेड़) को यहाँ लाए थे इसलिए यह नाम पड़ा। एक अन्य किंवदंती है कि ऋषि दुर्वासा ने इस कल्पतरु के नीचे बैठकर घोर तपस्या की थी और कामनाओं को पूरा करने का वरदान प्राप्त किया था। एक और किंवदंती है कि भगवान शिव यहाँ निवास करते हैं और गंभीर तपस्या करने वाले लोगों की मनोकामना पूरी करते हैं।

भगवान कल्पेश्वर भगवान शिव की जटाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। हम गुफा के अंदर गए और पूजा की। वहाँ कोई पुजारी नहीं था। मुझे जबरदस्त कंपन हुआ। सामूहिक रूप से हमने भगवान के नाम का जाप और पूजा की। मैंने घंटियाँ

बजाईं और पूरा वातावरण गूंज उठा। ऐसा प्रतीत हुआ मानो शिव के तांडव नृत्य के लिए मंच तैयार किया जा रहा हो। जब हम गुफा से बाहर निकल रहे थे उसी समय एक वृद्ध बंगाली संत ने आकर हमें फिर से पूजा और आरती कराई। पूजा के बाद उन्होंने हमें चाय और राख दी। ऐसा कहा जाता है कि यह संत यहाँ पिछले 50 साल से अधिक समय से रह रहे हैं। उन्होंने हमें बद्रीनाथ जाने की सलाह दी क्योंकि पंच केदारों की यात्रा के बाद व्यक्ति को बद्रीनाथ की यात्रा करनी चाहिए। हमने वहाँ जाने की योजना पहले ही बना ली थी, हालांकि हम सदियों पुरानी इस परंपरा को नहीं जानते थे। शायद परमेश्वर ने पहले से तय कर रखा था, इसलिए ऐसा हुआ।

बद्रीनाथ में हम गढ़वाल मंडल विकास निगम के होटल में ठहरे थे। शाम को तरोताजा होने के बाद हम 'बद्री विशाल' के दर्शन के लिए मंदिर पहुँचे। भगवान बद्रीनाथ गरुड़, कुबेर, नारद और नर और नारायण के साथ अपने सुशोभित श्रृंगार में थे। हम सड़क पर चलकर होटल में वापस आए। सड़क कई प्रकार की दुकानों और शानदार रोशनी से परिपूर्ण थी। हमने रात का भोजन किया और तुरंत बिस्तर पर चले गए। अगली सुबह मैंने ध्यान किया और प्रकाश की जबरदस्त किरण देखी। धर्माधिकारी के कारण हमें भगवान बद्रीनाथ की सुबह की पूजा में शामिल होने का सौभाग्य मिला। भगवान बद्री विशाल के विस्तृत समारोह को देखना एक अनूठा अनुभव था। मैंने तप्तकुंड के गर्म पानी के झरने में स्नान किया। यहाँ बर्फीला पानी और गर्म पानी एकसाथ मौजूद रहता है! मैंने भारत की सीमा के अंतिम गाँव माणा, व्यास गुफा, नीम हूल और सरस्वती नदी की भी यात्रा की।

मैंने कई बार बद्रीनाथ की यात्रा की है। यह हमेशा मेरे भीतर एक अनूठा आकर्षण रहा है। मेरी पत्नी और मैं 2012 में बद्रीनाथ गए थे, जब मैं यूपीएससी सदस्य था। दर्शन और पूजा करने के बाद, हम माणा गाँव गए। हम थक गए थे। अचानक मेरे भीतर अलका ग्लेशियर (वसुधारा) की यात्रा करने की एक जबरदस्त इच्छा हुई। यह ग्लेशियर अलकनंदा का स्रोत है। मेरी पत्नी ने मेरा साथ देने से इनकार कर दिया, लेकिन मैंने श्री सेमवाल और उनके भाई सर्वेश्वर के साथ अपनी यात्रा शुरू की। एक ग्लेशियर को पार कर हम थक गए जबकि केवल आधी दूरी तय हुई थी। हम उस समय यात्रा को समाप्त करने के बारे में चर्चा कर रहे थे, पर ठीक उसी समय एक बूढ़े संन्यासी, जिसने हमारी

चर्चाओं को सुन लिया था, ने टिप्पणी की, ''बेटों, शरीर क्षणभंगुर है, लेकिन यदि आपकी इच्छा है तो आप इस यात्रा को पूरा कर सकते हैं। मैं भी अलका ग्लेशियर ही जा रहा हूँ और मैं आपका इंतजार करूँगा।'' मैंने सोचा, अगर वृद्ध संन्यासी यह कर सकता है, तो हम भी कर सकते हैं। हमने अपनी आगे की यात्रा फिर से शुरू की और कठिनाई के साथ उस जगह तक पहुँचने में सफल रहे। हमें वहाँ पर वह वृद्ध साधु नहीं मिले लेकिन हमें एक संस्कृत के प्रोफेसर मिले जो इस ग्लेशियर की एक झलक पाने के लिए दक्षिण से आए थे। भगवान की लीला और अनुग्रह को देखिए। ग्लेशियर में प्रोफेसर द्वारा किया गया जाप शांत वातावरण में गूंजने लगा। वह स्थल पहले ही बहुत सुंदर था, मंत्रों के जाप ने इसे और आध्यात्मिक बना दिया था। लौटते समय अंधेरा हो रहा था और हम बारिश और बर्फ में फंस गए थे। मेरे घुटने दर्द कर रहे थे और मेरे पैर लड़खड़ा रहे थे। श्री सेमवाल के भाई ने मुझे वापसी के दौरान बहुत मदद की। यह एक कष्टपूर्ण यात्रा थी, लेकिन मैंने तब भी इसका आनंद लिया और अगली सुबह 'रावल' (प्रधान पुजारी) की अनुमति के बाद हमें गर्म पानी के मूल स्रोत की पूजा करने का सौभाग्य मिला जो एक छेद से बाहर निकलता था और नारद कुंड में एक सरोवर बनाता था।

जीवन हमेशा की ही तरह चल रहा था। मेरा भतीजा बीकन, जो मेरी आध्यात्मिक यात्राओं में निरंतर साथी था, 21 जून 2001 को अपना नया कार्यभार संभालने के लिए दिल्ली से चेन्नई चला गया। जिस दिन वह निकालने वाला था, उससे पहले वाली रात को मैंने एक घंटे तक उसे प्रशासन की बारीकियाँ समझायीं। उसके जाने से मेरे दिल में एक खालीपन आ गया। मैं एक-दो दिन के लिए थोड़ा उदास रहा। जीवन एक ऐसा तंत्र विकसित करता है जो किसी भी स्थिति में समायोजित करने की कला सीखता है। हमारा जीवन सुखपूर्वक आगे बढ़ रहा था लेकिन अचानक हमने खुद को अशांत पानी में पाया। आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले सुशांत गुइलेन बैरे सिंड्रोम से गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। हमने महिंद्रा नर्सिंग होम (दिल्ली) से सलाह ली। कैलाश अस्पताल (नोएडा), अपोलो अस्पताल, पंत अस्पताल, एम्स और NIMHANS (बैंगलोर) के विशेषज्ञों ने सिंड्रोम की पहचान की, एक वायरस जो शरीर की नसों को प्रभावित करता है और रोगी धीरे-धीरे ठीक हो जाता है। यह हमारा सौभाग्य था कि सुशांत हल्के से प्रभावित हुए। लेकिन फिर भी उन्हें सामान्य गतिविधियों के प्रदर्शन में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सुशांत ने इसे सकारात्मक और बोल्ड तरीके

से लिया। अपने सहपाठियों और दोस्तों से मिले जबरदस्त समर्थन ने उन्हें संकट से बाहर निकालने में सक्षम बनाया। व्यावहारिक रूप से इसके लिए कोई दवा नहीं थी, केवल अच्छा भोजन, आराम, विटामिन और फिजियोथैरेपी ही इसकी दवा है। एम्स की डॉ. माधुरी बिहारी के परामर्श के बाद, हमने 12 मई, 2001 से दक्षिण दिल्ली में डॉ. बेला सेठी के फिजियोथैरेपी सेंटर में फिजियोथैरेपी शुरू की। वह सहकर्मी की पत्नी श्रीमती भाटी की देखरेख में एक्यूप्रेशर से भी गुजर रहे थे। फिजियोथैरेपी ने चमत्कार किया और सुशांत के स्वास्थ्य में जबरदस्त सुधार हुआ। सुशांत की बीमारी ने हमें अध्यात्म और पूजा के लिए और अधिक प्रेरित किया। मेरी पत्नी नियमित रूप से हनुमान चालीसा का जाप कर रही थी और मैं महामृत्युंजय और गायत्री मंत्रों का ध्यान और मानसिक पाठ कर रहा था। दो महीने तक महामृत्युंजय मंत्र का जाप करने के बाद मेरे अन्दर बहुत अधिक गर्मी उत्पन्न हो गई। अप्रैल के पहले सप्ताह में मैं माँ विंध्यवासिनी देवी के दर्शन के लिए विंध्याचल गया था। मैंने प्रत्येक स्थान पर प्रार्थना करते हुए त्रिकोण यानी विंध्यवासिनी, कालीखोह और अष्टभुजा को कवर किया। मैं नरहरि बाबा से मिला जो केवल नवरात्र के दौरान अष्टभुजा में आते थे। अष्टभुजा मंदिर जाने से पहले मैं कुछ समय बाबा के साथ बैठा। उन्होंने पूछताछ की, ''घर में सब कुछ ठीक है ना?'' मैंने उत्तर दिया, ''सब कुछ ठीक है''। जब मैंने मंदिर जाने के लिए उनसे अनुमति ली, तो उन्होंने फिर से परिवार के स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की और मैंने फिर से वही जवाब दिया।

अष्टभुजा देवी की पूजा करने के बाद बाबा के पास लौट कर आया और उन्होंने फिर से पूछताछ की कि सब कुछ ठीक-ठाक ना? मुझे आश्चर्य हुआ, वह इस सवाल को क्यों दोहरा रहे थे। सुशांत की बीमारी के कारण मेरी आँखों से आंसू बह निकले। वह कुछ समय के लिए चुप रहे और कहा, ''जुलाई तक यह सब ठीक हो जाएगा।'' उन्होंने सुशांत को लगाने के लिए मुझे कुछ विभूति (राख) दी। उनके सुकून देने वाले शब्दों ने मुझे बहुत सुकून दिया। विंध्याचल में एक हवन और रामेश्वरनाथ मंदिर में शिव पूजा के बारे में बताया। पौराणिक कथा कहती है कि रामेश्वर शिवलिंग भगवान राम द्वारा स्थापित किया गया था। यह भव्य (मनोरम) शिव लिंग है। यह आकार में विशाल है और चांदी से ढंका है। मैंने तारा देवी मंदिर, प्रेत शिला, मोतिया तालाब, गेरुआ तालाब, मोतिया तालाब के शिवलिंग और हनुमान मंदिर के भी दर्शन किए। कुछ लोग मोतिया

तालाब, इसके शिवलिंग और हनुमानजी की प्रतिमा के दर्शन करते हैं। मिर्जापुर शहर में मैंने तारकेश्वर नाथ और पंचमुखी शिवलिंग के दर्शन किए। मैंने संकट मोचन हनुमान मंदिर और बनारस के तैलंगस्वामी शिव मंदिर के भी दर्शन किए। संपूर्ण विन्ध्य क्षेत्र आध्यात्मिक स्पंदनों से भरा हुआ है और जब भी मैं यहाँ आता हूँ मुझे ऐसा लगता है।

यह विंध्याचल यात्रा मेरी एक महान आध्यात्मिक यात्रा थी। इसने न केवल मिर्जापुर के साथ मेरे पुराने जुड़ाव को पुनर्जीवित किया वरन् इसने मेरे आध्यात्मिक विश्वास और धारणा को काफी हद तक मजबूत किया और मुझे संकट का सामना करने के लिए मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक शक्ति प्रदान की। 1 जुलाई 2001 की सुबह मैंने अपने पिता को सपने में देखा। मैं उनके साथ–साथ चल रहा था। हम एक महिला के पास पहुँचे, जो मेरी पत्नी की तरह एक बीमार बच्चे को लिए थी। मेरे पिता ने बच्चे को उठा लिया और उसकी बीमारियों को ठीक कर दिया। तत्पश्चात् वे चल पड़े। मैंने कुछ दूरी तक उनका पीछा किया लेकिन उन्होंने मुझसे कहा कि मैं वापस आऊँ, उनकी पूजा करुँ और फिर वह आसमान में उड़ गए। अपने पिता को इतने सालों बाद सपने में देखना रोमांचक था। यह सपना मेरे बेटे के लिए एक संकटमोचन था, क्योंकि इसके बाद वह बहुत तेजी से ठीक होने लगा। सर्वशक्तिमान भगवान अपने भक्त के कष्टों को लंबे समय तक सहन नहीं कर सकते। इस तथ्य को स्थापित करने के लिए उसे कुछ समय बाद हस्तक्षेप करना पड़ता है कि वह एक सर्वोच्च शक्ति है जो हर प्राणी की देखभाल करता है, छोटा हो या बड़ा। मुझे पूरा विश्वास है कि जब तक ब्रह्माण्ड में कोई आपकी रक्षा करने वाला है तब तक पृथ्वी पर कोई नहीं है जो आपको नुकसान पहुँचा सके।

जब सुशांत की स्वास्थ्य समस्या सुलझी तो हम खुश थे लेकिन यह खुशी अल्पकालिक थी क्योंकि छवि के पेट की समस्या फिर से सामने आने लगी थी। मुझे नहीं पता था कि हमारे साथ ऐसा क्यों हो रहा था। शायद इसके लिए हमारे पिछले कर्म जिम्मेदार थे। हम कर्म के परिणामों से बच नहीं सकते। जीवन में जो भी आता है, उसे हम अनुग्रहपूर्वक स्वीकार करते हैं। अतीत इतिहास है, भविष्य रहस्य है। केवल वर्तमान हमारे हाथ में है। हमें वर्तमान में जीना चाहिए और इसे ही बेहतर बनाना चाहिए। हे भगवान! हमारे प्रयास में हमारी मदद करो और हमारे लिए दया करो। रहमदिल बनो, हमें खतरों से बचाओ और अगर हमसे

कोई गलती हो गई हो तो हमें माफ कर दो। हम आपके प्रति समर्पण करते हैं।

मैंने विभिन्न पवित्र स्थानों की यात्रा करने की आदत बना ली है। मैंने केदारनाथ, बद्रीनाथ, विंध्याचल, वाराणसी, मथुरा, वृंदावन, द्वारका, सोमनाथ, पंचकेदार, हिमालय के चार धाम और भारत के चार धामों में एक, सभी ज्योतिर्लिंगों में से एक को छोड़कर, शांतिकुंज सहित कई आश्रमों जैसे शिवानंद आश्रम, वशिष्ठ आश्रम और गणेशपुरी, तिरुपति मंदिर, पद्मावती मंदिर, मीनाक्षी मंदिर, कालाहस्ती, देहरादून के तपेश्वर महादेव, बेलूर मठ, दक्षिणेश्वर महाकाली, कानपुर के बिठूर और कई अन्य पवित्र स्थानों की यात्रा की है जिनकी संख्या 250 से अधिक हैं। अपने अनुशासित जीवन के बावजूद मैंने समय-समय पर स्वास्थ्य समस्याओं को झेला है। मैंने इस पर विचार किया लेकिन किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सका। हो सकता है मैं सामाजिक, संगठनात्मक और पारिवारिक परिवेश से असंतुष्ट हूँ। हो सकता है कि मैं वर्तमान समाज में फिट नहीं बैठता हूँ। लंबे समय से मेरे भीतर तनाव जमा हो रहा है। संभवतः यही कारण था कि मैंने ध्यान, भजन और आध्यात्मवाद का सहारा लिया। लेकिन मेरे डॉक्टर ने मुझे कुछ समय के लिए ध्यान और पूजा बंद करने की सलाह दी थी। ध्यान को अक्सर तनाव कम करने के लिए एक प्रभावी तरीके के रूप में निर्धारित किया जाता है, जबकि मेरे मामले में, मुझे इसे छोड़ने की सलाह दी गई! निश्चय ही मैं सिर्फ डॉक्टर की सलाह पर ध्यान करना नहीं छोड़ सकता था। मुझे विश्वास था कि कोई न कोई एक रास्ता होना चाहिए, सुरंग के अंत में हमेशा प्रकाश होता है। मुझे पता है कि मुझमें आध्यात्म के मार्ग पर बहुत तेजी से आगे बढ़ने की क्षमता है, लेकिन सांसारिकता मुझे वापस खींच लेती है। एक दिन यह क्रम समाप्त हो जाएगा।

25 मार्च को सोमवार था और उसी दिन मुहर्रम भी था। मैं आराम कर रहा था क्योंकि यह छुट्टी का दिन था। सुबह 9.45 बजे मुझे एनसीडीसी गेट से एक टेलीफोनिक संदेश मिला कि मिर्जापुर के एक साधु मुझसे मिलने की जिद कर रहे हैं। पूछताछ में पता चला कि वे काली कमली बाबा के शिष्य थे और जब मैं मिर्जापुर का जिला मजिस्ट्रेट था, तब उनसे अष्टभुजा में मेरी मुलाकात हुई थी। मैंने गार्ड को उन्हें अंदर लाने का निर्देश दिया। संत लगभग 10.30 बजे आए। वे स्नान करने के लिए नौकरों के क्वार्टर में गए, उसके बाद मैं उनसे अपने ड्राइंग रूम में मिला। वे 80 वर्ष से अधिक उम्र के थे। उन्होंने तुरंत मुझे गले लगा लिया और माँ विन्ध्यवासनी का आह्वान करते हुए मुझे और मेरे परिवार को

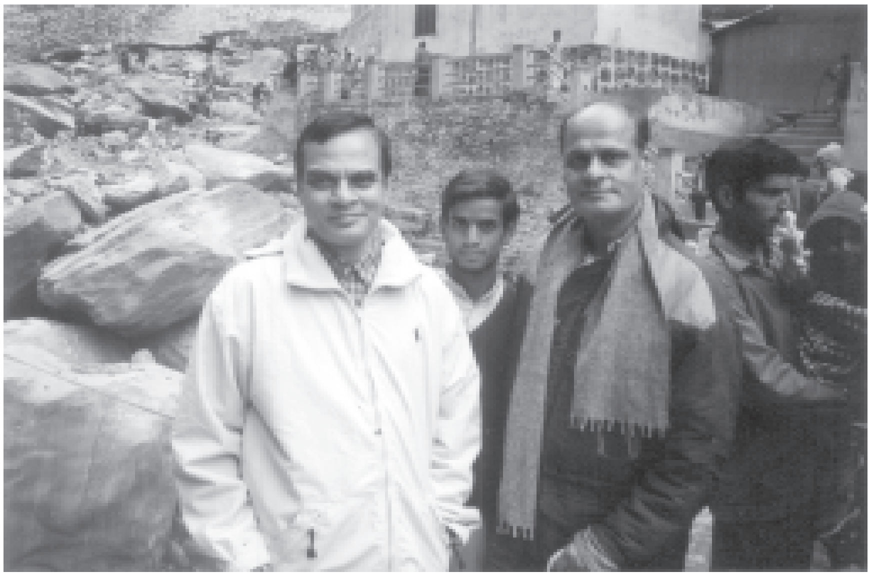

सूर्यशिला यमनोत्री पर एन. सी. शर्मा के साथ

आशीर्वाद दिया। उन्होंने जीवन के अर्थ की व्याख्या शुरू की और यह भी बताया कि सृजन किस प्रकार होता है। उन्होंने कहा कि 400 साल पहले मैं उनके परिवार में एक बेटी के रूप में उत्पन्न हुआ था। वह विशेष रूप से यहाँ यह देखने के लिए आए थे कि मेरे परिवार के लिए कुछ भी अनहोनी नहीं हो और समृद्धि और स्वास्थ्य बना रहे। उन्होंने मुझे लाल स्याही में कागज के पाँच टुकड़ों पर 'ओम सद गुरु नारायण, नारायण स्वामी' लिखने और उन्हें दीवार पर लगाने को कहा। उन्होंने एक मंत्र भी फुसफुसाया और मुझे अपनी पत्नी के कानों में वही मंत्र फुसफुसाने की सलाह दी। मैं कुछ फल ले आया जिन्हें उन्होंने गंगा जल से पूजा की और वितरित कर दिया। उन्होंने दोपहर करीब 12.30 बजे भोजन किया और मेरे घर से चले गए। उन्होंने एक भी पैसा स्वीकार नहीं किया। वह लखनऊ और वहाँ से दिल्ली आने के बाद मुझे आशीर्वाद देने के लिए विशेष रूप से यहाँ आए थे। वाकई यह काफी आश्चर्यजनक था।

27 मार्च, 2002 को बोस्टन विश्वविद्यालय से प्रो. एडवर्ड, ब्रह्मकुमारी बहन संगीता के साथ तनाव दूर करने की आध्यात्मिक तकनीकों के विषय में हमारे कर्मचारियों को संबोधित करने के लिए एनसीडीसी आए। जब प्रोफेसर ने मुझसे एनसीडीसी के बारे में पूछा तो मैंने जवाब दिया कि यह संगठन सहयोग से

संबंधित है जो हमारे अस्तित्व का बहुत बड़ा आधार है। हम सब सहयोग से ही उत्पन्न हुए हैं। अपने महत्त्वपूर्ण अंगों के सहयोग के कारण ही हम कुशलता से कार्य कर पाते हैं। इसी तरह समाज, राष्ट्र और मानवता सभी सहयोग के ही आधार पर संचालित होते हैं। यहाँ तक कि संपूर्ण ब्रह्मांडीय दुनिया इस सिद्धांत पर काम करती है। सहकारिता की इस परिभाषा को सुनकर, प्रोफेसर आश्चर्यचकित हो गए और कहा, 'हम अमेरिकी 'ह्यूमन बीइंग' नहीं बल्कि 'वर्किंग बीइंग' हैं और हमें आप जैसे व्यक्तियों की सख्त आवश्यकता है। उन्होंने बेहद दिलचस्प व्याख्यान दिया और तनाव दूर करने के उनके दृष्टिकोण से हम काफी प्रभावित हुए।

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि एक अदृश्य शक्ति मेरी रक्षा करती है। उसकी मदद और आशीर्वाद के बिना मैं ओडिशा में सुपर चक्रवात के दौरान राहत अभियान के प्रबंधन में सक्षम नहीं हो पाता। मैं धन के अनुमोदन और व्यय की रिकॉर्ड उपलब्धि बनाने में समर्थ नहीं होता। मेरे कार्यकाल के दौरान एनसीडीसी लाभ की नई ऊँचाइयों तक पहुँचा। उसी अदृश्य शक्ति की कृपा के कारण दो बार छवि का जीवन चमत्कारी रूप से बचा और सुशांत के स्वास्थ्य में भी तेजी से सुधार उनकी कृपा के ही कारण हुआ।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, वशिष्ठ गुफा एक महान सिद्ध स्थल है। यहाँ का बुलावा अप्रतिरोध्य है। मैंने यहाँ की अनगिनत यात्राएँ की हैं और यहाँ दिलचस्प अनुभवों का सामना किया है। एक बार रात के खाने के बाद स्वामीजी के साथ गपशप करते हुए मैं बिस्तर पर लेट गया। मैं अपने कमरे से गंगा को देख सकता था। मैं बहती नदी की मधुर ध्वनि पर ध्यान केंद्रित करने लगा। लगभग 2 घंटों के बाद मैंने कई आवाजें सुननी शुरू की, खासकर एक अजीबोगरीब आवाज जो किसी जानवर की आवाज लगती थी। मैंने एक बढ़ई की हथौड़ी और घंटी की आवाज भी सुनी। स्वामी पुरुषोत्तमानंदजी की छवि बार-बार मस्तिष्क में आने लगी। इन सभी अनुभवों के बीच में मुझे पता ही नहीं चला कि मैं कब सो गया। मैं सुबह 4.45 बजे उठा और गंगा और हिमालय पर्वत पर ध्यान लगाते हुए महसूस किया कि माँ गंगा मुझे आशीर्वाद देने के लिए अभय मुद्रा के साथ जल से निकल रही हैं। मेरे आंसू बह निकले और मैं इस महान नदी के प्रति भावुकता से सराबोर हो गया। गंगा हमारी महान सभ्यता की सर्जक, प्रवर्तक और संवाहक है और यदि आप इस नदी को हटा लें तो जीवन नीरस और अमनोरंजक हो जाएगा। यदि आप गंगा को नष्ट करते हैं, तो देश की आध्यात्मिकता नष्ट हो जाएगी और इसका मतलब होगा भारत की ही आभासी

मृत्यु। अब समय आ गया है कि हम माँ गंगा की प्राचीन महिमा को पुनर्स्थापित करने के लिए तत्काल कदम उठाएँ। अब केवल नारों और जबानी जमा खर्च से काम नहीं चलेगा। गंगा को साफ करने के लिए इधर-उधर कुछ योजनाओं के बन जाने से कोई लाभ नहीं होगा बल्कि हमें भागीरथ प्रयत्नों की आवश्यकता है।

हमने 1947 से जबरदस्त प्रगति की है। लेकिन विकास की गति और तेज तथा अधिक गुणात्मक हो सकती थी। हम अनुशासन में असफल रहे, चरित्र में असफल रहे और अपनी संस्कृति को साकार करने में असफल रहे। राजनीतिक नेतृत्व विफल हुआ और बहुत हद तक बौद्धिक वर्ग भी विफल रहा है। पश्चिमी संस्कृति और मूल्यों की अंधी नकल ने एक संकट पैदा कर दिया है, खासकर युवाओं के लिए। हम केवल उनकी पोशाक और उनकी नियमहीनता की नकल करते हैं। लेकिन हम अनुशासन, समय की पाबंदी, कड़ी मेहनत, वैज्ञानिक भावना और ईमानदारी जैसे उनके सकारात्मक गुणों को अपने समाज में लागू करने को लेकर गंभीर नहीं हैं। आधुनिकता और प्रगतिशीलता पश्चिम के अनुकरण में शामिल नहीं हो पाती है। हम अपनी संस्कृति का उपहास उड़ाने में संकोच नहीं करते हैं, लेकिन यह भूल जाते हैं कि यह संस्कृति हजारों वर्षों से महान बनी हुई है। इस संबंध में मैं एक सतही अवसरवादी पाश्चात्य के बजाय एक प्राच्यवादी रूढ़िवादी होना पसंद करूँगा। पश्चिमी लोग अब हमारी जीवन पद्धति की ओर मुड़ रहे हैं, लेकिन हम उनके जीवन के तरीके की नकल के लिए उत्सुक हैं। गाँधीजी ने कहा है, ''मैं अपने घर के सभी दरवाजे और खिड़कियाँ खोल दूँगा ताकि सभी दिशाओं से ताजी हवा अंदर आ सके, लेकिन अपने पैरों को हवा में उड़ाने से इंकार कर दूँगा।'' वैज्ञानिक आध्यात्मवाद दुनिया की सभी बीमारियों का एकमात्र जवाब है।

यह कैसी दुनिया है? एक ऐसी दुनिया जहाँ निर्दोष लोग पीड़ित हैं, ऐसी दुनिया जहाँ ईमानदार और सीधे-साधे लोग अपमानित होते हैं और ऐसी दुनिया जहाँ भ्रष्टाचार और स्वार्थ पनपते हैं। ऐसी दुनिया में किसी को मानसिक शांति कैसे मिल सकती है? जब भी मुझे लगता है कि मेरे भीतर और आस-पास की शांति है, अचानक ही ऐसा कुछ हो जाता है जो मेरे मन की शांति को भंग कर देता है। ऐसा कई मौकों पर हुआ है और मेरा दिमाग पूरी तरह घूम गया है। लेकिन प्रत्येक ऐसी घटना जिसने मेरे मन की शांति को विचलित किया उसने मुझे प्रकृति और मनुष्य के चरित्र व हमारी दुनिया के बारे में कुछ न कुछ सबक जरूर सिखाया है। ऐसे प्रत्येक अवसर ने मुझे शुद्ध किया और मुझे महान

ब्रह्मांडीय आत्मा के निकट लाया है। यह दुनिया एक बहुत बड़ी प्रयोगशाला, सीखने की जगह और अपने आप को सहज बनाने की जगह है। मैं एक कठिन तरीके से इस संस्कार की प्रकृति और इसमें अंतर्निहित सत्य को जानने का प्रयास कर रहा हूँ।

वर्ष 2002 में हिमालय की अपनी वार्षिक यात्रा के दौरान हमने जून के पहले सप्ताह में यमुनोत्री के लिए प्रस्थान किया। सँकरे रास्ते, बारिश, कीचड़ और बदबू ने चढ़ाई को बहुत असहज बना दिया था। लेकिन घाटी सुंदर थी। हम लगभग दोपहर को यमुनोत्री पहुँचे। एकदम निर्मल व नीले स्वच्छ जल वाली यमुना का यमुनोत्री ग्लेशियर से निकलने का दृश्य एक अमिट प्रभाव छोड़ता है। दिल्ली की यमुना और यमुनोत्री से निकलने वाली नदी एक प्रतीत होती ही नहीं, दोनों के बीच आसमान-जमीन का अंतर दिखाई देता है। यमुना के ठंडे पानी के साथ-साथ, वहाँ गर्म पानी का झरना भी था। वास्तव में सूर्य शिला, जो कि गर्म पानी के झरने का स्रोत है, वह यहाँ का मुख्य आकर्षण है और हर कोई सूर्य शिला की पूजा करता है। हमने गर्म पानी के झरने में स्नान किया और सूर्य शिला पर पूजा की। फिर हमने माँ यमुना और संकटमोचन हनुमान की पूजा की। देवी यमुना की मूर्ति वास्तव में सुंदर थी और पूजा करने वालों का ध्यान स्वत: ही आकर्षित करती थी। यह एक शानदार अनुभव था।

जुलाई, 2002 में अपनी पत्नी के साथ मैं इंदौर की आधिकारिक यात्रा पर गया। हम एक सुंदर होटल में रुके थे। दोपहर में हम उज्जैन महाकाल मंदिर के लिए रवाना हुए। हमारा सौभाग्य था कि हमने भगवान महाकाल का अच्छे से दर्शन किया। शाम 5 बजे का समय आरती के लिए निर्धारित किया गया था। मुझे महाकाल के गर्भगृह में प्रवेश करने दिया गया। सरिता को नंदी के पास खड़े होकर दूर से आरती देखने के लिए कहा गया। महाकाल का श्रृंगार वास्तव में एक विशेषज्ञ द्वारा की जाने वाली एक कला है। महाकाल के श्रृंगार का साक्षी होना एक अनूठा अनुभव था। पूरी जगह जबरदस्त ऊर्जा से कंपित हो रही थी और मैं इसे महसूस कर सकता था। मैं वहाँ करीब 45 मिनट तक रहा। महाकाल के दर्शन के बाद हमें काल भैरव मंदिर जाने की सलाह दी गई जो उज्जैन से 12 किमी की दूरी पर था। यहाँ काल भैरव की पूजा शराब के साथ करने की परंपरा है। मूर्ति वास्तव में बहुत प्रभावशाली थी। जब देवता को एक तश्तरी में शराब चढ़ाई गई तो यह वाष्पित हो गई। हम इस घटना के साक्षी थे और इस घटना से बहुत आश्चर्यचकित भी हुए थे। प्रसाद के रूप में शराब अर्पित की गई। चूँकि

मैं शराब नहीं पीता था इसलिए मुझे पुजारी ने सलाह दी कि मैं इसे अपनी आँखों से स्पर्श करूँ। मैंने ऐसा किया और इसी क्रम में अपनी जीभ पर एक छोटी सी बूंद छिड़क दी। इसका प्रभाव जबर्दस्त था। मैं जीभ, मुंह और तालू में ऊर्जा का प्रवाह महसूस कर सकता था। यह खेंचरी मुद्रा की तरह ही थी। आधे घंटे तक मैं ऊर्जा को महसूस करता रहा। केवल प्रसाद के रूप में ग्रहण की गई शराब की एक छोटी बूंद का भी यह प्रभाव नहीं होगा। यह निश्चय ही कुछ और था।

उसी यात्रा पर हम ओंकारेश्वर भी गए। एक घुमावदार घाट, सड़क पर चार घंटे की ड्राइव के बाद हम यहाँ पहुँचे। हमने नर्मदा के तट पर स्थित ओंकारेश्वर शिव मंदिर के दर्शन किए। ऐसा कहा जाता है कि घाटी 'ओम' के आकार में है। मंदिर तक आने के लिए नाव से नदी पार करना एक सुखद अनुभव था। हमने ओंकारेश्वर शिवलिंग के दर्शन किए और पूजा की। फिर हम नाव से वापस आए और ममलेश्वर शिवलिंग की पूजा की। यह कहा जाता है कि दोनों ही ज्योतिर्लिंग हैं और ममलेश्वर के दर्शन के बिना ओंकारेश्वर की यात्रा अधूरी है। 17 जुलाई, 2002 की सुबह हम भोजपुर गए और 21 फीट के विशाल शिवलिंग का दर्शन किया जिसके बारे में यह माना जाता है कि राजा भोज ने उसकी पूजा की थी। मंदिर ढह गया था और इसके खंडहर कोणार्क से मिलते जुलते थे। यह एक पुरातात्विक स्मारक है। वह स्थान निर्मल, निर्विघ्न और शांत था और इस स्थान का हमारे ऊपर एक गहरा प्रभाव पड़ा। भोजपुर के बाद हम पास के एक स्थान पर गए जहाँ हमने भगवान महावीर की एक बड़ी मूर्ति देखी। यह जैन तीर्थ था। इस प्रकार महाकाल और ओंकारेश्वर दोनों ज्योतिर्लिंगों की पूजा करने की मेरी इच्छा इस यात्रा के दौरान पूरी हुई।

बहुत पहले मैंने दक्षिण में महर्षि रमण के आश्रम के विषय में एक लेख पढ़ा था और मुझे उस स्थान पर जाने की बहुत इच्छा थी। मुझे यह अवसर 23 अगस्त 2002 को मिला जब मैं आईपीएल की जनरल बॉडी मीटिंग में भाग लेने गया। चेन्नई में बैठक में भाग लेने के बाद मैं शंकराचार्य से मिलने कांचीपुरम् गया, जिन्होंने मुझे मुस्कुराते यह कहते हुए आशीर्वाद दिया कि ''मेरा आशीर्वाद हमेशा आपके साथ है।'' उन्होंने यह भी कहा कि ''जब भी आप आश्रम आते हैं तो मुझे खुशी होती है।'' इन आशीर्वादों से मेरा उत्साह बढ़ गया। हमने विकास, चरित्र और सहकारी आंदोलन तथा उपेक्षित वर्ग के लिए किए जाने वाले कल्याणकारी उपायों के बारे में बात की। मैंने उन्हें मठ द्वारा सहकारिता को अपनाने का विचार दिया ताकि सहकारिता को कुशलता से चलाया जा सके।

शंकराचार्य ने मुझे आदि शंकराचार्य की ''स्फटिक शिवलिंग'' की आरती देखने की सलाह दी। शंकराचार्य द्वारा की जाने वाली इस पूजा को देखकर मैंने खुद को सौभाग्यशाली महसूस किया। मैंने कुछ समय के लिए शिवलिंग पर अपनी निगाहें जमा दीं और अचानक मैंने एक चक्र देखा। लिंग के चारों ओर कई रंगों की रोशनी दिखाई दी। मुझे लगा कि यह प्रकाश के परावर्तन के कारण है। इसलिए मैंने जानबूझकर अपनी एकाग्रता को तोड़ा और फिर से ध्यान केंद्रित किया। दोबारा मुझे रंगीन रोशनी नहीं दिखाई दी। इस अनुभव से क्या समझा जा सकता है? क्या यह मात्र मेरी कल्पना थी या मेरा मतिभ्रम था? या क्या यह प्रकाश के रूप में लिंग का आविर्भाव था?

24 अगस्त की सुबह हम तिरुवन्नमलाई के लिए रवाना हुए और रमण आश्रम का दौरा किया जो अरुणाचल पहाड़ियों की तलहटी में था। यह एक सुंदर व शांत आश्रम था। मैंने ध्यान कक्ष तथा रमण महर्षि के ध्यान कक्ष दोनों में कुछ समय के लिए ध्यान किया। इसके पश्चात् मंदिर जाने का समय था। मंदिर कई किलोमीटर तक फैले विशाल स्थान में स्थापित था। ऐसा माना जाता है कि शिवलिंग यहाँ अग्नि के रूप में विद्यमान है। अरुणाचल पहाड़ी में ही प्रकाश के ऐसे विशाल स्तंम्भ के रूप में शिव अभिव्यंजित हैं जिसके आदि और अंत की थाह नहीं ली जा सकी। इसी स्थल से यह रचना शुरू हुई थी। एक जबरदस्त आध्यात्मिक शक्ति मेरे भीतर हावी हो गई और मैं श्रद्धा में सराबोर हो गया।

रात के खाने के बाद हमने 'प्रदक्षिणा' (अरुणाचल हिल का चक्कर लगाना) शुरू की। आम तौर पर लोग नंगे पैर ही प्रदक्षिणा करते हैं। लगभग आधे घंटे तक बारिश हुई थी। यह एक शुभ संकेत माना जाता है। यह लगभग 16 किलोमीटर का परिक्रमा थी। जोश से लबरेज होकर हमने नंगे पांव ही परिक्रमा की शुरुआत की। हमने रात 8.30 बजे यात्रा की शुरुआत की। पूरी रात हम चर्चा, गपशप और एक दूसरे के साथ मजाक करते रहे। परिक्रमा के दौरान 52 स्थान और लगभग 21 लिंगम् के दर्शन किए जा सकते हैं। हमने कुछ महत्त्वपूर्ण स्थानों पर पूजा की और अग्निलिंगम्, कुबेरलिंगम्, वरुणालिंगम् और ऐशन्यालिंगम् आदि की भी पूजा की।

ऐसा कहा जाता है कि अरुणाचल पहाड़ी में कई सिद्ध हैं और यात्रा के दौरान वे अलग-अलग रूपों में दिखाई देते हैं। हमें आधा दर्जन से अधिक योगी रास्ते में मिले। दो-तीन अवसरों पर मुझे लगा कि वे सिद्ध और भगवान के संदेशवाहक हैं। रास्ते में हमने एक साँप को भी सड़क पार करते हुए देखा। शुरुआती 7 से

8 किमी की यात्रा हमने उत्साह के साथ पूरी की। इसके बाद मुझे अपनी एड़ी में दर्द महसूस होने लगा। दर्द हर कदम के साथ बढ़ता ही जा रहा था। मैंने उन लोगों के साथ मजाक करना शुरू किया ताकि दर्द महसूस न हो। मैंने उन्हें साईं बाबा की कहानी सुनाई। एक बार साईं बाबा के गुरु उन्हें एक कुएँ पर ले गए, उनके पैर बाँध दिए और उन्हें उल्टा लटका दिया। चार घंटे के बाद जब गुरु ने साईं बाबा से पूछा कि वे कैसा महसूस कर रहे हैं तो उन्होंने उत्तर दिया, ''मैं अतीन्द्रिय आनंद का अनुभव कर रहा हूँ।'' मजाक में मैंने कहा, ''इसी तरह, हम भी अतीन्द्रिय सुख का आनंद ले रहे हैं।'' आखिरी 2 से 3 कि.मी. की यात्रा बेहद कष्टसाध्य थी और मुझे लगा कि जैसे मैं नीचे गिर जाऊँगा। लिंगम् मार्ग पर चलना बहुत दर्दनाक था। लेकिन मन में भगवान का स्मरण और दर्द को अरुणाचल हिल के प्रसाद के रूप में स्वीकार करते हुए हम साढ़े चार घंटे में दूरी पार कर गए। मैं दिल्ली लौटा, पर मेरा मन अरुणाचल की पहाड़ियों में ही भटक रहा था। कांचीपुरम् और अरुणाचल हिल्स की यात्रा का मेरे मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और मैंने हर चीज में ईश्वर की उपस्थिति को महसूस करना प्रारम्भ कर दिया। मेरे भीतर एक परिवर्तन आकार ले रहा था। किसी अज्ञात बल के साथ मेरा संवाद-संचार हो रहा था, शायद इस बल को मैं ब्रह्मांडीय तत्व कह सकता हूँ। यह इस अर्थ में अज्ञात है कि यद्यपि यह हमारा अपना स्वरूप (स्व) है, हम अपनी अज्ञानता के कारण इसे नहीं पहचानते। एक बार जब अज्ञान रूपी धूल हट जाती है तो हम इस सद्यः दैदीप्यमान आत्मा के साथ तत्क्षण संबंध स्थापित कर सकते हैं।

मैंने 'डिवाइन रेवेलेशन' नाम की एक पुस्तक पढ़ी और उससे प्रेरित होकर इसमें वर्णित गतिशील ध्यान अवधारणा के साथ प्रयोग करना शुरू किया। 29 सितंबर, 2002 को लगभग 4.30 बजे मैंने ध्यान करना शुरू किया और जबरदस्त कंपन हुआ। ऐसा आधे घंटे तक चलता रहा। इसके बाद मैंने आकाश और तारों को लगातार देखना शुरू किया। अचानक मैंने देखा कि एक तारा एक क्षण के लिए चमकता है और फिर गायब हो जाता है। मुझे लगा कि यह गिरने वाला उल्का था। कुछ सेकंड के बाद मैंने एक अलग स्थान पर कुछ क्षणों के लिए चमकते हुए एक सितारे को देखा। तारों की हर चमक पर मैंने अपने हृदय और मस्तक में एक जबरदस्त सनसनी महसूस की। ऐसा चार से पाँच बार हुआ और फिर यह बंद हो गया। अगले दिन मैंने फिर से कोशिश की लेकिन कुछ नहीं हुआ। मुझे इसका कारण समझ में नहीं आया। शायद एक अदृश्य ब्रह्मांडीय

शक्ति मेरा मार्गदर्शन करने की कोशिश कर रही थी।

नवंबर, 2002 में मैंने गंगटोक की यात्रा की। यह एक छोटा, साफ-सुथरा हिल स्टेशन है जिसकी आबादी एक लाख से कम है। सभी पहाड़ी शहर एक जैसे दिखाई देते हैं और उनकी समस्याएँ, रीति-रिवाज, परंपराएँ और जीवन के तरीके प्राय: समान ही हैं। 9 नवंबर को नाश्ते के बाद हम 12400 फीट की ऊँचाई पर स्थित सिक्किमी लोगों की पवित्र झील चांगु झील गए। हमने झील का एक चक्कर लगाया। दोपहर के भोजन के बाद मैं रुमटेक मठ गया जो एशिया के सबसे बड़े बौद्ध मठों में से एक और एशिया के प्रमुख अध्ययन केन्द्रों में से एक है। संपत्ति के विवाद और चीन से भागकर भारत आए एक लड़के, जिसने रमटेक के करमापा होने का दावा किया, जिसके कारण यह स्थान प्रमुखता से चर्चा में आया। रुमटेक की सड़क खराब थी और हमें वहाँ तक पहुँचने में लगभग एक घंटा लग गया। यह एक शानदार व सुंदर मठ था। मैं बुद्ध की स्वर्णिम प्रतिमा के सामने खड़ा हो गया, मेरे ऊपर आध्यात्मिक भावना की लहर दौड़ गई। फिर हमने 16 करमापाओं और उनके द्वारा उपयोग किए गए छत्र के खंडहरों के स्थल का दौरा किया। मैंने गंगटोक में बुद्ध की विशाल प्रतिमा के भी दर्शन किए। यहाँ के बारे में किंवदंती है कि प्रतिमा की ऊँचाई निरंतर बढ़ रही है जिसके परिणामस्वरूप कमरे की छत में छेद किया गया है।

गंगटोक से लौटने के बाद जीवन हमेशा की तरह चल रहा था। 18 नवंबर, 2002 की रात को कुछ अजीब हुआ। रात के खाने के बाद मेरा भतीजा पिंकू और मैं विस्तृत ब्रह्मांड की उत्पत्ति, स्ट्रिंग और विभिन्न ब्रह्मांडों की अवधारणा पर गहरी चर्चा में तल्लीन थे। जब मैं मन और यूनिवर्सल माइंड, इंटेलिजेंस और सुपर-इंटेलिजेंस, चेतना और यूनिवर्सल कॉन्शसनेस के सम्बन्धों के बारे में बात कर रहा था, अचानक मुझे ऊर्जा का जबरदस्त प्रवाह महसूस हुआ जो रीढ़ की हड्डी के आधार से निकल रहा था। मैं हांफने लगा। यह प्रवाह नियंत्रण से बाहर था और खुद को शांत करने के लिए मैंने 'मैं नियंत्रण में हूँ', 'मैं नियंत्रण में हूँ' को बार-बार दोहराना शुरू कर दिया। ऊर्जा का प्रवाह थम गया और थोड़ी देर बाद मैं शांत हो गया।

एक शाम अपनी पत्नी के साथ टहलते हुए मैंने पूछा, ''मुझे बताओ सरिता, हम दोनों के बीच क्या उभयनिष्ठ है?'' उसने कुछ देर सोचा लेकिन कोई जवाब नहीं दे पाई। मैंने चुटकी ली, ''केवल सुबह और शाम की सैर हम दोनों के बीच

उभयनिष्ठ है, अन्यथा हम दो ध्रुवों की तरह अलग हैं।'' उसने दिल खोलकर हँसते हुए कहा, ''हम कई चीजों में भिन्न हो सकते हैं, फिर भी हम लंबे समय तक एक अच्छा पारिवारिक जीवन बनाने में कामयाब रहे।'' मैंने इस मामले पर विचार किया और पाया कि वह सही कह रही थी। हालाँकि कई चीजों में हम एक दूसरे से बहुत अलग-अलग हैं पर हम समान मूल्यों पर विश्वास करते हैं-जैसे सत्य, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, विश्वास, न्याय की भावना, निष्पक्षता और करुणा। प्रत्येक व्यक्ति अनोखा होता है और किन्ही दो भिन्न व्यक्तियों से समान व्यवहार और प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं की जानी चाहिए। एक दूसरे के दृष्टिकोण का सम्मान करना चाहिए तथा प्रमुख और केन्द्रीय जीवन मूल्य एक जैसे होने चाहिए अन्यथा पारिवारिक जीवन असंतोष, असहमति और कलह से ग्रस्त हो जाएगा। 1991-2003 की अवधि मेरे जीवन की एक महत्त्वपूर्ण चरण थी क्योंकि इस दौरान मैं अपनी साधना के चरम पर था। इस चरण में मैंने गहन अध्यात्मवाद, आध्यात्मिक पुस्तकों के अध्ययन, अनगिनत पवित्र स्थानों की यात्रा, साधुओं और संतों के साथ बातचीत और परमानंद के अनुभवों को हासिल किया था। इस अवधि के दौरान मेरे व्यक्तित्व में शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक रूप से कई बदलाव आए और इन बदलावों के परिणामस्वरूप जीवन, समाज और मानवता के प्रति मेरे दृष्टिकोण में व्यापक बदलाव आया।

अध्याय-२९

प्रमुख सचिव, सार्वजनिक उद्यम, खाद्यान्न एवं नागरिक आपूर्ति एवं आयुक्त, समाज कल्याण, उत्तर प्रदेश

(अप्रैल 2003-जनवरी 2004)

बार-बार तबादला राजनीतिक आकाओं का एक बहुत सुविधाजनक हथियार है जिसका इस्तेमाल वे न केवल अधिकारियों को अनुशासित करने के लिए करते हैं, बल्कि यदि अधिकारी उनके अनुसार न चलें तो उन्हें उत्पीड़ित करने में भी करते हैं।

मार्च 2003 में केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पूरी करने के बाद मैं लखनऊ वापस आ गया। 2003 से 2013 की अवधि आध्यात्मिक अनुभवों के मुकाबले प्रशासनिक अनुभवों के लिहाज से ज्यादा महत्त्वपूर्ण थी। इस दौरान मैं कई पदों पर रहा। दो महीनों तक मैं प्रमुख सचिव, सार्वजनिक उद्यम, खाद्यान्न एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के पद पर रहा। इस दौरान कुछ खास उपलब्धि नहीं हुई, केवल दो महत्त्वपूर्ण मामले इसके अपवाद रहे-पहला, उत्तरांचल राज्य सरकार को UPSRTC के संदर्भ में संपत्ति और देनदारियों का हस्तांतरण और दूसरा, सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं की बैलेंस शीट को अद्यतन किया जाना और ऑडिट की आपत्तियों का निराकरण। जब मैंने पद ग्रहण किया था तो मैंने पाया कि संपत्ति के हस्तांतरण की फाइल दो-तीन सालों से चक्कर लगा रही थी, पर सचिवालय के बाबुओं की आपत्ति के अलावा कुछ ठोस काम नहीं हो पा रहा था। मैंने इस काम को चुनौती के रूप में लिया और वित्त व परिवहन विभाग तथा राज्य परिवहन निगम के सीएमडी समेत सभी सम्बद्ध पदाधिकारियों की बैठक आहूत की। दो-तीन बैठकों के बाद हम सभी समस्याओं को दूर करने की स्थिति में आ गए और सारा मामला एक सप्ताह में समाप्त हो गया। मैंने यह देखा है कि सचिवालय और खासकर वित्त विभाग को आपत्ति लगाने और सवाल खड़ा करना काफी पसंद है, वह भी एक के बाद एक। चूंकि फाइल सचिवालय के गलियारों में ऊपर से

नीचे और नीचे से ऊपर घूमती है, इस कारण फाइल को निपटाने में काफी समय लगता है। मेरा यह मानना है कि ऐसी प्रक्रियाएँ काफी सुस्त हैं और निर्णय प्रक्रिया को तेज करने के उद्देश्य में बाधक हैं। शुरुआती चरण के बाद, एक साथ सारी समस्याओं और सवालों को हल करने के लिए वित्त और योजना विभाग समेत सारे सम्बद्ध विभागों की बैठक करना हमेशा ही अच्छा रहता है।

जून 2003 में मेरा तबादला प्रमुख सचिव, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के रूप में हुआ। इस पद पर मैंने 3 महीने तक काम किया। इस दौरान मैंने मुख्य रूप से खाद्यान्न वसूली का काम किया। सितंबर में फिर से मेरा तबादला हुआ इस बार प्रमुख सचिव व कमिश्नर, समाज कल्याण विभाग के रूप में। यह ऐसा विभाग था जहाँ उपेक्षित समुदाय के लिए कल्याणकारी कार्य किए जा सकते थे। मैंने विशेष योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में ध्यान केंद्रित किया और शारीरिक रूप से अक्षम छात्रों को सामान्य छात्रों के साथ जुड़ाव के लिए एक योजना बनायी।

विगत 9 महीनों की इस संक्षिप्त अवधि में मेरा तीन बार ट्रांसफर हुआ। 1995-96 में भी मैं इस अनुभव से गुजरा था जब मेरा बार-बार तबादला किया जा रहा था। राज्य का यह विशिष्ट लक्षण है कि नौकरशाहों के सिर पर हमेशा ही डेमोक्लीज की तलवार (इस मामले में तबादला) लटकती रहती है। बार-बार तबादला राजनीतिक आकाओं का एक बहुत सुविधाजनक हथियार है जिसका इस्तेमाल वे न केवल अधिकारियों को अनुशासित करने के लिए करते हैं, बल्कि यदि अधिकारी उनके अनुसार न चलें तो उन्हें उत्पीड़ित करने में भी करते हैं। इसके अलावा यह गैरकानूनी रूप से सुविधा और लाभ हासिल करने का भी एक सरल रास्ता है। प्राय: यह आरोप लगता है कि ट्रांसफर वह उद्योग है जहाँ पैसा कमाने के लिए किसी निवेश की जरूरत नहीं पड़ती। हर राज्य की एक स्थानांतरण नीति होती है पर यह पालन में कम और उल्लंघन में ज्यादा दिखाई देती है। यह एक त्रासदी है कि राजनीतिक नेतृत्वकर्ता ऐसे तबादलों के विध्वंसक परिणामों को देख नहीं पाते। यह न केवल अधिकारी और नौकरशाही के मनोबल को कमजोर करती है, पर साथ ही साथ यह बेहतर योजना, समुचित क्रियान्वयन और सुशासन की आशाओं को भी नष्ट करती है। हमें यह याद रखना चाहिए कि बुरे शासन के कारण ही भ्रष्टाचार विकसित होता है और सुशासन ही इसका एकमात्र इलाज है। जितनी जल्दी इस बात को समझ लिया जाए उतना बेहतर है।

अध्याय-३०

अतिरिक्त सचिव (रक्षा), भारत सरकार

(जनवरी 2004-नवंबर 2004)

मुझे केवल एक शरीर समझने का भ्रम न करें। मैं एक आत्मा हूँ और मेरे पास असीमित शक्ति है।

मुझे भारत सरकार में अतिरिक्त सचिव के पैनल में रखा गया था और मैं आदेश मिलने का इंतजार कर रहा था। जनवरी 2004 में मुझे अतिरिक्त सचिव (रक्षा) के रूप में पदभार लेने का आदेश मिला। चूंकि मुझे इस मंत्रालय का कोई अनुभव नहीं था, मुझे शुरू शुरू में थोड़ी कठिनाई हुई, पर मैंने इस चुनौती को स्वीकार किया और पेशेवर तरीके से काम करना शुरू किया। मंत्रालय के कामकाज को मैं बैठकों, ब्रीफिंग्स और प्रेजेंटेशन आदि के माध्यम से सीखता रहा। हालांकि मैं यहाँ साल भर से भी कम समय के लिए रहा पर मैंने काफी कुछ सीखा।

दिलचस्प यह है कि अन्य मंत्रालयों में जहाँ दोहरी फाइल व्यवस्था प्रचलित है, वहीं रक्षा मंत्रालय में इकहरी फाइल व्यवस्था ही प्रचलित है। कई बार यदि कोई चीज छूट जाती है तब उसे फिर से जोड़ पाने में बहुत कठिनाई है। इस दौरान मुझे गणतंत्र दिवस की परेड और स्वतंत्रता दिवस के उत्सव की तैयारी से जुड़ने का बहुत अच्छा अनुभव हासिल हुआ। हालांकि यह एक बहुत मुश्किल काम था पर स्थापित प्रचलन, अनुशासन और बार-बार अभ्यास के कारण हमेशा ही अच्छे नतीजे मिले। रक्षा विभाग की पार्टियाँ एक अलग ही स्तर की होती हैं। यह पार्टियाँ बेहद रंगीन, विस्तृत और मनोरंजक होती हैं। हर चीज को काफी सूक्ष्मता से तैयार किया जाता है। रक्षा विभाग के लोग यह अच्छी तरह जानते हैं कि सबसे कठिन परिस्थितियों और स्थानों में भी जीवन का आनंद कैसे लिया जाता है।

मेरा यहाँ का कार्यकाल बहुत व्यस्तता भरा रहा क्योंकि हर फाइल मुझे बेहद जरूरी और जल्द से जल्द पूरी की जाने वाली लगती थी। मैंने अपना श्रेष्ठ

प्रदर्शन करने का प्रयास किया पर कई बार मैं अपने सचिव के साथ उलझ जाता था। रक्षा सचिव हर मंगलवार समीक्षा बैठक किया करते थे। ऐसे ही एक मौके पर उन्होंने मुझे किसी खास फाइल को तुरंत निपटाने का निर्देश दिया। मैंने पहले ही अपनी आपत्तियाँ जाहिर की थीं, पर जब रक्षा सचिव ने अपनी खीज जाहिर की, मैंने विनम्रता से अपनी आपत्तियों के कारण इस फाइल को आगे बढ़ाने में अपनी असमर्थता बताई। वे मेरी बात से खुश नहीं हुए।

एक और दूसरे मौके पर मेरे सचिव चाहते थे कि मैं किसी खास प्रक्रियात्मक मामले में संसदीय कार्य मंत्रालय से जानकारी इकठ्ठा करूँ। मैंने उपसचिव से इस मामले में बात की, वे इस मामले के जानकार थे और मैंने जानकारी हासिल कर ली। शाम को जब मैं रक्षा सचिव से मिला तो उन्होंने मुझसे पूछा, ''आपने यह जानकारी कहाँ से हासिल की?'' जब मैंने उन्हें यह बताया कि मैंने यह जानकारी संसदीय कार्य मंत्रालय के उपसचिव से हासिल की है, तब उन्होंने उपहास भरे अंदाज में कहा, ''आप सिर्फ उप सचिव तक पहुँच रखते हैं?'' मैं उनके उपहास के अंदाज को समझ रहा था। मैंने जवाब दिया, ''सर, मुझे केवल एक शरीर समझने का भ्रम न करें। मैं एक आत्मा हूँ और मेरे पास असीमित शक्ति है।'' वे स्तब्ध रह गए और आगे कोई जवाब नहीं दिया।

रक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमा बढ़ाने पर चर्चा के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय में एक महत्त्वपूर्ण बैठक होने वाली थी। यह मामला मेरे अधिकार क्षेत्र का नहीं था पर विभाग के सचिव ने मुझे उस बैठक में शामिल होने का निर्देश दिया। जब मैंने फाइल का अध्ययन किया तो यह देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुआ कि रक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमा बढ़ाने को लेकर रक्षा मंत्रालय से कोई राय नहीं ली गई थी। इस कारण मैंने तुरंत मंत्रालय के सम्बद्ध विभागों की बैठक की और उस बैठक में यह मत आया कि इस फैसले का विरोध किया जाए क्योंकि इसमें ढेरों खतरे हैं और इसके बहुत गंभीर निहितार्थ होंगे। मैंने इन मतों को दर्ज किया और फाइल को स्वयं रक्षा सचिव के पास लेकर गया। उन्होंने कोई निर्देश नहीं दिया। समय कम था और मुझे बैठक में शामिल होना था। जब तक मुझे मंत्रालय के स्पष्ट मत की जानकारी नहीं होती, तब तक मैं बैठक में प्रभावी हिस्सेदारी कैसे कर सकता था? मैं यह अनुमान लगा सकता था कि सचिव किसी तरह का निर्देश देने की इच्छा नहीं रखते थे। मैं तुरंत भाग कर रक्षा मंत्री के कार्यालय गया और उन्हें बैठक के बारे में बताया और

उनकी राय जाननी चाही। जब मैंने उन्हें यह बताया कि विभाग की बैठक से क्या निष्कर्ष निकला है, तो उन्होंने कुछ देर के लिए अपनी आँखें बंद की और कहा, ''विरोध करो।'' मंत्री से स्पष्ट निर्देश के कारण मामला सुलझ गया।

रक्षा सचिव के साथ मेरे संबंध बहुत मधुर नहीं थे इस कारण उन्होंने तत्कालीन कैबिनेट सचिव को मुझे किसी और विभाग में स्थान्तरित करने को कहा। उस समय मैं छुट्टी पर था। जब मैं वापस आया तो कैबिनेट सचिव ने मुझे बुलाया और कहा, ''प्रशांत, तुम्हारे सचिव ने बदलाव करने का अनुरोध किया है। इस बारे में तुम्हें कुछ कहना है?'' मैंने जवाब दिया, ''सर, यदि सरकार द्वारा कोई निर्णय लिया जाता है तो मुझे किसी प्रकार की कोई आपत्ति या संकोच नहीं है, पर मैं अपना पक्ष जरूर स्पष्ट करना चाहता हूँ। कई बार मेरे ईमानदार और सीधे दृष्टिकोण की सराहना नहीं हुई। इसके अलावा, सचिव का काम करने का अंदाज कुछ ऐसा है कि इसमें उल्लेखनीय विलंब होता है। यदि मेरे तबादले का निर्णय लिया जाता है तो मुझे पदभार सौंपने में एक मिनट का भी वक्त नहीं लगेगा।'' कैबिनेट सचिव ने कहा, ''तुम एक शानदार एवं ईमानदार अधिकारी हो, तुम्हें किसी महत्त्वपूर्ण मंत्रालय में भेजा जाएगा।'' कुछ ही दिनों के अंदर मेरा तबादला नागरिक उड्डयन, पर्यटन, संस्कृति, वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के एफए के रूप में कर दिया गया। आदेश प्राप्त होने के बाद मैं सचिव के पास गया और उन्हें धन्यवाद दिया। प्रचलित परंपरा के अनुसार वे एक विदाई पार्टी करना चाह रहे थे जिसे मैंने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया। मैं रक्षा मंत्री के पास गया जिन्होंने मुझसे पूछा, ''क्या आप रक्षा मंत्रालय में ही बने रहना पसंद करेंगे?'' मैंने जवाब दिया, ''सर, चूंकि यह सरकार का आदेश है इस कारण मैं बिना कोई समय जाया किए इसका अनुसरण करूँगा।'' इस प्रकार रक्षा मंत्रालय में मेरा संक्षिप्त कार्यकाल समाप्त हुआ।

अध्याय-३१

वित्तीय सलाहकार एवं अतिरिक्त सचिव, (नागरिक उड्डयन, संस्कृति, पर्यटन, पर्यावरण एवं वन विभाग) भारत सरकार

(दिसंबर 2004–जुलाई 2005)

रुपए पैसे की शक्ति उनके अधिक संचय पर बढ़ती है इसीलिए मैं उन्हें कूड़ेदान में नहीं फेंक सकता।

दिसंबर, 2005 में मैं एफए और एएस, (नागरिक उड्डयन, संस्कृति और पर्यटन तथा पर्यावरण तथा वन विभाग) के रूप में नियुक्त किया गया था। देश नागरिक उड्डयन के क्षेत्र में गतिशील बदलावों के दौर में था। मंत्रालय द्वारा शुरू की गई खुली आकाश नीति, इंडियन एयरलाइंस और एयर इंडिया के लिए नए बेड़े का अधिग्रहण, हवाई अड्डों का आधुनिकीकरण और दिल्ली और मुंबई हवाई अड्डों का निजीकरण कुछ ऐसी गतिविधियाँ थीं जिनको कुछ दूरगामी परिणाम के उद्देश्य से लाया गया था। मैं सिविल सेवा में अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि जब भी भारी निवेश वाले दूरगामी सुधारों की आवश्यकता होती है, यह निश्चित है कि कार्यान्वयन के बाद की अवधि में अनेक आपत्तियाँ दर्ज की जाएगी। इसलिए व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए सावधान, ईमानदार और स्पष्ट होना ही होगा; अन्यथा आरोपों का सामना करना तय है।

मैंने कई महत्त्वपूर्ण मामलों को संभालते हुए कई बाधाओं का सामना किया। इंडियन एयरलाइंस के लिए बेड़े का अधिग्रहण लंबे समय से लंबित था। जब मैं जयपुर दौरे पर जा रहा था, मेरे सचिव ने किसी फाइल को संशोधित करने के लिए मुझे तुरंत दिल्ली बुलाया। मैं तुरंत दिल्ली लौटा और उस महत्त्वपूर्ण फाइल को, जिसमें भारी पैमाने पर वित्तीय मामले शामिल थे, अनुशीलन करने के लिए मुझे बमुश्किल 24 घंटे का समय दिया गया। मेरे काम करने की शैली अलग थी। मैं आम तौर पर एक बैठक में अपने अधिकारियों के विचार लेने के बाद ही निर्णय करता था, अधिकारियों को अपने मत स्पष्ट रूप से व्यक्त करने

की स्वतंत्रता होती थी। मैंने निदेशक (वित्त), अधीनस्थ अनु सचिव और कर्मचारियों के साथ विस्तृत चर्चा की और प्रासंगिक बिंदुओं को नीचे लिख दिया। 3–4 घंटे चर्चा के बाद मैं अपनी टिप्पणियों को लिखवाता चला गया। लगभग आधी रात तक फाइल तैयार हो गई। सेक्रेटरी ने मुझे अगले दिन बुलाया और चर्चा के बाद फाइल मंत्री को भेज दी। मंत्रीजी हमारी टिप्पणियों से खुश नहीं थे। उन्होंने नागरिक उड्डयन से संबंधित अधिकारियों की बैठक बुलाई जहाँ मैं उपस्थित था। उन्होंने प्रतिक्रिया दी कि टिप्पणियों में वस्तुनिष्ठता नहीं थी। मैंने जवाब दिया कि अपने पूरे कैरियर में मैंने पूरी ईमानदारी और उद्देश्यपूर्ण तरीके से काम किया है। किसी ने मेरे खिलाफ उँगली नहीं उठाई। यहाँ तक कि मुझे सक्षम अधिकारियों द्वारा इस मामले में निर्णय लेने के लिए तैयार किये गये नोट में मेरी टिप्पणियों को शामिल करने के लिए उच्च अधिकारियों से लड़ना पड़ा। एम्पावर्ड ग्रुप ऑफ मिनिस्टर्स द्वारा एयरबस के साथ बातचीत के बाद अंतिम निर्णय लिया गया।

दिल्ली और मुंबई हवाई अड्डों के निजीकरण में मैंने सख्ती से हस्तक्षेप किया और बोली लगाने वाले के अंतिम चयन के संबंध में अपना असंतोष दर्ज किया। बैठक में गर्मागर्म बहस हुई और विभाजित राय सामने आई। इस मामले को सचिवों के समूह के पास भेजा गया जिसकी अध्यक्षता कैबिनेट सचिव ने की। बैठक के दौरान कैबिनेट सचिव ने मुझे बुलाया। मेरे द्वारा मामले का सार बताने और विस्तृत चर्चा के बाद इस विषय को विशेषज्ञ राय के लिए श्रीधरन समिति को भेजा गया। मेरे विचारों का न केवल सचिवों के समूह द्वारा समर्थन किया गया बल्कि श्रीधरन समिति द्वारा और बाद में न्यायपालिका द्वारा भी मेरी बात का समर्थन किया गया।

एरोब्रिज्स की खरीद को अंतिम रूप देने और उन्हें स्थापित करने के संबंध में एक अनुभव साझा करने लायक है। वैश्विक स्तर पर टेंडर निकाले गए और तकनीकी जाँच के बाद दो कंपनियों की बोलियाँ खोली गईं। गृह मंत्रालय की रिपोर्ट के आधार पर, जिसमें सुरक्षा जोखिमों को रेखांकित किया गया था, एल–1 को इसमें शामिल नहीं किया गया। यानि केवल एक फर्म एल–2 रह गई। दोनों द्वारा उद्धृत कीमतों में भारी अंतर था। भारी दबाव के बावजूद वित्तीय सलाहकार के रूप में मैंने सलाह दी कि हमें नए सिरे से निविदा निकालनी चाहिए। यदि सरकार का मानना है कि यह बहुत जरूरी है और सार्वजनिक हित के लिए

अत्यंत आवश्यक है, तो एल-2 की कीमत को एल-1 के नीचे लाया जाना चाहिए। मैंने यह भी लिखा कि इस मामले में किसी भी दबाव को दृढ़ता से निपटा जाना चाहिए। फाइल कभी सामने नहीं आई।

मैंने सरकार को यह सुझाव दिया कि राजस्व खुफिया तंत्र को विमानों की खरीद/बिक्री, एरोब्रिज्स और अन्य महंगे उपकरणों के संबंध में जानकारी/खुफिया जानकारी एकत्र करनी चाहिए। चूंकि नागरिक उड्डयन क्षेत्र में विनिर्माण फर्म बेहद सीमित हैं इसलिए ऐसी खरीद और बिक्री पर पूरी तरह से जानकारी/खुफिया जानकारी के बैंक का निर्माण करना बेहतर होगा ताकि यह उचित और निष्पक्ष निर्णय लेने के लिए सहायक हो सके। समझौते में एक 'इंटेग्रिटी क्लॉज' और 'फॉल क्लॉज' का सुझाव भी दिया गया। उम्मीद है सरकार ने इन सुझावों पर विचार किया होगा।

गुणवत्ता पर विवेकपूर्ण व्यय के प्रति अधिकारियों की ओर से उदासीन रवैया देखा जा सकता था। इसका एक जबर्दस्त उदाहरण है 200 रुपये प्रति कार्ड की लागत से तैयार एक निमंत्रण कार्ड। इसे सचिव के ध्यान में लाया गया था और उनके हस्तक्षेप से लागत कम होकर 20 रुपये तक आ गई थी। इसी तरह फिल्म बनाने की एक परियोजना के लिए बोलियों को आमंत्रित किया गया था। इसकी संभावित लागत 30 लाख रुपये आ रही थी। जब इसे फिल्म डिवीजन के लिए भेजा गया तो उन्होंने कहा कि इसे कम करना चाहिए। मंत्री (पर्यटन) द्वारा एक बैठक बुलाई गई और इस पर गर्म चर्चा हुई। बड़ी हस्ती वाले व्यक्तित्वों में से एक ने यह कहा कि वित्तीय सलाहकार पैसे की बात में होशियारी दिखाते हैं और रुपए में बेवकूफी। एक बाहरी व्यक्ति की यह टिप्पणी अपमानजनक थी और उसे बताया जाना चाहिए कि रुपए की ताकत एक-एक पैसे की ताकत और एक-एक पैसे के संचय पर ही बनती है और इस कारण इसे कूड़ेदान में नहीं फेंका जा सकता। जहाँ तक मुझे याद है लागत को काफी हद तक कम किया गया।

अध्याय-३२

सचिव, संसदीय मामले, भारत सरकार

(अक्टूबर 2006-जून 2007)

भारतीय न केवल तर्कवादी हैं बल्कि हर चीज में राजनीति देखते हैं और समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भूल जाते हैं।

भारत सरकार में मनोनयन प्रणाली की बहुत चर्चा होती है। एक व्यक्ति अपने कैरियर के विभिन्न चरणों में संयुक्त सचिव, अपर सचिव और सचिव जैसे पदों पर मनोनीत होता है। हालांकि कैरियर के विकास के दृष्टिकोण से यह महत्त्वपूर्ण है, पर इस मामले में अब तक प्रचलित प्रणाली अपारदर्शी, गुप्त और कई बार रहस्यमय प्रतीत होती है। हालाँकि मुझे किसी भी स्तर पर मनोनयन में किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा, फिर भी मैंने महसूस किया है कि इसे और अधिक पारदर्शी बनाने के लिए तंत्र में सकारात्मक बदलाव की आवश्यकता है। मनोनयन के मानदंड रहस्यपूर्ण हैं। वे कभी भी वेबसाइट पर पोस्ट नहीं किए जाते हैं। समय-समय पर मानदंड बदलते रहते हैं और जब किसी अधिकारी को सूचीबद्ध नहीं किया जाता है तो उसे कारणों के बारे में सूचित नहीं किया जाता है। इस तरह की प्रणाली स्वाभाविक रूप से सिविल सेवा में कड़वाहट और हतोत्साह उत्पन्न करती है। सरकार इसे संघ लोक सेवा आयोग से संबद्ध करने के बारे में सोच सकती है, जो संस्था अपनी ईमानदारी और विश्वसनीयता के लिए जानी जाती है। प्रशासन में दक्षता सुनिश्चित करने के लिए मनोनयन की अपारदर्शी प्रक्रिया और उसके बाद पोस्टिंग की प्रणाली को पारदर्शी बनाया जाना चाहिए।

31 अक्टूबर, 2006 को संसदीय कार्य सचिव के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मैंने कैबिनेट सचिव को फोन किया। उन्होंने शायद सोचा कि मैं पोस्टिंग बदलने के लिए अनुरोध करने आया हूँ। जब उन्होंने मुझसे मुलाकात के उद्देश्य के बारे में पूछा तो मैंने कहा कि यह सिर्फ एक शिष्टाचार मुलाकात थी। वे हैरान नजर आए। अपने जीवन में कभी भी मैंने अपने स्थानांतरण के संबंध में सरकार

के आदेश की अवहेलना नहीं की। जब भी मेरा स्थानांतरण आदेश आया था, मुझे कार्यभार सौंपने और नए पदभार को ग्रहण करने में सिर्फ एक मिनट का समय लगा।

एक समय मेरे मंत्री ने मेरी अनुपस्थिति के दौरान संयुक्त सचिव को बजट सत्र के दौरान उपहार प्रदान करने का निर्देश दिया। जब संयुक्त सचिव ने मुझसे इसका उल्लेख किया तो मैंने इस संबंध में पहले की मिसालें और इसके वित्तीय पक्ष के बारे में पूछा। जब संयुक्त सचिव ने कहा कि इस तरह की कोई मिसाल नहीं है और वित्तीय प्रभाव कुछ करोड़ के हो सकते हैं तो मैं इस जानकारी के साथ मंत्री के पास गया। जब इन तथ्यों को मैं उनके संज्ञान में लाया तो उन्होंने इस पर विचार किया और मुझे निर्देश दिया कि मैं उनके निर्देश पर आगे न बढ़ूँ। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और सूचना के अनुसार लिए गए उनके निर्णय की सराहना की।

यह मेरा विश्वास रहा है कि यदि मंत्री के संज्ञान में उचित तथ्यों को स्पष्ट रूप से रखा जाता है, तो राजनीतिक नेतृत्व एक सिविल सेवक की तर्कसंगत सलाह लेने के लिए विवश होता है। संसदीय कार्य मंत्रालय एक दिलचस्प मंत्रालय है। जब संसद सत्र होता है, तो उसे चौबीसों घंटे काम करना पड़ता है लेकिन जब सत्र नहीं होता है, तो अध्ययन करने और सोचने के लिए बहुत खाली समय होता है। इस पोस्टिंग ने मुझे संसद के कामकाज, बहस और सदन के कामकाज के तरीके को देखने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया। यहाँ मुझे विभिन्न समितियों के कामकाज के बारे में भी जानकारी मिली। संसदीय कार्यवाही में बार-बार व्यवधान चिंता का विषय है और इन्हें विधायी निकायों और अन्य राष्ट्रीय मंचों में व्यक्त किया गया है। संसद और विधानसभाओं की गरिमा बनाए रखने के लिए समय-समय पर प्रस्ताव भी पारित किए जाते हैं। लेकिन इन सभी प्रयासों के बावजूद इस पहलू में बहुत सुधार नहीं हो पाया है।

श्री जगमोहन ने अपनी पुस्तक, **'द सोल एंड स्ट्रक्चर ऑफ द गवर्नेंस इन इंडिया'**, में उल्लेख किया है कि ऐसे देश में सुशासन कैसे हो सकता है जहाँ सांसद अपने आप को एक व्यवस्थित और अनुशासित तरीके से संचालित करने में असमर्थ हैं और जहाँ देश के सर्वोच्च विचारशील निकाय में प्रतिनिधियों द्वारा दिए गए वचन, देश के समग्र हित के लिए और स्वयं लोगों के सामान्य कल्याण का कोई आदर किए बिना तुरंत ही केवल संकीर्ण मतभेदों के आधार पर टूट जाते

हैं। जॉन स्टुअर्ट मिल प्रतिनिधि सरकार पर अपने क्लॉसिक निबंध में कितने सही दिखते हैं जब वे कहते हैं कि ''एक प्रतिनिधि विधानसभा सबके हितों के लिए कैसे काम कर सकती है अगर उसके सदस्यों को खरीदा जा सकता है या उनके स्वभाव की उत्कृष्टता, सार्वजनिक अनुशासन या निजी आत्म नियंत्रण, उन्हें शांत विचार-विमर्श में असमर्थ बना देता है।''

भारतीय न केवल तर्कवादी हैं बल्कि वे हर चीज में राजनीति ले आते हैं। मृतकों पर, भाषा पर, कैंपस की घटनाओं पर, जातियों और धर्मों पर और यहाँ तक कि हमारी विरासत पर भी राजनीति होती है। राजनीति समाज के लिए अच्छी है लेकिन यह राष्ट्रीय हितों की कीमत पर नहीं होनी चाहिए। जबकि संसदीय कार्यवाही समय-समय पर बाधित होती है, मीडिया और पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों में जीवंत बहस देखने को मिलती है। इस शोर और हलचल के बाद, हम पाते हैं कि संसद के कामकाज को बेहतर बनाने के लिए बुद्धिजीवियों और संवैधानिक चिंतकों के विभिन्न सुझावों पर कार्रवाई नहीं की जा रही है।

मैं अक्सर संघ लोक सेवा आयोग की तर्ज पर एक संघ राजनीतिक सेवा आयोग के निर्माण के विचार पर सोचता हूँ। कैरियर विकल्प के रूप में राजनीतिक सेवा का चुनाव करने के इच्छुक लोगों को आयोग द्वारा आयोजित एक लिखित परीक्षा उत्तीर्ण करनी चाहिए। परीक्षा को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने वाले लोगों के पास ही चुनाव लड़ने का अवसर हो। हमें एक उचित पाठ्यक्रम तैयार करना चाहिए। चुनाव के बाद, सफल उम्मीदवारों को कम से कम एक वर्ष के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम से गुजरना होगा। अंत में, उन्हें एक सदस्य के रूप में शपथ लेने के लिए एक परीक्षा उत्तीर्ण करनी पड़े। जब मैंने दोस्तों के समक्ष इस योजना का खुलासा किया तो उन्होंने इसे अत्यधिक अभिजात्य, पूरी तरह से अव्यावहारिक और काल्पनिक करार दिया जिसे इस अपूर्ण दुनिया में लागू नहीं किया जा सकता।

अध्याय-३३

मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश

(जुलाई 2007-मई 2008)

जीवन में अधिक महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि आप जीवन के क्रीज पर कितने समय तक टिके हैं, बल्कि यह अधिक महत्त्वपूर्ण है कि आपने जीवन में कितनी तेजी से रन बनाए हैं। हमेशा 'जीवन के सिद्धांतों' को बनाए रखें जो नौकरी से हासिल सांसारिक आर्थिक लाभ से अधिक महत्त्वपूर्ण हों।

राष्ट्रपति चुनाव आसन्न था और मंत्रालय में व्यस्तता थी। एक बैठक में भाग लेने के बाद जब मैं अपने कमरे में वापस आया तो मुझे मेरे पीपीएस ने बताया कि यूपी के मुख्यमंत्री कार्यालय से तीन टेलीफोन कॉल आए थे। शाम को यूपी कैबिनेट सचिव ने मुझे टेलीफोन पर बताया कि मुख्य सचिव, यूपी के पद के लिए मेरे नाम पर विचार किया जा रहा है। उन्होंने मेरी इच्छा जाननी चाहिए लेकिन मैंने मना कर दिया। यह सुनकर उन्होंने कहा, ''प्रशांतजी, नव-निर्वाचित सरकार पूर्ण बहुमत में है और विकास तथा कानून-व्यवस्था के मोर्चे पर सकारात्मक बदलाव लाने के लिए अच्छे अधिकारियों की तलाश में है। एक अच्छी प्रतिष्ठा के साथ एक उत्कृष्ट अधिकारी के रूप में मुख्यमंत्री ने आप पर विश्वास किया है।'' मैंने विनम्रता से मना कर दिया और कहा, ''मैं भारत सरकार के सचिव के रूप में अपने कार्यकाल से प्रसन्न हूँ और मन की पूर्ण शांति का आनंद ले रहा हूँ। यूपी की राजनीति अप्रत्याशित है, मुझे अपने मन की शांति खोना पसंद नहीं है। इसके अलावा, केंद्र में अनुभव अधिक दिलचस्प और चुनौतीपूर्ण है।'' अगली सुबह नियुक्ति सचिव (यूपी) ने मुझसे संपर्क किया और मुझे यूपी में कार्यभार संभालने के लिए राजी करने की कोशिश की और मैंने फिर मना कर दिया। यूपी कैडर के अधिकारियों का एक समूह अगली शाम मेरे आवास पर आया और मुझे प्रशासन के हित में तथा मुख्य सचिव पद की गरिमा को बहाल करने के उद्देश्य से प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए मनाने का प्रयास किया। उनके तर्क कुछ मजबूत थे लेकिन मैंने कोई वादा नहीं किया। मैंने अपने वरिष्ठों और शुभचिंतकों श्री नृपेन्द्र मिश्रा, श्री सुशील त्रिपाठी और श्री योगेन्द्र

मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश का पदभार ग्रहण करते हुए

नारायण से बात की और उन सभी ने मुझे इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए मना लिया। यूपी के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री ने मुझसे व्यक्तिगत रूप से टेलीफोन पर बात की और कहा, ''आप बहुत अच्छे अधिकारी हैं और आप भारत सरकार में कई वर्षों से काम कर रहे हैं। नई सरकार भी राज्य सरकार की नीतियों को लागू करने के लिए अच्छे अधिकारी चाहती है।'' जब मैंने उनसे विनम्रता से कहा कि मैं भारत सरकार में नियुक्ति से खुश हूँ और यूपी का परिदृश्य अप्रत्याशित रहता है, तो उन्होंने कहा, ''मुझे पता है आप एक ईमानदार अधिकारी हैं और मैं आप पर कुछ भी अवैध करने का दबाव नहीं डालूँगी। इसके अलावा, आपकी पोस्टिंग सामाजिक इंजीनियरिंग की हमारी अवधारणा में भी फिट होगी।'' इस आश्वासन के बाद मैंने इस चुनौती को ग्रहण करने की इच्छा व्यक्त की।

मुख्यमंत्री ने लखनऊ में एक संवाददाता सम्मेलन में मेरे नाम की घोषणा की। इसके बाद मुझे देश के सबसे महत्त्वपूर्ण राज्य में मुख्य सचिव के रूप में तैनात होने के लिए बधाई देने वाले फोन कॉल की बाढ़ आ गई। मुझे 1 जुलाई 2007 को पदभार ग्रहण करना था लेकिन इससे पहले मैं अपने प्रिय स्थान यानी वशिष्ठ गुफा में स्वामीजी और भगवान शिव के आशीर्वाद पाने के लिए गया। स्वामीजी खुश थे लेकिन मुझे सावधान रहने की हिदायत दी। मुख्यमंत्री किसी काम से

दिल्ली आयीं थीं और मुझे अगली सुबह उनसे मिलने के लिए कहा गया। जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने मेरी योजना के बारे में पूछताछ की और जब मैंने कहा कि मैंने इंडियन एयरलाइंस द्वारा लखनऊ जाने के लिए एक टिकट बुक किया था तो वह अपने अदम्य अंदाज में थीं और मेरे विरोध के बावजूद सचिव को मुझे राजकीय विमान से ले जाने का निर्देश दिया। इसलिए अगले दिन सुबह लगभग 10 बजे मैं राजकीय विमान से लखनऊ के लिए रवाना हुआ।

लखनऊ उतरने के तुरंत बाद यह आयोजन शुरू हो गया। मुझे नौकरशाही के कुचक्र का भी अनुभव मिल गया। स्टाफ कार में जाते समय मुख्य सचिव का स्टाफ अधिकारी दौड़ता हुआ मेरे पास आया। वह मुझे कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं के बारे में बताना चाहता था। उसने कहा, ''सर, कुछ तथ्यों को आपके संज्ञान में लाना मेरा कर्तव्य है। मेरी जानकारी के अनुसार, कैबिनेट सचिव मुख्य सचिव के कमरे पर कब्जा करने के लिए काफी उत्सुक हैं। आपको किसी अन्य कमरे में स्थानांतरित किए जाने की संभावना है। कुछ दिनों पहले ही मरम्मत और नवीनीकरण के लिए सी.एस. के कमरे का फर्श खोदा गया था। इस कारण आपको किसी अन्य कमरे में स्थानांतरित करने के लिए विवश होना होगा। वास्तव में, इसी अनुरूप आप से अनुरोध भी किया जाएगा।'' मैं हतोत्साहित नहीं था लेकिन कुचक्र को समझ सकता था। वीवीआईपी अतिथिगृह में पहुँचने पर मैंने श्री जे.एस. दीपक (नियुक्ति सचिव) और श्री जी.बी. पटनायक, अपने कैडर के दो उत्कृष्ट अधिकारियों को प्रतिक्रिया देने के लिए बुलाया। उन दोनों ने मुझे एक ही तरह की जानकारी दी। वहाँ एक जटिल स्थिति बनी हुई थी, मैंने इसे खत्म करने की रणनीति बनाई। मैंने मुख्य सचिव कार्यालय के समीपवर्ती कॉन्फ्रेंस हॉल में कार्यभार संभालने का निर्णय लिया। नियत समय पर मैं बैठक में गया और कुछ महत्त्वपूर्ण अधिकारियों की उपस्थिति में कार्यभार संभाला। मीडिया को भी आमंत्रित किया गया था। मीडिया ने दो सवाल पूछे–एक यह कि आप कैबिनेट सचिव नामक सुपर मुख्य सचिव के पद सृजन को कैसे देखते हैं? दूसरा यह कि संक्षेप में आपकी नीति क्या होगी? मैं समझ सकता था कि वे मुझे कुछ ऐसा बोलने के लिए प्रेरित करने की कोशिश कर रहे थे ताकि मुख्य सचिव और कैबिनेट सचिव के बीच विवाद और दरार पैदा हो। मैंने कहा, ''हम सभी एक ही संगठन में भागीदार हैं। वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए हम सभी को एक टीम के रूप में काम करना होगा। कैबिनेट सचिव के पद के सृजन से एक और सदस्य टीम में जुड़ा है। मुझे यकीन है कि वह टीम भावना के साथ

काम करेंगे।'' नीति के मामले में मैंने कहा:

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

यह 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' की ही भाँति है, जो हमारे मुख्यमंत्री की भी नीति है।

शाम को मेरे स्वागत के लिए और पूर्व मुख्य सचिव को विदाई देने के लिए सिविल सेवा संस्थान द्वारा एक समारोह आयोजित किया गया था। रात के खाने के दौरान मैंने प्रमुख सचिव (सचिवालय प्रशासन) को अपनी बात कही, जिन्होंने कार्यालय में खुदाई के बारे में अनभिज्ञ होने का नाटक किया। मैंने उन्हें बताया कि प्रमुख सचिव के रूप में उन्हें इस प्रगति का पता होना चाहिए था और वह अपने कर्तव्य में विफल हो गए थे। सचिवालय प्रशासन के अधिकारी अगले दिन मेरे पास आए और मुझसे ग्राउंड फ्लोर के एक कमरे में शिफ्ट होने का अनुरोध किया। मैंने उन्हें तीन या चार दिनों में काम खत्म करने के लिए कहा और यह भी कहा कि मुझे कॉन्फ्रेंस हॉल से काम करने में कोई कठिनाई नहीं है। इस प्रकार मुख्य सचिव के कमरे को हड़पने की उनकी योजना विफल हो गई। इस स्थिति को इतनी चतुराई से संभाला गया कि कोई हलचल भी नहीं हुई।

कैबिनेट बैठक के लिए गुरुवार का दिन तय किया गया था। मुझे सूचित किया गया था कि कैबिनेट सचिव के पद के सृजन के बाद, मेरे पूर्ववर्ती मंत्रिमंडल की बैठक में शामिल नहीं होते थे। उन्हें आमंत्रित नहीं किया जाता था। पदभार संभालने के बाद यह काफी आश्चर्यजनक था कि मुझे पहली कैबिनेट बैठक में सूचित या आमंत्रित नहीं किया गया था। ऐसा प्रतीत हुआ कि यह शक्ति का एक समानान्तर केंद्र निर्मित करने के लिए जानबूझकर किया गया एक प्रयास है। मुख्यमंत्री ने इसे गंभीरता से लिया और तत्कालीन कैबिनेट सचिव को फटकार लगाई। मुख्यमंत्री ने मुझे अपने आवास पर बुलाया और प्रकरण के बारे में पूछताछ की और जब मैंने पूरी कहानी सुनाई तो उन्होंने कैबिनेट सचिव को ऐसी कोई गलती नहीं करने का निर्देश दिया और इस प्रकार संस्था की प्रतिष्ठा को बहाल किया।

मुख्यमंत्री द्वारा पहली समीक्षा बैठक अगस्त, 2007 में की जाने वाली थी लेकिन बैठक से ठीक एक दिन पहले आधी रात को कैबिनेट सचिव मेरे आवास पर आए। वे उन अधिकारियों की सूची को अंतिम रूप देना चाहते थे, जिन्हें

बैठक के बाद निलंबित किया जाना था। मैं हैरान था और मैंने इनकार कर दिया क्योंकि इस तरह के अभ्यास से उन अधिकारियों को अपदस्थ कर दिया जाएगा जिन्हें परिणाम दिखाने के लिए पर्याप्त समय नहीं दिया गया था क्योंकि वित्तीय मंजूरी अगस्त के पहले सप्ताह में जारी की गई थी। इसके अलावा समीक्षा बैठक से पहले ही निलंबन के लिए अधिकारियों को लक्षित करने का अभ्यास सुशासन के सभी सिद्धांतों के प्रतिकूल था। कुछ समय पहले से ही यूपी में सत्ता परिवर्तन के साथ अफसरों को सस्पेंड करने की प्रथा बन गई थी। एक उदाहरण ऐसा है जब मुख्यमंत्री ने औचक निरीक्षण किया और पता चला कि एक नवनिर्मित सड़क की कुछ ईंटें अलग-अलग हो गई थीं। गुस्से में उन्होंने मंडलायुक्त को निलंबित करने का आदेश दिया। यह खबर तुरंत ही मीडिया के माध्यम से प्रसारित हो गई। मुझे उस शाम टेलीविजन से इस निलंबन का पता चला। मुझे आश्चर्य हुआ और मैंने मंडलायुक्त से इसकी वजह पूछी। उन्होंने समझाया, ''सर, मुझे भी टीवी समाचार से ही अपने निलंबन का पता चला है और सच कहूँ तो मुझे भी इसका कारण नहीं पता है।'' मैंने उन्हें आवश्यक जानकारी एकत्र करने की सलाह दी। एक घंटे के बाद उन्होंने मुझे सूचित किया कि ईंटों के गायब होने के कारण उन्हें निलंबित कर दिया गया था। निलंबन की घोषणा को मुख्यमंत्री द्वारा फाइल में औपचारिक रूप से अनुमोदित किया जाना था। यह फाइल मेरे पास आई जिसमें उन परिस्थितियों का कोई उल्लेख नहीं था जिनमें एक वरिष्ठ स्तर के अधिकारी को निलंबित कर दिया गया था। मैंने नोट किया कि उक्त व्यक्ति अपने कैरियर में बिना किसी दोष के एक अच्छा अधिकारी है। वे एकाध साल में सेवानिवृत्त होने वाले हैं और यदि इस तरह के एक वरिष्ठ अधिकारी को इस प्रकार के कारण से निलंबित किया जा सकता है तो कोई भी अधिकारी निलंबन से बच नहीं सकता है। मैंने मुख्यमंत्री से मामले पर पुनर्विचार करने का अनुरोध किया। उन्होंने मेरी सलाह मान ली और अधिकारी को तत्काल बहाल कर दिया गया और उसे किसी अन्य विभाग में तैनात कर दिया गया। लेकिन इस प्रक्रिया में उन अधिकारी की प्रतिष्ठा को काफी नुकसान पहुँचा। ऐसे कई उदाहरण थे जिनमें लचर कारणों के आधार पर वरिष्ठ अधिकारियों को निलंबित और प्रताड़ित किया गया। मैंने नियुक्ति सचिव, कैबिनेट सचिव और मुख्यमंत्री के साथ इस मामले पर चर्चा की और इस तरह के निलंबन के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए। नतीजतन निलंबन की होड़ में काफी कमी आई। एक मामले में जब मैंने उच्च-स्तरीय अधिकारी को निलंबित न करने के लिए

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ

मुख्यमंत्री से निवेदन किया तो उन्होंने व्यंग्यात्मक रूप से कहा, ''मुख्य सचिव साहब, आप बहुत दयालु हैं और किसी भी अधिकारी के निलंबन की सिफारिश नहीं करते हैं।'' इस तरह के तानों के बावजूद मैं अपने सिद्धांतों पर कायम रहा। मैंने मुख्यमंत्री की नाराजगी का जोखिम मोल लेते हुए भी अच्छे और ईमानदार अधिकारियों की रक्षा करने की पूरी कोशिश की।

एक अन्य मामले में मुख्यमंत्री एक वरिष्ठ प्रमुख सचिव को निलंबित करना चाहती थीं क्योंकि वह उन खबरों की वजह से नाराज थीं कि बुंदेलखंड में सूखे की स्थिति के बावजूद अधिकारी अपने आवास पर एक पार्टी और फैशन परेड आयोजित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने मुझे रात 10.00 बजे अपने निवास पर बुलाया जहाँ कुछ वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे और अधिकारी को निलंबित करना चाहते थे। मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे उनका पक्ष जाने बिना और स्पष्टीकरण मांगे बिना ऐसा न करें। अफसरों ने भी मेरे विचार का समर्थन किया। मुख्यमंत्री ने अंततः अपना विचार बदल दिया और निर्देश दिया कि अधिकारी को दूसरे विभाग में स्थानांतरित कर दिया जाए। उसी झटके में उन्होंने मुझसे पूछ लिया, ''मुख्य सचिव साहब, क्या आप भी अपने आवास पर ऐसी पार्टियों का आयोजन

करते हैं?'' मैंने जवाब दिया, ''मैडम, जब भी कोई मेरे आवास पर आएगा, तो उसे शंख की ध्वनि, मंत्रों के पाठ और भजनों की गूंज के अलावा कुछ भी नहीं सुनाई देगा।'' उन्होंने कहा, ''लोग कहते हैं कि आप बहुत धार्मिक व्यक्ति हैं।'' यह अक्सर आरोप लगाया जाता है कि वे अधिकारियों के साथ अपमानजनक व्यवहार किया करती थीं लेकिन वह मेरे प्रति कभी कठोर नहीं रहीं और हमेशा मेरे साथ शिष्टाचार से पेश आती रहीं।

मुझे पूरा यकीन था कि मुख्य सचिव की नौकरी आसान नहीं है। यूपी की राजनीति की जटिलता, साथ ही प्रशासनिक और राजनीतिक कुचक्र और जातिवाद के मामले व 1989 से राज्य में जारी राजनीतिक अस्थिरता सब मिलकर स्थिति को बहुत चुनौतीपूर्ण बना रहे थे। शुरुआत से ही मैं सिद्धांतों और प्रशासनिक नैतिकता का पालन करने के प्रति कृतसंकल्प था। मैंने एक खाका तैयार किया और यह अनुमान लगाया कि पहले तीन महीने किसी खास कठिनाई का सामना नहीं होगा, अगले तीन महीने एक हद तक सहन करने योग्य कठिनाइयाँ आएँगी, अगले तीन महीने मतभेद अपने चरम पर होंगे और अंतिम तीन महीने टिके रहने के लिए भी संघर्ष करना होगा। मैंने जैसी कल्पना की थी स्थितियाँ वैसे ही विकसित हुईं। पहले तीन महीनों में, राजनीतिक नेतृत्व ने मेरी सलाह सुनी और चीजें सुचारू रूप से होती चली गईं। कार्रवाई की योजनाएँ और कार्यान्वयन के चरणों का खाका तैयार किया गया, प्रशासन की निगरानी करने और उसे कारगर बनाने के लिए नियमित रूप से विभागीय बैठकें आयोजित की गईं। हर समीक्षा बैठक के बाद नीतियों पर चर्चा हुई। मैंने मासिक अर्द्धशासकीय पत्र लिखने की प्रणाली शुरू की जो सभी जिला मजिस्ट्रेट और आयुक्तों को लिखे जाते थे और जिनमें नीति, पहल, कार्यान्वयन की स्थिति और अधिकारियों से अपेक्षाओं पर प्रकाश डाला जाता था। मैं विभागों की दैनिक समीक्षा बैठकें भी करता था। सरकार को सलाह देने के लिए एक चिंतक समूह बनाया गया था। औचक निरीक्षण के लिए समूह बना जिसमें वरिष्ठ अधिकारी और यहाँ तक कि मुख्यमंत्री भी शामिल थीं। इन समीक्षा बैठकों और निरीक्षणों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता था।

उत्साह के शुरुआती समय के बाद, मैंने प्रशासन में कुछ सुविधाओं के अभाव को महसूस किया। कई महत्त्वपूर्ण फाइलें लंबे समय से मंत्रियों के यहाँ अटकी हुई थीं, उन्हें सबसे अधिक इसी गुण के लिए जाना जाता था। मुझे सरकारी विभागों के कामकाज के बारे में नकारात्मक प्रतिक्रिया मिलनी शुरू हो गई। मैंने मुख्यमंत्री से मुलाकात की और उन्हें स्थिति के बारे में जानकारी दी

और उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि इन फाइलों को जल्द ही निपटा लिया जाएगा। वास्तव में कुछ दिनों के भीतर ही सभी लंबित फाइलें निपटा ली गईं। यह दर्शाता है कि वे एक निर्विवाद नेता थीं जिनके फरमानों की अवज्ञा की हिम्मत किसी में नहीं थी। समय-समय पर, मैंने उन्हें सरकार की लोकप्रियता और छवि में गिरावट के बारे में भी बताया। कई अवसरों पर मैं सत्ता के विरोध में भी आया। कई मुद्दों पर मेरी गंभीर असहमति थी, विशेष रूप से यूपी कंट्रोल ऑफ ऑर्गेनाइज्ड क्राइम (संगठित अपराध नियंत्रण) के प्रस्ताव पर, सभी आईएएस अधिकारियों के सीआर लिखने के लिए कैबिनेट सेक्रेटरी को सशक्त करने का प्रस्ताव, गंगा एक्सप्रेसवे का निर्माण और एक निजी विश्वविद्यालय स्थापना के लिए लगभग 70 एकड़ जमीन लीज पर देना आदि। संगठित अपराध पर नियंत्रण के प्रस्ताव में अनुशासनहीन अधिकारियों के लिए निगरानी, फोन टैपिंग और कठोर सजा से जुड़े कई कठोर प्रावधान थे जिन पर मुझे गंभीर आपत्ति थी। अगर मेरी सलाह पर ध्यान न दिया जाए तो मैंने इस्तीफा देने की ठान ली थी। मैंने अपनी भावनाओं को व्यक्त किया और इसका एक जबर्दस्त प्रभाव पड़ा।

एक शाम जब मैं फाइलों का निस्तारण कर रहा था, नियुक्ति सचिव एक फाइल के साथ आए और कहा, ''सर, यह फाइल कैबिनेट सचिव को सभी आईएएस अधिकारियों (मुख्य सचिव को छोड़कर) के सीआर लिखने की शक्ति देने के संबंध में है और इस मामले पर मुख्यमंत्री के साथ चर्चा हो चुकी है।'' मैंने जवाब दिया, ''श्रीमान नियुक्ति सचिव, प्रस्ताव अवैध होने के साथ साथ खुराफाती भी है और जब तक मैं मुख्य सचिव हूँ, मैं इस तरह के प्रस्ताव का पक्षकार नहीं रहूँगा। अगर यह मंजूर हो जाता है तो मैं तुरंत पद छोड़ दूँगा।'' उन्होंने मुझसे पूछा, ''सर, मैं कैबिनेट सचिव और मुख्यमंत्री से क्या कहूँ?'' मैंने उनसे कहा कि मैंने जो कुछ भी कहा है आप उन्हें वही बताएँ। मैंने फाइल पर हस्ताक्षर नहीं किए और प्रस्ताव आगे नहीं बढ़ा।

गंगा एक्सप्रेसवे एक महत्त्वाकांक्षी योजना थी, जिसकी परियोजना लागत 40,000 करोड़ रुपये से अधिक थी। मुझे इसके विवरण या वित्तीय निहितार्थ के बारे में सलाह नहीं दी गई थी। कैबिनेट की बैठक से ठीक दो घंटे पहले, कैबिनेट सचिव व्यक्तिगत रूप से फाइल लेकर आए और मुझसे इसे देखने का अनुरोध किया। मैंने इनकार कर दिया क्योंकि इस तरह के एक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव की जाँच के लिए समय कम था। सबसे दिलचस्प बात यह थी कि प्रस्ताव को बाद में सक्षम निकाय ने एक शर्त के साथ मंजूरी दी थी-शर्त यह थी कि मुख्य सचिव की

अध्यक्षता में सचिवों की एक समिति भी इसकी जाँच करे। अनुमोदन के बाद इसमें पुनः जाँच जैसा कुछ शेष नहीं था। निर्णय के बारे में मुझे लिखित रूप में सूचित किया गया था। निर्णय के अनुरूप मैंने संबंधित सचिवों और तकनीकी विशेषज्ञों की 10 दिनों तक लगातार बैठक की। घंटों तक हम विभिन्न प्रावधानों पर विस्तार से चर्चा करते थे। इस तरह की चर्चाओं के बाद, समिति ने दूरगामी संशोधनों का सुझाव दिया। कैबिनेट सचिव को इसकी खबर लगी और वे बोली लगाने वाले के साथ मेरी बैठक में आए। बोली लगाने वाले ने शिकायत की, ''सर, आप हमें इस तरह के संशोधनों और बदलावों का सुझाव देकर फाँसी पर चढ़ा रहे हैं।'' मैंने जवाब दिया, ''श्रीमान बोलीदाता, आपके पास इस बैठक में शामिल होने का कोई अधिकार नहीं है। इसके अलावा, जब तक पीके मिश्रा मुख्य सचिव रहेंगे, वह यह सुनिश्चित करेंगे कि यूपी सरकार सुरक्षित रहे और उसे कोई नुकसान न हो।''

इस प्रकार की सतर्कता और सिद्धांतों से चिपके रहने के कारण कई बार ऐसी शर्मनाक स्थितियाँ टल गईं। एक बार मुझे कलकत्ता में अपने रिश्तेदार के विवाह समारोह में शामिल होना था। मैंने 3 दिनों की आकस्मिक छुट्टी के लिए आवेदन किया। मैंने कलकत्ता के लिए एक व्यावसायिक उड़ान से अपना टिकट बुक किया था। कैबिनेट सचिव ने मुझे यह कहने के लिए फोन किया कि मैं वहाँ स्थित यूपी सरकार के गेस्ट हाउस की स्थिति और अवस्था की समीक्षा करने के लिए राज्य सरकार के विमान से कलकत्ता जा सकता हूँ। इस प्रकार यह एक आधिकारिक यात्रा होगी और तब राज्य के विमान के उपयोग का औचित्य हो सकता है। मैंने इस विचार पर हँसते हुए उन्हें बताया कि निजी उद्देश्य के लिए सरकारी विमान का उपयोग करना अत्यधिक अनैतिक होगा। इसके अलावा केवल राजकीय विमान के उपयोग को सही ठहराने के लिए यदि मैं यूपी सरकार के गेस्ट हाउस की समीक्षा करूँगा तो मैं खुद को ही हंसी का पात्र बना लूँगा। जब मैं कलकत्ता से लौटा तो मेरे पीपीएस ने मेरे हस्ताक्षर के लिए एक टीए बिल रखा और जब मैंने इसके बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने इसे आधिकारिक यात्रा के रूप में मंजूरी दे दी है और इसलिए मुझे इसकी प्रतिपूर्ति की जाएगी। मैं क्रोधित हो गया और इस पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। यह एक छोटी सी घटना थी पर यदि अगर कोई आधिकारिक विमान के दुरुपयोग का आरोप लगाता तो यह घटना मुझे संकट में डाल सकती थी।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि कैबिनेट सचिव के असंवैधानिक पद के सृजन के कारण एक समानांतर सत्ता केंद्र बन गया। इससे

न केवल नौकरशाही का मनोबल गिरा, बल्कि जनता को भी एक गलत संकेत गया। यहाँ स्थापित मानदंडों और प्रक्रियाओं का कोई सम्मान नहीं था और सब कुछ राजनीतिक नफा-नुकसान के आधार पर संचालित होता था। यहाँ तक कि कई केंद्रीय परियोजनाएँ भी बाधित हुईं। नौकरशाही में समूह और गुट थे और मैं नौकरशाही के एक अवधारणात्मक राजनीतिकरण को महसूस कर सकता था। यह प्रवृत्ति हर राज्य के लिए अशुभ है। नौकरशाही का राजनीतिकरण, राजनीति का अपराधीकरण और नौकरशाहों, कॉरपोरेट्स, राजनेताओं, पुलिस और असामाजिक बस्तियों के बीच अपवित्र सांठगांठ राष्ट्रीय एकता और यहाँ तक कि इसके अस्तित्व के लिए एक गंभीर खतरा बन गया है।

तमाम चीजों के बावजूद, मुझे कहना होगा कि सरकार ने गति, स्पष्टता, दृढ़ता और दक्षता के साथ काम किया, हालांकि भ्रष्टाचार के आरोप भी लगे। राजनीतिक स्थिरता, निर्विवाद नेतृत्व, आदेशों में एकरूपता, त्वरित निर्णय, कानून और व्यवस्था की स्थिति को संभालने में दृढ़ता, खूंखार डकैतों का सफाया, अंबेडकर गाँवों का विकास, लखनऊ और नोएडा में शहरी विकास गतिविधियों का होना, बहुत विशाल स्मारकों का निर्माण, ई-गवर्नेंस में की गई पहल, कम्प्यूटरीकरण, ई-टेंडरिंग, छात्रवृत्ति का कंप्यूटरीकरण, KAVAL शहरों में मेट्रो के लिए सर्वेक्षण, ग्रेटर नोएडा के लिए मेट्रो लिंक लेने का निर्णय, बुंदेलखंड में सूखे की स्थिति से निपटने की पहल, गंगा एक्सप्रेसवे निर्माण का प्रस्ताव, बुंदेलखंड में कृत्रिम वर्षा पैदा करने की संभावना के बारे में अध्ययन करने और रिपोर्ट करने के लिए अंतरराष्ट्रीय ख्याति के वैज्ञानिकों को आमंत्रित करना, सूखा प्रभावित क्षेत्रों में खाद्य और चारा बैंकों की अवधारणा को सामने लाना और 300 मामलों में अभियोजन स्वीकृति प्रदान करना आदि सकारात्मक पहलू रहे। सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कानून और व्यवस्था के क्षेत्र में थी जिसे दृढ़ता और तेजी के साथ नियंत्रित किया गया था। गुंडे, लुटेरे और बुरे तत्वों पर नियंत्रण किया गया था। लखनऊ, नोएडा और ग्रेटर नोएडा का शहरी विकास ऐसा था जो इन शहरों के कुछ क्षेत्रों से होकर गुजरता उसे यह आश्चर्य हो सकता था कि क्या वह एक विदेशी देश में है। 1989 से यूपी की त्रासदी यह थी कि यह राजनीतिक अस्थिरता से ग्रस्त रहा था यह क्रम 2007 में टूटा। मुख्य रूप से यूपी में समाजवादी पार्टी या बहुजन समाज पार्टी ने शासन किया; छोटी अवधि के लिए बीजेपी का शासन अपवाद रहा। जब बसपा सत्ता में थी तब यह महसूस किया गया था कि पिछली सरकार बेहतर थी और विडंबना यह है कि जब सपा सत्ता में आई थी तब

यह महसूस किया गया था कि बसपा शासन बेहतर था। यह एक अजीबोगरीब स्थिति है जहाँ दो महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय दल यूपी के जटिल राजनीतिक परिदृश्य में कुछ खास नहीं कर पाए हैं। अंततः यह राज्य के लोगों को तय करना है कि किस रास्ते पर जाना है। मुझे यकीन है केवल राजनीतिक सतर्कता और मतदाताओं की परिपक्वता ही प्रबुद्ध नेतृत्व और सुशासन के लिए मतदान करके एक स्थिर और समृद्ध यूपी का निर्माण सुनिश्चित करेगी। वास्तव में यूपी की जनता ने हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव में अपनी राजनीतिक परिपक्वता और समझदारी दिखाई है।

न्यायपालिका के साथ मेरे अच्छे संबंध थे क्योंकि मैं न्यायपालिका द्वारा किए गए फैसलों और टिप्पणियों के बारे में गंभीर था और समय-समय पर उनके महत्त्वपूर्ण निर्णयों के कार्यान्वयन की निगरानी करता था। पीडीएस के निराकरण, न्यायालय परिसर की सुरक्षा के लिए धनराशि और उपकरणों की स्थापना और कानपुर सिटी से नवनिर्मित मंडी में दुकानों की शिफ्टिंग जैसे अवसरों पर मैंने महसूस किया कि जब भी अदालतों के सामने सही तथ्य और इनपुट प्रस्तुत किए गए, उन्होंने आवश्यक राहत देने में संकोच नहीं किया। न्यायिक सक्रियता अब देश में एक आम घटना बन गई है। इस तथ्य की सराहना की जा सकती है कि कई अच्छी चीजें हुई हैं और न्यायिक सक्रियता के कारण पर्यावरण, स्वास्थ्य, स्वच्छता और सुरक्षा में कई पहलें की गई हैं। लेकिन न्यायिक अति-सक्रियता या अतिक्रियाशीलता लंबी अवधि के लिए वांछनीय नहीं हो सकती है क्योंकि यह शक्ति के संतुलन और शक्ति के पृथक्करण के सिद्धांत के विरुद्ध है। इसलिए न्यायिक सक्रियता अच्छी और स्वागत योग्य है; न्यायिक अति सक्रियता बुरी चीज है; न्यायिक निष्क्रियता सबसे बुरी स्थिति होगी।

मैंने मुख्य सचिव के रूप में स्थिति में सुधार हेतु अच्छे अधिकारियों की सुरक्षा के लिए, विकास योजनाओं का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए तथा पारदर्शी प्रशासन के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया। हालांकि कैबिनेट सेक्रेटरी के रूप में शक्ति के विभिन्न केंद्र लगातार चलते रहे और बार-बार स्थानान्तरण और पोस्टिंग, निलंबन की होड़, स्थापित मानदंडों और प्रक्रियाओं के प्रति घटता आदर, प्रशासनिक साजिश और नौकरशाही के राजनीतिकरण आदि ने मुझे दुखी और निराश किया। सबसे बड़ी निराशा तब हुई जब एक निजी संगठन को बहुत कम मूल्य पर 70 एकड़ सरकारी भूमि को पट्टे पर देने के लिए सक्षम प्राधिकरण की मंजूरी के लिए एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था। प्रस्ताव में संस्था की सुरक्षा के लिए चारदीवारी आदि के निर्माण के लिए कुछ करोड़ रुपए का

प्रावधान भी था। विधि विभाग और वित्त विभाग को प्रस्ताव पर कोई आपत्ति नहीं थी लेकिन मैं आश्वस्त नहीं था। मैंने अपनी टिप्पणियाँ की जो बहुत सख्त थीं। रात में मुझे मुख्यमंत्री के आवास पर बुलाया गया और मुझसे अपनी टिप्पणियों को बदलने के लिए कहा गया, जिसे मैंने अस्वीकार कर दिया। अगले दिन, मुझे कैबिनेट सचिव और मेरे सहयोगियों से संकेत मिला कि मुझे हटा दिया जाएगा। कैबिनेट सचिव चाहते थे कि मैं मुख्यमंत्री से मिलने उनके साथ जाऊँ, लेकिन मैंने इसे इस आधार पर अस्वीकार कर दिया कि मुझे मुख्यमंत्री ने उनसे मिलने के लिए नहीं कहा था। मुझे बदलाव का आभास हो गया। मैं दोपहर के भोजन के लिए घर आया, अपनी पत्नी को सब कुछ सुनाया और तुरंत एक स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने से पहले उसे विश्वास में लिया।

अपराह्न 3.00 बजे नियुक्ति सचिव और कैबिनेट सचिव मुझसे तत्काल मिलना चाहते थे और मैं इसके उद्देश्य का अनुमान लगा सकता था। मैंने उनसे कहा कि वे मेरे निवास पर आने की जहमत न उठाएँ, केवल अपने आदेश भेजें ताकि मैं उनका पालन कर सकूँ। वे आग्रहपूर्वक लगभग 4.00 बजे मेरे निवास पर आए। उन्होंने मुझे स्थानांतरित करने के मुख्यमंत्री के फैसले के बारे में मुझे सूचित किया। उन्होंने मुझे कई पदों की पेशकश की, यहाँ तक कि नवंबर में अध्यक्ष, राज्य लोक सेवा आयोग का पद खाली होने पर इस पद की भी पेशकश की। अपने कैरियर के अवसान पर मैं सिर झुका कर ऑफिस नहीं छोड़ना चाहता था। इसलिए मैंने तत्काल प्रभाव से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने का फैसला किया और नियुक्ति सचिव को आवश्यक कागजात तैयार करने का निर्देश दिया। शाम 5 बजे मैं अपने कार्यालय पहुँच गया। मैंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने का फैसला एकदम गुप्त रखा था। केवल नियुक्ति सचिव, कैबिनेट सचिव और मेरे निजी स्टाफ को इसके बारे में पता था। नियुक्ति सचिव और मेरे कर्मचारी मेरे कमरे में आए, भावनापूर्ण ढंग से मुझे मनाने लगे, लेकिन मैंने पहले ही निर्णय ले लिया था और नियुक्ति सचिव को इसका अनुपालन करने के लिए कहा। मुख्य सचिव, उत्तर-प्रदेश के पद को छोड़ने का मुझे कोई अफसोस नहीं था। मैंने इन घटनाओं को समभाव और दृढ़ता से लिया। लेकिन मुझे खुशी है कि बाद में सरकार को इस मामले में अपने कदम पीछे खींचने पड़े।

पद त्यागने से पहले मैंने अपने सहकर्मियों को लिखा:

प्रिय सहकर्मियों,

मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश

वह जो थोड़ा हासिल करेगा, उसे थोड़ा बलिदान करना होगा;
जो बहुत कुछ हासिल करेगा, उसे बहुत त्याग करना होगा;
वह जो अत्यधिक प्राप्त करेगा, उसे बहुत त्याग करना चाहिए।

आप सभी के साथ काम करना मेरे लिए बहुत आनंददायक रहा, आप हमेशा मेरे साथ खड़े रहे और राज्य के मामलों के निर्वहन में सभी सहयोग किया। जीवन कोई सीधी रेखा नहीं है, न ही यह कोई गुलाब की सेज है और न ही यह रात का सपना है। कई बार यह एक आँधी या सर्दियों की कहानी बन जाती है या आप इसे अपनी पसंद के अनुसार लेते हैं।

जीवन में अधिक महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि आप जीवन के क्रीज पर कितने समय टिके रहे हैं, बल्कि यह महत्त्वपूर्ण है कि आपने जीवन में कितनी तेजी से स्कोर बनाया है। हमेशा जीवन के सिद्धांतों को बनाए रखें जो कि नौकरी के सांसारिक भौतिक लाभों से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

ईश्वर की कृपा आप पर बनी रहे।

हस्ताक्षर

दिनांक 23.05.2008

मैंने तत्काल प्रभाव से अपने वीआरएस की मांग करते हुए पत्र पर हस्ताक्षर किए। मैंने राजनेताओं की धुन पर नाचने के बजाय प्रतिष्ठित पद छोड़ना पसंद किया। मैंने अपने पद की गरिमा को बनाए रखा था और साथ ही पेशे की गरिमा को संरक्षित रखा। एक व्यक्ति को उसके बौद्धिक और हार्दिक गुणों से जाना जाता है, न की उसकी शक्तियों या धन से। प्रतिष्ठा रातोंरात नहीं बनती है। इसमें समर्पित सेवा और बलिदान कई वर्ष लगते हैं। प्रतिष्ठा व्यक्ति की तुलना में तेजी से पहचान बनती है। एक सफल जीवन भौतिक पुरस्कारों की परवाह किए बिना कर्तव्य, ईमानदारी, अखंडता, दृढ़ता, आत्म-बलिदान और सेवा का जीवन होता है। व्यक्ति की सफलता में आंतरिक चरित्र कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण कारक है। सफलता की कुंजी यह है कि व्यक्ति अपने आप को अपरिवर्तनीय सिद्धांतों के साथ संयोजित कर ले। मैंने किसी को भी प्रभावित करने या सस्ती लोकप्रियता के लिए पद नहीं छोड़ा। मैंने यह सिर्फ अपने स्वयं के मानकों और सिद्धांतों पर खरा उतरने के लिए ऐसा किया था। इस प्रकार 36 वर्षों का मेरा प्रशासनिक कैरियर समाप्त हुआ।

कागज पर हस्ताक्षर करने के बाद मैं अपने निवास पर वापस आ गया। धीरे-धीरे अधिकारियों, पत्रकारों, दोस्तों और लोगों को इसके बारे में टीवी पर समाचारों के माध्यम से ही पता चला। ईमानदार और अच्छे अधिकारी व्यथा के साथ मेरे आवास पर आने लगे। मैंने संयम बनाए रखा और जीवन को सहजता से लिया। जिस तरह से मैंने स्थिति को स्थिर भाव से स्वीकार किया था उसे देखकर वे आश्चर्यचकित थे। मुझे मेरे शुभचिंतकों, मित्रों और सहानुभूतिदाताओं की तरफ से एक हजार से अधिक कॉल आए। रात के समय यह देख कर मुझे आश्चर्य हुआ कि मुख्यमंत्री कार्यालय से एक संदेशवाहक आया था। उसने मुझसे अनुरोध किया कि मैं इसे मुद्दा न बनाऊँ। मुस्कुराते हुए मैंने उसे आश्वासन दिया कि अनावश्यक विवाद पैदा करना मेरे स्वभाव में नहीं था। मुख्य सचिव को बदलना मुख्यमंत्री का विशेषाधिकार था और एक सिविल सेवक के रूप में सेवा की गरिमा और सम्मान को बनाए रखने के लिए उचित कदम उठाना मेरा विशेषाधिकार था। इस प्रकार बात खत्म हो गई।

अगली सुबह, यानी 24 मई 2008 को मैं अपनी पत्नी के साथ चाय पीते हुए अखबार पढ़ रहा था। मुख्य सचिव के आवास के सुरक्षा अधिकारियों ने मुझे सूचित किया कि बड़ी संख्या में मीडियाकर्मी मुझसे मिलने के लिए एकत्र हुए थे। मैंने टेलीफोन पर वरिष्ठ मीडियाकर्मी से बात की और उनकी यात्रा के उद्देश्य के बारे में जानकारी ली। उन्होंने कहा, ''सर, आपने अपना इस्तीफा इतना गुप्त रखा है कि हमें इसके बारे में देर शाम को ही पता चला।'' हम 'बाइट' (बयान) लेना चाहते हैं। मैंने जवाब दिया, ''देखो, प्रशांत मिश्रा कभी 'बाइट' (काटना) नहीं करते।'' उन्होंने कहा, ''सर, आप हमेशा कहते थे कि आप एक अनुशासित सिविल सेवक होने के कारण आचार संहिता से बंधे होते थे। अब आप सेवानिवृत्त हुए हैं, अब अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए आप पर कोई रोक नहीं है। मैंने कहा, ''दोस्तों, पीके मिश्रा सेवा में रहते हुए एक अनुशासित सिविल सेवक थे और सेवानिवृत्त के बाद भी एक अनुशासित सेवानिवृत्त सिविल सेवक बने हुए हैं।'' वे ठहाका लगाकर हंस पड़े और मैंने उन्हें एक कप चाय के लिए आमंत्रित किया। आधा-एक घंटा बिताने के बाद, मुख्य सचिव के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान दिए गए सहयोग के लिए मैंने उन सभी को धन्यवाद दिया। मैंने उन्हें बताया कि स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति मेरा व्यक्तिगत निर्णय था। मुझे इसके पीछे कारणों पर चर्चा करना पसंद नहीं था। मैं यह कहना चाहूँगा कि मैंने 36 साल तक पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ राज्य और देश की

सेवा की और कोई पछतावा नहीं था।

दोस्तों और रिश्तेदारों से ढेरों टेलीफोन कॉल आए और अलग-अलग क्षेत्रों के लोगों के अनेक पत्र आए। इन संदेशों में से मैं अपनी बेटी प्रज्ञा और एक सेवानिवृत्त अधिकारी के पत्रों का उल्लेख करना चाहता हूँ जिन पत्रों ने मुझे भावविभोर कर दिया:

'यह मेरे प्यारे पिता के लिए एक पत्र है, उन्हें यह बताने के लिए कि उन्होंने अपने अत्यंत कठोर निर्णय से आज हम सभी को बहुत गौरवान्वित किया है। आज मुझे प्रशांत मिश्रा की बेटी होने पर गर्व है। यह निर्णय एक ऐसा निर्णय था जो केवल पापा जैसे व्यक्ति ही ले सकते हैं। पापा ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि उनके लिए उन सिद्धांतों से ज्यादा प्रिय और महत्त्वपूर्ण कुछ भी नहीं है जिनका अनुसरण करते हुए उन्होंने इतने लंबे समय तक अपना जीवन व्यतीत किया है। कभी किसी दबाव में नहीं आने वाले पापा ने अपनी कार्रवाई के माध्यम से एक बार फिर दिखाया कि कोई भी उनसे वह काम नहीं करा सकता जो उनकी सत्यनिष्ठा के विरुद्ध है।

पापा ने वीआरएस लिया इससे मैं दुखी नहीं हूँ बल्कि उन परिस्थितियों की वजह से परेशान हूँ जो उनके वीआरएस के कारण बने। यह उसका नुकसान नहीं है, बल्कि यूपी के मुख्यमंत्री और राज्य का नुकसान है कि उन्होंने एक ऐसे इंसान को महत्त्व नहीं दिया जो सच्चाई के लिए लड़ता है। इस घटना के बाद उनके प्रति मेरा सम्मान और भी बढ़ गया है।

मुझे हरिवंश राय बच्चन की पंक्तियाँ याद आ रही हैं: 'मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़'। पापा का वर्णन करने के लिए वे इससे अधिक उपयुक्त पंक्ति नहीं लिख सकते थे। हम एक परिवार के रूप में आपके निर्णय के साथ दृढ़ता से खड़े हैं। आप जो हैं वह होने के लिए आपका शुक्रिया पापा! हम सभी आपसे बहुत प्यार करते हैं और आपके फैसले का सम्मान करते हैं।'

-प्रज्ञा मिश्रा

'युवा भारत की आवाज प्रज्ञा मिश्रा के पत्र से प्रेरित मैं आपकी वेबसाइट फोरम, माई एडमिरेशन, प्रशांत मिश्रा, पूर्व मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश में, पदत्याग करने और इस प्रकार अखिल भारतीय सेवाओं के सम्मान को कायम रखने के आपके निर्णय की प्रशंसा करना चाहता हूँ। इससे मिलता जुलता एकमात्र उदाहरण जो मैं याद कर सकता हूँ वह तत्कालीन केंद्रीय गृह सचिव गोडबोले का है,

उन्होंने भी यह माना था कि जीवन के सिद्धांत नौकरी के सांसारिक लाभ से अधिक महत्त्वपूर्ण थे। हम नौकरशाही में राजनेताओं को सेवाओं के राजनीतिकरण के लिए जिम्मेवार ठहराते हैं, जो उस सेवा के विध्वंस की शुरुआत के लिए कपटपूर्ण ढंग से किया गया, जिसके सदस्य किसी समय शासन का 'इस्पात-ढाँचा' माने जाते थे। आपका यह काम अखिल भारतीय सेवा के सदस्यों द्वारा उनकी अंतरात्मा का जवाब देने के लिए आत्मनिरीक्षण करने का आह्वान करता है कि क्या जीवन के सिद्धांतों से पहले सेवा के सांसारिक भौतिक लाभों को प्राथमिकता मानना हमारी गलती है या यह राजनेताओं का काम है। एक बार सांसारिक भौतिक लाभ अखिल भारतीय सेवाओं का प्राथमिक लक्ष्य बन जाता है, तब भौतिक लाभ की तलाश में सेवा में और बाद में रिटायरमेंट के बाद भी, सुशासन से हटकर राजनीतिक स्वामी को खुश करने में ध्यान केंद्रित होता है, जो जाहिर तौर पर ऐसे ही जीहुजूर, रीढ़विहीन और आज्ञाकारी 'अखिल निष्प्रभावी सेवा' के अधिकारी पाकर खुश होते है। हमें आप जैसे अधिकारियों पर गर्व है, हालांकि ऐसे अधिकारी विलुप्त होने के करीब एक दुर्लभ प्रजाति बन गए हैं। आशा है कि अखिल भारतीय सेवाओं की इस पीढ़ी को ऐसे असाधारण उदाहरणों से प्रेरणा मिलेगी जो अनुकरण के योग्य हैं और एक ही दिमाग के होने के मूल्यों और सिद्धांतों पर सहमति बनाने के लिए हैं। मैं मिश्रा और उनके परिवार के साथ अपनी एकजुटता प्रदर्शित करता हूँ।'

श्री जगमोहन अपनी किताब 'दि सोल एंड स्ट्रक्चर ऑफ गवर्नेंस इन इंडिया' में लिखते हैं, ''अधिकारियों को राजनीतिक आकाओं द्वारा या तो मित्रवत माना जाता है या फिर शत्रुतापूर्ण। मित्रतापूर्ण अधिकारियों को लाड़-प्यार किया जाता है, शत्रुतापूर्ण अधिकारी अपमान के भागी बनते हैं। सिविल सेवकों को एक भ्रष्ट तंत्र में बुन दिया जाता है और यहाँ तक कि उनमें से कुछ एक ढुलमुल भूमिका निभाने के इच्छुक हो जाते हैं। सार्वजनिक सेवाओं के मामलों की ऐसी स्थिति स्वतंत्र भारत के शुरुआती दौर में अकल्पनीय थी। वर्षों से राजनेताओं की भ्रष्ट गतिविधियों में भागीदार बनने के इच्छुक अधिकारियों की संख्या बढ़ने लगी। स्वत: ही उन्होंने खुद को राजनेताओं द्वारा शोषण किए जाने की अनुमति दी। उनमें से कुछ सक्रिय सहयोगी बन गए। स्टील का ढाँचा अब दीमक लगे बांस के ढाँचे में बदल गया है।'' अब सुधारों की एक विस्तृत श्रृंखला की जरूरत है। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में, ''मैं जड़ से लेकर शाखा तक सुधार चाहता हूँ। हमें वस्तुओं के मूल तक, मामले की जड़ तक जाना चाहिए।''

श्री जगमोहन ने जो महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए हैं, उनमें से एक है नैतिकता और सामाजिक और सांस्कृतिक सुधार मंत्रालय स्थापित करने की आवश्यकता। इसे प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित किया जाना चाहिए। इस मंत्रालय को एक अर्ध-न्यायिक आयोग द्वारा सलाह दी जाएगी, जिसे सुधार आयोग कहा जाएगा। भले यह एक छोटा कदम हो सकता है, लेकिन यह भारत के ध्यातव्य की खोज के लिए सही दिशा में उठाया गया कदम होगा।

विकास के लिए प्रदान किया गया सार्वजनिक धन विवेकपूर्ण और निष्ठा के साथ खर्च किए जाने के लिए होता है। गुमनामी, निष्पक्षता और सत्यनिष्ठा सिविल सेवा की पहचान हैं और मैं अपने सभी सहयोगियों और सेवा के सदस्यों से इन सिद्धांतों का सख्ती से पालन करने की अपेक्षा करता हूँ। लेकिन अक्सर अल्पकालिक लाभ के लिए हम अपने सिद्धांतों की दृष्टि खो देते हैं। पैसा सब कुछ नहीं है और यही जीवन का ध्येय नहीं है। जीवन इसके परे भी बहुत कुछ है। निर्णय लेते समय संगठनात्मक नैतिकता, सार्वजनिक हित और सामाजिक जिम्मेदारी हमारे दिमाग में होनी चाहिए। यह आत्मनिरीक्षण, चिंतन और उसी के अनुरूप कार्रवाई का समय है। मित्रों, हमारे राज्य को विकास की पटरी पर लाने के लिए हमारे सामने कई चुनौतियाँ हैं। भयमुक्त और भ्रष्टाचार मुक्त समाज की स्थापना के लिए अत्यधिक प्रयास करने की जरूरत है, ऐसा समाज जहाँ हर किसी को उसका देय हासिल हो। हर कदम पर भ्रष्ट और बुरे तत्वों से लड़ने के लिए सभी ईमानदार, सही सोच वाले और साहसी लोगों को संगठित होना चाहिए। ये तत्त्व चाहे जिस रूप में और जहाँ कहीं मौजूद हों, जब तक हम इन तत्वों से लड़ने का ईमानदार प्रयास नहीं करते हैं हम सफल नहीं होंगे और हर कदम पर हमें अपमान सहना पड़ेगा। एक बार जब हम खुद को व्यवस्थित कर लें और इन असामाजिक और बुरे तत्वों का साहसपूर्वक सामना करने का दृढ़ प्रयास करें तो ये तत्व आश्रय के लिए भागे-भागे फिरेंगे।

ऑफिस छोड़ने के तुरंत बाद, मैं अपने ठिकाने यानि वशिष्ठ गुफा में स्वामीजी से मिलने और ध्यान करने के लिए चला गया। मैंने स्वामी जी से कहा कि मैंने सेवा छोड़ दी है अब मैं एक सेवानिवृत्त व्यक्ति हूँ। जब मैंने अपने आप को अध्यात्मवाद के लिए समर्पित करने की इच्छा व्यक्त की तो स्वामीजी ने अपना सिर हिला दिया और कहा, ''अभी आप केंद्र में पाँच साल की सेवा और करेंगे।'' मुझे इस भविष्यवाणी पर आश्चर्य हुआ क्योंकि मैंने पहले ही स्वैच्छिक

सेवानिवृत्ति ले ली थी।

मैं अब अपने कार्यक्रम का मालिक स्वयं था और मेरी पहली प्राथमिकता पेंशन के कागजात तैयार करना था। एक महीने से भी कम समय में, मुझे पेंशन भुगतान आदेश मिल गया। मुख्य सचिव का निवास स्थान प्रयोजन विशेष के लिए निर्धारित था और मुझे अब वहाँ रुकना पसंद नहीं था। जून के अंतिम सप्ताह में मैंने जगह खाली कर दी और दिल्ली के लिए उड़ान भरी। उड़ान के दौरान मेरी पत्नी ने मुझसे एक सवाल किया, 'प्रशांत, आईएएस में अपने लंबे अनुभव के आधार पर क्या आप को कोई परामर्श कार्य से जुड़ा काम मिल पाएगा? मैंने कहा कि निश्चित रूप से मुझे ऐसा काम मिल जाएगा लेकिन यह मेरी प्राथमिकता नहीं थी। मैंने 36 वर्षों तक काम किया था और मुझे कम से कम छह महीने के लिए अपने सेवानिवृत्त जीवन के आराम का लाभ लेने और आनंद लेने की आवश्यकता थी। हम दिल्ली पहुँच गए, सरिता सामान व्यवस्थित करने में व्यस्त थी। मैंने थोड़ी देर आराम करने का फैसला किया। लगभग 5 बजे उसने मुझे नींद से यह कहते हुए जगाया कि एक फोन था। मैंने उससे नंबर लेने को कहा ताकि मैं बाद में फोन करूँ। उसने जवाब दिया, ''प्रशांत, यह प्रधानमंत्री कार्यालय से फोन है।'' मैंने तुरंत फोन लिया, दूसरी ओर से प्रधानमंत्री के सचिव बात कर रहे थे। उन्होंने पूछा, ''सर, वर्तमान में आप क्या कर रहे हैं?'' जब मैंने जवाब दिया कि मैं अपने सेवानिवृत्त जीवन का आनंद ले रहा हूँ। उन्होंने पूछा, ''क्या आप भारत सरकार का एक कार्यभार ग्रहण करना पसंद करेंगे?'' इस बात से हम दोनों अभिभूत हो गए। मैंने अपनी पत्नी से कहा, ''आप एक परामर्श-कार्य के लिए कह रही थीं, भगवान ने तुरंत आपके अनुरोध का जवाब दिया है। आइए हम पूजा कक्ष में चलें और भगवान को धन्यवाद दें।''

अध्याय-३४

सदस्य, संघ लोक सेवा आयोग

सदस्य, संघ लोक सेवा आयोग का शपथ लेते हुए

(अगस्त 2008-अगस्त 2013)

यूपीएससी और उसके संवैधानिक आज्ञा के महत्त्व को परोक्ष रूप से भी कमजोर करने के किसी भी प्रयास को बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए।

सपने में भी मुझे कभी उम्मीद नहीं थी कि मुझे संघ लोक सेवा आयोग का सदस्य बनाया जाएगा। लेकिन अलौकिक शक्ति एक ऐसे व्यक्ति, जिसे उस पर और उसके सिद्धांतों पर गहरी आस्था रहती है, को पुरस्कृत करने के सूक्ष्म तरीके भी अपनाती है। अगस्त 2008 में मुझे यूपीएससी का सदस्य नियुक्त करने का आदेश मिला, जो एक प्रतिष्ठित संवैधानिक पद है। मैं 18 अगस्त को यूपीएससी में शामिल हुआ और अगले ही दिन प्रधानमंत्री का शुक्रिया अदा करने के लिए

उनसे मुलाकात करने गया। वे काफी विनम्र थे एवं उन्होंने दरवाजे पर स्नेहमय थपकी के साथ मेरा स्वागत किया। उन्होंने कहा, ''उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव के रूप में आपके द्वारा किए गए बलिदान के लिए मैं आपके लिए अधिक से अधिक यही कर सकता हूँ।'' मैं प्रधानमंत्री के हाव-भाव के साथ-साथ उनके द्वारा प्रदर्शित शिष्टाचार और सादगी से अभिभूत हुआ।

मुझे यूपीएससी का सदस्य होने पर गर्व हुआ। हमें अपने राष्ट्र निर्माताओं का आभारी होना चाहिए कि उन्होंने राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अधिकारियों की भर्ती, पदोन्नति और अनुशासनात्मक कार्यवाही के लिए ऐसी संवैधानिक संस्था की कल्पना की थी। कोई संस्था एक दिन में कभी नहीं बनती। इसके लिए लंबे वर्षों तक संपोषण, प्रयास, ईमानदारी, निष्ठा, निष्पक्ष-व्यवहार और न्यायप्रियता की आवश्यकता होती है ताकि उसे वह प्रतिष्ठा प्राप्त हो। एक संस्था केवल ईंट और चूने की संरचना नहीं होती है। यह कोई अलग अलग व्यक्तियों की मंडली नहीं जिनमें कोई जीवंत भावपूर्ण संपर्क न हो। यूपीएससी जैसी संस्था, अपने आप में एक संगठित समष्टि है, जिसके साथ गहरा अतीत, चुनौतीपूर्ण वर्तमान और एक अपेक्षापूर्ण भविष्य आबद्ध हैं। इसका स्वंय का एक मस्तिष्क है, अपना मनोविज्ञान, अपनी संस्कृति, रिवाज और ऐसी परंपरा भी है जो अपने सदस्यों को, जिन्होंने अपनी क्षमता और प्रतिभा के अनुसार राष्ट्र की सेवा के लिए खुद को समर्पित किया हैं, निर्वाह के आवश्यक साधन, सुरक्षा और अवसर प्रदान करती है। जिस दिन इसकी उच्च परंपराओं, संस्कृति और स्वतंत्रता के साथ छेड़छाड़ की जाएगी, वह न केवल संस्था के लिए बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए विनाशकारी साबित होगी। इसलिए इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हर स्तर पर, हर क्षण और हर निर्णय में हमें राष्ट्रीय हित और उसके संवैधानिक अधिदेश से सर्वोच्च रूप से निर्देशित होना होगा। इसके महत्त्व और संवैधानिक आज्ञा को परोक्ष रूप से कमजोर करने के किसी भी प्रयास को बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए।

मुझे यहाँ पाँच साल तक काम करने में आनंद आया। यहाँ सदस्य जिस कार्य संस्कृति, परंपराओं और स्वतंत्र व बिना किसी दबाव के निर्भयतापूर्वक परन्तु निस्वार्थ भाव से स्वंय को व्यक्त करते है, वह मेरे स्वभाव के अनुकूल रहा। मैंने इतना कुछ यहाँ सीखा जितना आईएएस अधिकारी के रूप में अपने पूरे कैरियर में अनुभव नहीं किया था। विशेष रूप से आयोग की बैठकों और निर्णय लेने की प्रक्रिया में लोकतांत्रिक अनुभवों की जीवंत अभिव्यक्ति होती है। निर्णय लेने की

प्रक्रिया में सदस्यों को दी गई स्वतंत्रता उन्हें विभिन्न दिशाओं से सहयोग प्राप्त करके किसी समस्या के विभिन्न आयामों को समझने में सक्षम बनाती है और इस प्रकार निर्णय संदेहरहित होता है।

मैंने पहले कभी ज्ञान में वृद्धि का अनुभव नहीं किया था। विद्वान सलाहकारों और उम्मीदवारों के साथ बातचीत ने मेरी मानसिक सीमा को बहुत विकसित किया। जिस पूर्णता के साथ यहाँ एक समस्या का विश्लेषण किया जाता है, उसने वास्तव में मुझे प्रभावित किया। आपको सूक्ष्म विवरण पर ऐसी परंपरा और परोपकारी अवधान किसी अन्य सरकारी विभाग में नहीं मिलेगा। इस दौरान विशेष रूप से परीक्षा सुधार के क्षेत्र में काफी पहल की गई थी।

जब मैं यूपीएससी में शामिल हुआ तब सिविल सेवा परीक्षा में प्रशासनिक नीतिशास्त्र, नैतिकता और मूल्य प्रणाली पर पेपर लागू करने का सपना देख रहा था। मैंने इस पर अध्यक्ष और अन्य सहयोगियों के साथ चर्चा की। मैंने अध्यक्ष से अनुरोध किया कि वे परीक्षा सुधार में तेजी लायें ताकि मैं संतुष्टि की भावना के साथ संस्था छोड़ सकूँ। मेरे लिए यह अत्यंत खुशी की बात है कि मेरे कार्यालय छोड़ने से पहले यह सुधार लागू हो गया।

एक सदस्य के रूप में मुझे न केवल प्रशासन, योजनायें, सिविल सेवाओं आदि पर इंटरव्यू लेने होते थे बल्कि इंजीनियरिंग, चिकित्सा, आईटी आदि तकनीकी विषयों पर भी इंटरव्यू लेने होते थे। बहरहाल साक्षात्कार से पहले, हमें सेवाओं/विषयों के बारे में सूचित कर दिया जाता था जिसके लिए हमें साक्षात्कार लेना होता था। जब भी मुझे अध्यक्ष कार्यालय से ऐसा संदेश मिलता था, तब मैं यूपीएससी के अत्यंत समृद्ध पुस्तकालय से विभिन्न योजनाओं पर पुस्तक, वार्षिक रिपोर्ट, सरकार की नवीनतम नीति को पढ़ता एवं उन पर विचार विमर्श करता था। मैं संक्षिप्त नोट्स बनाता एवं प्रश्न बैंक का निर्माण किया करता था। नवीनतम तथ्य एवं जानकारी से अवगत रहने के लिए मैं हर रात दो घंटे पढ़ता था। यूपीएससी के सिद्धान्त उम्मीदवारों को परेशान करने के लिए नहीं बल्कि स्नेहशील पारस्परिक व्यवहार के जरिए उनकी श्रेष्ठता को जाहिर करने के लिए है। यूपीएससी में अपने लंबे अनुभव के साथ मैं वैध रूप से यह दावा कर सकता हूँ कि चयन प्रक्रिया में किसी भी पक्ष से कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाता है।

मैंने यहाँ हर पल का आनंद उठाया है। यह केवल एक संस्था नहीं है,

अपितु यह भविष्य के प्रशासकों के चयन और उन्हें आकार देने का एक महान संवैधानिक निकाय है। इसके गलियारे सत्ता और अधिकार के गलियारे नहीं हैं, बल्कि शक्तिकरण के हैं, जो समाज के हर वर्ग को सम्मानजनक तरीके से राष्ट्र की सेवा करने के लिए न्यायोचित और निष्पक्ष तरीके से समर्थ बनाते हैं। यह एक सर्वोत्तम संस्था है जो निरंतर एक महान उद्देश्य के लिए कार्य कर रही है।

मैंने 6 अगस्त, 2013 को पद त्याग किया। उस दौरान मैं भावातिरेक में आ गया और बिछुड़ने की पीड़ा महसूस करने लगा। हैरो में नेहरू जी द्वारा दिए गए विदाई भाषण को याद करने का यह उचित अवसर था। उन्होंने कहा था, ''मुझे नहीं पता कि मेरी आँखों में आँसू कब आए; मुझे नहीं पता कि यह मेरी आँखों में कैसे और क्यों आये। शायद हम भारतीय आँसू के प्रति अतिसंवेदनशील होते हैं; साथ में थोड़े भावुक एवं संवेगात्मक भी।''

तत्कालीन उप राष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी के साथ

अध्याय-३५

अवकाश प्राप्ति के बाद का जीवन

अपने सेवाकाल में जो शक्तियाँ हमें मिली थीं और जिन सुविधाओं का लाभ हमने उठाया उनको कभी सिर पर नहीं चढ़ा लेना चाहिए, अन्यथा व्यक्ति को बहुत ज्यादा तकलीफ और मनोवैज्ञानिक समस्याएँ होंगी।

मैं सिद्धांतत: 23 मार्च 2008 को ही रिटायर हो गया था जब मैंने स्वैच्छिक अवकाश लिया पर प्रभावी अवकाश प्राप्ति 6 अगस्त 2013 को हुई जब मैंने यूपीएससी में पाँच साल का कार्यकाल पूरा करने के बाद सदस्य का पद त्याग किया। अपना ऑफिस छोड़ने के बाद मेरा मस्तिष्क पूरी तरह खाली था और मुझे यह नहीं पता था कि अब आगे क्या करना है। मैंने उन पुरानी फाइलों को हटाने के बारे में विचार करना शुरू किया जो मेरे घर का बहुत बड़ा हिस्सा घेरे हुए थीं। 'फाइल सफाई अभियान' लगभग एक सप्ताह तक चला और आश्चर्यजनक रूप से मैंने पाया कि घर में रखी हुई 90 फीसदी फाइलें पूरी तरह अनुपयोगी थीं। अपने जीवन में हम ऐसी बहुत सारी चीजों से चिपके रहने की आदत विकसित कर लेते हैं जिनका कोई उपयोग नहीं होता है या जिनका उद्देश्य पूरा हो चुका होता है। घर में ऐसी फाइलें, किताबें, जर्नल, पुराने कपड़े और दूसरे सामानों के ढेर पड़े रहते हैं जो कबाड़ी वाले को देने लायक होते हैं। समय-समय पर इन सामानों का निरीक्षण करते रहना उचित होता है ताकि हम इनसे समय दर समय छुटकारा पाते रहें। यही सिद्धान्त हमारे आंतरिक जीवन पर भी लागू होता है। गैर जरूरी चीजें, अनुभव और विचार हमारे आंतरिक जीवन में भी रहस्यपूर्ण तरीके से जमा होते रहते हैं। इस कारण यह जरूरी है कि हम समय-समय पर अपना आत्मनिरीक्षण करते रहें, आत्मचिंतन करते रहें और ध्यान के माध्यम से अपनी आंतरिक सफाई करते रहें।

मैंने लगभग 400 आध्यात्मिक किताबों, जैसे वेद, स्वामी विवेकानंद की सम्पूर्ण रचनाएँ, रामकृष्ण परमहंस पर किताबें, स्वामी राम और ओशो की किताबें, रामायण, महाभारत, गीता, कई प्रबंधन की किताबें और प्रेरक किताबें, स्वामी शिवानंद की किताबें और अरविंदो की किताबें आदि का संग्रह किया है। चूंकि

मेरा नोएडा का घर छोटा है और केवल 125 वर्गमीटर के क्षेत्रफल में बना हुआ है, इस कारण मेरे पास अपनी लाइब्रेरी के लिए जगह नहीं है। घर में केवल 3 कमरे हैं। मैं अपनी किताबों को छोड़ना नहीं चाहता था और पत्नी उनके लिए कमरा देना नहीं चाहती थी। मेरे दिमाग में विचार आया कि क्यों न इस शर्त पर यह किताबें नोएडा पब्लिक लाइब्रेरी को दान कर दूँ कि जब भी मुझे कोई किताब लेने की इच्छा हो, मैं किताब ले सकता हूँ। इस प्रकार मैंने लगभग 350 किताबें दान कीं और संदर्भ पुस्तकों को रख लिया।

चूंकि मुझे दिल्ली में सरकारी आवास मिला था जिसे 6 महीने के अंदर खाली करना था, हमने अपने नोएडा के आवास का नवीकरण शुरू किया। नवीकरण के काम की देखरेख करने के लिए दिल्ली से नोएडा के बीच आना जाना बहुत मुश्किल था। नवीकरण की देखरेख मेरी पत्नी कर रही थी। चूंकि मेरे पास कार नहीं थी इस कारण उसे ऑटो और सार्वजनिक परिवहन से आना-जाना पड़ता था। नोएडा में प्रायः ही उसे अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए रिक्शा करना पड़ता था। पर किस्मत से, नवीकरण की प्रभारी दीपिका, आगरा में मेरे डीएम की तैनाती के दौरान रहे एडीएम (सिटी) की बेटी निकल आयी। हमारा सारा सरदर्द ही खत्म हो गया और हमने इसे ईश्वर का आशीर्वाद माना। जनवरी, 2014 तक नवीकरण का काम पूरा हो गया और हम 4 फरवरी, 2014 को अपने नए घर में चले गए। कई सालों के बाद मैं नोएडा के एक स्थायी निवासी के तौर पर रहने के लिए लौटा। शुरू-शुरू में हमारे ज्यादा सामाजिक संपर्क नहीं थे। ऐसा कहा जाता है कि जनता सब जानती है, और असल में नोएडा की जनता मेरे और मेरे सिद्धांतों के बारे में सब जानती थी। उनके मन में मेरे लिए बहुत आदर था। इसलिए मेरे लिए उनके साथ घुलना-मिलना और उनका हिस्सा बनना आसान हो गया।

अवकाश प्राप्ति के बाद का जीवन वरदान और अभिशाप दोनों हो सकता है; यह इस बात पर निर्भर करता है कि कोई व्यक्ति नयी परिस्थितियों में ढल पाने में कितना समर्थ होता है। 'गतिविधियों से भरे जीवन' से अचानक 'नगण्य गतिविधियों वाले जीवन' में चले जाना एक बड़ा मनोवैज्ञानिक झटका होता है जिसे बहुत साहस के साथ झेला जाना चाहिए। जब हम वृद्ध होने लगते हैं, सबसे खराब लक्षण और भी बढ़ते जाते हैं। ऐसे तनाव के बीच संतुलन केवल आध्यात्मिक व्यक्ति ही हासिल कर सकता है। जीवन जिस रूप में आए उसको वैसे ही स्वीकार कीजिए और अतीत में फंसे रहे बिना उसका पूरा आनंद

लीजिए। एक सामान्य नागरिक के रूप में जीवन जीने के लिए शारीरिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार रहिए और मेरा विश्वास है कि आप सेवानिवृत्त होने के बाद के जीवन का पूरा आनंद लेंगे। हालांकि इसमें एक सावधानी रखनी चाहिए; वृद्धावस्था में स्वास्थ्य सबसे महत्त्वपूर्ण मामला बन जाता है और व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए बहुत सचेत रहना चाहिए ताकि वह सेवानिवृत्ति का पूरा आनंद ले सके। रोजमर्रा के काम जैसे सब्जी खरीदना, दूध खरीदना, बर्तन और घर साफ करना, पौधों को पानी देना और मेहमानों की खातिरदारी करना आदि से परहेज नहीं करना चाहिए, बल्कि इन कामों का आनंद लेना चाहिए। मैं एक सेवानिवृत्त आदमी जरूर हूँ, पर एक थका आदमी नहीं हूँ और अपने जीवन साथी को अपने सीमित दायरे में मदद करने का पूरा प्रयास करता रहा हूँ। मेरी पत्नी एक कलात्मक रुझान वाली कुशाग्र और बुद्धिमान महिला थी। घर को सुंदर बनाने में वह दिन रात लगी रहती थीं और चूंकि वह कंप्यूटर ज्ञान में भी दक्ष थी और कई तरह के काम कर सकती थीं, इस कारण मैं धन्य जीवन बिता पाया। मैंने अपने आप को उपेक्षित समुदाय के 3-4 बच्चों को पढ़ाने में व्यस्त रखा है। यह एक और बहुत अच्छी बात है कि यूपीएससी प्राय: हर महीने मुझे तदर्थ बोर्ड की अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित करती है जिससे न केवल मैं व्यस्त रहता हूँ बल्कि मैं मानसिक तौर पर सजग भी बना रहता हूँ और साक्षात्कार को प्रभावी रूप से संचालित करने लिए मुझे नई चीजें पढ़ने की प्रेरणा भी मिलती रहती है।

चूंकि मेरे पास खाली समय बहुत होता है, इस कारण मैं किताबें पढ़ने और लिखने में काफी समय व्यतीत करता हूँ। कई संगठन मुझे अपनी बैठकों और सेमिनार में आमंत्रित करते हैं। फिर भी मेरे दिमाग में कहीं न कहीं यह बात आती रहती है कि मैं अपने अवकाश-प्राप्त जीवन को पूरी तरह सार्थक नहीं बना पा रहा। समाज ने मुझे बहुत अधिक दिया है और अब समाज को कुछ देने की मेरी बारी है। इस कारण मैं न केवल उपेक्षित समुदाय के बच्चों को पढ़ाने में अपना समय लगाता हूँ बल्कि छात्र समुदाय से बातचीत करने का एक भी अवसर नहीं छोड़ता। सामाजिक गतिविधियों के प्रति मेरे लगाव के कारण मेरा जुड़ाव एक एनजीओ 'नोएडा लोक मंच' से हो गया।

एनजीओ के लिए सामाजिक काम करने पर मुझे बहुत अधिक संतोष होता है। मैं जब भी बच्चों से बात करता हूँ, उनकी आँखों में सपने देखता हूँ। मैंने अपने तरीके से इस एनजीओ की सहायता का प्रयास किया है। समय-समय पर

मैं नोएडा लोक मंच को नए विचार और अवधारणाएँ देता रहता हूँ। खास तौर पर, अक्टूबर, 2015 में लगभग 430 बच्चों के लिए राष्ट्रीय चेतना शिविर आयोजित करने के विचार का मैं उल्लेख करना चाहूँगा। इसका उद्देश्य था इन बच्चों के भीतर राष्ट्रीय मूल्यों, देशभक्ति, अनुशासन, आत्मविश्वास की भावना विकसित करना और उनकी क्षमता के विकास का मार्ग प्रशस्त करना। अलग-अलग क्षेत्रों के प्रमुख व्यक्तियों से बातचीत के माध्यम से उनके मस्तिष्क में विचार-अग्नि का उद्दीपन करना भी इसका एक उद्देश्य था। पर्यावरण, प्रेरणा, देशभक्ति, योग, ध्यान, व्यक्तित्व विकास, राष्ट्र निर्माण गतिविधियों में युवाओं की भागीदारी, सृजनात्मक शिक्षा, नैतिकता, जीवन के मूल्य, आध्यात्मिकता, भारतीय संविधान-मौलिक अधिकार और नागरिकों के कर्तव्य, सामाजिक दायित्व, स्वच्छता अभियान व स्वास्थ्य व सफाई आदि विषयों पर छात्रों से बातचीत करने के लिए हमने प्रसिद्ध व्यक्तियों, विशेषज्ञों, प्रख्यात बुद्धिजीवियों को आमंत्रित किया। बातचीत के रूप में तथा प्रश्नोत्तर के रूप में चर्चा संचालित की गई। छात्रों ने 'वार्ता-परिचर्चा सत्र' को बहुत पसंद किया और उन्हें प्रसिद्ध व्यक्तियों से मिलने का अद्‌भुत अवसर प्राप्त हुआ। सुबह 'आर्ट ऑफ लिविंग' के माध्यम से योग का सत्र तथा शाम को पाठ्येत्तर गतिविधियाँ बहुत ही उपयोगी और मनोरंजक थीं। आध्यात्मिकता और वैज्ञानिक चेतना को समझने के लिए उन्हें अक्षरधाम मंदिर और प्रगति मैदान स्थित विज्ञान केंद्र ले जाया गया। यह शिविर बहुत सफल रहा।

अब मैं महसूस करता हूँ कि सेवानिवृत्त जीवन मेरे जीवन के सबसे शानदार क्षणों में से एक है। अब मैं मुक्त पक्षी हूँ। मैं अपने कार्यक्रम का खुद ही मालिक हूँ। अब तनाव नहीं, कोई बॉस नहीं और कोई रोकटोक नहीं, बल्कि अब मेरे पास पढ़ाई, समाज सेवा और अध्यात्म में अपनी रुचि को पूरा करने के लिए पूरा समय है। मैं एक सामान्य नागरिक के सामान्य जीवन को बेहद पसंद कर रहा हूँ जिसके पास शक्ति, प्राधिकार और नौकरी की चमक-दमक नहीं है। ऐसा जीवन जीने के लिए असाधारण प्रयास और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण की जरूरत होती है।

सेवानिवृत्ति के पश्चात् मैं नोएडा में अपनी प्रिय पत्नी के साथ तनाव रहित और प्रसन्नतापूर्ण जीवन आनंद के साथ व्यतित कर रहा था। जीवन में सब कुछ ठीक चल रहा था कि अचानक मेरे ऊपर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। एक वर्ष से भी कम समय के भीतर मैंने अपनी पत्नी सरिता, अपने सबसे बड़े भाई-भाभी, दूसरे बड़े भाई-भाभी तथा आध्यात्मिक गुरु वशिष्ठ गुफा के स्वामी

चैतन्यानंद जी को खो दिया। इन विपत्तियों के पहाड़ के साथ ही स्वयं संघ लोक सेवा आयोग में सीढ़ियाँ चलते हुए गिरने से मेरे बाएँ कंधे की हड्डी टूट गई जिसके फलस्वरूप मैं चलने में भी असमर्थ हो गया और लगभग चार महीनों तक बिस्तर पर पड़ा रहा। मैं टूट गया होता किन्तु अध्यात्म में मेरे दृढ़ विश्वास ने मुझे पुनः सामान्य जीवन में लौटने में सहायता की। ईश्वर महान एवं सदैव दयावान है।

जीवन में अचानक आई इन विपत्तियों से मैंने बहुत सबक लिया है। हमारे हाथों में कुछ भी नहीं हैं। हम कर्म कर सकते हैं और अधिकतम प्रयास कर सकते हैं किन्तु फल अनेक अज्ञात कारकों पर निर्भर होते हैं जिन्हें केवल ईश्वर ही जानते हैं। इसलिए गीता कहती है, ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्।'' मैंने अपने आध्यात्मिक गुरु से पूछा, ''स्वामी जी इतनी सारी विपत्तियाँ मुझ पर क्यों आईं जबकि मैंने एक सरल सच्चा और आध्यात्मिक जीवन जिया है।''

अपने चेहरे पर मुस्कान लाते हुए उन्होंने उत्तर दिया, ''हम इस दुनिया में एक लक्ष्य लेकर आए हैं, जैसे कि मानवता को कुछ देने के लिए और अपने अनुभवों के द्वारा अपनी चेतना को समृद्ध करते हुए अस्तित्व के उच्चतर स्तर पर पहुँच कर कुछ पाने के लिए। जब लक्ष्य पूर्ण हो जाता है तब शरीर की आवश्यकता नहीं रहती और हम अपनी ऊर्जा के मूल श्रोत को वापस चले जाते हैं। सरिता के जीवन का लक्ष्य पूरा हो गया था और वह इस पार्थिव जगत को छोड़कर मूल ऊर्जा के श्रोत में मिलने के लिए चली गईं। आपके जीवन का लक्ष्य अभी तक पूरा नहीं हुआ हैं, जब पूरा हो जाएगा तब आप भी इस भौतिक संसार को छोड़कर प्रस्थान कर जायेंगे।'' उन्होंने आगे कहा ''मैंने सरिता के लिए प्रार्थना की थी किन्तु असीम सत्ता की इच्छा कुछ और थी।'' मैं जीवन के काँटों पर गिर पड़ा था और रक्तस्राव हो रहा था, विपुल रक्तस्राव। फिर भी मैं इसे आनंदपूर्वक स्वीकार कर जी रहा हूँ क्योंकि यह मुझे परिस्कृत करके चेतना के उच्चतर स्तर पर ले जाएगा।

जीवन जिस रूप में आता है स्वीकार करना चाहिए और जीवन में आने वाली परीक्षाओं और परेशानियों का धैर्य तथा समभाव के साथ सामना करते हुए आगे की यात्रा जारी रखनी चाहिए।

जीवन शून्य तथा अनंत के बीच में एक सुंदर लयपूर्ण नृत्य है जिसमें अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने के लिए असीम संभावनाएँ छिपी हुईं हैं। इन असीम संभावनाओं में जीवन के वास्तविक स्वरूप की पहचान करते हुए लास्यमय सुंदर नृत्य का आनंद लेना ही जीवन है।

अध्याय-३६

उपसंहार

मैं इस लौकिक संसार की सीमाओं के भी परे उड़ना चाहता हूँ।

मैंने अपना जीवन एक बालक के रूप में, एक किशोर के रूप में, एक वयस्क के रूप में, एक गृहस्थ के रूप में जी लिया है और अब जीवन के शरदकाल में, अपनी जवाबदेहियाँ और अपने काम युवा पीढ़ी के हाथों में सौंपने के लिए तैयार हूँ। मैं आत्म-नियंत्रित हूँ, स्वयं के अधीन हूँ और शांत हूँ। प्रसिद्ध कविता 'ओड टू लाइफ' (जीवन का स्त्रोत) की पंक्तियाँ हैं-

'भोर की नीरव शांति में
उगते सूर्य का सौन्दर्य
हृदय को कर देता है प्रफुल्लित
अपने प्रकाश, आशाओं और खुशी से
शाम की खामोशी में
डूबते सूरज की तिरछी किरणें
अपने साथ
शांति, तसल्ली और आनंद लाती हैं
एक प्रबुद्ध आत्मा के लिए
दोनों हैं महत्त्वपूर्ण
क्योंकि दोनों ज्ञान का संदेश देती हैं।

'अपने जीवन की संध्या बेला में जब हम पीछे मुड़कर बीते जीवन को देखते हैं, इस धरती पर अपने अल्प ठहराव के मील के पत्थरों के रूप में जो चीजें दिखाई देंगी वो हमारे द्वारा जमा किया गया धन नहीं होगा, न ही वह शक्ति या सुख जिसका हमने आनंद लिया बल्कि यह वैसे प्रेमपूर्ण कर्म होंगे जिनसे हमने पीड़ाओं में पड़े अपने साथी मनुष्यों को राहत देने में समर्थ हुए होंगे; वैसे साहसिक कर्म होंगे जिनके जरिए हमने न्याय और स्वतन्त्रता को स्थापित किया होगा; आत्म-बलिदान के वैसे कार्य होंगे जिनके माध्यम से हमने ईश्वर के पुत्रों

के रूप में अपनी अनंत प्रताप की झलक महसूस की होगी।' अंततः, यह सम्पूर्ण जीवन और कुछ नहीं बल्कि केवल सत्य का अन्वेषण है, अपने वास्तविक-स्वयं को जानने की यात्रा है।

हम नश्वर लोग जो अपने वास्तविक आत्म से बेपरवाह रहते हैं, केवल शरीर की ही चिंता करते हैं। धरती पर अपनी यात्रा में हम अपने वास्तविक स्वयं पर कभी चिंतन नहीं करते। हर किसी के हृदय में एक सद्यः प्रकाशित आत्मा मौजूद रहती है जो विशालतम से भी विशाल और सबसे लघुतम से भी लघु है, पर हम अपने अज्ञान के कारण इससे बेपरवाह रहते हैं। इसका अनुभव करना हमारा सबसे ईमानदार उद्यम होना चाहिए। जब हम आध्यात्मिक जीवन जीते हैं तो हममें शक्ति आती है, हमारा चेतन व्यापक होने लगता है; संवेदनाएँ निर्मित और विकसित होने लगती हैं और हम निरंतर बेहतर होते जाते हैं। हमें एक सामान्य मानव से महामानव और सामान्य चेतना से विकसित चेतना तक पहुँचने के श्री अरबिंदो के स्वप्न को समझना चाहिए। उद्भव की प्रक्रिया पर मंथन करते हुए रहस्यवादी सूफी संत हजरत जलालुद्दीन रूमी कहते हैं–

मैं एक खनिज के रूप में मरा और एक पौधा बना
मैं एक पौधे के रूप में मरा और जानवर बन गया
मैं एक जानवर के रूप में मरा और इंसान बन गया।
मुझे क्यों भय हो?
कब ऐसा था जब मर कर मैं घट गया?
एक बार फिर मैं इंसान के रूप में मरूँगा
पवित्र फरिश्तों के साथ उड़ान भरने के लिए
पर फरिश्ता होने के बाद भी, मैं और भी आगे बढ़ूँगा....[1]

मैं नहीं जानता कि मैं अपने वास्तविक आत्म को इस जीवन में जान पाऊँगा या नहीं। मुझे यह भी नहीं पता कि मुझे अपने वास्तविक ऊर्जा स्रोत तक पुनः पहुँचने में कितने जन्म और लगेंगे। पर मुझे यकीन है कि एक दिन, इस जन्म में या किसी और जन्म में, ईश्वर मुझे मेरे वास्तविक आत्म को मेरे समक्ष प्रकट करेगा।

'बहुत कम लोग हैं जो 'आत्म' के बारे में सुनते हैं
उससे भी कम लोग इसके ज्ञान के लिए समर्पित करते हैं
अपना जीवन। ऐसा व्यक्ति जो आत्म के विषय में बात करे,

वह निराला है,
दुर्लभ हैं वे जो इसकी तलाश को अपने जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य बनाएँ
धन्य हैं वे जो एक प्रकाशवान गुरु के माध्यम से
आत्म-ज्ञान प्राप्त करते हैं।
आत्म को धर्मशास्त्रों के अध्ययन से नहीं
जाना जा सकता, न ही बुद्धिजीवियों के माध्यम से
न ही श्रवण-अध्ययन विमर्श से।
आत्म को केवल वही पा सकते हैं
जिन्हें स्वयं आत्म चुनता है। वास्तव में
उनके ही समक्ष आत्म स्वयं को प्रकट करता है।[2]

पूरा जीवन एक तीर्थयात्रा है; अपने आत्म की तलाश की तीर्थयात्रा, निरंतर असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर। हम सभी महान वैश्विक आत्मा के अंश हैं। हम उसी से जन्मे हैं और पुनः उसी में हमें समाहित होना है। इस कारण हम पवित्र और असीम हैं। आइए, हम अपनी इस तीर्थयात्रा में अपने आत्म की असीम क्षमता का एहसास करें: 'मैं क्षमता के साथ पैदा हुआ हूँ; मैं अच्छाई और विश्वास के साथ पैदा हुआ हूँ; मैं विचारों और स्वप्नों के साथ पैदा हुआ हूँ; मैं महानता के साथ पैदा हुआ हूँ; मैं साहस के साथ पैदा हुआ हूँ। इस कारण मैं रेंगने के लिए नहीं बना, मेरे पास पंख हैं; मैं उड़ान भरूँगा। मैं उड़ूँगा, उड़ूँगा और उड़ूँगा। मैं इस लौकिक संसार की सीमाओं के भी परे उड़ना चाहता हूँ।'[3]

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः!!

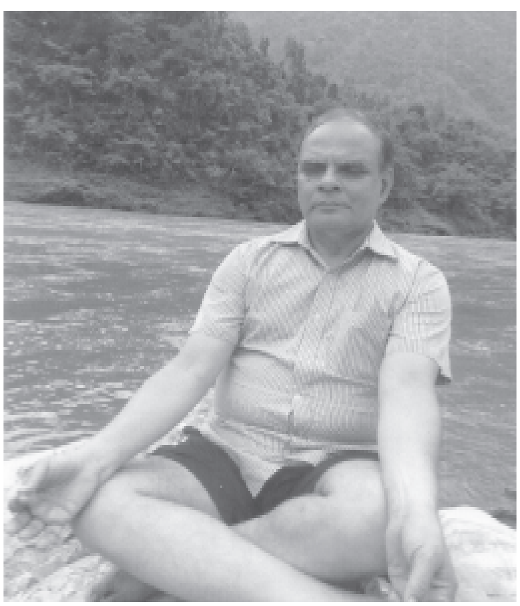

वशिष्ठ गुफा के समीप
गंगातट पर ध्यानस्थ

उद्धरणः

1. बालकृष्ण पाण्डेय की पुस्तक 'पर्सनालिटी' से।
2. एकनाथ ईश्वरन द्वारा यथा अनूदित कठोपनिषद् से।
3. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम।